भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्

वार्षिक रिपोर्ट
1984-85

भा० सा० वि० अ० प०
35 फिरोजशाह रोड
नई दिल्ली-110001

प्रकाशन संख्या 157
1986
निःशुल्क

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के लिए
भारत मुद्रणालय, के-51 नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
में मुद्रित

विषय सूची

खण्ड एक—कार्यक्रम

I	सामान्य	1
II	अनुसंधान प्रोत्साहन	3
III	प्रलेखन	13
IV	प्रकाशन	18
V	आंकड़ा अभिलेखागार	22
VI	अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग	26
VII	भा० सा० वि० अ० प० क्षेत्रीय केन्द्र	46
VIII	अन्य कार्यक्रम	68
IX	अनुसंधान संस्थान	85

परिशिष्ट

1.	भा० सा० वि० अ० प० के सदस्य 1984-85	101
2.	भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के वरिष्ठ अधिकारी 1984-85	103
3.	भा० सा० वि० अ० प० स्टाफ द्वारा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में योगदान	105
4.	स्वीकृत परियोजनाएं	110
5.	पूरे हुए अनुसंधान	121
6.	प्रदान की गई अधिछात्रवृत्तियां	130

7. प्रलेखन और ग्रन्थसूचीय सेवाओं के लिए सहायता-अनुदान 144
8. प्रकाशनों की बिक्री तथा वितरण 146
9. प्रकाशन अनुदान 147
10. 1984-85 के दौरान प्राप्त आंकड़ा सैटों की सूची 150
11. 1984-85 के दौरान व्यवस्थित आंकड़ा सैटों की सूची 151
12. आंकड़ा संसाधन में मार्गदर्शी तथा परामर्श सेवाएं, उन अध्येताओं की सूची जिन्होंने 1984-85 के दौरान इन सुविधाओं का लाभ उठाया 152
13. आंकड़ा संग्रह, सेमिनार/सम्मेलन में भाग लेने के लिये भारतीय अध्येताओं द्वारा विदेशों का दौरा तथा अधिक ठहरना 155
14. वर्ष 1984-85 के दौरान अनुसंधान संस्थानों को अनुदानों का विवरण और उनके कार्यकलाप 162

खण्ड दो—लेखे

वित्तीय लेखे 273-311

वार्षिक रिपोर्ट 1984-85

I

सामान्य

1.01 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् (भा० सा० वि० अ० प०) की यह सोलहवीं वार्षिक रिपोर्ट है जो अप्रैल 1984 से मार्च 1985 की अवधि से संबंधित है ।

भा० सा० वि० अ० प० का गठन

1.02 भारत सरकार द्वारा सन् 1969 में स्थापित भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् एक स्वायत्त संगठन है । इसमें 26 सदस्य हैं : एक अध्यक्ष, अठारह समाज विज्ञानी, भारत सरकार के छः प्रतिनिधि, जो सभी भारत सरकार द्वारा मनोनीत किए जाते हैं, तथा एक सदस्य-सचिव, जिसकी नियुक्ति भा० सा० वि० अ० प० द्वारा भारत सरकार के पूर्व अनुमोदन के साथ की जाती है ।

1.03 31 मार्च 1985 की स्थिति के अनुसार भा० सा० वि० अ० प० का गठन परिशिष्ट-1 में दर्शाया गया है ।

1.04 निम्नलिखित सदस्यों की कार्यावधि 31 मार्च 1985 को समाप्त हो गई : (1) डा० जे० बी० पी० सिन्हा, (2) डा० सुरजीत चन्द्र सिन्हा, (3) प्रोफेसर सी० टी० कुरियन, (4) प्रोफेसर एम० वी० पाइली, (5) प्रोफेसर मूनिस रजा और (6) डा० हेमलता स्वरूप ।

1.05 भारत सरकार ने निम्नलिखित विद्वानों को 1 अप्रैल 1985 से तीन वर्ष की अवधि के लिए परिषद् के सदस्यों के रूप में मनोनीत किया है : (1) प्रोफेसर वी० पी० दत्त, (2) प्रोफेसर सी० पार्वतम्मा, (3) प्रोफेसर टी० एस० पपोला, (4) प्रोफेसर बशीरुद्दीन अहमद, (5) प्रोफेसर अमलेन्दु गुहा, और (6) प्रोफेसर नितीश आर० डे ।

परिषद् तथा समिति की बैठक

1.06 निम्नलिखित तालिका में 1984-85 के दौरान परिषद् तथा इसकी स्थायी व कार्यात्मक समितियों की हुई बैठकों की संख्या दर्शाई गई है :

परिषद्-समिति	बैठकों की संख्या
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्	2
आयोजना तथा प्रशासन समिति	1
अनुसंधान समिति	3
अनुसंधान संस्थान समिति	1
अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग समिति	कोई नहीं
प्रशिक्षण संबंधी समिति	1
आंकड़ा अभिलेखागार समिति	1
प्रलेखन तथा अनुसंधान सूचना सेवा समिति	कोई नहीं

भा० सा० वि० अ० प० सचिवालय

1.07. भा० सा० वि० अ० प० सचिवालय के प्रधान इसके सदस्य-सचिव हैं तथा इसके अन्य स्वीकृत पदों की संख्या इस प्रकार है—सात निदेशक, दस उप निदेशक, नौ सहायक निदेशक, एक वित्तीय सलाहकार और मुख्य लेखा अधिकारी, एक प्रशासनिक अधिकारी तथा अनुसंधान सहायकों, प्रलेखन सहायकों, लिपिकों, पुस्तकालय सहायकों आदि के कुछ पद। वर्ष के दौरान भा० सा० वि० अ० प० के वरिष्ठ अधिकारियों की एक सूची परिशिष्ट 2 में दी गई है।

1.08. अनेक स्टाफ सदस्य भिन्न-भिन्न शैक्षणिक कार्यकलापों में कार्यरत रहे। सेमिनारों में प्रस्तुत किए गए शोध पत्रों, डाक्टोरल शोध निबंधों और पूरी की गई अनुसंधान रिपोर्टों तथा लेखों व प्रकाशित पुस्तकों के रूप में उनका योगदान परिशिष्ट 3 में दर्शाया गया है।

1.09. सचिवालय को स्थान की अत्यन्त कमी का सामना करना पड़ रहा है और स्टाफ को छोटे-छोटे केबिनों में इकट्ठा बिठाया गया है। जल व विद्युत की आपूर्ति भी संतोषजनक नहीं है। परिषद् कार्यालय के लिए उपयुक्त स्थान प्राप्त करने की विभिन्न सम्भावनाओं का पता लगा रही है और इसने निर्माण तथा आवास मंत्रालय, भारत सरकार को भी पत्र लिखा है।

II

अनुसंधान प्रोत्साहन

2.01. अनुसंधान को प्रोत्साहित करना परिषद् की सर्वाधिक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। यह कार्य अनेक योजनाओं के माध्यम से किया जा रहा है जिनका उद्देश्य अनुसंधान के लिए अवस्थापना का निर्माण करना, अनुसंधान संस्थानों को अनुरक्षण तथा विकास अनुदान प्रदान करना, अनुसंधान परियोजनाओं का वित्त पोषण करना, अनुसंधान अधिछात्रवृत्तियां प्रदान करना, अनुसंधान खर्च वहन करने के लिए अनुदान देना, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मदद देना, समाज विज्ञानों में विद्वानों द्वारा अनुसंधान कार्यों का सर्वेक्षण कराना आदि है।

सामाजिक विज्ञानों में अनुसंधान का सर्वेक्षण

2.02. सन् 1969 में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् की स्थापना के समय से ही विभिन्न सामाजिक विज्ञान विषयों में अनुसंधान कार्य के सर्वेक्षण की आवश्यकता महसूस की गई। चूंकि भा० सा० वि० अ० प० का मुख्य उद्देश्य अनुसंधान को प्रोत्साहित करना तथा इसके लिए धन देना और इस प्रकार समाज वैज्ञानिक सिद्धान्त के विकास को सुकर बनाना, रीति-विज्ञान को परिष्कृत करना और बेहतर समझ व महत्वपूर्ण राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान करना रहा है, इसलिए यह अनुभव किया गया कि अब तक हुए अनुसंधान कार्य का सर्वेक्षण करने से परिषद् को अपनी अनुसंधान प्रोत्साहन नीति तैयार करने और अनुसंधान के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों का पता लगाने में मदद मिलेगी। सर्वेक्षणों का उद्देश्य समाज विज्ञानों के शिक्षण कार्य में भी मदद प्रदान करना था। यह योजना 1970 में शुरू की गई थी।

प्रथम श्रृंखला

2.03. प्रथम श्रृंखला के अन्तर्गत 22 खण्ड प्रकाशित किए जा चुके हैं और राजनीतिक विज्ञान में अनुसंधान सर्वेक्षण का चौथा और पांचवां खण्ड छप रहा है।

2.04 इनके अलावा, 1968-77 की अवधि के संबंध में भौतिक भूगोल में अनुसंधान का सर्वेक्षण कार्य, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् के साथ मिलकर किया गया और एक खण्ड प्रकाशित भी हो चुका है।

दूसरी और तीसरी श्रृंखला

2.05 भा० सा० वि० अ० प० ने अनुसंधान कार्य को सुकर बनाने के अपने कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, अनुसंधान सर्वेक्षणों की इस योजना को 1969 के बाद भी जारी रखने का निर्णय किया है। 1984-85 के अन्त तक हुई प्रगति नीचे दर्शाई गई है :

मनोविज्ञान

2.06 मनोविज्ञान में 1971-1976 की अवधि के संबंध में अनुसंधान के दूसरे सर्वेक्षण के अन्तर्गत तैयार किए गए पत्र प्रोफेसर उदय पारीक के सम्पादन में दो भागों में पहले ही प्रकाशित हो चुके हैं।

2.07 मनोविज्ञान में 1977 से 1982 तक की अवधि के संबंध में अनुसंधान का तीसरा सर्वेक्षण आयोजित करने के लिए विख्यात विद्वानों की एक सलाहकार समिति गठित की गई है जिसके संयोजक और मुख्य सम्पादक प्रोफेसर जनक पाण्डे है। एक को छोड़कर शेष सभी पत्र सम्पादक को प्राप्त हो गए हैं।

भूगोल

2.08 1970-72 की अवधि के संबंध में भूगोल में अनुसंधान का दूसरा सर्वेक्षण प्रकाशित हो चुका है, इसका सम्पादन मूनिस रज़ा ने किया था। 1973-75 की अवधि के लिए भूगोल में अनुसंधान का तीसरा सर्वेक्षण आलोच्य अवधि के दौरान प्रकाशित किया गया, इसका सम्पादन प्रोफेसर एस० मन्जूर आलम ने किया था।

2.09 भूगोल में अनुसंधान का चौथा सर्वेक्षण शुरू कर दिया गया है। प्रोफेसर जी० एस० गोसाल इस खण्ड के मुख्य सम्पादक हैं। इस प्रयोजन के लिए गठित सलाहकार समिति ने विद्वानों तथा प्रवृत्ति रिपोर्टों के लिए विषयों का निर्धारण कर लिया है और कार्य प्रगति पर है।

समाजशास्त्र और सामाजिक नृविज्ञान

2.10 समाजशास्त्र तथा सामाजिक नृविज्ञान में अनुसंधान का दूसरा सर्वेक्षण शुरू कर दिया गया है और प्रोफेसर एस० सी० दूबे सलाहकार समिति के अध्यक्ष हैं। तैयार की गई रिपोर्ट तीन खण्डों में छप रही है जिनका सम्पादन प्रोफेसर जे० वी० फरेरा ने किया है। एक खण्ड प्रकाशित हो चुका है और दूसरा खण्ड मुद्रण के अन्तिम स्तर पर है।

लोक प्रशासन

2.11 लोक प्रशासन में 1970-1971 की अवधि से संबंधित अनुसंधान के दूसरे सर्वेक्षण के संबंध में सभी प्रवृत्ति रिपोर्टें प्राप्त हो गईं और उनका सम्पादन किया गया। प्रोफेसर कुलदीप माथुर इस खण्ड के सम्पादक हैं।

प्रबंध

2.12 प्रबंध में 1970-77 की अवधि के संबंध में अनुसंधान का दूसरा सर्वेक्षण शुरू किया गया। प्रोफेसर बी० एल० माहेश्वरी इसके सम्पादक हैं। अधिकांश प्रवृत्ति रिपोर्टों के मसौदे प्राप्त हो गए हैं और उनका सम्पादन किया जा रहा है।

राजनीतिक विज्ञान

2.13 राजनीतिक विज्ञान में अनुसंधान का दूसरा सर्वेक्षण करने के लिए एक सलाहकार समिति गठित की गई जिसके संयोजक और मुख्य सम्पादक प्रोफेसर वी० आर० मेहता हैं। समिति द्वारा चुने गए राजनीति विज्ञानियों से चुने हुए विषयों पर रिपोर्ट तैयार करने का अनुरोध किया गया है। कार्य प्रगति पर है।

अर्थशास्त्र

2.14 अर्थशास्त्र में अनुसंधान का दूसरा सर्वेक्षण आयोजित करने के लिए एक सलाहकार समिति गठित की गई जिसके संयोजक प्रोफेसर एस०

चक्रवर्ती हैं। समिति द्वारा चुने गए अर्थशास्त्रियों से निर्धारित विषयों पर रिपोर्ट तैयार करने का अनुरोध किया गया है।

अन्य अनुसंधान सर्वेक्षण

2.15 प्रोफेसर पी० बी० देसाई द्वारा संकलित भारतीय जनांकिकी की एक सटिप्पण और वर्गीकृत ग्रन्थसूची छप रही है।

2.16 भारतीय इतिहास (सामाजिक और आर्थिक) में अनुसंधान के सर्वेक्षण के संबंध में एक खण्ड प्रकाशित करने की योजना के अन्तर्गत छ: प्रवृत्ति रिपोर्टों का एक खण्ड, तीन रिपोर्टें भारत के आर्थिक इतिहास के संबंध में, और तीन अन्य भारत के सामाजिक इतिहास के संबंध में—तीन कालों, प्राचीन, मध्य, और आधुनिक से संबंधित छप रही हैं।

अनुसंधान परियोजनाएं

2.17 वर्ष के प्रारंभ में 309 अनुसंधान प्रस्ताव विचाराधीन थे। वर्ष के दौरान 211 प्रस्ताव प्राप्त हुए। कुछ 520 अनुसंधान प्रस्तावों में से 101 को मंजूरी दी गई, 72 को नामंजूर कर दिया गया अथवा विभिन्न कारणों से रिकार्ड कर दिया गया और 347 प्रस्ताव वर्ष के अन्त में विचाराधीन थे। स्वीकृत परियोजनाओं की सूची परिशिष्ट 4 में दी गई है।

2.18 वर्ष के दौरान पूरी हुई अनुसंधान परियोजनाओं की 79 रिपोर्टें प्राप्त हुई। इनकी सूची परिशिष्ट 5 में दी गई है।

2.19 भा० सा० वि० अ० प० की स्थापना से लेकर अब तक स्वीकृत परियोजनाओं की कुल संख्या 1,542 है, जिनमें से 38 को रद्द कर दिया गया। 31 मार्च 1985 तक पूरी हुई परियोजनाओं के संबंध में प्राप्त कुल रिपोर्टों की संख्या 1,000 है। इनका ब्यौरा तालिका 2.1 में दिया गया है।

तालिका 2.1

स्वीकृत अनुसंधान परियोजनाएं

वर्ष	स्वीकृत अनुसंधान परियोजनाएं	रद्द की गई अनुसंधान परियोजनाएं	31 मार्च 1985 तक प्राप्त अन्तिम रिपोर्टें*
1	2	3	4
योजना आयोग से स्थानान्तरित परियोजनाएं	45	—	45
1969-70	13	1	12
1970-71	74	7	67
1971-72	103	4	99
1972-73	104	6	9
1973-74	88	1	82
1974-75	69	1	59
1975-76	105	3	95
1976-77	107	2	77
1977-78	154	2	106
1978-79	131	4	77
1979-80	100	1	63
1980-81	62	1	41
1981-82	111	1	49
1982-83	92	1	19
1983-84	83	2	13
1984-85	101	1	3
	1,542	38	1,000

*स्थिति से उन स्वीकृत परियोजनाओं से संबंधित रिपोर्टों की संख्या का पता चलता है जो वर्ष विशेष में स्वीकृत की गई और 31 मार्च 1985 तक पूरी हो गईं ।

प्रायोजित कार्यक्रम

2.20 भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के सम्बन्ध में अनुसंधान का एक कार्यक्रम वर्ष 1984-85 के दौरान जारी रहा। उत्तर पूर्वी भारत में समाज विज्ञान अनुसंधान के लिए प्राथमिकताओं के सम्बन्ध में एक राष्ट्रीय सेमिनार अप्रैल 1984 में आयोजित किया गया। इस सेमिनार की सिफारिशों पर अनुवर्ती कार्रवाई चर्चाधीन है। भारत में उद्यमशीलता के सम्बन्ध में अनुसंधान कार्यक्रम का और विकास किया गया। चुने हुए समाज विज्ञानियों द्वारा इस क्षेत्र में अनुसंधान के संबंध में स्थिति-पत्र तैयार किया गया। इस विषय पर और विचार आमंत्रित करने के लिए उन्हें प्रकाशित करने के सम्बन्ध में निर्णय किया गया।

प्रमुख परियोजनाएं/कार्यक्रम

2.21 जो प्रमुख कार्यक्रम-परियोजनाएं चल रही हैं अथवा स्वीकृत की गई हैं उनमें निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं, (1) वी० के चेट्टी, भारतीय सांख्यिकी संस्थान, नई दिल्ली, "भारतीय अर्थ-व्यवस्था में मूल्य और वितरण नियंत्रण", (2) एम० पी० रेगे, भारतीय परम्परा अध्ययन संस्थान, पुणे, "पश्चिमी भारत में भारतीय परम्परा में न्याय का अध्ययन", (3) एस० के० गोयल, भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली, "भारत में निगमित क्षेत्र के लिए सूचना प्रणाली", (4) वीणा मजुमदार, सुरिन्दर जेतली, नारायण बनर्जी, और मानषी मित्रा, स्त्री विकास अध्ययन केन्द्र, नई दिल्ली, "स्त्रियों का कार्य और परिवार नीतियां उत्तर-प्रदेश, बिहार और पश्चिमी बंगाल में तीन क्षेत्र अध्ययन" (यह परियोजना उन आठ अध्ययनों में से एक है जिनका एक समान उद्देश्य है और स्त्री अध्ययन सम्बन्धी यू० एन० यू० के कार्यक्रम का एक भाग है।

अनुसंधान अधिछात्रवृत्तियां

2.22 वर्ष के प्रारम्भ में वरिष्ठ/सामान्य अधिछात्रवृत्तियों के लिए 43 प्रस्ताव विचाराधीन थे। इस वर्ष के दौरान 78 प्रस्ताव प्राप्त हुए। कुल 121 प्रस्तावों में से 13 को मन्जूरी दी गई, 22 को नामन्जूर/रिकार्ड कर दिया गया अथवा उन्हें विभिन्न कारणों से वापस ले लिया गया और 31 मार्च 1985 को 86 प्रस्ताव विचाराधीन थे।

2.23 भा० सा० वि० अ० प० द्वारा वर्ष के दौरान प्रदत्त विभिन्न प्रकार की अधिछात्रवृत्तियों की संख्या निम्नलिखित है —

क — राष्ट्रीय अधिछात्रवृत्तियां	कोई नहीं	
ख — वरिष्ठ ,,	8	
ग — सामान्य ,,	5	13
घ — डाक्टोरल ,,		
(क) संस्थात्मक अधिछात्रवृत्तियां	23	
(ख) विदेशी विद्वान	2	
(ग) प्रायोजित अनुसंधान कार्यक्रम	कोई नहीं*	25
	जोड़	38

*योजना चल रही है।

प्रदत्त अधिछात्रप्रवृत्तियों की पूरी सूची परिशिष्ट 6 में दी गई है।

2.24 कार्यक्रम के अन्तर्गत 1984-85 तक स्वीकृत, पूरी हो चुकी तथा चल रही अधिछात्रवृत्तियों (अल्पावधि अधिछात्रवृत्तियों के अलावा) का विवरण तालिका 2.2 में दिया गया है।

2.25 भा० सा० वि० अ० प० द्वारा अपनी स्थापना से लेकर, अब तक स्वीकृत की गई अधिछात्रवृत्तियों की कुल संख्या तालिका 2.3 में दी गई है।

फुटकर अनुदान

2.26 आलोच्य वर्ष के दौरान 67 अनुसंधान अध्येताओं को फुटकर अनुदान स्वीकृत किए गए जिन्हें मिलाकर योजना की शुरूआत से लेकर अब तक ऐसे अनुदानों की संख्या 851 हो गई है।

तालिका 2.2

31 मार्च 1985 तक अनुसंधान अधिछात्रवृत्तियां

	स्वीकृत	रद्द कर दी गई/ शामिल नहीं हुए	प्रगति पर	पूरी हो चुकी	रिपोर्ट प्राप्त	रिपोर्ट आनी है
राष्ट्रीय अधि-छात्रवृत्तियां	24	5	4	15	8	7
वरिष्ठ	163	9	19	135	93	42
उत्तर-डाक्टोरल	27	3	0	24	15	9
युवा समाजविज्ञानी	22	8	2	12	9	3
सामान्य अधि-छात्रवृत्तियां	39	5	22	12	6	6
उप जोड़	277	27	48	198	131	67
डाक्टोरल अधि-छात्रवृत्तियां (पूर्णाविधि)	617	271	115	231*	58	173

*इन मामलों से काफी डाक्टोरल छात्रों ने अधिछात्रवृत्तियां बीच में ही छोड़ दी क्योंकि उन्होंने शिक्षण या कोई अन्य पद ग्रहण कर लिया। यह ज्ञात नहीं है कि कितने अध्येताओं ने अपने नए रोजगार के साथ अपना डाक्टोरल कार्य भी जारी रखा। हम यह सूचना, योजना की समीक्षा के एक भाग के रूप में प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं।

अध्ययन अनुदान

2.27 अध्ययन अनुदानों की योजना के अन्तर्गत ऐसी पुस्तकालय सामग्री को देखने के लिए जो अध्येता के अनुसंधान/निवास स्थान पर उपलब्ध नहीं है, वांछित स्थान तक यात्रा और अध्ययन की लागत को पूरा करने के लिए विशिष्ट दर पर वित्तीय सहायता दी जाती है। वर्ष के दौरान भा० सा० वि० अ० प० के चुने हुए केन्द्रों द्वारा 153 अध्येताओं को अनुदान मन्जूर किए गए।

तालिका 2.3

स्वीकृत कुल अधिछात्रवृत्तियों की संख्या (वर्षवार)

	1969-74	1974-75	1975-76	1976-77	1977-78	1978-79	1979-80	1980-81	1981-82	1982-83	1983-84	1984-85	जोड़
1. राष्ट्रीय अधिछात्रवृत्तियां	5	2	—	3	5	—	—	3	—	—	6	—	24
2. वरिष्ठ अधिछात्रवृत्तियां	39	6	7	14	20	12	15	15	9*	7	11	8	163
3. उत्तर डाक्टोरल													
सामान्य अधिछात्रवृत्तियां	7	4	2	9	2	2	1	—	12*	15	7	5	66
4. युवा समाज विज्ञानी	—	—	—	—	11	1	—	10	—	—	—	—	22
5. डाक्टोरल अधिछात्र-													
वृत्तियां पूर्णकालिक	182	50	56	71	67	1	16	30	38	55	29	25	620
अल्पावधि	—	—	7	20	17	26	30	33	40	70	72	75	390

*वरिष्ठ अधिछात्रवृत्तियां प्रदान करने के लिए 1981-82 में मानदण्डों को और कठोर बना दिया गया था और साथ ही इन्हें दो उप-वर्गों में विभाजित कर दिया गया, अर्थात् वरिष्ठ और सामान्य। इसके अतिरिक्त उत्तर-डाक्टोरल तथा युवा समाज विज्ञानियों के लिए अधिछात्रवृत्तियों को सामान्य अधिछात्रवृत्तियों के अन्तर्गत मिला दिया गया। इसलिए स्वीकृत वरिष्ठ अधिछात्र-वृत्तियों की संख्या में एकदम कमी आई और सामान्य अधिछात्रवृत्तियों की संख्या बढ़ गई।

तालिका 2.4

अध्ययन अनुदान

केन्द्र का नाम	स्वीकृत कुल अध्ययन अनुदानों की संख्या
भा० सा० वि० अ० प० पूर्व क्षेत्र केन्द्र, कलकत्ता	19
भा० सा० वि० अ० प० उत्तर क्षेत्रीय केन्द्र, नई दिल्ली	86
भा० सा० वि० अ० प० उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, शिलांग	1
भा० सा० वि० अ० प० उत्तर-पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, चण्डीगढ़	16
भा० सा० वि० अ० प० दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, हैदराबाद	8
भा० सा० वि० अ० प० पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, बम्बई	19
सरदार पटेल आर्थिक तथा सामाजिक अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद	4
जोड़	153

सामाजिक विज्ञानों में अनुसंधान रीतिविज्ञान में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

2.28 वर्ष 1984-85 के दौरान, अनुसंधान रीतिविज्ञान में निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए :

(1) दक्षिणी राज्यों के लिए चौदहवीं अन्तर-विषयक अनुसंधान कार्यशाला, मद्रास विकास अध्ययन संस्थान मद्रास, 6-9 जून 1984।

(2) अनुसंधान रीति विज्ञान तथा आर्थिक विश्लेषण में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, सरदार पटेल आर्थिक तथा सामाजिक अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद, 5 नवम्बर 1984 से 1 दिसम्बर 1984।

III

प्रलेखन

3.01 साहित्य की खोज, सन्दर्भ सेवाएं, प्रलेख वितरण सेवा जैसी सेवाएं प्रदान करके तथा सामाजिक विद्वानों में समन्वय तथा ऐसी ही ग्रन्थ सूचीय व प्रलेखन सेवाओं को प्रोत्साहित करके भा० सा० वि० अ० प० के सामाजिक विज्ञान प्रलेखन केन्द्र ने समाज विज्ञानियों की सूचना सम्बन्धी आवश्यकता को पूरा करना जारी रखा।

एस० एस० डी० सी० अनुसंधान सूचना शृंखला

3.02 अनुसंधान सूचना शृंखला के अन्तर्गत निम्नलिखित छ: प्रलेखन सूचियां मिमिओग्राफ रूप में तैयार की गईं और उन्हें देश-विदेश में विश्वविद्यालयों, सरकारी विभागों और प्रलेखन केन्द्रों सहित सामाजिक विज्ञान अनुसंधान संस्थानों के विभिन्न पुस्तकालयों को वितरित किया गया।

1. अन्डमान और निकोबार द्वीपसमूह : एक ग्रन्थसूची : क्षेत्र अध्ययन कार्यक्रम के अन्तर्गत संकलित; इसमें अन्डमान और निकोबार द्वीपसमूहों के पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, शोध निबंधों, सरकारी प्रकाशनों आदि जैसे अंग्रेजी में 114 प्रलेख सम्मिलित किए गए हैं।
2. भा० सा० वि० अ० प० द्वारा प्रकाशित/वित्त पोषित पुस्तकों और पत्रिकाओं की गाइड : भा० सा० वि० अ० प० ने, डाक्टोरल शोध निबन्धों, अनुसंधान रिपोर्टों, सेमिनार पत्रों, ग्रन्थसूचियों, अनुक्रमणिकाओं आदि जैसे विभिन्न प्रकाशनों को सहायता-अनुदान देकर और उनकी प्रतियां थोक में खरीदकर उन्हें प्रोत्साहन देना जारी रखा। वर्तमान दस्तावेज में ऐसे प्रकाशनों की सूची दी गई है जिन्हें सहायता प्रदान की गई।

3. अन्तर-पुस्तकालय संसाधन केन्द्र : पत्रिकाओं का संग्रह/संशोधित संस्करण । आई एल आर सी, दिल्ली में पुस्तकालयों द्वारा जमा और/अथवा उपहार स्वरूप उपलब्ध कराई गई क्रमिक प्रकृति की पत्रिकाओं और सरकारी दस्तावेजों की बैकफाइलें संभाल कर रखता है । स्थान की कमी के कारण आंशिक संग्रह को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कैम्पस में भेज दिया गया है । वर्तमान संग्रह सूची में एस एस डी सी में उपलब्ध शीर्षकों का रिकार्ड दर्ज है ।

4. एस एस डी सी पूरक 2 और 3 में संकलित ग्रन्थसूचियों की ग्रन्थ-सूची : यह क्रमिक प्रकृति का संकलन है जिसमें मांगे जाने पर अध्येताओं और संस्थाओं को उपलब्ध कराई जाने वाली ग्रन्थसूचियां रिकार्ड की गई हैं । अनुसंधानकर्ताओं को पहले से ही संकलित ग्रन्थ-सूचियों की फोटो प्रतियां भी उपलब्ध कराई जाती हैं । बर्तमान दो पूरकों में क्रमश: 156 और 180 ग्रन्सूचियों की सूची दी गई है ।

5. एस एस डी सी में अनुसंधान परियोजना रिपोर्टें : एक सटिप्पण ग्रन्थसूची का पूरक : यह भा० सा० वि० अ० प० द्वारा प्रदत्त वित्तीय सहायता की एवज में अथवा विनिमय/उपहार स्वरूप एस एस डी सी में प्राप्त लगभग 500 शीर्षकों की एक बगैर टिप्पण वाली ग्रन्थसूची है ।

6. माइक्रो फार्म में प्रलेख : एस एस डी सी, ज० ने० वि०, बम्बई विश्व-विद्यालय, और भा० सा० वि० अ० प० क्षेत्रीय केन्द्र, कलकत्ता में उपलब्ध स्रोतों की एक सूची ।

अनुरोध किए जाने पर ग्रन्थसूचियां

3.03 अनुसंधान अध्येताओं/भा० सा० वि० अ० प० स्टाफ को, मांग किए जाने पर 100 मदों अथवा उसके अंशों वाली ग्रन्थसूची के लिए 5.00 रु० प्रति ग्रन्थसूची की मामूली फीस पर दो सौ ग्रन्थसूचियां उपलब्ध कराई गईं । पहले संकलित की गई ग्रन्थसूचियों की फोटो प्रतियां भी उपलब्ध कराई गईं ।

पत्रिकाओं की अनुक्रमणिका (पूर्वव्यापी अनुक्रमणिका)

3.04 भा० सा० वि० अ० प० की दो पत्रिकाओं "इण्डियन डिस्सरटेशन एब्सट्रेक्टस", खंड 1-10, और "आई सी एस एस आर रिसर्च एब्सट्रेक्टस क्वार्टरली", खण्ड—1-11 की एक संचयी अनुक्रमणिका पूरी कर कर ली गई है।

भारतीय राज्यों/संघीय क्षेत्रों की क्षेत्र अध्ययन ग्रन्थसूचियां

3.05 क्षेत्र अध्ययन ग्रन्थसूचियों के संकलन का काम 1979 में शुरू किया गया था। इन ग्रन्थसूचियों में अंग्रेजी व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध भारतीय राज्यों और संघीय क्षेत्रों के सम्बन्धों में अनुसंधान सामग्री सम्मिलित होती है। अन्डमान और निकोबार द्वीपसमूहों, गोआ, दमन और दीव, बिहार, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु, और उत्तर प्रदेश (पूर्वी क्षेत्र) राज्यों के सम्बन्ध में संकलन कार्य पूरा हो गया। शेष राज्यों/संघीय क्षेत्रों के सम्बन्ध में कार्य चल रहा है।

भाषा ग्रन्थसूचियां

3.06 कन्नड भाषा में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान तथा शिक्षण सामग्रियों की ग्रन्थसूची के संकलन का काम पूरा हो गया है और गुजराती, हिन्दी तथा उड़िया भाषा की सामग्रियों के सम्बन्ध में कार्य चल रहा है।

अधिग्रहण

3.07 पत्रिकाओं के लगभग 2 080 अंक चन्दे के आधार पर/विनिमय/उपहार स्वरूप प्राप्त किए गए। इनमें से 325 पत्रिकाएं भारतीय विश्व कार्य परिषद् पुस्तकालय के लिए मंगाई गईं, इस मामले में वृद्धि 50 प्रतिशत रही।

3.08 कुल मिलाकर 1,638 प्रकाशन, जिनमें 197 शोध निबन्ध और 397 अनुसंधान रिपोर्टें शामिल हैं, प्राप्त किए गए।

3.09 प्रकाशनों के आदान-प्रदान के लिए लगभग 500 पत्रिकाओं/प्रकाशनों के सम्पादकों के साथ पत्र-व्यवहार किया गया। उनमें से 200 पत्रिकाएं/प्रकाशन विनिमय संग्रह में जोड़े गए जिन्हें मिलाकर वर्ष में 10 प्रतिशत

वृद्धि हुई। भारतीय विदेश व्यवहार संस्थान, प्रकाशन प्रभाग, भारत सरकार और श्रम मंत्रालय भारत सरकार से एक हजार प्रकाशन उपहार स्वरूप प्राप्त हुए। वार्षिक वृद्धि दर 50 प्रतिशत रही।

3.10 केन्द्र में उपलब्ध विभिन्न पुस्तकों और पत्रिकाओं की दोहरी प्रतियों को भा० सा० वि० अ० प० क्षेत्रीय केन्द्रों तथा देश के अनुसंधान संस्थानों को वितरित किया गया।

प्रलेख वितरण तथा डुप्लिकेटिंग सेवा

3.11 समाज विज्ञानियों के उपयोग के लिए भारत भर के विभिन्न सहयोगी पुस्तकालयों तथा अन्य संस्थाओं से अन्तर-पुस्तकालय ऋण व अन्य विधियों के माध्यम से 969 प्रकाशन प्राप्त किए गए। विभिन्न दस्तावेजों की फोटोप्रतियां अध्येताओं को मुहैय्या की गई।

3.12 लगभग 1,84,458 पृष्ठों की फोटो प्रतियां, जो पिछले वर्ष की तुलना में 250 प्रतिशत अधिक है, अनुसंधान अध्येताओं को उपलब्ध कराई गई और भा० सा० वि० अ० प० की आन्तरिक जरूरतों के लिए इलेक्ट्रिक स्कैनर पर 2,034 स्टेंसिल काटे गए और 10,311 स्टेन्सिलों की 7,45,920 प्रतियां तैयार कराई गई।

अन्तर-पुस्तकालय स्त्रोत केन्द्र (आई एल आर सी वाचनालय)

3.13 तीन राष्ट्रीय छुट्टियों को छोड़कर वाचनालय सभी दिन सुबह 9.30 बजे से 5.30 बजे शाम तक खुला रहा। लगभग 10,083 अध्येताओं ने केन्द्र में उपलब्ध अनुसंधान सामग्री का उपयोग किया।

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग

3.14 बी० आई० बी० ई० (अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा सम्बन्धी ग्रन्थसूची बुलेटिन) के एक भारतीय संवाददाता के रूप में एस एस डी-सी ने शिक्षा के सम्बन्ध में 1984 और 1985 में प्रकाशित भारतीय पुस्तकों के उनके विषयवस्तु पृष्ठ के साथ, ग्रन्थसूचीय ब्योरे उपलब्ध कराए।

3.15 आई सी एस एस आई डी (समाज विज्ञान सूचना और प्रलेखन के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समिति) के भारतीय संवाददाता के रूप में एस एस डी सी ने वर्ष 1984 और 1985 में प्रकाशित अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, सामाजिक

नृविज्ञान और समाजशास्त्र के विषय में भारतीय पुस्तकों के ग्रन्थसूचीय आंकड़े मुहैय्या किए।

सहायता-अनुदान

3.16 परिषद् ने, विभिन्न एसोसिएशनों/संस्थाओं/अध्येताओं को 14 ग्रन्थ सूचीय और प्रलेखन परियोजनाओं के लिए 87,193.96 रु० का सहायता-अनुदान दिया। इस वर्ष इस शीर्ष के अन्तर्गत खर्च हुई कुल राशि में 25 प्रतिशत की कमी आई। इसने, भारतीय विश्व कार्य परिषद् के पुस्तकालय के लिए लगभग 80,000 रु० की पत्र-पत्रिकाएं मुहैय्या करने के अलावा 1,20,000 रु० का अनुदान भी दिया। (परिशिष्ट 7)

IV

प्रकाशन

भा० सा० वि० अ० प० न्यूज़लेटर

4.01 परिषद् ने अर्ध वार्षिक "भा० सा० वि० अ० प० न्यूज़लेटर" का प्रकाशन जारी रखा जिसमें परिषद् के प्रमुख कार्यक्रमों और कार्यकलापों का ब्यौरा दिया जाता है। "न्यूज़लेटर" में अन्य अनुसंधान संस्थानों/संगठनों से जरूरी अनुसंधान सूचना सम्मिलित करने के लिए इसका कार्य क्षेत्र बढ़ाने के प्रयास जारी रहे। आलोच्य वर्ष के दौरान खण्ड-14, अंक-1 प्रकाशित किया गया।

सार और समीक्षा पत्रिकाएं

4.02 विस्तृत पैमाने पर समाज विज्ञानों को शामिल करते हुए पत्रिकाओं के प्रकाशन का परिषद् का कार्यक्रम वर्ष के दौरान जारी रहा। कुल मिलाकर इन पत्रिकाओं का उद्देश्य प्रमुख अनुसंधान खोजों की समीक्षा और सार उपलब्ध कराकर समाज विज्ञानों में अनुसंधान के बारे में सूचना का प्रसार करना है।

4.03 'भा० सा० वि० अ० प० अनुसंधान सार त्रैमासिक' : इसका प्रकाशन भा० सा० वि० अ० प० द्वारा स्वयं किया जाता है। इसमें अधिकांशत: भा० सा० वि० अ० प० द्वारा वित्त पोषित अनुसंधान परियोजनाओं और अधि-छात्रवृत्तियों की रिपोर्टों के सार प्रकाशित किए जाते हैं। आलोच्य वर्ष के दौरान खण्ड-11, अंक-1 और 2, खण्ड-11, अंक 3 और 4 तथा खण्ड 12, अंक 1 और 2 प्रकाशित किए गए।

4.04 'भारत शोध निबन्ध सार' : यह एक त्रैमासिक पत्रिका है जिसमें भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा अनुमोदित समाज विज्ञानों में डाक्टोरल शोध निबन्धों के सार प्रकाशित किए जाते हैं। वर्ष के दौरान इसका प्रकाशन जारी रहा और खण्ड-10, अंक 3 और 4 का प्रकाशन किया गया।

4.05 भा० सा० वि० अ० प० ने विभिन्न समाज विज्ञान विषयों में प्रकाशित महत्वपूर्ण पुस्तकों की समीक्षाएं और अनुसंधान पत्रों के सार की पत्रिकाओं का प्रकाशन/उनके प्रकाशन के लिए अनुदान जारी रखा। वर्ष के दौरान प्रकाशित प्रकाशनों की सूची तालिका 4.1 में दी गई है।

तालिका 4.1

सार और समीक्षाओं की भा० सा० वि० अ० प० पत्रिकाएं

पत्रिकाएं	प्रकाशित अंक	प्रकाशन/वितरक
भा० सा० वि० अ० प० सार और समीक्षा पत्रिका : अर्थशास्त्र	खंड-XII, अंक-2, 3, और 4	कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग क०, नई दिल्ली
भा० सा० वि० अ० प० सार और समीक्षा पत्रिका : राजनीति विज्ञान	खंड-X अंक-2	,, ,,
भा० सा० वि० अ० प० सार और समीक्षा पत्रिका : भूगोल	खंड-XI अंक 1	,, ,,
भा० सा० वि० अ० प० सार और समीक्षा पत्रिका : समाजशास्त्र और सामाजिक नृविज्ञान	खंड-XIII अंक-1	आचरणात्मक विज्ञान केन्द्र, नई दिल्ली
भारतीय मनोविज्ञान सार	खंड-21 अंक-4	,, ,,
	खंड-22 अंक-2 और 3	,, ,,
लोक प्रशासन में प्रलेखन	खंड-XI, अंक-3 और 4 खंड-XII अंक-1 और 2	भा० लो० प्र० सं० नई दिल्ली के सहयोग से प्रकाशित

सार प्रकाशन के लिए अनुदान

4.06 शिक्षा के क्षेत्र में समीक्षाओं और सार को अपनी पत्रिका "इण्डियन

एज्युकेशन रीव्यू" में सम्मिलित करने के लिए रा० शै० अ० प्र० प० नई दिल्ली को 5,000 रु० का सहायता अनुदान दिया गया।

4.07 प्रबन्ध के क्षेत्र में समीक्षाओं और सार को अपनी पत्रिका "विकल्प" में सम्मिलित करने के लिए भारतीय प्रबन्ध संस्थान, अहमदाबाद को 12,000 रु० का सहायता-अनुदान स्वीकृत किया गया।

4.08 दिल्ली समाज कार्य सोसायटी स्कूल, दिल्ली को भी उसकी पत्रिका "डवलपमेंट एण्ड वेल्फेयर" का प्रकाशन जारी रखने के लिए 24,000 रु० का सहायता-अनुदान स्वीकृत किया गया।

समूल्य प्रकाशन

4.09 आलोच्य वर्ष के दौरान निम्नलिखित समूल्य प्रकाशन प्रकाशित किया गया:

1. 'ए सर्वे आफ रिसर्च इन सोशिओलाजी एण्ड सोशल एन्थ्रापालोजी', 1969-1977, खंड-1

वितरण, विनिमय तथा बिक्री

4.10 विज्ञापनों के आदान-प्रदान के लिए विद्यमान व्यवस्थाओं के अलावा 10 संगठनों की पत्रिकाओं के सम्पादकों के साथ प्रबन्ध किए गए।

4.11 बिक्री को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से परिषद् के विक्रय खण्ड ने भा० सा० वि० अ० प० के प्रकाशन, स्त्रियों और परिवारों के सम्बन्ध में 27 से 31 जनवरी 1985 तक नई दिल्ली में आयोजित एशिया के क्षेत्रीय सम्मेलन, 18 से 21 मार्च 1985 तक विज्ञान भवन, नई दिल्ली में कुलपतियों के सम्मेलन, और 22 से 29 मार्च 1985 तक इलाहाबाद में आयोजित पुस्तक समारोह में प्रदर्शित किए गए। देश भर के विभिन्न पुस्तकालयों और संस्थाओं को भी परिपत्र भेजे जाते हैं। आलोच्य अवधि के दौरान प्रकाशित विभिन्न मूल्यरहित प्रकाशन समाज विज्ञानियों/अनुसंधान संस्थाओं और पुस्तकालयों आदि को वितरित किए गए।

4.12 भा० सा० वि० अ० प० ने उसके द्वारा प्रकाशित प्रकाशनों तथा उन प्रकाशनों का अपने क्षेत्रीय केन्द्रों तथा इसके द्वारा समर्पित समाज विज्ञान

अनुसंधान संस्थाओं को निःशुल्क वितरण जारी रखा जिनके लिए परिषद् प्रकाशन सहायता देती है। ब्यौरे परिशिष्ट 8 में दिए गए हैं।

4.13 परिषद् को वर्ष के दौरान विभिन्न प्रकाशनों से 1,38,510.57 रु० की रायल्टी प्राप्त हुई। वर्ष के दौरान परिषद् के प्रकाशनों की बिक्री से 54,452.72 रु० की राशि प्राप्त हुई।

प्रकाशन अनुदान

4.14 प्रकाशन अनुदानों की संशोधित योजना के अनुसार डाक्टोरल शोध निबन्धों, अनुसंधान रिपोर्टों, सेमिनार/सम्मेलन पत्रों के संग्रह, ग्रन्थसूची और विश्वकोष जैसे सन्दर्भ ग्रन्थों के लिए प्रकाशन अनुदानों पर विचार किया जाता है। वर्ष के दौरान 16 अनुसंधान रिपोर्टों और 20 डाक्टोरल शोध निबन्धों के लिए इस प्रकार के अनुदान दिए गए। इनकी सूची परिशिष्ठ में दी गई है।

V

आंकड़ा अभिलेखागार

5.01 आंकडा अभिलेखागार का एक महत्वपूर्ण कार्य भा० सा० वि० अ० प० की निधियों से चल रही परियोजनाओं द्वारा उत्पन्न आंकडों को प्राप्त व उन्हें व्यवस्थित करना तथा गौण विश्लेषणों के लिए उन्हें इच्छुक अनुसंधानकर्ताओं के बीच प्रसारित करना है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न अनुसंधान और सरकारी एजेन्सियों द्वारा एकत्रित प्रासंगिक आंकडे भी प्राप्त करने के लिए भी प्रयास किए जाते हैं।

5.02 वर्ष 1984-85 के दौरान जिन परियोजना निदेशकों ने अपनी-अपनी परियोजनाएं पूरी कर ली थीं उनसे परियोजनाओं में प्रयुक्त किए गए आंकडों की किस्म के बारे में जानकारी देने का अनुरोध किया गया। इस सूचना की जांच-पड़ताल करने पर 23 आंकडे सेट प्राप्ति योग्य पाए गए। तथापि, आलोच्य वर्ष के दौरान केवल आठ आंकडा सेट प्राप्त किए जा सके। फिलहाल अन्य परियोजना निदेशकों के साथ बातचीत चल रही है। प्राप्त किए गए आंकडा सेटों की सूची परिशिष्ट 9 में देखी जा सकती है।

आंकडा योजना

5.03 आंकडों की गौण विश्लेषण के लिए उन्हें पुनः प्राप्त करने तथा उपयोगार्थ सुकर बनाने के उद्देश्य से प्राप्त किए गए आंकडों को मशीन पाठ्य रूप में व्यवस्थित करने तथा उन्हें प्रलेखित करने की आवश्यकता है। इस प्रक्रिया में, आंकडों के साथ अध्येताओं द्वारा भेजे गए प्रलेखों की जांच-पड़ताल, गुम आंकडा कार्डों/रिकार्डों, वाइल्ड कोडों का निरीक्षण, संहिता पुस्तकों और भिन्नताओं, आंकडों की मात्रा, व्यापकता का उल्लेख करते हुए तदनुरूपी प्रलेखन का मानकीकरण और डिजाइन के नमूने तैयार करना शामिल है। 1984-85 के दौरान व्यवस्थित 12 आंकडा सेटों की एक सूची परिशिष्ट 10 में देखी जा सकती है।

भारतीय उद्योग के सम्बन्ध में सूचना आधार

5.04 हाल ही में भा० सा० वि० अ० प० ने औद्योगिक लागत और मूल्य ब्यूरो, भारतीय औद्योगिक विकास बैंक तथा योजना आयोग के साथ मिलकर, "भारतीय उद्योग के सम्बन्ध में सूचना आधार" संकलित करने के लिए दिल्ली अर्थशास्त्र स्कूल के संकाय के कुछ युवा अध्येताओं के एक दल, "नीति दल" की एक परियोजना के लिए धन दिया है। इस परियोजना से भारतीय उद्योग में मांग और पूर्ति की बाधाओं का अनुमान लगाने के लिए एक इकानामिट्रिक माडल का निर्माण करने में मदद मिल सकती है। औद्योगिक लागत तथा मूल्य ब्यूरो इस परियोजना की एक केन्द्रीय एजेन्सी के रूप में काम करेगा। इस परियोजना पर, कम्प्यूटर टाइम की लागत के अलावा पांच लाख रुपए का खर्च होने का अनुमान है, कम्प्युटर की व्यवस्था योजना आयोग द्वारा की जाएगी। आशा है कि यह परियोजना एक वर्ष में पूरी हो जाएगी और इच्छुक अध्येता इसके विकसित हो जाने पर भा० सा० वि० अ० प० आंकडा अभिलेखागार के माध्यम से इस आंकडा आधार का उपयोग कर सकते हैं।

आंकडा संसाधन में मार्गदर्शी तथा परामर्शी सेवाएं

5.05 इस योजना का उद्देश्य सामाजिक विज्ञान अनुसंधानकर्ताओं को उनकी आंकडा संसाधन समस्याओं के निपटान में मदद देना है। योजना के अन्तर्गत, अनुसंधान प्रस्ताव तैयार करने, आंकडा संग्रह के लिए अनुसंधान साधन तैयार करने, डिजाइनों के नमूने लेने, संहिता पुस्तकें/कार्ड डिजाइन तैयार करने, आंकडा विश्लेषण तथा कम्प्युटर कार्यक्रम तैयार करने के लिए उपयुक्त सांख्यिकी तकनीकों का चयन किया जाता है। इन सुविधाओं का उपयोग आंकडा अभिलेखागार के अलावा देश के विभिन्न भागों की आठ अन्य अनुसंधान संस्थाओं के माध्यम से किया जा सकता है। वर्ष के दौरान जिन अध्येताओं ने इन सुविधाओं का लाभ उठाया उनकी सूची परिशिष्ट 5.02 में देखी जा सकती है।

भारत में समाज विज्ञानियों का राष्ट्रीय रजिस्टर

5.06 1983 में समाज विज्ञानियों का राष्ट्रीय रजिस्टर प्रकाशित करने के बाद भा० सा० वि० अ० प०, रजिस्टर को अद्यतन बनाने के प्रयोजन से "समाज विज्ञानी" की परिचालन भाषा पर पुन: विचार कर रही है और भविष्य में समाज विज्ञानियों से प्रासंगिक सूचना के संग्रह के लिए उपयोग किए

जाने वाले प्रोफार्मा को भी संशोधित कर रही है। ये प्रश्न अभी भी भा० सा० वि० अ० प० के विचाराधीन है। निर्णय लिए जाने के बाद संशोधित प्रोफार्मा को मुद्रित कराया जाएगा और राष्ट्रीय रजिस्टर से अगले संस्करण के लिए सूचना भेजने के वास्ते समाज विज्ञानियों से सम्पर्क किया जाएगा। इसी बीच 1,000 से अधिक समाज विज्ञानियों के नाम, जिन्होंने इस सम्बन्ध में आंकडा अभिलेखागार से सम्पर्क किया था, इस प्रयोजनार्थ तैयार की जा रही डाक सूची में शामिल कर लिए गए हैं।

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

5.07 आंकडा अभिलेखागार ने वर्ष के दौरान समाज विज्ञान अनुसंधान में कम्प्युटर अनुप्रयोग के सम्बन्ध में दो प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्रायोजित किए। पहले प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन सामाजिक अध्ययन केन्द्र, सूरत द्वारा किया गया था। इस पाठ्यक्रम में देश के विभिन्न भागों के पन्द्रह प्रतिनिधियों ने भाग लिया। समाज विज्ञान आंकडों का विश्लेषण करने के लिए कम्प्युटर कार्यक्रमों का डिज़ाइन तैयार व उपयोग करने के अलावा प्रतिनिधियों को आंकडा आयोजन के सिद्धान्तों, उन्हें संहितावद्ध करने, आंकडों के अन्तरण के लिए विभिन्न प्रकार के निवेश प्रतिफल माध्यमों का उपयोग करने के लाभ, भण्डारण, फाइल संगठन तथा संसाधन के बारे में बताया गया।

5.08 "एच० आई० बी० ए० एस० आई० सी०" कम्प्युटर कार्यक्रम में दूसरे प्रशिक्षण पाठ्क्रम का आयोजन गणितीय विज्ञान केन्द्र, त्रिवेन्द्रम द्वारा किया गया था। इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में 12 अनुसंधानकर्ताओं ने भाग लिया।

कम्प्युटर सुविधाएं

5.09 राष्ट्रीय सूचना केन्द्र ने भा० सा० वि० अ० प० के परिसर में एक एल० एस० आई० 4/90 कम्प्युटर की स्थापना की है और एन० आई० सी० कम्प्युटर कड़ी के एक भाग के रूप में अपने सी० डी० सी० साइबर 720/170 को एक इन्टरएक्टिव सी० आर० टी० टर्मिनल की भी व्यवस्था की है। ये सुविधाएं मुख्यत: आंकडा अभिलेखागार द्वारा अपने आंकडा आयोजन/संसाधन समस्याओं के लिए उपयोगार्थ हैं तथापि, फालतू क्षमता का उपयोग अदायगी के आधार पर भा० सा० वि० अ० प० समर्थित संस्थाओं, परियोजना निदेशकों,

फैलो तथा अन्य अनुसंधानकर्ताओं द्वारा प्राथमिकता के इसी क्रम में किया जा सकता है ।

5.10 वर्ष के दौरान, एल० एस० आई 4/90 पद्धति पर 150 घंटे के कम्प्युटर समय का उपयोग किया गया। इसके अतिरिक्त, दिल्ली विश्वविद्यालय कमप्यूटर केन्द्र में आई० बी० एम० 360 पर तथा सामाजिक विकास परिषद्, नई दिल्ली में आर० ई० वाई ए० डी० 1030 पर लगभग 7 घंटे के कम्प्युटर का उपयोग किया गया। वर्ष के दौरान लगभग 75,000 आंकड़े रिकार्ड दर्ज किए गए तथा उनका सत्यापन किया गया ।

VI

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग

भारत-सोवियत सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

6.01 समाज विज्ञानों में सहयोग के लिए संयुक्त भारत-सोवियत आयोग की एक पूर्ण बैठक 16 जून 1984 को मास्को में आयोजित की गई। बैठक से पहले 13 से 15 जून 1984 तक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर एक सेमिनार आयोजित किया गया। उपरोक्त बैठक के लिए भारतीय प्रतिनिधिमण्डल में निम्नलिखित सदस्य शामिल थे।

1. प्रोफेसर एम०एन० श्रीनिवास,
   78, बेंसन क्रास रोड, बंगलौर,
2. प्रोफेसर रशीदुद्दीन खान,
   राजनीतिक अध्ययन केन्द्र,
   जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
3. प्रोफेसर मूनिस रज़ा,
   क्षेत्रीय विकास केन्द्र,
   जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
4. प्रोफेसर बरूण डे,
   सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र,
   10, लेक टेरेस, कलकत्ता
5. प्रोफेसर सी०एन० चक्रवर्ती,
   रूसी भाषा विभाग,
   जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
6. प्रोफेसर डी०डी० नरूला
   सदस्य-सचिव,
   भा०सा०वि०अ०प०

श्री रणजीत सिन्हा, समाज विज्ञान सम्पर्क अधिकारी, भा०सा०वि०अ०प०, प्रतिनिधिमण्डल के साथ गए।

6.02 संयुक्त आयोग ने इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कार्यान्वित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों पर चर्चा की और भावी कार्यक्रम की एक रूप रेखा तैयार की।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर सेमिनार

6.03 अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर सेमिनार में निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गई : (1) अन्तर्राष्ट्रीय नीति तथा राजनीतिक स्थिति : एक परिप्रेक्ष्य, (2) शस्त्र वार्ता, नए शास्त्रों का विकास और अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा पर उनके प्रभाव की वर्तमान स्थिति, (3) अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था की सम्भावनाएं, विशेष रूप से समाजवादी ब्लाक और विकासशील देशों पर उसके प्रभाव की सम्भावनाओं के संदर्भ में (4) पश्चिम एशिया, दक्षिण पश्चिम एशियाई क्षेत्र और हिन्द महासागर क्षेत्र में घटनाएं और (5) शेष एशिया प्रशान्त क्षेत्र में घटनाओं का एक परिप्रेक्ष्य।

6.04 अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर सेमिनार में निम्नलिखित अध्येताओं ने भाग लिया :

श्री के० सुब्रमण्यम
निदेशक,
रक्षा अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान,
नई दिल्ली

प्रोफेसर वी०पी० दत्त,
चीनी तथा जापानी अध्ययन विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

ए०के० दामोदरन
परामर्शदाता, मंत्रिमण्डल सचिवालय,
बीकानेर हाउस उपभवन, शाहजहां रोड,
नई दिल्ली

श्री टी०एन० कौल
भूतपूर्व विदेश सचिव, भारत सरकार,
नई दिल्ली

प्रोफेसर के०डी० सिंह
पश्चिम एशियाई अध्ययन केन्द्र,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

श्री निखिल चक्रवर्ती
सम्पादक, मेनस्ट्रीम,
एफ 24, भगत सिंह मार्किट, नई दिल्ली

प्रोफेसर एस० गोपाल
97, डा० राधाकृष्णन रोड, मद्रास

6.05 जैसा की पहले बताया जा चुका है, सामाजिक विज्ञानों में सहयोग के लिए संयुक्त भारत-सोवियत आयोग के तत्वाधान में "साहित्य और समाज के बीच परस्पर-सम्बन्ध" पर एक संयुक्त सेमिनार, जो मूलतः 1981 में आयोजित होना था, 3 से 6 अक्तूबर, 1984 तक लेनिनग्राद में आयोजित किया गया। इस सेमिनार में जिन भारतीय विद्वानों ने भाग लिया तथा जो पत्र पढ़े गए उनका ब्यौरा नीचे दिया गया है :

1. प्रोफेसर पी०सी० जोशी, आर्थिक विकास संस्थान, दिल्ली, "उपन्यास सामाजिक विरोध के रूप में—मुन्शी प्रेमचन्द के उपनिवेशी-विरोधी कृषक"।
2. डा० मुल्क राज आनन्द, 25, कुफे परेड, बम्बई, "कठिनाइग्रस्त चेतना (लिओं टालस्टाय में जीवन और साहित्य का रिश्ता)"।
3. डा० कल्पना साहनी खोसला, रूसी अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "आश्चर्यजनक-जीवन का रूपक: हाल ही के रूसी साहित्य में कुछ प्रवृत्तियां"।
4. डा० देबेसरे, सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कलकत्ता, "रविन्द्र नाथ ठाकुर की लघु कहानियां 1891-1895, विरोधलंकार के रूप में वास्तविकता"।
5. प्रोफेसर इन्द्रा देवा, रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर, "भारत के लोक साहित्य में सामाजिक वास्तविकता और विरोध"।
6. प्रोफेसर सिसिर कुमार दास, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, "कवि और लोग: मध्यकालीन भारतीय साहित्य"।

7. प्रोफेसर योगेन्द्र सिंह, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "सामाजिक आलोचना के रूप में साहित्य भारत में समकालीन उपन्यासों के सम्बन्ध में एक मत"।
8. डा० नेमीचन्द्र जैन, नई दिल्ली, "आधुनिक भारतीय नाटक में एक विषय के रूप में हिंसा"।
9. श्री डी० जयकान्तन, मद्रास, "महान अक्तूबर क्रान्ति और महान तमिल कवि महाकवि भारती का ज्ञान"।
10. प्रोफेसर रशीदुद्दीन खान, मूनिस रज़ा, बरूण डे, एम० एन० श्रीनिवास, सी० एन० चक्रवर्ती और डा० डी० डी० नरूला, सदस्य-सचिव भा० सा० वि० अ० प० ने भी सेमिनार में भाग लिया।

6.06 आर्थिक विकास संस्थान, दिल्ली के प्रोफेसर टी० एन० मदान, और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रोफेसर आर० के० जैन, जिन्होंने पहले क्रमश: 'आशा और निराशा : समकालीन भारतीय उपन्यास में सामाजिक विरोध के रूप मे दो अभिव्यक्तियां' और 'उत्तरी भारत में मुस्लिम अभिज्ञान : हिन्दी में आजादी के बाद के क्षेत्रीय उपन्यास—आधा गांव के विशेष संदर्भ में एक अन्वेषण' विषय पर पत्र प्रस्तुत किए थे, उसी समय अन्य कार्यों में व्यस्त रहने के कारण सेमिनार में भाग नहीं ले सके।

6.07 सेमिनार में दस सोवियत विद्वानों ने भाग लिया जिनके नाम और पत्रों के शीर्षक नीचे दिए गए हैं—

1. एस० ए० नेबोल्सिन, मास्को, 'ए० एस० पुश्किन के इयूजेनी उनेगिन में सामाजिक समालोचना'।
2. यू० ए० गुरेलनिक, मास्को, 'एन० जी० त्येरनिशेवस्की' 'व्हाट टु डु' उपन्यास और रूसी क्रान्तिकारी आंदोलन'।
3. ए० एस० कुरिलेव, मास्को, 'अठारहवीं सदी के अन्त में-उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम अर्ध के रूसी उपन्यासों में सामाजिक विरोध'।
4. ई० पी० चेलीशेव, मास्को, 'ऐतिहासिक स्थलाकृति और भारतीय तथा रूसी प्राचीन उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन'।
5. ए० एस० सुखोचेव, मास्को, 'सोवियत रूस में भारतीय उपन्यासों का अध्ययन : बुनियादी दृष्टिकोण और परिणाम'।
6. वी० आई० बालिन, लेनिनग्राद, 'भारतीय उपन्यास में प्रेमचंद, गांधी और टालसटाय का एक तुलनात्मक अध्ययन'।

7. जी० एम० फ्रिडलेण्डर, लेनिनग्राद, 'डोस्तोयेवस्की के उपन्यासों में सामाजिक विषय'।
8. एम० एल० लोटमन, लेनिनग्राद, 'तुरगनेव के उपन्यासों की विशेषताएं'।
9. जी० या० गलागन, लेनिनग्राद, 'लिओ टालस्टाय के उपन्यासों में विचारधारा तथा नैतिकता'।
10. वी० ए० तुलीमानेव, लेनिनग्राद, 'हर्तजन के उपन्यास'।

सेमिनार में यह निर्णय किया गया कि साहित्य और सोसायटी के के बारे में ऐसे ही कार्यकलाप निरन्तर आधार पर प्रोत्साहित किए जाएं।

विद्वानों द्वारा भ्रमण

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित सोवियत विद्वानों ने भारत का दौरा किया :

6.08 प्रोफेसर ई० चेलीशेव और प्रोफेसर ए० लिपरोवस्की, प्राच्य अध्ययन संस्थान, मास्को, जो अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन में भाग लेने के लिए आए थे, को 21 नवम्बर 1984 से सात दिन के लिए स्थानीय आतिथ्य प्रदान किया गया।

6.09 डा० ओ० वी० मलयारोव, वरिष्ठ अनुसंधान फैलो, प्राच्य अध्ययन संस्थान, मास्को, ने तुलनात्मक आर्थिक विकास की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए 12 जनवरी से 12 मार्च, 1985 तक दो महीने की अवधि के लिए भारत का दौरा किया। भारत में अपने प्रवास के दौरान उन्होंने अनेक नगरों—अहमदाबाद, बम्बई, हैदराबाद, जयपुर, मद्रास और पुणे में—अनुसंधान संस्थानों का दौरा किया और विद्वानों से भेंट की। उनके प्रवास की पूरी अवधि के लिए उन्हें स्थानीय आतिथ्य प्रदान किया गया और भा० सा० वि० अ० प० ने उनकी आन्तरिक यात्रा का खर्च भी वहन किया।

विकास में विकल्पों के सम्बन्ध में भारत-डच कार्यक्रम
(आई० डी० पी० ए० डी०)

6.10 2 और 3 मई 1984 को एक सेमिनार आयोजित किया गया जिसमें आई डी पी ए डी के प्रथम चरण में कार्यान्वित भारत में लघु उद्योगों के बारे में चार परियोजनाओं की कुछ अन्तिम और अन्तरिम रिपोर्टों पर चर्चा की

गई । इसमें परियोजना विदेशकों तथा इस विषय के कुछ अन्य प्रमुख विशेषज्ञों ने भाग लिया ।

6.11 इस अवधि के दौरान, आई डी पी ए डी के दूसरे चरण के लिए कार्य योजना भाग-1 के अन्तर्गत अनुमोदित निम्नलिखित परियोजनाएं चल रही थीं :

1. 'विकासशील देशों के बीच निर्मित वस्तुओं में व्यापार की संभावनाएं' —हंस लिनेमन ।
2. 'श्रम के अन्तर्राष्ट्रीय विभाजन में भारत की स्थिति के संबंध में बहुराष्ट्रिक निगमों का प्रभाव'—एस० के० गोयल और गार्ड जुन्ने, भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली ।
3. 'इलैक्ट्रॉनिक्स उद्योग के विश्वव्यापी पुनर्गठन के सम्बन्ध में माइक्रो इलैक्ट्रानिक्स का प्रभाव—तीसरे विश्व के लिए निहितार्थ'—डायतेर इर्नस्ट, विकासशील देशों में समाज विज्ञान अनुसंधान के लिए संस्थान, दि हेग, दि नीदरलैण्ड्स ।
4. 'नारियल रेशा उद्योग—नीदरलैण्ड और भारत के बीच प्रौद्योगिकी अन्तरण का एक मामला अध्ययन'—मैथ्यू कुरियन, अगस्त 1985 में प्रारम्भ होने वाला, क्षेत्रीय विकास अध्ययन संस्थान, कोट्टयम ।
5. 'विकासशील देशों में स्थिरता नीतियां'—नीरा गोयल तथा एम० एल० अग्रवाल, कृषि-अर्थशास्त्र केन्द्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।
6. 'पूंजी संचयन और वर्ग निर्माण'—जान ब्रेमन, इरेस्मस विश्व-विद्यालय, रोटरडम ।
7. 'ग्राम परिवर्तन की प्रक्रिया में ग्राम प्रौद्योगिकी कार्यक्रम के प्रबन्ध तथा प्रभाव : वैकल्पिक दृष्टिकोणों का एक तुलनात्मक अध्ययन'—ई० डब्ल्यू० होमेस, ट्वन्टे विश्वविद्यालय, दि नीदर-लैण्ड्स ।
8. ग्रामीण परिवर्तन, 'कृषक सम्भावना तथा ग्रामीण संस्थाओं का योगदान—दक्षिण कोरिया तथा तटीय आन्ध्र प्रदेश में धान अर्थ-शास्त्र प्रधान का एक तुलनात्मक अध्ययन'—आर० एम० मोहन राव और जे० नीलन, प्रयुक्त अर्थशास्त्र और सहयोग विभाग आन्ध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर ।

9. 'विकास में चुनी हुई अन्तर-क्षेत्रीय कड़ियों की भूमिका—भारत, इन्डोनेशिया और जापान के तुलनात्मक अध्ययन का एक प्रस्ताव' —एस० मुण्डले, अक्तूबर 1985 में शुरू होने वाला—राष्ट्रीय लोक वित्त तथा नीति संस्थान, नई दिल्ली।
10. 'एशियाई अर्थशास्त्र के लोगों में ग्रामीण परिवर्तन के लिए नीति के रूप में लघु कृषि विकास'—एस० आचार्य, टाटा समाज विज्ञान संस्थान, बम्बई।
11. 'यू० के० नीदरलैण्ड और फ्रांस में यूरोपीय वामपंथी दलों के सामाजिक और आर्थिक कार्यक्रमों तथा उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन'—1962-1982'—पार्थासारथी गुप्ता।

6.12 आई डी० पी० ए० डी० के प्रथम चरण में किए गए 18 अध्ययनों में से 12 अध्ययनों के सम्बन्ध में अन्तिम रिपोर्ट प्राप्त हो गई।

6.13 तीन विशिष्ट क्षेत्रों, अर्थात नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था, एशियाई ग्राम परिवर्तन के तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य और यूरोपीय सोसायटी में हाल ही की प्रवृत्तियों पर भारतीय विद्वानों से अक्तूबर तक बड़ी संख्या में प्रस्ताव प्राप्त हो गए थे। 7 और 8 अक्तूबर को दि हेग में हुई अपनी बैठक में संयुक्त समिति ने चर्चा का पहला दौर पूरा किया जिसमें उन परियोजनाओं की सूची तैयार की गई जिन पर और आगे विचार किया जा सकता है। मार्च में, इन परियोजनाओं में से अनेक को संयुक्त समिति ने अप्रैल 1985 की अपनी भावी बैठक में विचार किए जाने के लिए चुना।

6.14 अक्तूबर में अपनी बैठक में संयुक्त समिति ने आई० डी० पी० ए० डी० के० प्रथम चरण में पूरे किए गए अध्ययनों में से कुछेक को प्रकाशित करने की प्रक्रिया को भी अनुमोदित कर दिया। इसने सिफारिश की कि स्त्री अध्ययनों के सम्बन्ध में पूरी हुई सभी आठ परियोजनाओं को दो खण्डों, अर्थात, "खाद्य संसाधन" और "वस्त्र" के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाए जिनका सम्पादन क्रमशः डॉ० नीरा देसाई और डॉ० निर्मला बैनर्जी करेंगे। इस सम्बन्ध में तैयारियां प्रगति पर थीं।

6.15 इसी बैठक में संयुक्त समिति ने यह भी निर्णय किया कि इस कार्यक्रम की अध्येता आदान-प्रदान की योजना के अंतर्गत प्रायोजित अध्येताओं का पहले बताए गए निर्धारित किए जा चुके किसी भी क्षेत्र से सम्बन्धित अनुसंधान में सहयोग प्राप्त किया जाए। ऐसे अध्येताओं को डच भाषा में पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने की अनुमति दी जा सकती है यदि इससे सम्बन्धित अध्येता के

अनुसंधान कार्य में सुधार होने की सम्भावना हो। तथापि, ऐसे दौरे छः महीने की अवधि से अधिक नहीं होंगे। इसके अतिरिक्त, इसी प्रकार दौरों के अंतर्गत व्याख्यान देने तथा हालैण्ड में अन्य व्यावसायिक कार्यकलापों के लिए छः से आठ सप्ताह की अवधि के लिए वरिष्ठ अध्येताओं को भी आमंत्रित किया जा सकता है।

भारत-स्वीडिश कार्यक्रम

6.16. भा० सा० वि० अ० प० तथा विकासशील देशों के साथ अनुसंधान सहयोग के लिए स्वीडिश एजेन्सी (एस० ए० आर० ई० सी०) का प्रतिनिधित्व करने वाले दो प्रमुख दलों की एक बैठक 28 और 29 मई को स्टॉकहोम में हुई जिसमें भारत में एक संयुक्त संगोष्ठी आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

6.17 भा० सा० वि० अ० प० तथा एस० ए० आर० ई० सी० द्वारा औद्योगीकरण, संसाधन प्रबन्ध और शान्ति तथा विकास पर 19-20 फरवरी 1985 को नई दिल्ली में संयुक्त रूप से एक संगोष्ठी आयोजित की गई।

6.18 संगोष्ठी में निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गई।

(i) औद्योगीकरण की प्रक्रियाएं तथा प्रौद्योगिकीय विकल्प;

(ii) भूमि, वन और जल के विशेष संदर्भ में संसाधन प्रबन्ध; और

(iii) शान्ति तथा विकास। इन विषयों पर जिन विद्वानों (भारतीय तथा स्वीडिश) ने संगोष्ठी में भाग लिया और पत्र प्रस्तुत किए उनकी सूची नीचे दी गई है:

(क) औद्योगीकरण की प्रक्रिया तथा प्रौद्योगिकीय विकल्प

स्वीडिश पक्ष

डा० एम० आर० भगावन
बैजेर संस्थान, एस-104-05
स्टाकहोम बाक्स-500 05

डा० चार्ल्स एडक्विस्ट
सहायक प्रोफेसर
अनुसंधान नीति संस्थान
बाक्स-2017, एस०-220 02 लुंड

श्री स्टाफन जेकबसन
अनुसंधान फैलो
अनुसंधान नीति संस्थान
बाक्स-2017, एस०-220 02 लुंड

डा० क्रिस्टन गुन्नारसन
विश्वविद्यालय प्राध्यापक
आर्थिक इतिहास विभाग
फिंगटन-16, एस०-223 62 लुंड

भारतीय पक्ष

प्रोफेसर योगिन्दर के० अलघ
अध्यक्ष, औद्योगिक लागत तथा मूल्य ब्यूरो
सातवीं मंजिल, लोक नायक भवन
नई दिल्ली-110 003

डा० जी० आलम
वरिष्ठ अर्थशास्त्री, राष्ट्रीय प्रयुक्त, अर्थशास्त्र अनुसंधान परिषद्
परिसिला भवन, 11, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110 002

डा० एस० सी० भट्टाचार्य
औद्योगिक सलाहकार, औद्योगिक लागत तथा मूल्य ब्यूरो
सातवीं मन्जिल, लोकनायक भवन
नई दिल्ली-110 003

श्री एस० सी० ढींगरा
सलाहकार (तकनीकी)
भारी उद्योग विभाग, उद्योग भवन
नई दिल्ली-110001

प्रोफेसर एस० आर० हाशिम
अध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, कला संकाय
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा
बड़ौदा-390 002

श्री एस० एल० कपूर
संयुक्त सचिव, औद्योगिक विकास विभाग
उद्योग भवन, नई दिल्ली-110 001

डा० टी० एस० पपोला
निदेशक, गिरि विकास अध्ययन संस्थान
बी-42, निराला नगर
लखनऊ-226 007

प्रोफेसर रामप्रसाद सेन गुप्ता
आर्थिक अध्ययन तथा आयोजना केन्द्र, सामाजिक विज्ञान केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
न्यू महरोली रोड
नई दिल्ली-110 067

प्रोफेसर के. के. सुब्रमण्यम
विकास अध्ययन केन्द्र, आकुलम रोड, उल्लूर
त्रिवेन्द्रम-695 911

(ख) भूमि, वन और जल के विशेष सन्दर्भ में संसाधन प्रबन्ध

स्वीडिश पक्ष

डा० हंस एगन्युस
सहायक प्रोफेसर, मानव परिस्थिति विज्ञान विभाग
विकटोरीगटन-13 गोटेबर्ग-411 25

डा० जान इरिक गुसत्फसन
विश्वविद्यालय प्राध्यापक, रायल प्रौद्योगिकी संस्थान
एस०-100 44 स्टॉकहोम

डा० स्टाफन लिंडबर्ग
विश्वविद्यालय प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, फैंक
एस०-220 05 लुंड

डा० जान लुंडक्विस्ट
प्रोफेसर, पर्यावरण और सोसाइटी में जल विभाग
एस०-581 83 लिंकोपिंग

भारतीय पक्ष

डा० राजाम्मल पी० देवदास
निदेशक, श्री अविनाशीलिंगम गृह विज्ञान महिला कालेज
कोयम्बतूर-641 043

डा० बी० डी० धवन
आर्थिक विकास संस्थान, यूनिवर्सिटी एनक्लेव
दिल्ली-110 007

प्रोफेसर एम० वी० नादकर्णी
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष (परिस्थिति विज्ञान)
अर्थशास्त्र यूनिट सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन संस्थान
बंगलौर-560 072

डा० बी० डी० पाठक
अध्यक्ष, केन्द्रीय भूतल जल बोर्ड
कमरा नं०-236 कृषि भवन
नई दिल्ली-110 001

प्रोफेसर ए० वैद्यनाथन
मद्रास विकास अध्ययन संस्थान, 79 सेकण्ड मेन रोड,
अडयार, मद्रास-600 020

डा० एस० नगेन्द्र प्रसाद
परिस्थिति विज्ञान केन्द्र, भारतीय विज्ञान संस्थान,
बंगलौर-560 012

श्री बी०बी० वोहरा
45 लोदी एस्टेट, नई दिल्ली-110 003

(ग) शान्ति तथा विकास

स्वीडिश पक्ष

डा० बजोर्न हेट्टने
प्रोफेसर, शान्ति तथा संघर्ष विभाग
विकटोरिअगटन-30
एस-411 25 गोटेबर्ग

डा० मात्स फ्रीबर्ग
सहायक प्रोफेसर
शान्ति तथा संघर्ष विभाग
विकटोरिअगटन-30
एस-411 25 गोटेबर्ग

डा० हाकम विबर्ग
प्रोफेसर, समाज शास्त्र विभाग
फैक, एस-200 05 लुंड

डा० पीटर वालेन्सटीन
प्रोफेसर
शान्ति तथा संघर्ष अनुसंधान विभाग
बाक्स-276, एस 751 05, उप्पसले

सी०जी० थोरन्सटोर्म
एच०डब्ल्यू० अमेल एडेस्टम और मदाम एडेस्टम

श्रीमती अन्नाकारी बिल
प्रथम सचिव
स्वीडिश राजदूतावास विकास कार्यालय
नई दिल्ली

श्री एन्ड्रेस निस्ट्राम
श्री इरिक वोन बहर

भारतीय पक्ष

डा० ओ०एन० मेहरोत्रा
रक्षा अध्ययन संस्थान
सप्रू हाउस, बाराखम्भा रोड
नई दिल्ली-110 001

डा० एस०डी० मुनी
सह-प्रोफेसर
अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन स्कूल
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
न्यू महरौली रोड
नई दिल्ली-110 067

श्री के०के० नायर
(कृष्णा चेतन्य), आर-14, हौज खास
नई दिल्ली-110 016

श्री एम० नरसिम्हन
प्रिंसिपल
भारतीय प्रशासनिक स्टाफ कॉलेज, बेलाविस्ता
हैदराबाद-49

डा० नरेन्द्र सिंह
146, न्यू कैम्पस, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
न्यू महरौली रोड
नई दिल्ली-110 067

प्रोफेसर के० सुब्रह्मण्यम
निदेशक, रक्षा अध्ययन और विश्लेषण संस्थान
सप्रू हाउस, बाराखम्भा रोड
नई दिल्ली-110 001

प्रोफेसर एम० जुबेरी
अध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक तथा संगठन केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
न्यू महरौली रोड
नई दिल्ली-110 067

6.19 संगोष्ठी के बाद, भारत तथा स्वीडन के संयोजकों के मुख्य दल की एक बैठक 22 फरवरी 1985 को आयोजित की गई। यह निर्णय किया गया कि भा०सा०वि०अ०प० को संगोष्ठी में तीन खण्डों में प्रस्तुत पत्रों वाले तीन खण्डों के प्रकाशन की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। यह भी निर्णय किया गया कि तीन भारतीय संयोजक, अर्थात प्रोफेसर वाई०के० अलघ, श्री बी०बी० वोहरा और श्री के० सुब्रह्मण्यम क्रमश: तीन खन्डों के सम्पादक होंगे।

भारत-चीन कार्यक्रम

6.20 भारत-चीन सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् और चीनी समाज विज्ञान अकादमी, बैजिंग द्वारा 7 से 9 जनवरी 1985 तक नई दिल्ली में संयुक्त रूप से "भारत

तथा चीन का तुलनात्मक आर्थिक विकास" विषय पर एक सेमिनार आयोजित किया गया।

6.21 सेमिनार में चीन का प्रतिनिधित्व, विश्व अर्थ-व्यवस्था तथा राजनीति संस्थान, बैजिंग के निदेशक पु शान के नेतृत्व में एक 15 सदस्यीय प्रमिनिधिमण्डल ने किया। सेमिनार के लिए एक 17 सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व, विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम के के० एन० राज तथा मद्रास विकास अध्ययन संस्थान के ए० वैद्यनाथन ने संयुक्त रूप से किया।

6.22 दोनों पक्षों द्वारा सेमिनार में प्रस्तुत किए गए पत्रों के आधार पर चर्चा मुख्य रूप से निम्नलिखित प्रमुख विषयों पर हुई: (1) 'क्षेत्रीय भिन्नताओं के विशेष सन्दर्भ में कृषि विकास', (2) "जल प्रबन्ध", (3) "शहरी-ग्रामीण संतुलन", (4) "प्रौद्योगिकीय आत्मनिर्भरता और प्रोद्योगिकी नीति के लिए पद्धति", (5) "ऊर्जा क्षेत्र का प्रबन्ध", (6) "तीसरे विश्व देशों, विशेष रूप से भारत और चीन पर विश्व-अर्थ-व्यवस्था का प्रभाव", और (7) "भारत और चीन के आर्थिक विकास का तुलनात्तक मूल्यांकन"।

6.23 यह निर्णय किया गया कि सेमिनार में प्रस्तुत कागजों को भारत में प्रकाशित किया जाएगा। इस बात पर भी सहमति हुई कि अगला संयुक्त सेमिनार "आर्थिक तथा सामाजिक विकास के लिए आयोजना" पर बैजिंग में आयोजित किया जाएगा।

सेमिनार के लिए प्रतिनिधियों में निम्नलिखित विद्वान शामिल थे।

चीनी प्रतिनिधिमण्डल

1. पु शान
   प्रतिनिधिमण्डल के नेता
   निदेशक, विश्व अर्थव्यवस्था तथा राजनीति संस्थान
   चीनी समाज विज्ञान अकादमी (सी०ए०एस०एस०)
2. सुन पैजुन
   महा-सचिव
   उप निदेशक, दक्षिण एशियाई अध्ययन संस्थान (सी०ए०एस०एस०)
3. जिआंग हांभंग
   उप महासचिव
   विदेश कार्य ब्यूरो, सी०ए०एस०एस०

सदस्य

4. झंग पान
   उप महानिदेशक
   तकनीकी आर्थिक अनुसंधान केन्द्र, राज्य परिषद्
5. डोंग फुरेंग
   उप निदेशक, अर्थशास्त्र संस्थान, सी०ए०एस०एस०
   प्रधान, ग्रेडुएटे स्कूल, सी०ए०एस०एस०
6. लुओ चेंगक्सी
   अनुसंधान फैलो, विश्व अर्थव्यवस्था तथा राजनीति संस्थान
   सी०ए०एस०एस०
7. डेंग शौपेंग
   वरिष्ठ इंजीनियर, तकनीकी आर्थिक अनुसंधान केन्द्र
   राज्य परिषद्
8. हुआंग झैयाओ
   सह अनुसंधान फैलो
   औद्योगिक अर्थशास्त्र संस्थान, सी०ए०एस०एस०
9. चेन देझाओ
   अध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्ध विभाग
   विश्व अर्थव्यवस्था तथा राजनीतिक संस्थान, सी०ए०एस०एस०
10. झांग बाओमिन
    अध्यक्ष, वैज्ञानिक अनुसंधान तथा समन्वय प्रभाग
    कृषि अर्थशास्त्र संस्थान, सी०ए०एस०एस०
11. झांग मिगुई (एफ०)
    प्राध्यापक, दक्षिण एशियाई अध्ययन संस्थान, सी०ए०एस०एस०
12. झांग हौयी
    सहायक अनुसंधान फैलो, कृषि अर्थशास्त्र संस्थान, सी०ए०एस०एस०
13. चेन हुई (एफ०)
    सचिव
    उप मुख्य अफ्रीकी-एशियाई प्रभाग, विदेश कार्य ब्यूरो
    सी०ए०एस०एस०

14. लियु एक्सीनग्वु
दुभाषिया, सहायक अनुसंधान फैलो
राष्ट्रीयता अध्ययन संस्थान, सी०ए०एस०ए०

15. लु एक्सीहन
अनुसंधान सहायक, विश्व अर्थव्यवस्था और राजनीति संस्थान
सी०ए०एस०एस०

16. लडु चुआनग्यान
सह-प्रोफेसर, दक्षिण एशियाई राजनीति अध्ययन संस्थान

भारतीय प्रतिनिधिमण्डल

1. प्रोफेसर ए० वैद्यनाथन
मद्रास विकास अध्ययन संस्थान
79, सेकेण्ड मेन रोड, गांधीनगर, अडयार
मद्रास-600 020

2. प्रोफेसर वाई०के० अलघ
अध्यक्ष, औद्योगिक लागत और मूल्य ब्यूरो
सातवीं मंजिल, लोकनायक भवन, खान मार्किट, नई दिल्ली-110 003

3. प्रोफेसर ए०के० बागची
सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र
10, लेक टेरेस, कलकत्ता-700 029

4. प्रोफेसर जी०एस० भल्ला
अध्यक्ष, कृषि मूल्य आयोग
कृषि भवन
नई दिल्ली-110 001

5. श्री नितिन देसाई
सलाहकार, योजना आयोग, योजना भवन, संसद मार्ग
नई दिल्ली-110 001

6. प्रोफेसर गार्गी दत्त
पूर्व एशियाई अध्ययन केन्द्र
अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110 067

7. प्रोफेसर पी०सी० जोशी
   आर्थिक विकास संस्थान, विश्वविद्यालय एनक्लेव
   दिल्ली-110 007
8. डा० विजय एल० केलकर
   सलाहकार, आर्थिक नीति तथा आयोजना
   पैट्रोलियम विभाग, ऊर्जा मंत्रालय, शास्त्री भवन
   नई दिल्ली-110 001
9. डा० विनोद के० मेहता
   भा०सा०वि०अ०प०, 35 फिरोज़शाह रोड
   नई दिल्ली-110 001
10. प्रोफेसर मनोरंजन मोहन्ती
    राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
    दिल्ली-110 007
11. डा० दीपक नैय्यर
    आर्थिक सलाहकार, वाणिज्य मंत्रालय, उद्योग भवन
    नई दिल्ली-110 011
12. प्रोफेसर सुरेन्द्र जे० पटेल
    भ्रमणकारी प्रोफेसर
    भारतीय प्रबन्ध संस्थान, अहमदाबाद-380 015
13. प्रोफेसर के०एन० राज
    विकास अध्ययन केन्द्र, आकुलम रोड, उल्लूर
    त्रिवेन्द्रम-695 011
14. श्री टी०एल० शंकर
    निदेशक, लोक उद्यम संस्थान, विश्वविद्यालय कैम्पस
    हैदराबाद-500 007
15. डा० वी० सिद्धार्थ
    सलाहकार, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद, रफी मार्ग
    नई दिल्ली-110 001
16. प्रोफेसर के०के० सुब्रामण्यन
    विकास अध्ययन केन्द्र, उल्लूर, आकुलम रोड
    त्रिवेन्द्रम-695 011

17. प्रोफेसर परवीन विसारिआ
निदेशक
गुजरात क्षेत्र आयोजना संस्थान, न्यु ब्रह्मक्षत्रीय सोसायटी
प्रीतमराय मार्ग, अहमदाबाद-380 006

18. श्री बी०बी० वोहरा
45, लोदी एस्टेट, नई दिल्ली-110 003

भा०सा०वि०अ०प० सचिवालय

19. प्रोफेसर डी०डी० नरूला,
20. डा० (श्रीमती) आर० बरमन चन्द्र,
21. डा० (श्रीमती) एस० राधाकृष्णन
22. डा० टी०के० मजूमदार

विशिष्ट अतिथि

6.24 स्त्री, समानता, विकास और शान्ति के लिए संयुक्त राष्ट्र दशक विश्व सम्मेलन, कोपेनहेगन के भूतपूर्व महासचिव डा० लुसिले माथुरिन मायर ने 12 से 29 दिसम्बर 1984 तक भारत का दौरा किया। भारत में अपने प्रवास के दौरान उन्होंने "अन्तर्राष्ट्रीय स्त्री दशक: एक कच्चा चिट्ठा" विषय पर तीसरा जे०पी० नायक स्मारक व्याख्यान दिया। परिषद् ने "स्त्री और विकास" पर एक चर्चा भी आयोजित की, जिसकी अध्यक्षता भी उन्होंने ही की थी। उन्होंने बम्बई और अहमदाबाद का भी दौरा किया जहां वे स्त्री अध्ययनों के क्षेत्र में कार्यरत अनेक विद्वानों से मिली।

6.25 आर्थिक तथा सामाजिक अनुसंधान परिषद्, यू०के० के अध्यक्ष प्रोफेसर सर डगलस हेग तथा लेडी हेग ने 21 दिसम्बर 1984 से 6 जनवरी 1685 तक भारत का दौरा किया। सर डगलस हेग को, जिन्होंने आगरा में वार्षिक भारतीय आर्थिक सम्मेलन में भाग लेना था, परिषद् के अतिथि के रूप में एक सप्ताह बिताने के लिए आमंत्रित किया गया। बाद में आर्थिक सम्मेलन स्थगित हो गया था किन्तु अतिथि हमारे निमंत्रण पर दिल्ली, जयपुर और आगरे का दौर किया जहां वह "परस्पर" हित के विचारों के आदान-प्रदान के लिए बड़ी संख्या में विद्वानों से मिले।

6.26 यू०के० की श्रीमती जीन फ्लाउड ने परिषद् के अतिथि के रूप में 23 मार्च से 24 अप्रैल 1985 तक भारत का दौरा किया। अपने कार्यक्रम के एक भाग के रूप में उन्होंने बम्बई, अहमदाबाद, मद्रास, बंगलौर, हैदराबाद, उदयपुर तथा जयपुर का दौरा किया जहां उन्होंने अनुसंधान संस्थानों के ऐसे ही विद्वानों के साथ निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की: (1) सामाजिक सिद्धांत में हाल ही की घटनाएं, (2) मनःचिकित्सा तथा कानून, और (3) यू०के० में उच्च शिक्षा के कुछ महत्वपूर्ण पहलू।

6.27 हंगरी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध संस्थान के डा० अत्तिला अघ तथा श्रीमती मगदोलना नेगी टॉथ ने मार्च 1985 में भारत का दौरा किया। वे एक सप्ताह तक परिषद् के अतिथि थे जिस अवधि में उन्होंने दिल्ली, हैदराबाद, बंगलौर, बम्बई और अहमदाबाद का दौरा किया।

भारत-फ्रांस सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

फ्रांसिसी विद्वानों का भारत दौरा

6.28 सेन्टर नेशनल डे ले रीसर्च साइन्टीफिक, पेरिस में अनुसंधान फैलो प्रोफेसर मार्क गाबेरिउ तथा डी० इटुडेस इकोले डेस हौटेस इटुडेस आन साइंसिज, पेरिस के निदेशक प्रोफेसर डी० लोम्बार्ड ने 22 नवम्बर से 23 दिसम्बर, 1984 तक भारत का दौरा किया। भारत के दौरे का उनका मुख्य उद्देश्य भारतीय इस्लाम के सामाजार्थिक पहलुओं का अध्ययन करना तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के विशेष संदर्भ में क्षेत्र अध्ययनों से सम्बन्धित सूचना प्राप्त करना था।

दोनों विद्वानों ने बम्बई, अहमदाबाद, हैदराबाद, लखनऊ और नई दिल्ली में विभिन्न अनुसंधान संस्थानों के प्रमुख समाज विज्ञानियों के साथ विचार-विमर्श किया।

6.29 मेसन डेस साइंसिज डे एल होम (एम० एस० एच०), पेरिस में भारत-फ्रांस कार्यक्रम के लिए सलाहकार डा० जे०, रसीन ने, जो फिलहाल इंस्टिट्यूट फ्रान्सिस डे पाण्डिचेरी में हैं, परिषद् के अतिथि के रूप में 3 से 14 दिसम्बर, 1984 तक दिल्ली का दौरा किया। दिल्ली में अपने प्रवास के दौरान डा० रसीन ने एम० एस० एच० पेरिस की ओर से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के साथ चर्चा की। इसके अतिरिक्त उन्होंने नीति अनुसंधान केन्द्र, विकासशील सोसायटी अध्ययन केन्द्र, योजना आयोग, भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली में विद्वानों से भेंट की।

6.30 फाउन्डेशन नेशनल डे साइंसिज, पालिटिक्स, पेरिस में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्र में अनुसंधान एसोशिएट डा० (श्रीमती) वायलेटे ग्राफ ने 3 फरवरी से 6 मार्च, 1985 तक भारत का दौरा किया। अपने प्रवास के दौरान उन्होंने "भारतीय मुस्लिमों" के सम्बन्ध में काम कर रहे भारतीय समाज विज्ञानियों के साथ चर्चा की। श्रीमती ग्राफ ने नई दिल्ली, लखनऊ, बम्बई, पटना, बंगलौर, हैदराबाद, त्रिवेन्द्रम और कलकत्ता में विभिन्न केन्द्रों का दौरा किया।

6.31 भारतीय तथा दक्षिण एशियाई अध्ययन केन्द्र, पेरिस की मुख्य पुस्तकाध्यक्ष डा० (श्रीमती) पोलिस्सीयर बीट्रीस ने विश्वविद्यालयों तथा संस्थानों के पुस्तकालयों से सम्पर्क करने तथा ऐसे प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं का पता लगाने के लिए जहां प्रलेखन सेवा अपर्याप्त है, 10 फरवरी से 7 मार्च, 1985 तक भारत का दौरा किया। श्रीमती बीट्रीस ने अहमदाबाद, बड़ौदा, बम्बई, बंगलौर, भोपाल, बम्बई, ग्वालियर, इन्दौर, मद्रास और पटना में विभिन्न केन्द्रों पर इस क्षेत्र के प्रमुख विद्वानों के साथ चर्चा की।

भारतीय विद्वानों द्वारा विदेशों का दौरा

6.32 भारतीय विद्वानों ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेने तथा अनुसंधान सामग्री एकत्र करने के लिए विभिन्न देशों का दौरा किया। इन विद्वानों तथा देशों का नाम और दौरों का उनका प्रयोजन परिशिष्ट 13 में दिया गया।

VII

भा० सा० वि० अ० प० क्षेत्रीय केन्द्र

7.01 प्रशासन को विकेन्द्रीकृत करने, सामाजिक विज्ञान अनुसंधान को व्यापक आधार प्रदान करने तथा सामाजिक विज्ञान अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के क्षेत्र की समाज विज्ञान संस्थाओं का सहयोग प्राप्त करने के परिषद् के कार्यक्रम के एक भाग के रूप में क्षेत्रीय केन्द्र स्थापित किए गए हैं। उनके मुख्य-मुख्य कार्य नीचे बताए गए हैं—

1. क्षेत्र में भा० सा० वि० अ० प० को प्रतिनिधित्व प्रदान करना तथा भा० सा० वि० अ० प० के कार्यक्रमों और संदेश को उस क्षेत्र के समाज विज्ञानियों के बीच प्रसारित करना;
2. क्षेत्र के समाज विज्ञानियों के विचार तथा समस्याओं को यथावश्यक कारवाई के लिए भा० सा० वि० अ० अ० के नोटिस में लाना;
3. क्षेत्र के अन्दर समाज विज्ञान अनुसंधान के प्रोत्साहन के लिए क्षेत्र के समाज विज्ञानियों के बीच समन्वय स्थापित करना; और
4. क्षेत्र के समाज विज्ञानियों तथा राष्ट्रीय समाज विज्ञानियों के बीच एक कड़ी कायम करना।

7.02 इस समय भा० सा० वि० अ० प० के छः क्षेत्रीय केन्द्र हैं। उनका कार्यक्षेत्र और स्थान निम्नलिखित हैं।

1. पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, कलकत्ता, जिसका कार्यक्षेत्र है—बिहार, उड़ीसा सिक्किम, त्रिपुरा, प० बंगाल और अन्डमान व निकोबार द्वीपसमूह का संघीय क्षेत्र।
2. उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, शिलांग, जिसका कार्यक्षेत्र है—अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम और नागालैण्ड।
3. उत्तर क्षेत्रीय केन्द्र, नई दिल्ली जिसका कार्यक्षेत्र है—मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और दिल्ली का संघीय क्षेत्र।

4. उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रीय केन्द्र, चण्डीगढ़ जिसका कार्य क्षेत्र है, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और काश्मीर, पंजाब और चन्डीगढ़ का संघीय क्षेत्र।
5. दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, हैदराबाद, जिसका कार्यक्षेत्र है—आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिल नाडु और लक्ष्यद्वीप तथा पाण्डिचेरी के संघीय क्षेत्र।
6. पश्चिमी क्षेत्रीय केन्द्र, बम्बई, जिसका कार्यक्षेत्र है—गुजरात, महाराष्ट्र और (i) गोआ, दमन व दीव तथा (ii) दादरा और नगर हवेली के संघीय क्षेत्र।

7.03 अनेक राज्य सरकारें तथा गोआ, दमन और दीव संघीय क्षेत्र की सरकार, भा० सा० वि० अ० प० क्षेत्रीय केन्द्रों के कार्यक्रमों और कार्यकलापों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान कर रही है। क्षेत्रीय केन्द्र निम्नलिखित सभी अथवा उनमें से कुछेक कार्यकलाप संचालित कर रहे हैं—

1. क्षेत्रीय भाषाओं में प्रलेखन और ग्रन्थसूची कार्य का प्रायोजन और/अथवा प्रोत्साहन;
2. विशेष प्रलेखन कार्य प्रारम्भ करना/प्रोत्साहित करना;
3. जहां केन्द्र स्थित हैं उन स्थानों की संस्थानों के पुस्तकालयों में समाज विज्ञान पत्रिकाओं/पत्रों के लिए सहायता प्रदान करना;
4. क्षेत्र के सेमिनार/कार्यशालाएं और सम्मेलन आयोजित करना और उनके आयोजन में सहायता प्रदान करना;
5. विख्यात विद्वानों द्वारा व्याख्यान आयोजित करना;
6. क्षेत्रीय भाषाओं में समाज विज्ञान पत्रिकाओं और समाज विज्ञानियों के क्षेत्रीय व्यवसायिक संगठनों की सहायता करना;
7. पुस्तकालय अथवा क्षेत्रकार्य के लिए स्थान का दौरा करने वाले अध्येताओं/छात्रों को सस्ती दरों पर (जहां सम्भव हो) आवास की व्यवस्था करना;
8. अनुसंधान कार्य के लिए पुस्तकालयों/संस्थाओं का दौरा करने के लिए अध्येताओं को अध्ययन अनुदान प्रदान करना;
9. अध्येताओं को फोटो कापी की सुविधाएं, विशेष रूप से पत्र-पत्रिकाओं आदि के चुने हुए लेखों की फोटो प्रतियां प्रदान करना; और

10. कोई अन्य कार्यकलाप जिससे क्षेत्र में समाज विज्ञान अनुसंधान को प्रोत्साहन मिले और अथवा जो भा०सा०वि०अ०प० द्वारा सौंपे जाएं ।

अवस्थापना तथा अनुसंधान समर्थन सुविधाएं

7.04 उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, शिलांग को छोड़कर विभिन्न क्षेत्रीय केन्द्रों ने भा०सा०वि०अ०प० तथा राज्य सरकारों द्वारा प्रदान की गई निधियों की मदद से पर्याप्त अवस्थापना तथा अनुसंधान समर्थन सुविधाओं का विकास किया है । इन सुविधाओं में होस्टल/अतिथि गृह सुविधाएं, अतिरिक्त पुस्तकालय स्थान, सम्मेलन कक्षों, सेमिनार कक्षों तथा प्रतिलेखन की सुविधाएं शामिल हैं । परिषद् ने, प्रतिलेखन सुविधाओं को आधुनिक बनाने का एक कार्यक्रम शुरू किया है और यह निर्णय किया है कि प्रत्येक केन्द्र को प्राथमिकता के आधार पर समुचित कटौती और परिवर्धन सुविधाओं के साथ एक प्लेन पेपर कापिअर उपलब्ध कराया जाए । उत्तर-पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, चण्डीगढ़, पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, बम्बई तथा दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, हैदराबाद ने प्लेन पेपर कापिअर पहले ही प्राप्त कर लिए हैं । इस प्रयोजना के लिए पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, कलकत्ता को धन स्वीकृत कर दिया गया है ।

7.05 परिषद् ने, भारतीय शिक्षा संस्थान, पुणे के सहयोग से पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, बम्बई में एक चार मंजिला भवन निर्मित किया है । एक विख्यात शिक्षाविद तथा भा०सा०वि०अ०प० के प्रथम सदस्य-सचिव स्वर्गीय श्री जे०पी० नायक की स्मृति में नए भवन का नाम जे०पी० नायक भवन रखा गया है । भवन का एक सुसज्जित सम्मेलन कक्ष है और उसमें बम्बई विश्वविद्यालय का शिक्षा विभाग तथा भारतीय शिक्षा संस्थान, पुणे का जी०डी० पारीख शैक्षिक अध्ययन केन्द्र स्थित है । उत्तर-पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, चन्डीगढ को कार्यालय एंव-अतिथि गृह सेमिनार परिसर के निर्माण के लिए 18.21 लाख रुपये का अनावर्ती अनुदान स्वीकृत किया गया । भवन का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है और सम्मेलन कक्ष, सेमिनार कक्ष तथा होस्टल-एवं अतिथिगृह को सज्जित करने के लिए केन्द्र को धन जारी किया जा रहा । पंजाब विश्वविद्यालय चन्डीगढ के पुस्तकालय भवन का विस्तार करने सम्बन्धी प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गई है ।

7.06 उत्तर क्षेत्रीय केन्द्र, नई दिल्ली को केन्द्र का कार्यालय, अन्तर-पुस्तकालय संसाधन केन्द्र और एक सम्मेलन तथा सेमिनार कक्ष बनाने में लिए

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के पुस्तकालय भवन के निर्माण के वास्ते 25.50 लाख रुपये स्वीकृत किए गए। निर्माण कार्य पूरा होने वाला है। दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, हैदराबाद को अपने स्टेकहाल को सज्जित करने के वास्ते दो लाख रुपये स्वीकृत किए गए।

कार्यकलाप

भाषाओं में प्रलेखन तथा ग्रन्थसूचीय सेवाएं

7.07 दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, हैदराबाद, तेलुगु तथा उर्दू में प्रलेखन और ग्रन्थसूचीय सेवाएं प्रदान कर रहा है। प्रमुख पुस्तकालयों में तेलुगु और उर्दू पुस्तकों की सटिट्पण ग्रन्थसूचियां संकलित की गई हैं और तेलुगु में 10,000 से अधिक व उर्दू में 3,800 शीर्षकों का संकलन किया गया है। केन्द्र ने आन्ध्र प्रदेश के सम्बन्ध में तेलुगु रचनाओं की एक सूची तथा चुनी हुई उर्दू पुस्तकों की एक सूची मिमिओग्राफ रूप में प्रकाशित की है। केन्द्र ने भारतीय मुसलमानों और भारतीय स्त्रियों के सम्बन्ध में प्रमुख ग्रन्थसूचियों का संकलन पूरा कर लिया है। पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, बम्बई, मराठी भाषा के लिए एक राष्ट्रीय केन्द्र के रूप में कार्य करता है और मराठी में प्रकाशित पांच समाज विज्ञान पत्रिकाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करता है। केन्द्र ने, मात्र महाराष्ट्र से सम्बन्धित किसी भी रूप व भाषा में समाज विज्ञानों में सभी शिक्षण और अनुसंधान सामग्री को शामिल करते हुए महाराष्ट्र की क्षेत्र अध्ययन ग्रन्थसूची तैयार करने के सम्बन्ध में भा० सा० वि० अ० प० के समाज विज्ञान प्रलेखन केन्द्र द्वारा प्रायोजित एक परियोजना प्रारम्भ की है। अभी तक 117 अंग्रेजी की 89 मराठी की प्रविष्टियां पूरी कर ली गई हैं।

7.08 उत्तर क्षेत्रीय केन्द्र, अंग्रेजी व हिन्दी के लिए एक राष्ट्रीय केन्द्र के रूप में कार्य करता है। यह 'सूचिका' प्रकाशित करता है, जो समाज विज्ञानों तथा क्षेत्र अध्ययनों में आवधिक साहित्य की एक मासिक अनुक्रमणिका है। 1971-82 अवधि के लिए मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के सम्बन्ध में दो ग्रन्थ-सूचियां पूरी की गईं। 1976-82 अवधि के लिए दक्षिण और पश्चिम एशिया सम्बन्धी एक विस्तृत ग्रन्थसूची पूरी कर ली गई है। पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, कलकत्ता ने बंगाल के सम्बन्ध में क्षेत्र अध्ययन ग्रन्थसूची परियोजना शुरू की है और राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता में उपलब्ध बंगला पुस्तकों के सम्बन्ध में आंकड़े एकत्र किए हैं। केन्द्र ने, इन्टर-डाक्युमेन्टेशन कम्पनी, स्विटजरलैण्ड द्वारा माइक्रोफिशे में तैयार की गई 1872 से 1951 तक की भारतीय जनगणना की रिपोर्टें प्राप्त कर ली हैं।

7.09 पंजाबी भाषा के लिए एक केन्द्र होने के नाते उत्तर-पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, चण्डीगढ़, पंजाबी भाषा में सामाजिक विज्ञान की पुस्तकों और पंजाबी पत्र-पत्रिकाओं में समाज विज्ञान सामग्री की एक संचयी अनुक्रमणिका तैयार करने का काम कर रहा है। उत्तरपूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, शिलांग को उत्तर-पूर्वी भारत के लिए क्षेत्रीय ग्रन्थसूची का काम सौंपा गया है।

प्रशिक्षण तथा प्रोन्नयन कार्यक्रम

7.10 युवा अध्येताओं, विशेष रूप से कालेज शिक्षकों के बीच अनुसंधान योग्यता का विकास करने व उनमें सुधार करने तथा उन्हें सामाजिक विज्ञानों में प्रवृत्तियों तथा अनुसंधान की नवीनतम पद्धतियों से अवगत कराने के उद्देश्य से क्षेत्रीय केन्द्र विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालय विभागों में अनुसंधान रीति विज्ञान में सेमिनार, कार्यशाला व आधारभूत पाठ्यक्रम आयोजित करते हैं। दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, हैदराबाद ने अनुसंधान विधियों के सम्बन्ध में दो अल्पकालिक आधारभूत पाठ्यक्रम आयोजित किए, पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, बम्बई ने अनुसंधान रीति विज्ञान के सम्बन्ध में एक कार्यशाला और उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, शिलांग ने उत्तर-पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग में एक अनुसंधान रीति विज्ञान कार्यशाला संचालित की।

दौरे तथा व्याख्यान

7.11 भा० सा० वि० अ० प० ने अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग कार्यक्रम के अन्तर्गत विनिमय कार्यक्रम के अधीन अनेक विदेशी विद्वान और प्रतिनिधिमंडल आमंत्रित किए। विभिन्न केन्द्रों ने इन विद्वानों को समाज विज्ञानियों के साथ चर्चा, बैठकों, सेमिनारों, और व्याख्यानों के लिए भारत के विख्यात विद्वानों को भी आमंत्रित किया। वर्ष के दौरान, दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र हैदराबाद द्वारा इन विद्वानों के 30, पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, बम्बई द्वारा आठ और पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, कलकत्ता द्वारा एक व्याख्यान आयोजित किया गया।

7.12 समाज विज्ञानों में पी एच डी शोध निबन्ध प्राप्त करने में क्षेत्रीय केन्द्र, भा० सा० वि० अ० प० के समाज विज्ञान प्रलेखन केन्द्र की सहायता करते हैं। पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र ने 9 शोध निबन्ध प्राप्त किए। दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, हैदराबाद ने मद्रास विकास अध्ययन संस्थान, मद्रास के सहयोग से दक्षिणी राज्यों के समाज विज्ञानियों की 14वीं बैठक आयोजित की। बैठक में, ई० जी० परमेश्वर द्वारा 'दक्षिण भारत में मनोविज्ञान में शिक्षण और अनुसंधान' पर समीक्षा निबन्ध और जे० महेन्दर रेड्डी द्वारा 'दक्षिण भारतीय

विश्वविद्यालयों में पी एच डी कार्यक्रम' पर एक सर्वेक्षण रिपोर्ट पर चर्चा की गई। उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, शिलांग ने 18-19 मार्च 1985 को समाज विज्ञानियों की तीसरी बैठक भी आयोजित की। बैठक में परिवर्तनशील खेती पर विचार किया गया।

7.11 इन कार्यक्रमों के अलावा, क्षेत्रीय केन्द्र, अपने-अपने न्यूज़लेटरों, बुलेटिनों और पत्रिकाओं के माध्यम से भा० सा० वि० अ० प० के विभिन्न कार्यक्रमों और अपने-अपने क्षेत्र में समाज विज्ञान सूचना का प्रसारण कार्य करते हैं। वर्ष के दौरान क्षेत्रीय केन्द्रों के कार्यकलापों के सम्बन्ध में एक विस्तृत रिपोर्ट नीचे दी गई है।

पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, कलकत्ता

सेमिनार/व्याख्यान

7.14. दिल्ली विश्वविद्यालय के डा० ओंकार गोस्वामी को पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र में एक व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। उन्होंने मई 1984 में 'रशोमोन प्रभाव : 1929 और 1937 की जूट मिलों की हड़ताल दूसरों की दृष्टि में' विषय पर व्याख्यान दिया।

विदेशी अतिथि

7.15 डा० वी० ग्राफ ने, जो भारत-फ्रांस सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत आए, फरवरी 1985 में केन्द्र का दौरा किया और विद्वानों के साथ विचार-विमर्श किया।

पुस्तकालय तथा ग्रन्थसूची परियोजना

7.16 इस अवधि के दौरान समाज विज्ञान प्रलेखन केन्द्र, नई दिल्ली से प्राप्त पुस्तकों और पत्रिकाओं को अधिग्रहित किया गया। इन सामग्रियों के अलावा, विदेश में प्रकाशित 30 कोर समाज विज्ञान पत्रिकाएं तथा 11 प्रमुख भारतीय दैनिक समाचार-पत्र भी नियमित रूप से प्राप्त होते रहे।

7.17 अन्तर-प्रलेखन कम्पनी, स्विटजरलैण्ड द्वारा तैयार की गई माइक्रोफिशे फार्म में 1872 से 1951 की भारतीय जनगणना रिपोर्टों का अधिग्रहण विशेष रूप से उल्लेखनीय कार्य है।

कलकत्ता में अधिकांश पुस्तकालयों में जनगणना रिपोर्टों के पूर्ण सैट उपलब्ध नहीं हैं। आंकड़ा आधार के साथ महत्वपूर्ण समाज विज्ञान सामग्री का संग्रह

निर्मित करने के केन्द्र के निर्णय के अनुसरण में इन सैटों को प्राप्त किया गया है। चूंकि केन्द्र के पुस्तकालय में बहुत सीमित भण्डारण स्थान है इसलिए प्रलेखन का माइक्रोफार्म उपयुक्त समझा गया।

7.18 पुस्तकालय का दौरा करने वाले अध्येताओं के वास्ते पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र में अनुरक्षित दुर्लभ पत्रिकाओं के नक्शों तथा माइक्रोफिल्म संग्रहों के खण्ड से सेवाएं आयोजित की गईं। अनुरोध करने पर अध्येताओं को प्रतिलेखन व ग्रन्थसूचीय सेवाएं भी प्रदान की गईं।

7.19 वर्ष के दौरान प० बंगाल के विषय में "क्षेत्र अध्ययन ग्रन्थसूची परियोजना" का कार्य जारी रहा।

अनुसंधान प्रोत्साहन

7.20 "स्वतत्रंता-पूर्व भारत में फिल्म सेन्सरशिप और उसके समाजशास्त्रीय निहितार्थों" पर श्री सोमेश्वर भौमिक द्वारा प्रस्तुत किये गये एक अनुसंधान प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गई है।

अतिथि गृह

7.21 भारत के विभिन्न भागों से कलकत्ता का दौरा करने वाले अध्येताओं से पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र का अतिथि गृह वर्ष के दौरान काफी भरा रहा और वर्ष के दौरान लगभग 150 अध्येता अतिथि गृह में ठहरे।

उत्तर क्षेत्रीय केन्द्र, नई दिल्ली

सेमिनार/सम्मेलन

7.22 केन्द्र ने मेजबान संस्थाओं के सहयोग से निम्नलिखित सेमिनारों, कार्यशालाओं, और सम्मेलनों का आयोजन किया :

1. सामाजिक अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली, "रिक्शा चालकों की कामकाज और रहन-सहन की स्थितियां", 3-4 अप्रैल 1984।
2. सावित्री महिला कालेज, अजमेर, "स्त्री शिक्षा और सामाजार्थिक परिवर्तन", 17-18 सितम्बर 1984।
3. पत्राचार अध्ययन कालेज, सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर, "भारतीय प्रशासनिक प्रणाली और राष्ट्रीय एकता", 17-18 नवम्बर 1984।

4. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "भारत में सामाजिक ढाँचे के सम्बन्ध में दो दिवसीय पूर्व-कांग्रेस अधिवेशन", 20-21 नवम्बर 1984।
5. पी०सी० बागला कालेज, हाथरस, "स्थानीय स्तर की आयोजना: नीति और दृष्टिकोण", 20-21 दिसम्बर 1984।
6. एम०एल०वी० कालेज, भीलवाडा, "भारत में केन्द्र-राज्य सम्बंध", 4 फरवरी 1985।
7. भारतीय सार्वजनिक कार्य सोसायटी, जयपुर "प्रशिक्षण तणा भ्रमण विस्तार प्रणाली और कृषि विकास", 22-24 फरवरी 1985।
8. अलवर कालेज, अलवर, "भारत में भाषा, क्षेत्र, और क्षेत्रीयवाद", 1-2 मार्च 1985।
9. एस०एम०वी० राजकीय कालेज, नाथद्वारा, "केन्द्र-राज्य सम्बन्ध", 15-16 मार्च 1985।
10. नृविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, "स्वास्थ्य, रोग, तथा परिवार कल्याण में सामाजिक-सांस्कृतिक व वंशानुगत तथ्य: एक नृविज्ञानीय परिप्रेक्ष्य", 16 मार्च 1985।
11. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "समकालीन भारत", 22 मार्च 1985।
12. भारतीय न्युमिसमेटिक्स तथा सीगिलोग्राफी अकादमी, इन्दौर "जन-जातीय प्रशासन की आयोजना तथा प्रबन्ध," 24-25 मार्च 1985।
13. एस०डी० कालेज, गाजियाबाद, "भारतीय राजनीति में जाति", 27 मार्च 1985।
14. किरोडीमल कालेज, दिल्ली, "राष्ट्रीय आन्दोलन-1929-39," 29-30 मार्च 1985।

7.23 इन कार्यक्रमों की कार्यवाहियां तथा पत्र परामर्श के वास्ते अध्येताओं को उपलब्ध कराए गए। केन्द्र ने, सलाहाकार समिति के सुझाव के अनुसरण में इन सेमिनारों के कुछ महत्वपूर्ण पत्रों को "तृतीय विश्व की समस्या का अध्ययन" शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित करने का निर्णय किया है।

प्रतिलेखन यूनिट

7.24 केन्द्र ने, समाज विज्ञान के छात्रों, अध्यापकों तथा अनुसंधानकर्ताओं को "न कोई लाभ, न कोई हानि" आधार पर प्रतिलेखन सेवाएं प्रदान करनी जारी रखीं। वर्ष के दौरान प्रतिलेखित प्रतियों की कुल संख्या 6,200 थी।

प्रलेखन कार्य

7.25 केन्द्र ने, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय पुस्तकालय के सहयोग से "सूचिका" खण्ड 4, अंक 8, अप्रैल 1984 से खण्ड 6, अंक 7, मार्च 1985 का प्रकाशन किया। यह समाज विज्ञानों तथा क्षेत्र अध्ययनों के सम्बन्ध में आवधिक साहित्य की एक मासिक अनुक्रमणिका है। इसकी प्रतियां भा० सा० वि० अ० प० के क्षेत्रीय केन्द्रों तथा अध्यापकों को वितरित की गईं।

7.26 केन्द्र ने लगभग 2,079 पत्रिकाएं मंगवाईं तथा 750 पत्रिकाएं उपहार और विनिमय के आधार पर प्राप्त हुईं। मंगाई गई पत्रिकाओं में से 900 पत्रिकाएं तथा समाचार-पत्र सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र से सम्बन्धित थे। लगभग 200 समाज विज्ञान पत्रिकाओं में से प्रासंगिक लेख इकट्ठे किए गए और ऐसे लेखों की मासिक सूचियां तैयार की गईं ताकि उन्हें विश्वविद्यालय में और विश्वविद्यालय से इतर अध्येताओं और अध्यापकों के बीच निःशुल्क परिचालन के लिए 'सूचिका' में सम्मिलित किया जा सके। केन्द्र ने, समाज विज्ञानों तथा अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के क्षेत्र में अपने माइक्रोफिल्मों तथा प्रेस कतरनों के संग्रह का भी अनुरक्षण किया। इस समय भारतीय तथा विदेशी समाचार-पत्रों से लगभग 1,20,000 प्रेस कतरनें पाठकों के लिए उपलब्ध हैं। पुस्तकालय का इरादा एस०डी० आई० तथा चालू जागरूकता सेवाएं प्रदान करने का है 1976-82 की अवधि से संबंधित पश्चिमएशिया और दक्षिण एशिया पर दो प्रमुख ग्रन्थसूचियां संकलित की गईं। 1971-82 की अवधि से संबंधित मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र पर दो और ग्रन्थसूचियां संकलित की गईं और भारतीय राज्य ग्रन्थसूची श्रृंखला में सम्मिलित की गईं।

अध्ययन अनुदान

7.27 केन्द्र द्वारा 105 अनुसंधान प्रस्तावों की जांच-पड़ताल की गई।

7.28 केन्द्र ने, उन युवा अध्येताओं और प्रोफेसरों के साथ, जिन्होंने केन्द्र का दौरा किया, विभिन्न वर्तमान समस्याओं पर अनेक चर्चाएं भी आयोजित कीं। इनमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं : (*i*) भारत में कांग्रेस आन्दोलन की शताब्दी, 29-30 मार्च 1985, (*ii*) वी० के० आर० वी० राव एवार्ड विजेताओं : प्रोफेसर सतीश सभरवाल, टी० के० ओमेन तथा अशोक गुहा, का स्वागत।

7.29 अनेक प्रोफेसरों के साथ, जिन्होंने केन्द्र का दौरा किया, बहुत सी चर्चाएं आयोजित की गईं। इनमें से कुछेक निम्नलिखित हैं: प्रोफेसर जी० राम रेड्डी, कुलपति, खुला विश्वविद्यालय, हैदराबाद; प्रोफेसर टी० वी० सत्यमूर्ति, यार्क विश्वविद्यालय (यू०के०); प्रोफेसर रमेश के० अरोड़ा, अध्यक्ष, लोक प्रशासन विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर तथा प्रोफेसर इरन्स्ट उतरेच, सिडनी विश्वविद्यालय (आस्ट्रेलिया)।

उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, शिलांग

7.30 उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र की सलाहकार समिति की एक बैठक 28 नवम्बर 1984 को उत्तर-पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता, उत्तर-पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय के कुलपति और उ० पू० क्षेत्रीय केन्द्र के अध्यक्ष डॉ० बी० डी० शर्मा ने की। समिति ने केन्द्र के कार्यकलापों और भावी कार्यक्रमों पर चर्चा की और वर्ष 1983-84 का लेखा विवरण तथा कार्यकलाप रिपोर्ट, बजट प्राक्कलन तथा वर्ष 1985-86 के लिए कार्यक्रमों को अनुमोदित कर दिया।

7.31 समाज विज्ञानियों के लिए अनुसंधान रीति विज्ञान पर एक कार्यशाला, जिसका प्रायोजन केन्द्र ने किया था, विश्लेषणात्मक तथा प्रयुक्त अर्थशास्त्र विभाग के तत्वावधान में कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर केन्द्र में 21 जनवरी से 2 फरवरी 1985 तक आयोजित की गई। इस कार्यशाला में उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के 20 कॉलेज अध्यापकों ने भाग लिया और कलकत्ता, डिब्रुगढ, गोहाटी, यादवपुर, मणिपुर, उत्तर-पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय तथा भारतीय सांख्यिकी संस्थान कलकत्ता के विख्यात प्रोफेसरों को संसाधन व्यक्तियों के रूप में आमंत्रित किया गया।

सेमिनार/सम्मेलन

7.32 केन्द्र ने निम्नलिखित सेमिनारों और सम्मेलनों के लिए अनुदान दिए: (i) उत्तर-पूर्व भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद्, शिलांग—"बदलता हुआ उत्तर-पूर्वी भारत : एक बहु-आयामीय अध्ययन", विषय पर 30 जून 1984 को शिलांग में एक संगोष्ठी आयोजित करने के लिए; (ii) थिंकर्स फोरम, कोहिमा के तत्वावधान में 9-10 अगस्त 1984 को कोहिमा में आयोजित "नागा सोसायटी में आधुनिकीकरण" पर एक सेमिनार। बारह पत्र पढ़े गए और उन पर चर्चा की गई।

7.33 "पूर्वी भारत में कृषक तथा कृषक प्रतिरोध" विषय पर गणतान्त्रिक लेखक संगठन, सिल्चर के प्रायोजन में 28 अक्तूबर 1984 को सिल्वर में एक

सेमिनार आयोजित किया गया। बड़ी संख्या में विद्वानों ने इसमें भाग लिया और चार पत्र प्रस्तुत किए गए।

7.34 उत्तर-पूर्वी भारत इतिहास एसोसिएशन का पांचवां वार्षिक अधिवेशन 18-20 दिसम्बर 1984 को पाछुंगा विश्वविद्यालय कॉलेज, आइजवाल में आयोजित किया गया। पूरे क्षेत्र के लगभग पचास प्रतिनिधियों तथा क्षेत्र के बाहर के भी कुछ विद्वानों ने इस अधिवेशन में भाग लिया। विभिन्न अधिवेशनों में 27 अनुसंधान पत्र प्रस्तुत किए गए और उन पर चर्चा की गई।

7.35 उत्तर-पूर्वी भाषा सोसायटी के तत्वावधान में "तुलनात्मक शब्द कोश" पर 4, 5 और 6 जनवरी 1985 को गोहाटी में एक सेमिनार आयोजित किया गया। इस सेमिनार में उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के विभिन्न भागों से विख्यात विद्वानों ने भाग लिया और 9 पत्र प्रस्तुत किए गए।

7.36 नागा स्नातकोत्तर छात्र, उत्तर-पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग के तत्वावधान में 13-14 फरवरी 1985 को "नागालैण्ड की समस्याएं तथा सम्भावनाएं" विषय पर एक सेमिनार आयोजित किया गया। 66 विद्वानों ने इस सेमिनार में भाग लिया और 9 पत्र प्रस्तुत किए गए।

7.37 राजनीति विज्ञान विभाग के तत्वावधान में 5-6 मार्च 1985 को डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय में "उत्तर-पूर्वी भारत में अन्तर-राज्य सम्बन्ध" पर एक सेमिनार आयोजित किया गया। इसमें 13 पत्र प्रस्तुत किए गए।

समाज विज्ञानियों की बैठक

7.38 उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के समाज विज्ञानियों की तीसरी बैठक 18-19 मार्च 1985 को डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय में आयोजित की गई। बैठक का विषय था: "परिवर्तनशील कृषि।" इसमें क्षेत्र के लगभग 50 समाज विज्ञानियों ने भाग लिया।

प्रलेखन कार्य

7.39. भा० सा०वि० अ० प० की "क्षेत्र ग्रन्थसूची" परियोजना के एक भाग के रूप में "उत्तर-पूर्वी भारत के सम्बन्ध में एक विस्तृत सटिप्पण ग्रन्थसूची" पर कार्य चल रहा है।

उत्तर-पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, चण्डीगढ़

7.40 उत्तर-पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, पंजाब विश्वविद्यालय के परिसर में स्थित है। एक सलाहकार समिति केन्द्र के कार्य का पर्यवेक्षण करती है जिसमें सम्बन्धित राज्यों और चण्डीगढ़ संघीय क्षेत्र तथा भा० सा० वि० अ० प० के प्रतिनिधि तथा

इस क्षेत्र के विश्वविद्यालयों के समाज विज्ञानी शामिल हैं। प्रोफेसर आर० पी० बम्बाह, जिन्होंने 1 जनवरी 1985 से पंजाब विश्वविद्यालय का कार्यभार सम्भाला है, क्षेत्रीय केन्द्र के अध्यक्ष हैं। पंजाब विश्वविद्यालय में भूगोल के प्रोफेसर डॉ० गुरुदेव सिंह गोसाल इस अवधि के दौरान क्षेत्रीय केन्द्र के अवैतनिक निदेशक रहे।

7.41 वर्ष .984-85 के दौरान, उत्तर-पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र ने अपने प्रयासों में निम्नलिखित उद्देश्यों पर विशेष बल दिया : (i) समाज विज्ञानियों के लिए पुस्तकालय संसाधनों का विकास, (ii) प्रतिलेखन यूनिट, (iii) उत्तर-पश्चिम क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में समाज विज्ञानों में वर्तमान समस्याओं पर सेमिनार आयोजित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना, और (iv) सामाजिक विज्ञान अध्येताओं को अध्ययन अनुदान देना।

समाज विज्ञानियों के लिए पुस्तकालय संसाधनों का विकास

7.42 समाज विज्ञानों में पंजाब विश्वविद्यालय की पुस्तकालय सेवाओं को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से केन्द्र 164 समाज विज्ञान पत्रिकाएं मंगा रहा है जो विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं हैं। क्षेत्रीय केन्द्र ने, पंजाब विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध तथा भा० सा० वि० अ० प० उत्तर-पश्चिम क्षेत्रीय द्वारा मंगाई जाने वाली समाज विज्ञान पत्रिकाओं के पूरे संग्रह की एक सूची संकलित की है। केन्द्र ने, क्षेत्रीय केन्द्र में प्राप्त होने वाली पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों की अनुक्रमणिकाओं को 14 सूचियां प्रकाशित की हैं। समाज विज्ञान विषयों में पी-एच० डी० शोध निबन्धों की एक ग्रन्थसूची संकलित की जा रही है।

प्रतिलेखन यूनिट

7.43 क्षेत्रीय केन्द्र ने एक प्लेन पेपर कॉपिअर नेलको माडल 213 आर ई प्राप्त करके अपने प्रतिलेखन यूनिट को सुदृढ़ बनाया है। इसमें एक मिनट में 21 प्रतियां तैयार होती हैं और इसमें लघुकरण तथा परिवर्धन की भी सुविधाएं हैं। इस मशीन के प्राप्त होने से प्रतिलेखन सेवाओं के लिए दरों में काफी कमी आई है।

सेमिनार

7.44 इस अवधि के दौरान आयोजित निम्नलिखित सेमिनारों के लिए केन्द्र ने आर्थिक सहायता प्रदान की :

1. राजनीति विज्ञान विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, "पंजाब में दबाव वाले वर्गों की राजनीति", 9 से 11 अप्रैल 1984।
2. दयाल सिंह कॉलेज, करनाल, "भारत में मत प्रणाली", 19-20 जनवरी 1985।
3. लोक प्रशासन विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, "सार्वजनिक क्षेत्र तथा विकास", 16-17 फरवरी 1985।
4. गुरु रामदास स्नातकोत्तर आयोजना स्कूल, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, "नए नगरों की आयोजना—भारतीय परिस्थितियों के लिए उपयुक्त सिद्धान्त और तकनीक", 29-30 मार्च 1985।
5. बी० बी० के० डी० ए० वी० महिला कॉलेज, अमृतसर, "बदलते हुए सामाजिक ढांचे में भारतीय स्त्रियां", 30-31 मार्च, 1985।

सेमिनार परिसर भवन

7.45 सेमिनार परिसर-एवं-अतिथि गृह ने जुलाई 1984 से कार्यारम्भ कर दिया है। अतिथि गृह में तीन सेमिनार कक्ष, एक विश्राम कक्ष, एक रसोई, एक भोजन कक्ष और चौदह कमरे हैं। भोजन व आवास के लिए प्रभार मामूली है।

विख्यात समाज विज्ञानियों द्वारा व्याख्यान माला

7.46 वर्ष 1984-85 के दौरान विख्यात समाज विज्ञानियों द्वारा व्याख्यान माला के कार्यक्रम के एक भाग के रूप में प्रोफेसर मूनिस रजा ने पंजाब विश्वविद्यालय में "भारत में उच्च शिक्षा का ढांचा" विषय पर तीन व्याख्यान दिए।

दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, हैदराबाद

7.47 केन्द्र ने समाज विज्ञानियों को प्रलेखन तथा ग्रन्थसूचीय सेवाएं प्रदान करना तथा दक्षिण भारत में समाज विज्ञान अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण तथा प्रोत्साहन कार्यकलाप आयोजित करना जारी रखा। इसके कार्यकलापों को निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है: (i) प्रशिक्षण तथा प्रोन्नयन, (ii) प्रलेखन और ग्रन्थसूचीय सेवाएं, और (3) अनुसंधान अनुदान प्रदान करना।

7.48 केन्द्र ने, राजकीय गिरिराज कॉलेज, निजामाबाद तथा समाजशास्त्र

विभाग, गुलबर्गा विश्वविद्यालय में समाज विज्ञानों में अनुसंधान रीतियों के सम्बन्ध में अल्पकालिक आधारभूत पाठ्यक्रम आयोजित किए।

7.49 प्रकासम विकास अध्ययन संस्थान, हैदराबाद ने केन्द्र के सहयोग से 14-15 अप्रैल 1984 को "भारतीय संविधान: विगत तथा सम्भावनाएं" विषय पर एक सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार में निम्नलिखित प्रमुख विषयों पर चर्चा की गई : (1) वर्तमान सन्दर्भ में भारतीय संविधान का पुनर्विलोकन, (2) नागरिक और संविधान, (3) संविधान तथा राजनीतिक दलों की भूमिका, और (4) केन्द्र और राज्यों की शक्तियां तथा कार्य, जिसमें स्थानीय प्राधिकारियों के प्रति उनके कर्त्तव्य भी शामिल हैं।

7.50 हैदराबाद विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग ने क्षेत्रीय केन्द्र के सहयोग से 6 जून 1984 को गोल्डन थ्रेसहोल्ड, हैदराबाद, में "भारत और आन्ध्र प्रदेश में औद्योगीकरण की समस्याएं : राजनीति और प्रवृत्तियां" विषय पर एक दिन का सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार में चार प्रमुख विषयों पर चर्चा की गई : (i) औद्योगीकरण के लिए उभरते हुए नीति विकल्प, (2) औद्योगिक विकास में प्रवृत्तियां : अखिल भारतीय तथा आन्ध्र प्रदेश, (3) औद्योगिक विकास में अन्तर-राज्य भिन्नताएं, और (4) भारत तथा आन्ध्र प्रदेश में बड़े और छोटे उद्योगों के बीच परस्पर-सम्बन्ध।

7.51 शिक्षा विभाग, बंगलौर विश्वविद्यालय और क्षेत्रीय केन्द्र ने शिक्षा कॉलेजों के शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए 16 से 20 अगस्त 1984 तक बंगलौर में संयुक्त रूप से एक 5 दिवसीय कार्यशाला एवं अनुस्थापन कार्यक्रम आयोजित किया। हैदराबाद विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र तथा नृविज्ञान विभाग ने 7 और 8 सितम्बर 1984 को "संघर्ष-संघर्ष समाधान" पर एक दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की।

7.52 क्षेत्रीय केन्द्र तथा शैक्षिक अध्ययन एवं परामर्श केन्द्र, हैदराबाद ने 28 सितम्बर 1984 को भा०सा०वि० अ० प० क्षेत्रीय केन्द्र में "प्राथमिक शिक्षा का व्यापीकरण तथा साक्षरता" पर संयुक्त रूप से एक दिन का सेमिनार आयोजित किया।

7.53 विकास तथा आयोजना अध्ययन संस्थान ने क्षेत्रीय केन्द्र के सहयोग से 7 अक्तूबर 1984 को विशाखापटनम में "निर्धनता का माप और वंचिता" पर एक कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला में मुख्य रूप से निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गई :

(1) निर्धनता का माप और वंचिता दृष्टिकोण; (2) लक्ष्य वर्गों तथा लक्ष्य क्षेत्रों की निर्धनता के माप की समस्याएं; (3) मूल्य स्तरों में परिवर्तनों के आधार पर निर्धनता रेखा में परिवर्तनों के माप; (4) निर्धनता के अन्तर-जनन आयाम;

और (5) निर्धनता-रोधी कार्यक्रमों के प्रभाव का माप।

7.54 उस्मानिया विश्वविद्यालय पुस्तकालय तथा क्षेत्रीय केन्द्र ने 25 से 31 अक्तूबर 1984 तक संयुक्त राष्ट्र सप्ताह का संयुक्त रूप से आयोजन किया। "सं०रा०सं०तथा इसकी ऐजेन्सियों का योगदान : सं० रा० सं० सप्ताह" पर 26 अक्तूबर '984 को एक सेमिनार आयोजित किया गया।

7.55 प्रशासनिक स्टाफ कॉलेज, आई०सी०आर०आई०एस०ए०टी० तथा आन्ध्र प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय के अनेक पुस्तकाध्यक्षों ने सेमिनार में भाग लिया। छात्रों, अध्यापकों तथा अनुसंधानकर्ताओं को 28 अक्तूबर 1984 को हैदराबाद में उस्मानिया विश्वविद्यालय में सं. रा. सं. भण्डार संग्रह के सम्बन्ध में प्रशिक्षण दिया गया। विश्वविद्यालय परिसर तथा हैदराबाद के कॉलेजों के छात्रों के लिए एक निबंध लेखन प्रतियोगिता भी समारोहों के एक भाग के रूप में आयोजित की गई।

7.56 प्रौढ़ शिक्षा के लिए राज्य संसाधन केन्द्र, उस्मानिया विश्वविद्यालय ने सतत शिक्षा के लिए भारतीय विश्वविद्यालय एसोसिएशन और क्षेत्रीय केन्द्र के सहयोग से 20-22 नवम्बर 1984 को उस्मानिया विश्वविद्यालय में "ग्राम विकास के लिए सतत शिक्षा" पर एक सेमिनार आयोजित किया।

7.57 उस्मानिया विश्वविद्यालय के पुस्तकालय तथा सूचना विज्ञान विभाग ने अपने रजत जयन्ती समारोहों के एक भाग के रूप में 26 से 29 नवम्बर 1984 तक सूचना प्रसार सम्बन्धी ग्यारहवां आई०ए०एस०एल०आई०सी० (भारतीय विशेष पुस्तकालय तथा सूचना केन्द्र एसोसिएशन) राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार का मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए एक राष्ट्रीय मंच की व्यवस्था करना था। पुस्तकालय तथा सूचना सेवाओं के लिए बढ़ती हुई आवश्यकताओं के विकास के स्तर को ध्यान में रखते हुए सेमिनार में समग्र पुस्तकालय तथा सूचना संसाधन विकास में आने वाली समस्याओं पर विचार किया गया और एक राष्ट्रीय पुस्तकालय तथा सूचना सेवा पद्धति के लिए आवश्यक माडलों का सुझाव दिया गया।

7.58 मद्रास विकास अध्ययन संस्थान ने क्षेत्रीय केन्द्र के सहयोग से 8 और 9 दिसम्बर 1984 को दक्षिणी राज्यों के समाज विज्ञानियों की चौदहवीं बैठक आयोजित की। बैठक में भा०सा०वि०अ०प० दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र के प्रतिनिधियों के अलावा सात विश्वविद्यालयों तथा दो अनुसंधान संस्थानों के 17 समाज विज्ञानियों ने भाग लिया। प्रोफेसर जे० महेन्दर रेड्डी, अवैतनिक निदेशक तथा श्री पी० सत्यनारायण, उपनिदेशक, भा०सा०वि०अ०प०दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र ने दक्षिणी विश्वविद्यालयों में समाज विज्ञानों में पी-एच० डी० कार्यक्रम पर एक सर्वेक्षण रिपोर्ट प्रस्तुत की।

7.59 क्षेत्रीय केन्द्र के सहयोग से 19 और 20 दिसम्बर 1984 को पहली दक्षिण भारतीय क्षेत्रीय सामाजिक विज्ञान कांग्रेस आयोजित की गई। श्री बी० बी० राजू ने उद्‌घाटन भाषण दिया जिसमें सामाजिक विज्ञानों में महत्त्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डाला गया। अठारह पत्र प्रस्तुत किए गए।

7.60 कालीकट विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र शिक्षकों के लाभ के लिए, कालीकट विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग द्वारा क्षेत्रीय केन्द्र के सहयोग से दिसम्बर 1984 में "अर्थशास्त्र में आनुभाविक अनुसंधान" पर एक तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

7.61 उस्मानिया विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग ने क्षेत्रीय केन्द्र के सहयोग से 3 से 5 जनवरी 1985 तक तेइसवां भारतीय इकानामिट्रिक सम्मेलन आयोजित किया। अपने उद्‌घाटन भाषण में एक विख्यात इकानामिट्रिसिअन प्रोफेसर सी०आर०राव ने योजना आयोग को उपयोगी सूचना मुहैय्या करने तथा स्थानीय योजनाएं तैयार करने के लिए अध्ययनों में मजबूत आर्थिक आयोजना बोर्डों की आवश्यकता पर बल दिया। मेक्रो माडल, औद्योगिक अर्थशास्त्र, कृषि सम्बन्धों के पहलुओं, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, लोक वित्त, इकानामिट्रिक सिद्धान्त आदि जैसे क्षेत्रों में लगभग 50 निबन्ध प्रस्तुत किए गए। "जरनल आफ क्वानटेटिव इकानामिक्स" नामक पत्रिका के पहले अंक का प्रोफेसर सी०आर० राव ने विमोचन किया। सम्मेलन में भारतीय सांख्यिकी संस्थान, दिल्ली के प्रोफेसर वी०के० चेट्टी तथा न्यु साउथ वेल्स विश्वविद्यालय के प्रोफेसर नानक काकवाणी को महलानोबिस स्मारक पदक प्रदान किए गए।

7.62 सम्मेलन के एक भाग के रूप में, "सातवीं पंचवर्षीय आयोजना" पर 4 जनवरी 1985 को एक सामूहिक चर्चा आयोजित की गई। अध्यक्ष ने, पूरी आयोजना, इसके उद्देश्यों, लक्ष्यों, और कठिनाइयों के बारे में बताया और योजना की व्यवहार्यता, अदायगी संतुलन की स्थिति तथा मौद्रिक व वित्तीय पहलुओं पर बल दिया। चर्चा के दौरान, आयोजना के क्षेत्रीय आयामों, कृषि माडलिंग तथा अनुरूपता पहलुओं पर विशेष रूप से बल दिया गया। इकानामिट्रिक पद्धतियों के उपयोग तथा योजना निर्माण में इकानामिट्रिसिअनों की भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया। क्षेत्रीय केन्द्र, अर्थशास्त्र विभाग, एस०वी० विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर केन्द्र तथा आन्ध्र प्रदेश आर्थिक एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में 19 और 20 जनवरी 1985 को कावली में "आन्ध्र प्रदेश में सिंचाई क्षमता तथा उपयोगिता" पर एक कार्यशाला आयोजित की गई।

7.63 क्षेत्रीय केन्द्र तथा लोक प्रशासन विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय द्वारा 26 से 28 फरवरी 1985 तक आठवीं लोकसभा चुनाव, 1984 पर विशेष बल देते हुए, 'आन्ध्र प्रदेश में मत प्रक्रिया' पर एक दो दिवसीय कार्यशाला संयुक्त

रूप से आयोजित की गई।

7.64 राजनैतिक विज्ञान विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय तथा दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र ने दक्षिण भारतीय विश्वविद्यालयों में राजनीति विज्ञान में शिक्षण तथा अनुसंधान की समस्याओं पर 16 और 17 फरवरी 1985 को धारवाड में संयुक्त रूप से एक दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला का निर्देशन प्रोफेसर ए०एम० राजसेखरिआ, अध्यक्ष, राजनीतिक विज्ञान विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय ने किया था। राजनीतिक विज्ञान के शिक्षण तथा अनुसंधान के विभिन्न पहलुओं पर 15 निबन्ध प्रस्तुत किए गए। कार्यशाला में कुछेक महत्त्वपूर्ण विषयों तथा समस्याओं पर चर्चा की गई।

समाज विज्ञानियों द्वारा व्याख्यान और भ्रमण

7.65 केन्द्र ने, देश-विदेश के समाज विज्ञानियों द्वारा 30 व्याख्यानों का आयोजन किया। इनमें निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण थे: (1) डॉ०वाई० वेणुगोपाल रेड्डी, सचिव, योजना विभाग, आन्ध्र प्रदेश सरकार, "विश्व बैंक: संगठन तथा ढांचा", "विश्व बैंक: वित्त", "विश्व बैंक: प्रमुख कार्य" 4 से 6 अप्रैल 1984; (2) डॉ० रोबर्ट चेम्बर, दि फोर्ड फाउण्डेशन, नई दिल्ली, "ग्रामीण निर्धनता", "प्रथम पूर्वाग्रह और "अन्तिम" वास्तविकताओं तथा नहर सिंचाई प्रबन्ध में सीमाओं का विश्लेषण", 12 जुलाई 1984; (3) प्रोफेसर शिव नारायण रे, भूतपूर्व प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, भारतीय अध्ययन विभाग, मेलबोर्न विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया, "भारतीय पुनर्जागरण की संकल्पना", 1 अक्तूबर 1984; (4) डी० पी०एस०एन० प्रसाद, भूतपूर्व कार्यकारी निदेशक, आई०एम०एफ, "आई०एम० एफ० तथा विश्व बैंक के सम्मुख समस्याएं", "डालर की बढ़ती हुई कीमत तथा विश्व अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव", "आठवें दशक में अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग का प्रतिबिम्ब; 5 से 7 नवम्बर 1984; (5) प्रोफेसर वी०के०आर०वी० राव० "भारतीय आयोजना: कुछ परिप्रेक्ष्य", 7 दिसम्बर 1984; (6) श्री सैयद हाशिम अली, कुलपति, उस्मानिया विश्वविद्यालय "आयोजकों ने मिश्रित अर्थ-व्यवस्था की आवश्यकताओं की उपेक्षा कर दी है", 3 जनवरी 1985; (7) अमानुल्लाह, वेस्टर्न आनटेरिस विश्वविद्यालय, लन्दन, "इकानामिट्रिक माडलों का विशिष्टीकरण विश्लेषण", 3 जनवरी 1985; (8) प्रोफेसर एन०काकवाणी, न्यु साउथ वेल्स विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया, "इष्टतम कराधान तक संकेन्द्रण मोड़ों का अनुप्रयोग", 4 जनवरी 1985; (9) प्रोफेसर माल्कम एस. आदिशेषय्या, अध्यक्ष, मद्रास विकास अध्ययन संस्थान, "सातवीं पंचवर्षीय योजना में शिक्षा", 17 जनवरी 1985; (10) डॉ० ओ० वी० मलयारोव, वरिष्ठ अनुसंधान फैलो, प्राच्य अध्ययन संस्थान, सोवियत रूस विज्ञान अकादमी, मास्को, "भारत के

सामाजार्थिक परिवर्तन में राज्य की भूमिका", 14 जनवरी 1985।

पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, बम्बई

होस्टल एवं अतिथि गृह

7.66 अपनी-अपनी विशेषज्ञता वाले क्षेत्रों में अन्य विद्वानों से भेंट करने तथा विश्वविद्यालय पुस्तकालय व नगर के अन्य पुस्तकालयों में उपलब्ध अनुसंधान सामग्री का उपयोग करने के इच्छुक छात्रों और विद्वानों के लिए भा०सा०वि०अ० प० होस्टल बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। वर्ष के दौरान 1,810 से अधिक विद्वानों ने होस्टल सुविधाओं का लाभ उठाया।

7.67 डॉ० विक्टर एस० डिसूज़ा (राष्ट्रीय फैलो) डॉ० (श्रीमती) पार्वती वासुदेवन (सामान्य फैलो), श्री असलम भूइयान (डाक्टोरल फैलो) और श्री मोहम्मद ग्यासुद्दीन मोल्ला (डाक्टोरल फैलो) को केन्द्र से सम्बद्ध कर दिया गया है। श्री ए०बालचन्द्रन तथा श्री रोबर्ट कटालानो को, जिन्हें भा०सा०वि०अ०प० द्वारा फुटकर अनुदान स्वीकृत किया गया था, केन्द्र से सम्बद्ध कर दिया गया।

सेमिनार/कार्यशालाएं/सम्मेलन

7.68 आलोच्य अवधि के दौरान केन्द्र ने निम्नलिखित सेमिनार, कार्यशालाएं तथा सम्मेलन आयोजित किए और उनके लिए सहायता दी :

1. महाराष्ट्र तत्वज्ञान परिषद् का प्रथम अधिवेशन, कोल्हापुर, 1-2 मई 1984, 2,000 रु०।
2. तीसरा मराठी समाजशास्त्रीय सम्मेलन, कोल्हापुर, 28-30 जून 1984, 7,000 रु०।
3. स्वामी रामानन्द तीर्थ महाविद्यालय, "अनुसंधान रीति विज्ञान पर कार्यशाला, अम्बाजोगई, 2-8 जुलाई 1984, 9,000 रु०।
4. सामाजिक अध्ययन केन्द्र, सूरत, "राजनीतिक प्रक्रिया में गैर-सरकारी संगठनों और लोगों की सहभागिता" पर एक कार्यशाला, ईदार, गुजरात, 17-18 नवम्बर 1984, 4,000 रु०।
5. बम्बई विश्वविद्यालय, शिक्षा विभाग, "उच्च शिक्षा में व्यावसायिक दक्षता" पर कार्यशाला, 21-22 नवम्बर 1984, 3,000 रु०
6. भवन कॉलेज, अंधेरी, "वर्तमान भारत में संघवाद" पर सेमिनार,

बम्बई, 23-24 नवम्बर 1984, 2,000 रु० ।

7. स्वामी रामानन्द तीर्थ महाविद्यालय द्वारा मराठी अर्थशास्त्र परिषद् का आठवां वार्षिक सम्मेलन, अम्बाजोगई, 7-9 दिसम्बर 1984, 7,000 रु० ।
8. बम्बई विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग द्वारा "समाज विज्ञानियों के लिए नक्शा बनाने की तकनीक" पर कार्यशाला, 17-21 दिसम्बर 1984, 5,000 रु० ।
9. "आयोजना की तकनीक तथा सातवीं पंचवर्षीय आयोजना", "निर्धनता की गतिशीलता" और "आय वितरण" पर तीन सेमिनारों की एक श्रृंखला, 30-31 जनवरी 1985 और 30-31 मार्च 1985, 2,000 रु० ।
10. स्नातकोत्तर शिक्षा तथा अनुसंधान केन्द्र, पणजी, गोआ द्वारा "महाराष्ट्र तथा गोआ में परम्परा और आधुनिकता" पर सेमिनार, 23-25 दिसम्बर, 1984, 4075.85 रु० ।
11. भारतीय शिक्षा संस्थान, पुणे तथा स्वामी रामानन्द तीर्थ अनुसंधान संस्थान, औरंगाबाद, द्वारा "मराठवाडा में शिक्षा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" पर कार्यशाला, 5-7 जनवरी 1985, 5,000 रु० ।
12. गुजरात आर्थिक एसोसिएशन द्वारा 16वां वार्षिक सम्मेलन, वल्लभ विद्यानगर, 3-4 फरवरी 1985, 3,000 रु० ।
13. सामाजिक अध्ययन केन्द्र, सूरत द्वारा "औद्योगिक कामगार तथा सामाजिक परिवर्तन" पर सेमिनार, 16-17 फरवरी, 1985, 6,000 रु० ।
14. मनोविज्ञान विभाग, एम० एस० विश्वविद्यालय, बड़ौदा, "मानव संसाधन विकास" पर राष्ट्रीय सेमिनार, 18-20 फरवरी 1985, 6,000 रु० ।
15. "दिल्ली विश्वविद्यालय में पी० एच० डी० अनुसंधान कार्यक्रम का संचालन" पर प्रोफेसर पी० बी० मंगला द्वारा व्याख्यान, 12 फरवरी 1985 ।
16. "भारत-अमरीकी आर्थिक सम्बन्ध : व्यापार और सहायता" पर श्री हेरी कहिल द्वारा वार्ता, 9 मार्च 1985 ।
17. राजनीतिक विज्ञान विभाग, मराठवाडा विश्वविद्यालय, "महाराष्ट्र में राजनीतिक दलों तथा राजनीतिक संगठनों" पर सेमिनार, 16-17

मार्च 1985, 3,271.15 रु० ।

18. अमरीकी अध्ययनों की भारतीय एसोसिएशन, "भारत-अमरीकी सम्बन्धों के लिए अमरीकी और भारतीय चुनाव निहितार्थों" पर संगोष्ठी, 11-13 मार्च 1985, 3,000 रु० ।
19. समाजशास्त्र विभाग, पूना विश्वविद्यालय, "वर्तमान महाराष्ट्र में सामाजिक तनाव तथा विरोध आन्दोलनों", पर कार्यशाला, 18-27 मार्च 1985, 13,000 रु० ।
20. एस० एन० डी० टी० विश्वविद्यालय, "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा स्वतन्त्रता संग्राम, 1885-1967" पर सेमिनार, 23-24 मार्च 1985, 10,000 रु० ।

विदेशी अतिथि

7.69 विदेशी समाज विज्ञानियों के भ्रमणों का लाभ उठाते हुए केन्द्र ने इन विद्वानों की विशेषज्ञों, अनुसंधानकर्ताओं और व्यावसायिक व्यक्तियों के साथ बैठकें आयोजित कीं और उनके विशेषज्ञता वाले क्षेत्रों में व्याख्यानों तथा सेमिनारों का आयोजन किया । विख्यात विद्वानों में निम्नलिखित शामिल थे : एक फ्रांसीसी प्रतिनिधिमण्डल जिसमें श्रीमती पाल गेबोट, श्री राबर्ट फ्रेसी, श्री ब्रुने जोबर्ट और श्री क्रिश्चियन कोमेरिअउ, विद्वान तथा प्रशासक शामिल थे; प्रोफेसर लिउ चुंगयुआन, दक्षिण एशियाई अध्ययन संस्थान, चीनी समाज विज्ञान अकादमी, चीन; प्रोफेसर डेनिस लोम्बार्ड और प्रोफेसर मार्क गेबोरिऊ, फ्रांसीसी विद्वान; चीनी समाज विज्ञान अकादमी, बैजिंग चीन का एक 15 सदस्यीय प्रतिनिधि-मण्डल; डॉ० ओ० वी० मलयारोव, वरिष्ठ अनुसधान फैलो, प्राच्य अध्ययन संस्थान, सोवियत रूस विज्ञान अकादमी, मास्को; श्रीमती पेलिसिअर, मुख्य पुस्तकाध्यक्ष, भारतीय तथा दक्षिण एशियाई अध्ययन केन्द्र, पेरिस; मदाम वायलेट ग्राफ, एक फ्रांसीसी विद्वान; प्रोफेसर अतिला अग्ह और श्रीमती मगडोलना नागी, हंगरियाई विद्वान; और डॉ० (श्रीमती) जीन फ्लाउड, फैलो, नूफील्ड कॉलेज, आक्सफोर्ड ।

भा० सा० वि० अ० प० परियोजना

7.70 केन्द्र, "एक शहरी श्रम बाजार में आय के निर्धारक तथा काम से आय में असमानता का मापदण्ड" (25,830 रु०) अनुसंधान परियोजना के सम्बन्ध में निधियों का भी प्रशासन करता है, जिसका दायित्व बम्बई विश्व-विद्यालय में अर्थशास्त्र विभाग के प्रोफेसर एल० के० देशपाण्डे तथा टाटा समाज

विज्ञान संस्थान, बम्बई के डॉ० आर० सी० दत्ता के पास है।

प्रलेखन तथा ग्रन्थसूचीय कार्य

7.71 मात्र महाराष्ट्र से सम्बन्धित किसी भी रूप से और किसी भी भाषा में समाज विज्ञानों की सभी शिक्षण व अनुसंधान सामग्री को सम्मिलित करने के लिए "महाराष्ट्र के क्षेत्र अध्ययन की ग्रन्थसूची" तैयार करने के सम्बन्ध में भा० सा० वि० अ० प० द्वारा प्रायोजित परियोजना के अन्तर्गत अभी तक 117 अंग्रेजी की तथा 89 मराठी की प्रविष्टियों को पूरा किया गया है।

संग्रहों की प्राप्ति

7.72 केन्द्र ने निम्नलिखित संग्रह जमा/दान के आधार पर प्राप्त किए हैं—

1. भारतीय कृषि अर्थशास्त्र सोसायटी	14,000
2. बम्बई भौगोलिक एसोसिएशन	500
3. श्री वी० जी० डिघे	250
4. डॉ० ए० आर० देसाई	6,373
5. स्वर्गीय श्री सुधीर दास गुप्त	1,700
6. श्री डी० एम० सुखथांकर	118

पुस्तकें तथा पत्रिकाएं

7.73 आलोच्य अवधि के दौरान जवाहरलाल नेहरू पुस्तकालय, बम्बई विश्वविद्यालय में केन्द्र के संग्रह में 287 पुस्तकें शामिल की गईं। केन्द्र ने समाज विज्ञानों में 62 विदेशी और 18 भारतीय पत्रिकाएं मंगाईं।

प्राप्त किए गए शोध निबन्ध

7.74 इस अवधि के दौरान केन्द्र ने 9 डाक्टोरल शोध-निबन्ध प्राप्त किए।

प्रतिलेखन यूनिट

7.75 केन्द्र द्वारा प्रदत्त प्रतिलेखन सेवाओं का देश-विदेश के विद्वानों द्वारा व्यापक रूप से इस्तेमाल किया गया।

7.76 फरवरी 1985 में केन्द्र ने नेल्को कम्पनी के पास 1,16,000 रु० की लागत पर नेल्को 213 आर० ई० प्लेन पेपर कापिअर के लिए एक आर्डर दिया है।

मराठी में प्रकाशित समाज विज्ञान पत्रिकाओं को वित्तीय सहायता

7.77 केन्द्र ने निम्नलिखित पांच समाज विज्ञान पत्रिकाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की, अर्थात—"अर्थसंवाद", "हकारा", "भारतीय इतिहास अणि संस्कृति", "त्रैमासिक" और "शिक्षण समीक्षा"।

निधियां

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा क्षेत्रीय केन्द्रों को दी गई योजनागत तथा योजनेतर निधियां इस प्रकार हैं—

(लाख रुपये)

	योजनेतर	योजनागत	जोड़
पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, कलकत्ता	1.79	1.00	2.79
उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, शिलांग	1.31	—	1.31
उत्तर क्षेत्रीय केन्द्र, दिल्ली	1.34	4.00	5.34
उत्तर-पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, चण्डीगढ	4.10	7.65	11.75
दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, हैदराबाद	3.57	1.00	4.57
पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, बम्बई	4.31	3.00	7.31
योग =	16.42	16.65	33.07

VIII

अन्य कार्यक्रम

"भारत-पाक सम्बन्धों" पर सेमिनार, नई दिल्ली

8.01 क्षेत्रीय मामलों के लिए भारतीय केन्द्र, नई दिल्ली ने 25 अप्रैल 1984 को "भारत-पाक सम्बन्धों" पर एक सेमिनार आयोजित किया। सुरक्षा समस्याओं, आर्थिक तथा राजनीतिक प्रश्नों से सम्बन्धित ग्यारह निबन्ध सेमिनार में प्रस्तुत किए गए। भा० सा० वि० अ० प० ने 10,000 रु० का अनुदान मंजूर किया।

दबाव वाले आयामों के अन्तर्गत भारत में शहरी विकास, पटना

8.02 ललित नारायण मिश्रा संस्थान, पटना ने 19-20 सितम्बर 1984 को यह सेमिनार आयोजित किया। इस सेमिनार में मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों के विकास, गांवों के शहरीकरण और शहरी विकास आयोजना की छोटी बस्तियों और नीतियों के विश्लेषण पर जोर दिया गया। इस सेमिनार में 76 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने 7,000 रु० का अनुदान मंजूर किया।

सामाजार्थिक अनुसंधान संस्थान, कलकत्ता के रजत जयन्ती समारोह

8.03 सन् 1984 में सामाजार्थिक अनुसंधान संस्थान, कलकत्ता के रजत जयन्ती समारोहों के एक भाग के रूप में अनेक सेमिनार तथा विशेष व्याख्यान माला आयोजित करने के लिए खर्च वहन करने के वास्ते भा० सा० वि० अ० प० ने 25,000 रु० का अनुदान स्वीकृत किया। सेमिनारों तथा व्याख्यान माला में मुख्य रूप से निम्नलिखित विषयों पर बल दिया गया : (1) अर्थशास्त्र तथा आर्थिक विकास (1800 से बंगला व अन्य भारतीय भाषाओं के लेखों के विशेष सन्दर्भ में), (2) भारतीय सोसायटी, विगत और वर्तमान (1800 से बंगला लेखों तथा अंग्रेजी व अन्य भारतीय भाषाओं में भारतीय लेखकों की रचनाओं के विशेष सन्दर्भ में), (3) भारतीय भाषाओं में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी सम्बन्धी लेख, 1800-1950, (4) जनसंख्या और विकास, विगत और वर्तमान, (5) भारत

में शहरीकरण, (6) पर्यावरण—ग्रामीण और शहरी, (7) भू-सुधार तथा ग्राम विकास, (8) अर्थशास्त्र तथा समाजशास्त्र में प्रौद्योगिकी का अध्ययन—भारतीय भाषाओं की विषयवस्तु और भूमिका—तब और अब।

"उड़ीसा में कमजोर वर्ग तथा उनका विकास" पर सेमिनार, कटक

8.04 इस सेमिनार का आयोजन रावेनशा कॉलेज, कटक के अर्थशास्त्र विभाग द्वारा मई 1984 में किया गया था। इस सेमिनार का उद्देश्य कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए किए गए विभिन्न उपायों की बारीकी से जांच करना तथा उनकी सामाजार्थिक स्थिति को शीघ्र सुधारने के लिए उपयुक्त कार्यकारी प्रबन्धों के साथ नए उपाय सुझाना था। लगभग बीस विद्वानों ने सेमिनार में भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने 4,000 रु० का अनुदान मंजूर किया।

"समकालीन साम्प्रदायिकता" पर सेमिनार, नई दिल्ली

8.05 बम्बई विकास शहरी औद्योगिक लीग, बम्बई ने उक्त सेमिनार का 6 से 9 सितम्बर 1984 तक नई दिल्ली में आयोजन किया। निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गई: (1) वर्तमान साम्प्रदायिक संघर्ष के नए लक्षण, (2) वर्तमान सम्प्रदायवाद की बदलती हुई सामाजार्थिक जड़ें, (3) मौलिकता-तथा पुनर्जागरण-वाद के पुन: उभरने के कारण, (4) हमारे समाज की साम्प्रदायिकता में राजनीति की भूमिका, (5) साम्प्रदायिक तत्त्वों द्वारा युवा व नये तत्त्वों को शामिल करना, (6) उभरती हुई साम्प्रदायिकता के सांस्कृतिक आयाम, (7) मस्तिष्क की साम्प्रदायिक स्थिति, (8) साम्प्रदायिक संघर्षों को बढ़ाने अथवा उन्हें दबाने में जनसंचार साधनों की भूमिका, (9) साम्प्रदायिक उत्पात और नये शहरी तनाव, (10) बम्बई में प्रगतिशील ट्रेड यूनियन आन्दोलन में कमी के साथ साम्प्रदायिकता का सम्बन्ध, (11) हिन्दू, मुसलमान, सिख और ईसाई साम्प्रदायिकता की विशेषताएं, (12) बड़े-बड़े शहरों में आज व्यवस्थित अपराध की भूमिका, (13) धर्म निरपेक्ष परम्परा का सामाजिक आधार तथा इसे सुदृढ बनाने के उपाय।

भा० सा० वि० अ० प० ने 10,000 का अनुदान स्वीकृत किया।

भारतीय विधान सभाओं में सदनों के विशेषाधिकारों की उपलब्धता पर सेमिनार

8.06 महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के राजनीतिक विज्ञान विभाग ने 29 और 30 सितम्बर 1984 को रोहतक में उक्त सेमिनार का आयोजन किया। सेमिनार में निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गई: (1) विधान सभा के

विशेषाधिकारों की प्रकृति और क्षेत्र, (2) विधान सभा के विशेषाधिकारों की सीमाएं, (3) भारतीय विधान सभाओं के सदनों को विशेषाधिकारों की उपलब्धता, (4) भारतीय विधान सभाओं के विशेषाधिकारों की प्रकृति और क्षेत्र, (5) भारतीय विधान सभाओं के विशेषाधिकार और विवेकपूर्ण समीक्षा, (6) भारतीय विधान सभाओं के विशेषाधिकार तथा मौलिक अधिकार, (7) 42वां संशोधन तथा भारतीय विधान सभाओं के विशेषाधिकार।

सेमिनार में 20 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने 7,000 रु० का अनुदान स्वीकृत किया।

ग्राम शिल्पकारों के लिए एक कार्यशाला, सुल्तानपुर

8.07 भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली ने 16 और 17 अप्रैल 1984 को सुल्तानपुर में उपरोक्त कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला का उद्देश्य, देश के विभिन्न भागों में कार्य कर रहे विभिन्न ग्राम शिल्पकारों के साथ अनौपचारिक सम्पर्क कायम करना तथा उन्हें चर्चा के लिए एक मंच पर लाना था। इस कार्यशाला में 40 व्यक्तियों ने भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने कार्यशाला के लिए 5,000 रु० का अनुदान मंजूर किया।

"माओ के पश्चात चीन" पर एक सेमिनार, चण्डीगढ़

8.08 मध्य एशियाई अध्ययन विभाग के तत्वावधान में पंजाब विश्वविद्यालय ने 25-26 सितम्बर 1984 को चण्डीगढ़ में उपरोक्त सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार का उद्देश्य, विचारधारा, राज्य-व्यवस्था, अर्थ-व्यवस्था, सोसायटी और संस्कृति तथा चीनी विदेश नीति में प्रवृत्तियों के बारे में वर्तमान घटनाओं का विश्लेषण करना था। सेमिनार में 15 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने सेमिनार के लिए, 5,000 रु० का अनुदान मंजूर किया।

उत्तर-पूर्व भारत के मैदानों और गांवों में 'भू-सम्बन्ध और भूमि सुधारों' पर सेमिनार, शिलांग

8.09 उत्तर-पूर्व भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, शिलांग ने 17-18 अप्रैल 1984 को शिलांग में उपरोक्त सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार का उद्देश्य, उत्तर-पूर्वी भारत में भू-सम्बन्धों तथा भूमि सुधारों की समस्याओं के सभी पहलुओं के बारे में मतों, अनुभवों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की समीक्षा तथा मूल्यांकन करना था। सेमिनार में 75 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने 5,000 रु० का अनुदान मंजूर किया।

इतिहास में कृषक

8.10 श्री वेंकटेश्वर कॉलेज, नई दिल्ली ने "इतिहास में कृषकों" पर नवम्बर 1984 में एक सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार का उद्देश्य, कृषक कार्य से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर कार्य कर रहे लोगों द्वारा इसमें सक्रिय रूप से भाग लेना तथा एक अन्तर-विषयक प्रवृत्ति कायम करना था। सेमिनार में निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गई : (i) इतिहास के पन्नों में कृषक, (ii) कृषकों का बोध, और (iii) कृषक वर्ग तथा विरोध अभियान। सेमिनार में लगभग 30 लोगों ने भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने 5,000 रु० का सहायता-अनुदान स्वीकृत किया।

असम के विषय में सेमिनार, बंगलौर

8.11 इक्युमेनिकल क्रिश्चियन सेण्टर, बंगलौर ने 19 से 21 अक्तूबर 1984 तक "असम" पर एक सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार का विषय असम आन्दोलन के आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारणों की समालोचनात्मक जांच करना था। इसके फलस्वरूप लोकप्रिय आन्दोलनों की गम्भीरता और निहितार्थों तथा समानता व मानव प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष से संबंधित उपयोगी जानकारी सामने आई। सेमिनार में 15 लोगों ने भाग लिया। भा० सा० वि०अ०प० ने 10,000 रु० का अनुदान स्वीकृत किया।

जीवन तथा मानसिक स्वास्थ्य के लिए कार्य की कोटि सुधारने के लिए नीतियां विकसित करना, कटक

8.12 संचार तथा विकास अध्ययन केन्द्र, कटक ने अक्तूबर 1984 के दूसरे सप्ताह में "कार्य, जीवन तथा मानसिक स्वास्थ्य की कोटि सुधारने के लिए नीतियां विकसित करने" पर कटक में एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार में, कार्य दबाव तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से सामाजिक पद्धति तथा कार्य की प्रकृति व कार्य संगठनों के सम्बन्ध में सरकारी तथा गैर-सरकारी नीतियों के वर्तमान सिद्धान्तों तथा ज्ञान के निहितार्थों के अध्ययन पर बल दिया गया। विशेषत: निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गई : (1) कार्य, जीवन तथा मानसिक स्वास्थ्य सुधारने पर जोर देते हुए विभिन्न परिस्थितियों में कार्य की पद्धति, (2) बहु-आयामीय अनुसंधान नीतियों का मूल्यांकन, (3) सामाजिक अनुसंधान के इस क्षेत्र में भारत में अमरीकी माडलों के संभव उपयोग की जांच, और (4) समाज विज्ञान समुदायों के बीच अन्तर-विषयक कल्पनाशक्ति का विकास।

सेमिनार में 20 विद्वानों ने भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने 5,000 रु० का अनुदान मंजूर किया।

औषधि उद्योग और जन स्वास्थ्य आन्दोलन, त्रिवेन्द्रम

8.13 केरल शास्त्र साहित्य परिषद, त्रिवेन्द्रम ने अक्तूबर 1984 में "औषधि उद्योग और जन स्वास्थ्य आन्दोलन" पर एक अखिल भारतीय सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार में स्वास्थ्य समिति द्वारा की गई सिफारिशों के बाद औषधि उद्योग के विकास की समीक्षा करने का प्रयास किया गया तथा लोगों की स्वास्थ्य पद्धति के प्रति अपनाए जाने वाला दृष्टिकोण तैयार किया। सेमिनार में विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करने के लिए, डॉक्टर, समाज विज्ञानी, अफसर, सामाजिक कार्यकर्ता और स्वैच्छिक संगठन एक स्थान पर एकत्रित हुए। प्रमुख विषय पर चर्चा को तीन उपविभागों में वर्गीकृत किया गया : (1) हाथी समिति के बाद की घटनाएं, (2) अनिवार्य औषधि तथा सरकारी नीति, और (3) लोगों के स्वास्थ्य आन्दोलनों की स्थिति। सेमिनार में लगभग 40 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने 10,000 रु० का अनुदान मंजूर किया।

प्रौद्योगिकीय नवीकरण के समीकरण तथा प्रसार में स्त्रियों की भूमिका

8.14 राष्ट्रीय औद्योगिक इंजीनियरी प्रशिक्षण संस्थान, बम्बई ने "प्रौद्योगिकीय समीकरण तथा प्रसार में स्त्रियों की भूमिका" पर 29 अक्तूबर से 2 नवम्बर 1984 तक बम्बई में एक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यशाला का प्रायोजन संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन ने किया था। इसके सह-प्रायोजक थे : भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, बम्बई, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, बम्बई, मानव संसाधान विकास संस्थान, बम्बई, विकासशील देशों में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी समिति, मद्रास और गांवों के लिए विज्ञान केन्द्र, वर्धा।

कार्यशाला के निम्नलिखित उद्देश्य थे : (1) प्रौद्योगिकीय नवीकरण में स्त्रियों की भूमिका का पता लगाना, (2) प्रौद्योगिकीय नवीकरण के समीकरण की प्रक्रिया में स्त्रियों को पेश आने वाली समस्याओं पर ध्यान देना, (3) स्त्रियों के लिए सहायक संस्थात्मक और/या संगठनात्मक नवीनताओं का पता लगाना, (4) प्रौद्योगिकीय नवीकरण के समीकरण और प्रसार में स्त्रियों की भूमिका के विषय में किए जा रहे कार्य को इकट्ठा करना, और (5) प्रौद्योगिकीय नवीकरण के समीकरण और प्रसार के लिए आवश्यक अवस्थापना तथा संसाधनों का पता लगाना और सिफारिश करना।

चर्चा के दौरान मुख्य रूप से स्त्रियों के कार्य से संबंधित प्रौद्योगिकीय नवीकरणों—आयोजना तथा नीतियां, कृषि, उद्योग तथा शिल्पों में स्त्री नवीकर्ता, स्त्रियों के बीच नवीकरणों के समीकरण तथा प्रसार को प्रभावित करने वाले कारण, इस सम्बन्ध में स्त्रियों का अनुभव और प्रशिक्षण आदि पर बल दिया

गया ।

कार्यशाला में अनेक विदेशी विद्वानों तथा 500 भारतीय प्रतिनिधियों ने भाग लिया । भा० सा० वि० अ० प० ने 5,000 रु० का सहायता-अनुदान मंजूर किया ।

उत्तर-पूर्वी भारत में जनसंख्या : एक बहुआयामीय अध्ययन

8.15 उत्तर-पूर्व भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, शिलांग द्वारा "उत्तर-पूर्वी भारत में जनसंख्या : एक बहुआयामीय अध्ययन" पर एक सेमिनार आयोजित किया गया । सेमिनार में उत्तर-पूर्वी क्षेत्र की जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श करने के लिए अनेक जनांकिकीविदों, नृविज्ञानियों, भूगोलवेत्ताओं, अर्थशास्त्रियों तथा प्रशासकों ने भाग लिया । निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गई :(1) जनसंख्या प्रवृत्तियां, नीतियां तथा प्रक्षेपण, (2) जनसंख्या का ढांचा, गठन और वितरण, (3) प्राथमिक स्वास्थ्य देख-रेख, पोषण, मृत्युदर, उर्वरकता, और परिवार नियोजन, (4) जनसंख्या शिक्षा तथा जनसंख्या अनुसंधान, (5) जनसंख्या तथा विकासशील कड़ियां ।

भा० सा० वि० अ० प० ने 5,000 रु० का अनुदान मंजूर किया ।

भारत तथा विश्व साहित्य

8.16 दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ने "भारत तथा विश्व साहित्य" पर 25 फरवरी 1985 से 1 मार्च 1985 तक एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की । भारतीय संस्कृति, साहित्य और दर्शन के विभिन्न पहलुओं तथा प्राचीन काल से आधुनिक काल तक उनके विश्व के साथ परस्पर-सम्बन्धों पर चर्चा करने के वास्ते इस संगोष्ठी का प्रायोजन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने किया था । इस संगोष्ठी में 300 प्रतिनिधियों ने भाग लिया । भा० सा० वि० अ० प० ने 25,000 रु० का अनुदान मंजूर किया ।

बौद्ध धर्म तथा राष्ट्रीय संस्कृति

8.17 भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, नई दिल्ली ने भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् तथा भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के सहयोग से 10 से 15 अक्तूबर 1984 तक दिल्ली में "बौद्ध धर्म तथा राष्ट्रीय संस्कृति" पर पहला अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया । सम्मेलन का उद्देश्य बौद्ध धर्म तथा विभिन्न राष्ट्रीय संस्कृतियों के बीच बौद्धिक तथा सांस्कृतिक संबंधों पर चर्चा करना था । सम्मेलन में निम्नलिखित मुख्य सत्र आयोजित किए गए : (1) बौद्ध सार्वभौमिकता तथा राष्ट्रीय संस्कृतियां, (2) दर्शन और धर्म, (3)

वास्तुकला तथा कलाएं, (4) सामाजार्थिक विचार तथा संस्थाएं, (5) साहित्य, (6) पूजा तथा चिन्तन के रूप, और (7) बौद्ध धर्म, अहिंसा तथा शान्ति।

भारतीय प्रतिनिधियों के अलावा लगभग 300 विदेशी प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने एक लाख रुपये का अनुदान मंजूर किया।

"इस्लामी विचारधारा की समीक्षा" पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार, नई दिल्ली

8.18 बैत-अल-हिकमत(एकेडेमी ऑफ राशनलिज्म), नई दिल्ली ने नवम्बर 1984 में "इस्लामी विचारधारा की समीक्षा" पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया। निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गई: (1) इतिहाद: अर्थ और क्षेत्र, (2) औद्योगिक और औद्योगिक युग-पश्चात की राजनीतिक पद्धति, (3) वर्तमान स्थिति में प्रासंगिक आधुनिक सामाजार्थिक समस्याओं का इस्लामिक समाधान, (4) वर्तमान परिस्थितियों में प्रासंगिक इस्लाम की औद्योगिक नीति, और (5) आधुनिक कृषि के लिए इस्लाम की कृषि सम्बन्धी नीति।

सेमिनार में 62 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भा० सा० अ० प० ने 5,000 रु० का अनुदान मंजूर किया।

मणिका (पालामाऊ) बिहार में ग्राम शिल्पकार

8.19 सामाजार्थिक उद्धार तथा ग्राम स्वायतता सोसायटी, पालामाऊ(बिहार) ने "मणिका (पालामाऊ) में ग्राम शिल्पकारों" के लिए नवम्बर 1984 के मध्य में एक कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला में, ग्राम व अन्य शिल्पकारों, पत्रकारों, शिक्षाविदों, और विकास कार्यकर्ताओं ने मिलकर भाग लिया।

निम्नलिखित विषयों पर चर्चा हुई: (1) कच्ची सामग्री, संस्थात्मक वित्त प्राप्त करने, वस्तुओं के उत्पादन, उपयुक्त बाजार खोजने में शिल्पकारों को पेश आने वाली विशिष्ट समस्याएं, (2) ग्राम शिल्पकारों को मदद देने के उद्देश्य से तैयार की गई सरकारी नीतियों की भूमिका और शिल्पकारों की समस्याएं, (3) कुछेक समस्याओं का समाधान खोजने के लिए देश के विभिन्न भागों के शिल्पकारों की अनौपचारिक संस्थाएं स्थापित करने की आवश्यकता, (4) शिल्पकारों के काम में सहायता पहुंचाने के लिए अन्य उपाय।

कलाकारों के विभिन्न वर्गों तथा अन्य संगठनों के लगभग 75 प्रतिनिधियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

भा० सा० वि० अ० प० द्वारा, 3,000 रु० का अनुदान मंजूर किया गया।

स्त्रियों प्रौद्योगिकी तथा उत्पादन के स्वरूप

8.20 "स्त्रियां, प्रौद्योगिकी तथा उत्पादन के स्वरूपों" पर तीसरी कार्यशाला का आयोजन मद्रास विकास अध्ययन संस्थान, मद्रास के तत्वावधान में 30-31 अक्तूबर 1984 को किया गया। कार्यशाला में तीन सत्रों के दौरान, तीसरे विश्व में स्त्रियों के सम्बन्ध में कृषि आधुनिकीकरण, विशिष्ट क्षेत्रों और उद्योगों में विस्तृत मामला अध्ययन, प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों और उत्पादन के आयोजन में परिवर्तनों का प्रभाव, सरकारी नीति का मूल्यांकन, स्त्रियों का दक्षता संवर्धन, स्त्री श्रमिकों पर सामाजिक विधान का प्रभाव, श्रम बाजार विश्लेषण में पितृसत्ता भूमिका सम्बन्धी सैद्धान्तिक प्रश्न, दक्षता का वैचारीकरण और प्रौद्योगिक परिवर्तन के माप से सम्बद्ध प्रश्नों सहित अनेक प्रश्नों पर विचार किया गया।

चौंतीस प्रतिनिधियों ने कार्यशाला में भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने 10,000 रु० का अनुदान स्वीकृत किया।

भारतीय राज्यतन्त्र, दबाव तथा प्रतिक्रियाएं

8.21 शहीद भगतसिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय ने 27 अक्तूबर 1984 को नई दिल्ली में "भारतीय राज्यतन्त्र : दबाव तथा प्रतिक्रियाओं" पर एक सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार में इस प्रश्न पर चर्चा की गई कि क्या भारतीय राज्यतन्त्र इस पर पड़ने वाले सामाजिक परिवर्तनों, राजनीतिक विकासों और आर्थिक बाधाओं के दबाव को बर्दाश्त कर सकेगा और इन दबावों की व्यवस्थित प्रतिक्रियाओं की समालोचनात्मक जांच तथा इस बात पर चर्चा की गई कि इन दबावों के मार्ग कौन से हैं। चर्चा के मुख्य विषय थे : व्यवस्थित नम्यता, सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन, आर्थिक आयाम और अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियाएं।

सेमिनार में लगभग 60 विद्वानों ने भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने 5,000 रु० का अनुदान मंजूर किया।

ग्रामीण निर्धन

8.22 गांधी अध्ययन संस्थान, वाराणसी ने नवम्बर 1984 में "ग्रामीण निर्धनों" पर एक सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार में मुख्य रूप से एजेन्सियों का कामकाज तथा ग्रामीण निर्धनों के उत्थान के लिए चलाए जा रहे कार्रवाई कार्यक्रमों पर चर्चा की गई। विद्वानों ने, ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत सरकारी एजेन्सियों, राजनीतिक दलों तथा स्वैच्छिक संगठनों की भूमिका पर चर्चा की। इसमें निम्नलिखित विषयों पर भी चर्चा की गई : (1) विकास के मापदण्ड तथा

सूचक स्थापित करने में एक चल बल के रूप में विचारधारा की भूमिका, (2) विकास एजेन्सियों तथा ग्रामीण निर्धनों के बीच समुचित कड़ी, (3) निर्धनों को दिए गए लाभों के समुचित उपयोग के लिए दक्षता तथा अवस्थापना सम्बन्धी सुविधाओं की कमी, (4) किसी शिल्प विशेष को व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए दक्षताएं तथा सेवाएं प्रदान करने में टी० आर० वाई० एस० इ० एम० का औचित्य, (5) निर्धन लाभग्राहियों के उत्थान के मानिटर तथा समीक्षा के लिए आई० आर० डी० कार्यक्रम में अपनाई गई अनुवर्ती कार्रवाई, (6) निर्धन परिवारों की स्त्रियों के लिए विकास कार्यक्रम—चुने हुए ग्रामीण क्षेत्रों के अनुभव, (7) ग्रामीण निर्धनों के लिए आयोजन के प्रयोग—कुछ चुने हुए ग्रामीण क्षेत्रों के क्षेत्र अनुभव, और (8) सरकार द्वारा अथवा स्वैच्छिक संगठनों द्वारा हरिजनों और आदिवासियों के विकास के लिए कार्य का मूल्यांकन।

अनुसंधान संस्थानों, विश्वविद्यालयों, सरकारी एजेन्सियों तथा स्वैच्छिक एजेन्सियों के लगभग 25 विद्वानों ने सेमिनार में भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने 5,000 रु० का अनुदान दिया।

दक्षिण एशियाई राज्यों में घरेलू संघर्ष : उभरती हुई प्रवृत्तियां

8.23 दक्षिण, दक्षिण-पूर्व और मध्य एशियाई अध्ययन केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय ने 18 से 20 अक्तूबर 1984 तक नई दिल्ली में "दक्षिण एशियाई राज्यों में घरेलू संघर्ष : उभरती हुई प्रवृत्तियों" पर एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया जिसमें बड़ी संख्या में शिक्षाविदों, समाजशास्त्रियों राजनीतिक विज्ञानियों, इतिहासकारों तथा अर्थशास्त्रियों और पत्रकारों व नीति निर्माताओं ने भाग लिया जिन्होंने चर्चा के दौरान विविध तथा समृद्ध अन्तर-विषयक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किए।

सेमिनार पांच विषयों के अन्तर्गत विभाजित था : (1) वैचारिक ढांचा, (2) व्यवस्थित चुनौतियां, (3) बढ़ती हुई आर्थिक असमानताएं, (4) नृवंशीय संघर्ष, और (5) नीति निहितार्थ।

दक्षिण एशियाई राज्यों में अभिशासन और राज्यतन्त्र की विद्यमान प्रणाली तथा इन देशों में प्रजातन्त्र, समानता और सामाजिक न्याय की मांग इस सेमिनार के मुख्य विषय थे। सेमिनार में मुख्यतः विद्यमान प्रणालियों के मूल्यांकन और दक्षिण एशियाई क्षेत्र में आन्तरिक कठिनाइयों की सम्भव प्रवृत्तियों पर चर्चा की गई। यद्यपि सामान्य तौर पर संघर्ष स्थिति के वैचारिक सीमांकन का पता लगाने का प्रयास किया गया तथापि, क्षेत्र में उथल-पुथल के कारण होने वाले परिवर्तनों की प्रक्रियाओं का मूल्यांकन करने पर विशेष ध्यान दिया गया। सेमिनार में, दक्षिण एशियाई देशों के नृवंशीय संघर्षों, व्यवस्थित चुनौतियों और

आर्थिक विकास की समस्याओं पर भी विचार किया गया। सेमिनार में ऐसे संघर्षों के अन्तर—तथा अन्तर-क्षेत्रीय आयामों की ओर भी ध्यान आकर्षित किया गया।

भा० सा० वि० अ० प० ने 10, 000 रु० का अनुदान मंजूर किया।

विकलांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति

8.24 विकलांग और अक्षम व्यक्तियों के लिए प्रभा ललित कला, संस्कृति और शिल्पकला संस्थान, नई दिल्ली ने, "विकलांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति" पर 4 अक्तूबर 1984 को एक सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार में निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गई : (1) विकलांगों के लिए राष्ट्रीय नीति, (2) बधिरों के साथ बेहतर बर्ताव, (3) विकलांग व्यक्तियों के लिए शैक्षिक नीति। सेमिनार में लगभग 50 व्यक्तियों ने भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने 2,000 रु० का अनुदान स्वीकृत किया।

ससाधनों की खोज

8.25 नेताजी एशियाई अध्ययन संस्थान, कलकत्ता द्वारा 'संसाधनों के लिए खोज : पहुंच तथा प्रबन्ध की समस्या" पर एक संगोष्ठी प्रायोजित की गई। इसके लिए भा० सा० वि० अ० प० ने 7,000 रु० की आर्थिक सहायता प्रदान की। यह संगोष्ठी 9 और 10 फरवरी 1985 को संस्थान के परिसर में आयोजित की गई और इसमें विख्यात बुद्धिजीवियों, वैज्ञानिक कार्मिकों और शिक्षा विदों ने भाग लिया।

संगोष्ठी तीन विषय-क्षेत्रों में विभाजित थी जो मुख्यत: किन्तु पूर्णत: नहीं, परस्पर विरोधी दावों के बीच संसाधनों के आवंटन में प्राथमिकताओं, नीति विकल्पों और चुनावों से सम्बन्धित थे।

राष्ट्रवादी आंदोलन के सांस्कृतिक आयाम

8.26 जनरल आफ आर्ट्स एण्ड आइडिआज, नई दिल्ली ने 26 से 30 दिसम्बर 1984 तक "राष्ट्रवादी आंदोलन के सांस्कृतिक आयामों" पर एक सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार में लगभग 41 इतिहासकारों, समाज विज्ञानियों, कलाकारों, लेखकों तथा समालोचकों ने भाग लिया। राष्ट्रवादी आंदोलन के सांस्कृतिक पहलू, राष्ट्रवादी जागरूकता के सन्दर्भ में आधुनिक युग में भारतीय संस्कृति, कला और साहित्य का इतिहास, सेमिनार के मुख्य विषय थे। सेमिनार में, विभिन्न रूपों में आधुनिक भारतीय संस्कृति के अध्ययन में समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य प्रदान करने तथा इस क्षेत्र को सकीर्ण ऐतिहासिक

बाधाओं से मुक्त करने का प्रयास किया गया। अनुसंधान के ऐसे क्षेत्रों का पता लगाने पर भी बल दिया गया जिनसे राष्ट्रवादी आन्दोलन के सांस्कृतिक आयाम की बेहतर समझ प्राप्त हो सके। भा० सा० वि० अ० प० ने 7,000 रु० का अनुदान स्वीकृत किया।

भारतीय संदर्भ में विज्ञान तथा राज्य (1700-1947)

8.27 राष्ट्रीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिक और विकास अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली ने 21 से 23 जनवरी 1985 तक दिल्ली में "भारतीय संदर्भ में विज्ञान तथा राज्य (1700-1947)" पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया। इसमें उपनिवेशीय काल के दौरान विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के विकास पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया और उपनिवेशीय वैज्ञानिकों बनाम महानगरों के अनुभव बताए गए। सेमिनार में जिन विषयों पर चर्चा की गई उनमें निम्नलिखित विषय शामिल थे : (1) विज्ञान तथा राज्य : संकल्पनाओं का एक अध्ययन, (2) कम्पनी, विज्ञान तथा व्यापार : ब्रिटिश तथा फ्रेंच अनुभव, (3) राज, प्रौद्योगिकी तथा उद्योग, उपनिवेशीय सम्पर्कों का प्रभाव, (4) वैज्ञानिक संस्थाओं का विकास, (5) वैज्ञानिक सोसायटियों तथा विज्ञान पत्रिकाओं की भूमिका, (6) विज्ञान शिक्षा का विकास, और (7) भारतीय प्रतिक्रिया, कांग्रेस और विज्ञान, भारतीय विज्ञान कांग्रेस के रूप में भारतीय अभिज्ञान का संस्थात्मक निर्धारण आदि।

सेमिनार में, यू० के०, अमरीका, फ्रांस, आस्ट्रेलिया और भारतीय विश्वविद्यालयों तथा संस्थाओं के अनेक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

भा० सा० वि० अ० प० ने 10,000 रु० का अनुदान स्वीकृत किया।

1947 के बाद से भारतीय उपमहाद्वीप में राज्य पद्धतियों का मूल्यांकन तथा इस क्षेत्र में राजनीतिक स्थायित्व की सम्भावना

8.28 विदेशी मामलों के लिए भारतीय केन्द्र, नई दिल्ली ने, "1947 के बाद से भारतीय उपमहाद्वीप में राज्य पद्धतियों का मूल्यांकन तथा इस क्षेत्र में राजनीतिक स्थायित्व की सम्भावना" पर दिसम्बर 1984 में नई दिल्ली में एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार का मुख्य उद्देश्य भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, अफगानिस्तान तथा नेपाल की राजनीतिक पद्धतियों और उनके क्षेत्रीय स्थायित्व का गहन अध्ययन करना था। सेमिनार में यू० के०, अमरीका के लगभग 10 विख्यात विद्वानों तथा भारत के 50 विद्वानों ने भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने 10,000 रु० का अनुदान स्वीकृत किया।

स्त्रियां तथा गृह कार्य

8.29 स्त्री अध्ययनों के लिए भारतीय एसोसिएशन, नई दिल्ली ने 27 से 31 जनवरी 1985 तक "स्त्रियां तथा गृह कार्य" पर नई दिल्ली में एशिया के लिए एक क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किया। सम्मेलन का प्रायोजन, अन्तर-राष्ट्रीय मानवविज्ञानीय यूनियन तथा नृवंशीय विज्ञान स्त्री आयोग और अनु-संधान समिति ने किया था। अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय एसोसिएशन की समाज में स्त्री सम्बन्धी समिति 32, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, और भारतीय सांख्यिकी संस्थान, नई दिल्ली इसके सह-मेजबान थे।

उपविषयों का सत्र-वार विभाजन इस प्रकार था: (1) उत्पादन और सम्बन्ध प्रणालियां तथा घरेलू कार्य, (2) स्त्रियां तथा गृह-अधारित उत्पादन, (3) अन्तर-घरेलू सम्बन्ध में संरचनात्मक और सांस्कृतिक आयाम, (4) राज्य और विकास नीतियों के सन्दर्भ में घरेलू कार्य, और (5) अनुसंधान और सर्वेक्षण में आंकड़ा संग्रह तथा विश्लेषण की इकाई के रूप में घरेलू कार्य।

एशियाई क्षेत्र तथा स्त्रियों की स्थिति को समझने के लिए एक मुख्य विषय पर जोर देते हुए सम्मेलन में नीति निर्माण के लिए महत्त्वपूर्ण तुलनात्मक आंकड़े प्रस्तुत किए गए और वैचारिक स्पष्टीकरण तथा निविष्टियां प्रदान की गई।

सम्मेलन में एशिया के विकासशील देशों, यथा भूटान, बंगलादेश, भारत, इण्डोनेशिया, लाओस, मलेशिया, नेपाल, थाइलैण्ड, पाकिस्तान, फिलिपीन और वियतनाम से लगभग 250 विख्यात विद्वानों ने भाग लिया। निकटवर्ती देशों के पांच विदेशी प्रतिनिधियों की यात्रा लागत वहन करने के लिए भा० सा० वि० अ० प० ने 37,266 रु० का अनुदान स्वीकृत किया और मध्याह्न भोजन की व्यवस्था की।

मानव संचार

8.30 मानविकी तथा समाज विज्ञान विभाग और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर ने 7 से 9 फरवरी 1985 तक कानपुर में "मानव संचार" पर एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया। इसका उद्देश्य, प्रौद्योगिकीय तथा संचार के मनः-सामाजिक-भाषाई पहलुओं के सम्बन्ध में अकादमिक तथा व्यावसायिक विशेषज्ञों को चर्चा के लिए एक मंच पर लाना था ताकि भाषा शिक्षण, सूचना प्रसार, और समझाने-बुझाने के क्षेत्रों में मानव संचार के प्रयुक्त पहलुओं पर जोर दिया जा सके और प्रौद्योगिकी अन्तरण, जन संचार साधनों, प्रौढ़ साक्षरता, और ग्राम जनजातीय संचार के सन्दर्भ में भारतीय सामाजिक जीवन के सम्बन्ध में मानव संचार के लिए मार्गदर्शक सिद्धान्त सुझाए जा सकें। निम्नलिखित क्षेत्रों पर विशेष रूप से चर्चा की गई: (1) भाषा शिक्षण, (2) मन: भाषाई संचार

के पहलू, (3) ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में संचार, (4) संगणक और संचार, (5) सूचना प्रसार, प्रौद्योगिक तथा संचार ।

सेमिनार में विश्वविद्यालयों, वैज्ञानिक तथा स्वैच्छिक संगठनों से लगभग 27 विद्वानों ने भाग लिया । भा० सा० वि० अ० प० ने 4,000 रु० का अनुदान स्वीकृत किया ।

भारत में सुधार और सामाजिक विज्ञान तथा बच्चे

8.31 भारतीय समाज विज्ञान एसोसिएशन ने आगरा विश्वविद्यालय के तत्वावधान में 26 से 28 फरवरी 1985 तक आगरा में "भारत में सुधार और सामाजिक विज्ञान तथा बच्चों" पर एक सेमिनार-एवं-सम्मेलन आयोजित किया । सम्मेलन में चर्चा के दौरान, भारत में बच्चों के विशेष सन्दर्भ में, प्रभावों और नीतियों की खोज की दृष्टि से सामाजिक सुधारों पर विशेष जोर दिया गया। सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय एकता पर भी चर्चा हुई । विभिन्न समाज विज्ञान विषयों के लगभग 140 विद्वानों ने भाग लिया । भा० सा० वि० अ० प० ने 4,000 रु० का अनुदान स्वीकृत किया ।

सत्रहवां अखिल भारतीय समाज शास्त्रीय सम्मेलन

8.32 सत्रहवें अखिल भारतीय समाजशास्त्रीय सम्मेलन का आयोजन दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत के तत्वावधान में 28 से 30 दिसम्बर 1984 तक किया गया । सम्मेलन में निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गईं : (1) भारत में नृवंश तथा नृवंशीय प्रक्रिया, (2) श्रेणी, जाति, और लिंग, (3) परिवर्तन के लिए सामाजिक कार्रवाई, और (4) व्यवसाय, सरकारी कर्मचारी और सामाजिक दायित्व । इसमें अनेक भारतीय और विदेशी विद्वानों ने भाग लिया । भा० सा० वि० अ० प० ने 5,000 रु० का अनुदान दिया ।

भारत में सामाजिक ढांचा

8.33 दसवीं भारतीय समाज विज्ञान कांग्रेस 27 से 30 जनवरी 1985 तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आयोजित की गई। समाज विज्ञानों के क्षेत्र में वैज्ञानिक ज्ञान के विकास और प्रसार को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से इसका आयोजन भारतीय समाज विज्ञान अकादमी ने किया था ।

विचार-विमर्श, का मुख्य विषय तथा उसके तीन घटकों पर केन्द्रित था : (क) सेक्शनल चर्चाएं, (ख) मुख्य विषय के सम्बन्ध में राष्ट्रीय संगोष्ठी/सेमिनार, (ग) विख्यात विद्वानों/सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा सार्वजनिक व्याख्यान। सेक्शनल चर्चाएं मुख्यतः अन्तर-विषयक थीं ।

कांग्रेस के विचार-विमर्श में विश्वविद्यालयों तथा कालेजों के 300 से अधिक समाज विज्ञानियों ने भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने 10,000 रु० का अनुदान मंजूर किया।

दक्षिण पूर्व एशिया में मानव बस्ती विकास के लिए उपयुक्त दृष्टिकोण तथा विकल्प

8.34 यादवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता ने विकासशील देशों में मानव बस्तियों की दूसरी विश्व कांग्रेस का प्रायोजन किया। यह कांग्रेस नवम्बर 1984 में यादवपुर विश्वविद्यालय में आयोजित की गई। विश्वविद्यालय, सरकारी संगठन, सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाएं, स्वैच्छिक और सामाजिक संगठन इस कांग्रेस के सह-प्रायोजक थे। मुख्य विषय के अन्तर्गत जो विषय शामिल थे उनमें निम्नलिखित शामिल हैं : (1) शहरी तथा ग्रामीण निर्धनों के लिए भूमि, (2) अवस्थापना, सेवाओं तथा आवास के लिए वित्त, (3) शहरी निर्धनों के लिए बसेरा, (4) शहरी तथा ग्रामीण निर्धनों के लिए स्वच्छ पानी तथा सफाई, और (5) क्षेत्रीय विकास के सन्दर्भ में मध्यम तथा छोटे नगरों की भूमिका।

इस सेमिनार में देश-विदेश के विख्यात विद्वानों ने भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने 7,000 रु० का अनुदान स्वीकृत किया।

भारतीय समुद्र

8.35 अन्तर्राष्ट्रीय इतिहास, विज्ञान कांग्रेस द्वारा आयोजित किए जाने वाले 'हिन्द महासागर' सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के प्रारम्भ में, विषय के प्रमुख प्रायोजक जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रोफेसर सतीश चन्द्र ने फरवरी 1985 में 'हिन्द महासागर' पर एक सेमिनार आयोजित किया।

भारत के अनेक शैक्षणिक तथा वैज्ञानिक संगठन, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, समुद्रीय विकास विभाग, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग तथा नेहरू मेमोरियल म्यूजियम तथा लाइब्रेरी, सेमिनार को सह-प्रायोजित करने के लिए सहमत हो गए।

सेमिनार में, विगत से वर्तमान तक हिन्द महासागर के ऐतिहासिक, भौगोलिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय पहलुओं पर विचार किया गया। इसके अतिरिक्त, सेमिनार में समकालीन समस्याओं, अर्थात, शान्ति क्षेत्र के रूप में हिन्द महासागर और—हिन्द महासागर के, आर्थिक तथा प्राकृतिक संसाधनों, मानव और अ-मानव संसाधनों पर भी विचार किया गया।

भारत के अलावा, हिन्द महासागर क्षेत्र में स्थित देशों के विद्वानों ने भी चर्चा में भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० द्वारा 25,000 रु० का अनुदान स्वीकृत

किया गया ।

स्त्रियां तथा विकास

8.36 अन्तर्राष्ट्रीय विकास के लिए सोसायटी के राजस्थान चेपटर ने 19 से 24 नवम्बर 1984 तक "स्त्रियां और विकास" पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। राजस्थान विश्वविद्यालय, एच० सी० एम० लोक प्रशासन राज्य संस्थान और शिक्षा, ग्राम विकास तथा समाज कल्याण विभागों ने इसका सह-प्रायोजन किया। सम्मेलन का मूल उद्देश्य, 1975 के बाद से स्त्रियों की स्थिति के सम्बन्ध में प्रगति की समीक्षा करना, उन कारणों का विश्लेषण करना जो इसे प्रत्यक्षतः प्रभावित करते हैं और उन कठिनाइयों का जायजा लेना था जो स्त्रियों के कल्याण के लिए कार्यक्रम को कारगर बनाने में बाधक हैं। सम्मेलन में स्त्री संगठनों की भूमिका और उनकी सहभागिता पर भी विचार किया गया और स्त्री कार्यक्रमों से सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय व अन्तर-सरकारी एजेन्सियों द्वारा तथा विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी एजेन्सियों द्वारा यथासम्भव अपनाए जाने के लिए कुछ कार्रवाई कार्यक्रमों का भी संकेत दिया गया। सम्मेलन में, आर्थिक पहलुओं, स्वास्थ्य तथा पोषण, शिक्षा तथा प्रशिक्षण, संचार और जन संचार साधनों, जन संगठनों की भूमिका और उनकी कानूनी स्थिति पर भी चर्चा की गई।

भारतीय विद्वानों के अलावा सम्मेलन में यूनेस्को, यूनिसेफ, एफ० ए० ओ० तथा आई० एल० ओ० जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों और लगभग 30 देशों के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० ने 25,000.00 रु० का अनुदान स्वीकृत किया।

दक्षिण एशिया में शान्ति और सहयोग

8.37 राजनीतिक विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने "दक्षिण एशिया में शान्ति और सहयोग" पर एक दो दिवसीय सेमिनार आयोजित किया। शान्ति क्षेत्र प्रस्ताव, जैसे कि भारत और श्रीलंका द्वारा आई० ओ० जेड० ओ० पी०, पाकिस्तान द्वारा "एस० ए० एन० डब्ल्यू० एफ० जेड०", नेपाल द्वारा "एन० जेड० ओ० पी०", तथा बंगलादेश द्वारा "एस० ए० आर० सी०" में कुछ बुनियादी प्रश्न उठाए गए जो इस सेमिनार में चर्चा के मुख्य मुद्दे थे। जिन विषयों पर चर्चा की गई उनमें निम्नलिखित शामिल थे : (1) निःशस्त्रीकरण के एक परिचालनात्मक साधन के रूप में शान्ति क्षेत्र की कल्पना, (2) भिन्न-भिन्न शान्ति क्षेत्र प्रस्ताव तथा उनकी व्यवहार्यता और सम्भावनाएं, (3) कोलम्बो से माली तक दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग, (4) एस० ए० आर० सी० में भिन्न-भिन्न

राष्ट्रीय दृष्टिकोण, और (5) दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग में बाधाएं तथा वास्तविकताएं और शान्ति क्षेत्र प्रस्तावों के साथ इनका सम्बन्ध। विभिन्न विश्वविद्यालयों, संस्थाओं और नेपाल के लगभग 50 राजनीतिक विज्ञानियों ने सेमिनार में भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० द्वारा 3,000 रु० का अनुदान स्वीकृत किया गया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1919-1964)

8.38 "फ्रेण्ड्स आर्काइव्ज ग्रुप" ने 8 फरवरी, 1985 को नई दिल्ली में "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1919-1964)" पर एक सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार में महात्मा गांधी के आगमन से लेकर पण्डित जवाहरलाल नेहरू के निधन तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन के सामाजार्थिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहलुओं पर चर्चा की गई। इसमें विशेष रूप से आजादी की लड़ाई के सामाजार्थिक पहलुओं पर जोर दिया गया। भारतीय विश्वविद्यालयों तथा देश-विदेश से 25 विख्यात विद्वानों ने विचार-विमर्श में भाग लिया। भा० सा० वि० अ० अ० ने 5,000 रु० का अनुदान स्वीकृत किया।

प्रतिभा निकास : कारण, परिणाम तथा प्रस्तावित समाधान

8.39 "प्रतिभा निकास : कारण, परिणाम तथा प्रस्तावित समाधानों" पर सेमिनार का आयोजन, यूनेस्को कार्यकारी बोर्ड के सदस्य श्री टी० एन० कोल ने 17 मार्च, 1985 को भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र, नई दिल्ली में किया। सेमिनार में, देश से उच्च योग्यता प्राप्त व्यक्तियों के उत्प्रवास के कारणों तथा परिणामों और ऐसी व्यावसायिक प्रतिभा का सातवीं आयोजना के दौरान और उसके बाद राष्ट्रीय विकास में उपयोग करने की आवश्यकता के बारे में नीति निर्धारकों तथा शिक्षित लोगों का ध्यान आकर्षित किया गया। इसमें लगभग 50 लोगों ने भाग लिया जिनमें सामाजिक तथा प्राकृतिक विज्ञानों, औषध, और इंजीनियरी क्षेत्रों के विख्यात व्यक्ति, डॉक्टर तथा सरकार के नीति निर्धारक व सरकार से बाहर के मत-निर्धारक शामिल थे। भा० सा० वि० अ० प० ने 15,000 रु० का अनुदान स्वीकृत किया।

पत्रिकाओं को वित्तीय सहायता

8.40 निम्नलिखित पत्रिकाओं के न्यासी बोर्डों में भा० सा० वि० अ० प० को प्रतिनिधित्व प्राप्त है जिसके लिए इसने धर्मादा निधियां कायम की हैं:

1. 'दि इण्डियन इकानामिक जरनल'
2. 'दि इण्डियन जरनल ऑफ एग्रीकल्चरल इकानामिक्स'

3. 'दि इण्डियन जरनल ऑफ लेबर इकानामिक्स'
4. 'दि जरनल ऑफ दि एन्थ्रापालोजिकल सोसायटी ऑफ इण्डिया'
5. 'इण्टरनेशनल जरनल ऑफ द्राविडियन लिंग्विस्टिक्स'
6. 'इण्डियन सोशिओलोजिकल बुलेटिन'
7. 'इण्डियन जरनल ऑफ साइकोलॉजी'
8. 'ज्योग्रफीकल रिव्यू ऑफ इण्डिया'
9. इण्डियन फिलोसाफिकल क्वार्टरली'
10. 'एज्यूकेशन एण्ड सोसायटी (मराठी में शिक्षा अणि समाज)'
11. 'दि जरनल ऑफ मेडिकल एज्यूकेशन'

व्यावसायिक संगठनों को अनुदान जारी करने की योजना की समीक्षा की जा रही है।

8.41 परिषद् ने, भूगोलवेत्ताओं की राष्ट्रीय एसोसिएशन (एन० ए० जी० आई०), भारत, के लिए एक लाख रुपये का धर्मस्व अनुदान स्वीकृत करने का निर्णय किया है। एसोसिएशन की पत्रिका के लिए 1983-84 के दौरान 50,000 रु० की पहली किस्त तथा 1984-85 में 50,000 रु० की दूसरी किस्त जारी की गई। इस प्रयोजन के लिए एसोसिएशन ने आजीवन सदस्यता के माध्यम से 10,000 रु० की रकम इकट्ठी की है।

8.42 परिषद् ने, समाज विज्ञान संस्थाओं की भारतीय एसोसिएशन, नई दिल्ली को 20,000 रु० का सहायता-अनुदान स्वीकृत किया है।

IX

अनुसंधान संस्थान

9.01 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, समाज विज्ञानों के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य में लगे अखिल भारतीय प्रकृति और महत्त्व के 20 अनुसंधान संस्थानों को अनुरक्षण तथा विकास अनुदान देती है। इन संस्थानों को सहायता-अनुदान देने का उद्देश्य विषयक अनुसंधान की कोटि को सुधारना तथा अन्तर-विषयक अनुसंधान को प्रोत्साहित करना है, जो विकास तथा आयोजना सम्बन्धी अध्ययनों के लिए अनिवार्य है। परिषद् का विचार है कि विभिन्न अनुसंधान संस्थानों के अनुसंधान कार्यक्रम, अनुसंधान प्रतिभा का विस्तार करने और देश के विभिन्न क्षेत्रों, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में अनुसंधान क्षमताओं का निर्माण करने के लिए, जहां अभी तक समाज विज्ञान अनुसंधान का विकास नहीं हुआ है, इसकी नीतियों को कार्यान्वित करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण तंत्र के संघटक हैं। अनुसंधान संस्थानों ने, अपने क्षेत्र के तथा अन्य स्थानों के विद्वानों के साथ, अनुसंधान कार्यकलापों, सेमिनारों, कार्यशालाओं तथा प्रशिक्षण और परामर्श कार्यक्रमों में उनका सहयोग प्राप्त करके घनिष्ठ सम्पर्क कायम किया है। इनमें से कुछेक संस्थान, राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय आयोजना और विकास एजेन्सियों से निकटतः सम्बद्ध हैं और इस प्रकार ये अनुसंधान और नीति निर्माण के बीच की कड़ी को मजबूत कर रहे हैं।

9.02 समाज विज्ञानों के क्षेत्र में तथा सामाजिक महत्त्व के समकालीन समस्याओं के बारे में अनुसंधान कार्यक्रमों का विकास करने के उद्देश्य से प्रत्येक अनुसंधान संस्थान अनुसंधान अध्ययनों की अपनी दिशा निर्धारित करता है। अनुसंधान मुख्यतः समस्या-उन्मुख तथा प्रकृति की दृष्टि से मात्रात्मक रहा है। विकास तथा आयोजना के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित समस्याओं से पूरे हो चुके तथा चालू अनुसंधान कार्य की बढ़ती हुई मात्रा को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। अध्ययनों के अन्तर्गत, कृषि और ग्रामीण विकास, औद्योगिक संरचना और विकास, आय वितरण तथा निर्धनता, रोजगार और मजदूरी, विकास, स्वास्थ्य, पोषण के स्तरों में अन्तर-क्षेत्रीय अन्तर, समाज के कमजोर वर्गों की समस्याएं, ऊर्जा, प्रौद्योगिकी, परिस्थिति विज्ञान, पर्यावरण तथा विकास के सामाजिक, सांस्कृतिक और संस्थात्मक पहलू से सम्बन्धित विविध विषय शामिल हैं। इन विषयों में विकास प्रक्रियाओं, सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक तनावों और राष्ट्र

निर्माण की प्रक्रिया के परिणाम और निहितार्थों से सम्बन्धित प्रश्न भी शामिल हैं। अध्ययनों के फलस्वरूप भारतीय अर्थ-व्यवस्था तथा समाज और इसकी गतिशीलता के ढांचे का पर्याप्त आनुभाविक ज्ञान हुआ है। राष्ट्र स्तरीय अध्ययनों के अलावा अलग-थलग क्षेत्रीय, वर्गीय तथा मेक्रो-स्तरीय परिप्रेक्ष्य के ढांचे के अन्दर सामुदायिक स्तरों पर अनुसंधान आयोजित करने की दिशा में प्रवृत्ति का विकास हुआ है। इसका उद्देश्य यह है कि जिन क्षेत्रों में संस्थान स्थित हैं वहां विकास को प्रोत्साहित करने के लिए नीतियां तथा कार्यक्रम तैयार करने में सहायता मिल सके।

9.03 समस्या-उन्मुख अनुसंधान के सन्दर्भ में, एक व्यापक सन्दर्भ में और सामाजिक विश्लेषण के ढांचे में किसी समस्या विशेष को समझने की आवश्यकता को अधिकाधिक स्वीकार किया जाने लगा है। इसके फलस्वरूप अनुसंधान के क्षेत्र में अन्तर-विषयक दृष्टिकोण को अधिकाधिक समझा जाने लगा है। इसके अलावा, जैसे-जैसे विश्वसनीय प्राथमिक आंकड़ों की जरूरत महसूस की जाने लगी है, वैसे-वैसे ही क्षेत्रीय-कार्य आधारित अध्ययनों को अधिक महत्त्व दिया जाने लगा है। इसके अतिरिक्त, विकासशील अर्थ-व्यवस्था और समाज की अन्दरूनी गतिशीलता और इसकी विषयवस्तु व दिशा तथा अनुसंधान कार्य का सैद्धान्तिक और तकनीकी स्तर ऊंचा उठाने पर अधिक बल दिया जाता है।

9.04 तालिका 9.1 में, भा० सा० वि० अ० प० द्वारा समर्थित प्रत्येक संस्थान के अनुसंधान और प्रशिक्षण कार्य की मात्रात्मक स्थिति दर्शाई गई है। आलोच्य वर्ष के दौरान इन संस्थाओं में 121 अनुसंधान अध्ययन पूरे किए गए। आर्थिक तथा सामाजिक परिवर्तन संस्थान, बंगलौर और आर्थिक विकास संस्थान, दिल्ली ने मिलकर उनमें से बीस प्रतिशत अध्ययन पूरे किए। चल रहे अध्ययनों की कुल संख्या वर्ष के अन्त में 310 थी। अनुसंधान अध्ययनों की पूर्णता और प्रगति, संकाय के आकार, उसकी कोटि और अनुसंधान अध्ययनों की प्रकृति से सम्बद्ध थी। ऐसा देखा गया कि आर्थिक तथा सामाजिक परिवर्तन संस्थान, बंगलौर और आर्थिक विकास संस्थान, दिल्ली देश के ऐसे दो बड़े संस्थान हैं जहां 1984-85 में संकाय सदस्यों की संख्या क्रमश: 41 और 34 थी। नियमित संकाय सदस्यों के अलावा बड़ी संख्या में परियोजना स्टाफ ने भी अनुसंधान शोध निबन्धों के क्षेत्र में योग दिया।

9.05 अनुसंधान संस्थानों से आशा की जाती है कि वे अपने अनुसंधान अध्ययनों को प्रकाशित पुस्तकों और मिमिओग्राफ रूप में शोध निबन्धों और कामकाजी/आवसरिक निबन्धों/पत्रिकाओं में लेख देकर प्रसारित किया जाए। वर्ष के दौरान, प्रकाशित अथवा परिचालित विनिबन्धों और पुस्तकों की संख्या 84 और कामकाजी/आवसरिक पत्रों/लेखों की संख्या 273 है।

9.06. अनुसन्धान संस्थान, युवा समाज विज्ञानियों को प्रशिक्षित करने तथा नए अनुसन्धानकर्ताओं की उनके अनुसन्धान कार्य का डिजाइन तैयार और उसे आयोजित करने में भी मदद प्रदान करते हैं। इस प्रयोजनार्थ इन संस्थानों को डाक्टोरल फैलोशिप उपलब्ध कराई गई हैं। इनमें से कुछ संस्थान, एम० फिल० तथा पी-एच० डी० छात्रों के लिए शिक्षण तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मदद कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, ये संस्थान, परिषद् की नीति के अनुसरण में स्नातकोत्तर शिक्षण कार्य, विश्वविद्यालयों में अनुसंधान मार्गदर्शन में भाग लेते हैं और अपने अनुसन्धान कार्यक्रमों में विश्वविद्यालयों के शिक्षकों का भी सहयोग प्राप्त करते हैं। अनुसंधान संस्थानों के संकाय के मार्गदर्शन में कार्य करने वाले 19 डाक्टोरल अध्येताओं को वर्ष के दौरान पी-एच० डी० डिग्री प्रदान की गई, 15 ने अपने डाक्टोरल शोध निबन्ध प्रस्तुत कर दिए और 180 अध्येता अपनी पी-एच० डी० के लिए अनुसंधान संस्थानों में कार्य कर रहे थे। सेमिनारों और कार्यशालाओं के माध्यम से भी युवा अध्येताओं को काफी विषयों के सम्बन्ध में प्रशिक्षित करने का एक मंच प्राप्त होता है। वर्ष 1984-85 के दौरान 135 सेमिनार और कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

9.07 अनुसंधान कार्यकलापों तथा अकादमिक कार्यक्रमों के सम्बन्ध में एक विस्तृत रिपोर्ट परिशिष्ट 14 में दी गई है। संस्थानों के कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यकलापों का ब्यौरा नीचे दिया गया है।

9.08. ए० एन० सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान में बिहार और पूर्वी क्षेत्र की समस्याओं के विशेष सन्दर्भ में विकास पर समग्र रूप से बल दिया जाता है। नीति निर्माण तथा कार्यान्वियन में राज्य की मदद करने के वास्ते विकास प्रक्रिया तथा विकास के प्रभाव से सम्बन्धित समस्या-प्रधान अध्ययनों से सम्बन्धित अनुसंधान प्रयासों पर विशेष बल दिया जाता है। सूखा प्रधान क्षेत्रों, उथले ट्यूबवैलों, बिहार के कृषि बाजारों के मूल्यांकन, सरकारी कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण विकास और ग्रामीण बिहार में निर्धनता अथवा रोजगार की गतिशीलता के सम्बन्ध में बैंच मार्क अध्ययन जैसे ग्रामीण और कृषि सम्बन्धी घटना चक्रों के पहलुओं से सम्बन्धित प्रयुक्त प्रकृति के अध्ययन शुरू किए गए। सामूहिक आचरण, नेतृत्व, सामाजिक शक्ति, बच्चों में योग्यता, युवा समस्याएं तथा शिक्षा की समाज-वैज्ञानिक समस्याएं कुछ ऐसे विषय हैं जिन पर विशेष बल दिया गया। इसके अलावा, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों की स्त्रियों, राजनीतिक-आर्थिक परिवर्तनों की पद्धतियों, श्रोतागणों की स्थिति, सामुदायिक शिक्षा में विकास कार्यकलापों के मूल्यांकन और सहभागिता के सम्बन्ध में भी अनेक अध्ययन आयोजित किए जा रहे हैं। आलोच्य अवधि के दौरान 6 अध्ययन कार्य पूरे किए गए तथा 21 अध्ययन चल रहे थे। संस्थान ने, कॉलेज अध्यापकों तथा युवा

समाज अध्येताओं के लिए अर्थशास्त्र में मात्रात्मक विश्लेषण पर एक अल्पकालीन पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इसने 6 पुस्तकें और विभिन्न पत्रिकाओं में 30 लेख प्रकाशित किए जो इसके संकाय द्वारा किए गए अध्ययनों पर आधारित थे। संस्थान, सामाजिक और आर्थिक अध्ययनों पर एक अर्ध वार्षिक पत्रिका प्रकाशित करता है।

9.09 विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम के अनुसंधान कार्यकलापों में कृषि और ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था को प्राथमिकता दी जाती रही। इस क्षेत्र में शुरू किए गए अध्ययनों के एक सेट में कृषि विकास की प्रौद्योगिकी तथा संस्थाओं के बीच-परस्पर-क्रिया के विषय पर बल दिया गया तथा दूसरे सेट में कपास, रबर, इलायची और मछलियां आदि जैसी अलग-अलग वस्तुओं के उत्पादन और विपणन प्रणालियों को गहराई से समझने पर बल दिया गया। अन्य अनेक अध्ययनों में, कारखाना बाजारों, विशेष रूप से भूमि और श्रमिक बाजारों, भारत में कृषि श्रमिकोंकी अन्तर-क्षेत्रीय भिन्नताएं और स्त्रियों की भूमिका का अध्ययन शामिल था। उद्योग के क्षेत्र में कुछ चुने हुए विषयों का अध्ययन केन्द्र के अनुसन्धान प्रयासों और हितों का एक प्रमुख पहलू उभर कर सामने आया। दक्षिण भारत और स्वचालित सहायक उद्योगों के विशेष सन्दर्भ में कताई क्षेत्र के सम्बन्ध में अध्ययनों में पर्याप्त प्रगति हुई है। केरल के परम्परागत उद्योगों से सम्बन्धित कार्य पर विशेष ध्यान दिया जाता रहा। प्रौद्योगिकी अन्तरण तथा उद्योगों के विकास से सम्बन्धित समस्याओं के बारे में भी कुछ कार्य किया गया है। यूनिसेफ प्रायोजित बैंच मार्क सर्वेक्षण के अन्तर्गत स्त्रियों और बच्चों समेत केरल के पोषण तथा स्वास्थ्य स्थिति के सम्बन्ध में कुछ अध्ययन किए गए। वर्ष के दौरान शुरू किए गये अध्ययनों के एक अन्य सेट में विकास प्रक्रिया को व्यापक रूप से शामिल किया गया। उत्प्रवास, विशेष रूप से केरल वासियों के मध्य पूर्व में प्रवास के विभिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में अनेक अध्ययन आयोजित किए गये। इस अवधि के दौरान अनुसंधान रीति विज्ञान तथा आंकड़ा आधार पर कुछ ध्यान दिया गया। तीन अध्ययन पूरे हो गए तथा 29 अध्ययन चल रहे थे। संस्थान के संकाय सदस्यों द्वारा विभिन्न भारतीय और विदेशी पत्रिकाओं में 23 अनुसंधान-पत्र प्रकाशित किए गए। केन्द्र ने, अर्थशास्त्र की वर्तमान समस्याओं के सम्बन्ध में तीन सार्वजनिक व्याख्यान आयोजित किए।

9.10 नीति अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली के अध्ययनों में राजनीतिक तथा आर्थिक प्रश्नों के मैक्रो-ढांचे के अन्दर भारत के लिए उच्च प्राथमिकता वाली नीति विकसित करने पर बल दिया गया। इसके अतिरिक्त, यह केन्द्र विकास के लिए क्षेत्रीय कार्य कर रहा है। जिन क्षेत्रों को शामिल किया गया है उनमें दक्षिण-पश्चिम एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया तथा इन सबसे महत्त्वपूर्ण दक्षिण एशिया का क्षेत्र

शामिल है। आलोच्य अवधि के दौरान निम्नलिखित प्रमुख विषयों पर जोर दिया गया : मूल्य सूचकांक, प्रौद्योगिकी परिस्थिति-प्रणाली विकास, राष्ट्रीय एकता, विदेशी मामले, स्वास्थ्य तथा पोषण, मन्त्रिमण्डल का गठन और वैयक्तिक चयन में अनुसंधान तथा विकास। इसके अतिरिक्त दक्षिण एशिया, भारत तथा इसके निकटवर्ती देशों में खाद्य सुरक्षा और कृषि आधार से सम्बन्धित अध्ययन, राष्ट्र निर्माण और दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग, इस क्षेत्र में घरेलू, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं के बीच अन्दरूनी-बाहरी कड़ियों से सम्बद्ध प्रश्न, क्षेत्रीय जागरूकता और अभिज्ञान की समझ तथा विकास के लिए क्षेत्रीय सहयोग का प्रोत्साहन अन्य विषय थे जिन पर बल दिया गया। वर्ष 1984-85 के दौरान केन्द्र ने छ: अध्ययन पूरे किए तथा सात अध्ययन प्रगति पर थे। केन्द्र ने सात अध्ययन/पत्र मिमिओग्राफ रूप में प्रकाशित किए।

9.11 सामाजिक अध्ययन केन्द्र, सूरत के अनुसन्धान कार्यकलापों में सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान की प्रकृति तथा अनुसन्धानकर्ता की सामाजिक भूमिका को समझने की आवश्यकता पर बल दिया गया। केन्द्र का मुख्य उद्देश्य *भारतीय सोसायटी की संरचना और प्रक्रिया का अध्ययन करना है।* इस उद्देश्य के लिए यह प्रमुख रूप से क्षेत्रीय अनुसंधान से आंकड़े एकत्र करता है और उनका संसाधन करता है ताकि भारतीय सामाजिक वास्तविकता को गहराई से समझा जा सके और एक सहयोगात्मक तथा समतावादी सामाजिक प्रणाली का निर्माण करने में आने वाली बाधाओं का पता लगाया जा सके। इसलिए केन्द्र के अनुसंधान कार्य में सामाजिक और आर्थिक वंचना, सामाजिक तनाव और विकास तथा आयोजना प्रक्रिया पर विशेष जोर देते हुए खासतौर पर बल दिया जाता है। केन्द्र द्वारा किए जाने वाले अध्ययन यद्यपि मुख्यत: गुजरात से सम्बन्धित होते हैं तथापि तुलनात्मक विश्लेषण करने तथा एक अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य विकसित करने के लिए देश के अन्य भागों में भी अध्ययन किए गए हैं। आलोच्य वर्ष के दौरान निम्नलिखित विषयों के सम्बन्ध में पांच अध्ययन पूरे किए गये : राजनीतिक-आर्थिक प्रभुत्व का ढांचा, एक गांव में सामाजार्थिक परिवर्तन, पोशिमा क्षेत्र में स्कूलों में जनजातीय लड़कियों द्वारा दाखिला न लेने के कारण और उत्तरी बिहार में भाषा आन्दोलन। चल रहे आठ अनुसंधान अध्ययनों में अनेक विषय शामिल हैं, यथा शक्ति वर्ग और शक्ति सम्बन्ध, औद्योगिक सम्बन्ध, जनजातीय स्थिति नीति विश्लेषण, ग्रामीण गतिशीलता और कृषक वर्ग तथा जाति, श्रेणी और समुदाय के तीन आयामों के बीच परस्पर-क्रिया। केन्द्र के पुस्तकालय के एक भाग के रूप में एक प्रलेखन यूनिट स्थापित किया गया है। वर्ष 1984-85 के दौरान जिला आयोजना बोर्ड, सूरत के अनुरोध पर 600 प्रविष्टियां तैयार की गईं। केन्द्र ने, विभिन्न भारतीय तथा विदेशी पत्रिकाओं में 31 अनुसंधान पत्र तथा

चार पुस्तकें प्रकाशित कीं तथा खण्डों का सम्पादन किया। केन्द्र ने गुजराती में भी चार पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इसके अलावा, संकाय सदस्यों ने ग्यारह कामकाजी पत्र मिमिओग्राफ रूप में भी तैयार किए। केन्द्र ने अपनी त्रैमासिक पत्रिका के चार अंक प्रकाशित किए।

9.12 विकासशील सोसायटी अध्ययन केन्द्र, दिल्ली में अनुसंधान का मुख्य विषय प्रजातान्त्रिकरण की प्रक्रिया और विकास के बीच सम्बन्ध का अध्ययन रहा है। केन्द्र ने, इसके संकाय द्वारा किए गए विगत कार्य के मूल्यांकन के आधार पर सामाजिक अनुसंधान का अपना परिप्रेक्ष्य पुनः तैयार किया। अब केन्द्र के अनुसंधान कार्यकलापों में पहले से चल रहे विषयों के अलावा कुछेक नए विषय शामिल हैं, यथा, (1) राजनीतिक दर्शन, बहु-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, (2) लोकप्रिय आन्दोलन, (3) केन्द्रीयकरण तथा विकेन्द्रीकरण की समस्याओं सहित राष्ट्र निर्माण में क्षेत्र का योगदान, (4) दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में राज्य, समाज और धर्म, (5) शान्ति, सुरक्षा और विकास, (6) विकास-संकल्पना तथा नीति, (7) विकास का राजनीतिक समाजशास्त्र, (8) पुनरुत्थान तथा विकास, (9) विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा संस्कृति, (10) परिवर्तनशील सामाजिक वर्गीकरण, (11) सहयोगात्मक अनुसंधान की नई रीतियां, और (12) राज्य की भूमिका। अनुसंधान की इस रूपरेखा के अन्दर वर्ष 1984-85 के दौरान सात अध्ययन पूरे किए गए तथा इक्कीस अध्ययन प्रगति पर थे। केन्द्र ने तीन पुस्तकें प्रकाशित कीं जो उसके संकाय सदस्यों द्वारा किए गये अनुसंधान कार्य पर आधारित थीं। इसके अलावा इसके संकाय सदस्यों ने भारतीय तथा विदेशी पत्रिकाओं में दस लेख और समीक्षाएं प्रकाशित कीं तथा खण्डों का सम्पादन किया। केन्द्र ने, "चीन रिपोर्ट" तथा "विकल्प" नामक दो पत्रिकाओं का प्रकाशन जारी रखा।

9.13 सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कलकत्ता के अनुसंधान कार्यक्रमों को तीन प्रमुख विषयों में वर्गीकृत किया जा सकता है, यथा (1) भारत की, विशेष रूप से उसके ऐतिहासिक आयाम में पूर्वी भारत की अर्थव्यवस्था, राजतन्त्र और समाज की समकालीन समस्याओं का अध्ययन, (2) समकालीन भारतीय अर्थ-व्यवस्था, राजतन्त्र और समाज की विशिष्ट समस्याएं, और (3) आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक सिद्धांत के पहलू। वर्ष के दौरान जो अनुसंधान कार्य किया गया वह कृषि पूंजी निर्माण, संस्थाओं का ऐतिहासिक और तुलनात्मक ढांचा और उत्तर-पूर्व क्षेत्र के जनजातीय लोगों की समस्याओं, बढ़ते हुए औपचारिक तथा अनौपचारिक क्षेत्रों, रोजगार, उत्पादकता पर माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक्स का प्रभाव, और रोजगार, सामाजिक विरोध आंदोलन, शहरी और क्षेत्रीय अध्ययन, पूर्वी क्षेत्र का सामाजिक और आर्थिक इतिहास, सामाजिक विरोध आन्दोलन,

मार्क्सवाद तथा सामाजिक परिवर्तन, बड़े कृषि प्रधान देशों में राज्य और सामाजिक संगठनों से संबंधित था। केन्द्र ने चार अध्ययन पूरे किए और पन्द्रह पर कार्य चल रहा है। इसने वर्ष 1984-85 के दौरान दो विनिबंध तथा छ: आवसरिक पत्र प्रकाशित किए।

9.14 सामाजिक विकास परिषद् (हैदराबाद इकाई) ने सामाजिक विकास के क्षेत्र में अनुसंधान और मूल्यांकन अध्ययन जारी रखे। किए गए अधिकांश अध्ययनों में मुख्यत: स्त्रियों, बच्चों, वृद्धों तथा शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों सहित समाज के कमजोर वर्गों के सामाजार्थिक कल्याण पर बल दिया गया। आठ अध्ययन पूरे हो गए और बारह प्रगति पर थे। परिषद् ने पांच अनुसंधान रिपोर्ट मिमिओग्राफ रूप में प्रकाशित कीं। हैदराबाद नगर निगम ने परिषद् की हैदराबाद स्थित इकाई को हैदराबाद गन्दी बस्ती सुधार परियोजना और इस कार्यक्रम में लगे कार्मिकों के प्रशिक्षण का समवर्ती मूल्यांकन आयोजित करने का काम सौंपा है। हैदराबाद संघीय विकास प्राधिकरण के अधिकारियों के लिए परिषद् की हैदराबाद इकाई ने एक अल्पकालीन प्रशिक्षण एवं अनुस्थापन पाठ्यक्रम आयोजित किया।

9.15 गोविन्द बल्लभ पन्त सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद के अनुसंधान कार्यकलापों में मुख्यत:, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और उड़ीसा के अपेक्षाकृत अधिक पिछड़े हुए क्षेत्रों में आर्थिक प्रगति के लाभों के वितरण में समता के विशेष सन्दर्भ के साथ छोटे तथा असंगठित समुदायों की विकास समस्याओं पर बल दिया गया। अध्ययनों में खासतौर पर क्षेत्रीय तथा उप-क्षेत्रीय आयोजना की नीतियों और समस्याओं, सामाजिक रूप से असुविधा प्राप्त वर्गों तथा अलग-थलग समुदायों के विकास की समस्याओं, पारिस्थितिक गिरावट और पर्यावरणात्मक आयोजना की समस्याओं, उत्तर प्रदेश के अलग-थलग समुदायों और क्षेत्रों पर औद्योगीकरण की प्रकृति और उसका प्रभाव, ग्रामीण जीवन और रहन-सहन पर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का प्रभाव और सामाजिक विकास तथा परिवर्तन की वैकल्पिक पद्धतियों के सैद्धान्तिक निर्माणों पर बल दिया गया। आलोच्य वर्ष के दौरान संस्थान ने चार अनुसंधान परियोजनाएं पूरी की तथा 22 प्रगति पर थीं। इसने छ: आवसरिक पत्र प्रकाशित किए।

9.16 गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ द्वारा जो अनुसंधान अध्ययन आयोजित किए गए वे व्यापक विषयों तथा विचारों से सम्बन्धित थे किन्तु अधिकांश अध्ययनों में विभिन्न क्षेत्रों और इलाकों में उत्तर प्रदेश राज्य में विकास के बारे में जोर दिया गया। विभिन्न परियोजनाओं में जिन प्रमुख पहलुओं का अध्ययन किया गया वे कृषि तथा ग्राम विकास, क्षेत्रीय विकास और आयोजना, औद्योगीकरण तथा सामाजिक और भौतिक बुनियादी ढांचे से सम्बद्ध थे। वर्ष 1984-85 के दौरान संस्थान ने तीन अध्ययन पूरे किए तथा पन्द्रह प्रगति के

विभिन्न स्तरों पर थे। इसने एक पुस्तक, तीन अनुसंधान रिपोर्ट और 23 कामकाजी पत्र मिमिओग्राफ रूप में प्रकाशित किए। संस्थान के संकाय ने विभिन्न पत्रिकाओं में 19 अनुसंधान पत्र प्रकाशित किए तथा खण्डों का सम्पादन किया।

9.17 गांधी अध्ययन संस्थान के अनुसंधान कार्यक्रमों में मुख्यत: भारतीय समाज के विकास और बढ़ोत्तरी की उभरती हुई समस्याओं पर बल दिया गया। जिन विषयों पर अध्ययन आयोजित किए गए वे रचनात्मक कार्य से सम्बन्धित गांधीवादी आन्दोलन और गांधीवादी विचारधारा में विरोधी कार्यकलाप तथा मूलभूत प्रश्नों से सम्बद्ध थे। इनमें गांधीवादी विचारधारा तथा प्रथा को प्रभावित करने वाले ऐतिहासिक व सैद्धान्तिक विषय और माइक्रो-स्तरीय क्षेत्र अध्ययन शामिल थे। इसके अतिरिक्त, अनेक अन्य अध्ययनों का मुख्य विषय व्यापक समाज सम्बन्धी प्रक्रियाओं से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन करना था। संस्थान ने एक अध्ययन पूरा कर लिया तथा चार प्रगति पर थे। इसने ग्यारह विनिबन्ध प्रकाशित किए। संस्थान के संकाय ने विभिन्न पत्रिकाओं में तेरह अनुसंधान पत्र प्रकाशित किए।

9.18 विकास अध्ययन संस्थान, जयपुर के अध्ययनों में राजस्थान राज्य के विकास की समस्याओं के खास सन्दर्भ में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान कार्य शामिल हैं। संस्थान द्वारा आयोजित अनुसंधान अध्ययनों में राजस्थान के भौतिक लक्षणों, विषयों और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोणों के चयन को प्रभावित करने वाले कुछ बुनियादी मानदण्डों को महत्त्व प्रदान किया गया। संस्थान ने, आई० आर० डी० पी० बायोगैस, इत्यादि जैसे कुछेक कार्यक्रमों के पारिस्थितिक, पशुधन, स्त्री विकास, ऊर्जा और मूल्यांकन अध्ययनों से सम्बन्धित अनेक महत्त्वपूर्ण अध्ययन प्रारम्भ और पूरे किए। फिलहाल संस्थान निम्नलिखित अध्ययनों के कार्य में लगा है : समान सम्पत्ति संसाधन की समस्याएं, गिनी कृमि उन्मूलन कार्यक्रम के लिए बांसवाड़ा और डूंगरपुर जिलों के अध्ययन को सिंचाई आधार रेखा, अजमेर जिले में बकरी पालन, मूल्यांकन तथा ग्रामीण स्त्री कार्यकर्ता व राजस्थान के तेरह जिलों में आई० आर० डी० कार्यक्रम और पश्चिमी राजस्थान में उत्प्रवास तथा खानाबदोश जीवन का समवर्ती मूल्यांकन। इसने ग्यारह आवसरिक/चर्चा पत्र और स्त्रियों के लिए विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी सम्बन्धी कार्यशाली का कार्यवाही प्रकाशित की।

9.19 आर्थिक विकास संस्थान, दिल्ली के अध्ययनों में प्रमुख रूप से प्रयुक्त और मात्रात्मक अनुसंधान पर जोर दिया जाता है। परियोजनाओं के चयन में सामाजिक महत्त्व की समकालीन समस्याओं का ध्यान रखा जाता है। अनुस्थापन कार्य में आयोजना तथा नीति सम्बन्धी प्रश्नों से सम्बन्धित समस्याओं को प्रमुखता दी जाती है। संस्थान के कार्य में, अनेक अनुसंधान समस्याओं के अध्ययन में

सामाजिक, आर्थिक, जनांकिकीय, संस्थात्मक और आयोजना सम्बन्धी समस्याओं के विभिन्न क्षेत्र सम्मिलित हैं। इसके अध्ययनों में एशियाई परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखा जाता है। आलोच्य अवधि के दौरान अनेक विषयों पर अनुसंधान कार्य किया गया जो निम्नलिखित विषयों से सम्बन्धित थे: ऊर्जा, मुद्रा, मूल्य और आय, वित्तीय बचत, उत्पादकता विकास और निर्यात निष्पादन, तकनीकी परिवर्तन, रोजगार तथा मूल्य, विटामिन "ए" के अभाव के नियंत्रण के लिए वैकल्पिक नीतियों का मूल्यांकन, तकनीकों के विकास चयन के कल्याण निहितार्थ, सार्वजनिक क्षेत्र के कुछ माल के उत्पादन में आवंटन सम्बन्धी तथा तकनीकी अकार्य-कुशलता, भारत में आय वर्गों पर प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष करों का प्रभार, निर्धनता में ग्रामीण स्त्रियों के लिए कृषि विकास के निहितार्थ, सिंचाई, कृषि, कृषि विपणन और उधार में क्षेत्रीय असमानताएं, औद्योगिक विकास, धर्मनिरपेक्षता और धर्म-निरपेक्षीकरण के विभिन्न पहलू, संस्कृति के विकास तथा ह्रास के कारण, बौद्धिक हस्तक्षेप और विभाजक तत्त्व, कृषि संरचना, भारत और जापान में ग्रामीण परिवर्तन का तुलनात्मक अध्ययन, कृषि विकास और जनसंख्या तथा स्वास्थ्य के कुछ पहलू। वर्ष के दौरान सात अनुसंधान विनिबंध प्रकाशित किए गए तथा पांच छप रहे थे। शुरू की गई परियोजनाओं के फलत: 30 अनुसंधान पत्र देश-विदेश की व्यावसायिक पत्रिकाओं में प्रकाशित किए गए तथा 50 से अधिक पत्र मिमिओग्राफ रूप में निकाले गए। दो पुस्तकें प्रकाशनार्थ तैयार हैं। संस्थान की पत्रिका 'भारतीय समाजशास्त्र में योगदान' प्रकाशित होती रही।

भारतीय आर्थिक सेवा परिवीक्षाधीन अधिकारियों तथा आयोजना और परियोजना मूल्यांकन सम्बन्धी प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थान के कार्यकलापों का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। आलोच्य अवधि के दौरान भा० आ० से० परिवीक्षार्थियों ने अपना 9 महीने का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पूरा कर लिया। विभिन्न राज्यों तथा केन्द्रीय सरकार के विभिन्न अधिकारियों के लिए निवेश आयोजना तथा परियोजना मूल्यांकन में पांच भिन्न-भिन्न पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। प्रशिक्षण संस्थाओं से सम्बद्ध अधिकारियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रशिक्षार्थियों के वास्ते पहली बार एक अनुस्थापन पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में कुल मिलाकर 54 अधिकारियों ने भाग लिया।

संस्थान के रजत जयन्ती समारोहों के एक भाग के रूप में "भारतीय अर्थ-व्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तनों" पर एक सेमिनार आयोजित किया गया। सेमिनार में 75 से अधिक विद्वानों ने 50 से अधिक पत्रों पर चर्चा की। रजत जयन्ती व्याख्यान माला कार्यक्रम के अन्तर्गत सात व्याख्यान दिए गए।

9.20 भारतीय शिक्षा संस्थान, पुणे के अनुसंधान कार्यक्रम में सैद्धान्तिक अनुसंधान, कारंवाई अनुसंधान और विस्तार कार्यकलापों पर जोर दिया जाता

है। अनुसंधान कार्यक्रमों को इस प्रकार संचालित करने का निरन्तर प्रयास किया जाता है कि संस्थान सामान्यत: विकासशील देशों में और विशेष रूप से भारत और इसके विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा के बुनियादी प्रश्नों से सम्बन्धित विश्लेषणात्मक विचारधारा के लिए एक मंच के रूप में काम कर सके। यद्यपि चालू कार्यक्रमों को जारी रखा जा रहा है तथापि संस्थान में शिक्षा में वर्तमान अध्ययनों में खाद्य, उत्पादकता और रोजगार पर जोर देते हुए सातवीं पंचवर्षीय आयोजना के साथ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से कड़ी कायम करने पर भी बल दिया जाता है। संदर्भाधीन अवधि के दौरान प्रारम्भ किए गए उभरते हुए अनुसंधान कार्य की सूची के विषयों को पांच प्रमुख वर्गों के अन्तर्गत रखा जा सकता है जिसमें शिक्षा तथा अर्थव्यवस्था, शिक्षा और समाज, शिक्षा और राजनीति, शिक्षा नीति, शैक्षिक आंकड़ा बैंक और भण्डारगृह शामिल हैं। वर्ष 1984-85 के दौरान शुरू और पूरे किए गए महत्त्वपूर्ण अनुसंधान अध्ययनों में से कुछेक प्राथमिक शिक्षा के सर्वसुलभीकरण, गैर-औपचारिक विज्ञान शिक्षा, क्षेत्रीय शैक्षिक अध्ययन, प्राथमिक स्कूल शिक्षकों का विकास, शिक्षा का व्यवसायीकरण, ग्रामीण स्त्रियों के लिए विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी और कॉलेज छात्रों व अध्यापकों के लिए सजगता कार्यक्रम शामिल हैं। संस्थान ने तीन अध्ययन पूरे कर लिए और छ: प्रगति पर थे। इसने दो पुस्तकें प्रकाशित कीं। संस्थान की मराठी त्रैमासिक पत्रिका "शिक्षण अणि समाज" और बुलेटिन का प्रकाशन जारी रहा। इसने मराठी में एक पाक्षिक पत्रिका "संवादिनी" के छ: अंक भी प्रकाशित किए। यह पत्रिका प्रौढ़ शिक्षा के प्रोत्साहन से सम्बन्धित है।

9.21 लोक उद्यम संस्थान के अनुसंधान कार्यकलापों में लोक उद्यमों से सम्बन्धित सार्वजनिक नीति से सम्बन्धित समस्याओं पर मुख्य रूप से बल दिया जाता है। इसने विश्लेषणात्मक तथ्य निर्धारक तथा कार्रवाई आधारित अनुसंधान आयोजित किया। इसमें मूल्य निर्धारण नीति, निवेश विकल्प और विकास में लोक उद्यमों का योगदान आदि शामिल है। ऐसे कार्यकलापों का मुख्य उद्देश्य नीति निर्माताओं और अभ्यासकर्ताओं को सहायता पहुंचाना है ताकि वे ऐसे विषयों पर परस्पर विचार-विमर्श कर सकें जिससे निगमित आयोजना और विकास में केन्द्रीय और राज्य स्तर पर लोक उद्यमों को मदद मिलती है। लन्दन व्यापार स्कूल, लन्दन के सहयोग से शुरू किए गए तीन वर्षीय अनुसंधान कार्यक्रम का पहला चरण 1984-85 में पूरा किया गया। संस्थान में छ: शोध अध्ययन पूरे किए गए और तेरह की प्रगति जारी रही। संस्थान, राज्य और केन्द्रीय लोक उद्यमों के प्रबन्ध संवर्ग के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करता है। कार्यक्रम के अन्तर्गत 19 अल्पकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए गए।

9.22 सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन संस्थान, बंगलौर मुख्यत: भारत में

आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन के सम्बन्ध में सामान्य रूप से और कर्नाटक के सम्बन्ध में विशेष रूप से अनुसंधान कार्यकलाप आयोजित करता है। आलोच्य अवधि के दौरान संस्थान में जिन प्रमुख विषयों के बारे में अध्ययन किए गए उनमें निम्नलिखित विषय शामिल हैं : क्षेत्रीय असमानताएं, निर्धनता और असमानता, समाज में बदलती हुई सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक और प्रौद्योगिकीय प्रवृत्तियां, ग्रामीण और कृषि विकास के विशिष्ट पहलू, जनसंख्या और कार्य बल परिवर्तन, शहरी और यातायात सम्बन्धी अध्ययन, सिंचाई अध्ययन, विकास कार्यक्रमों का मूल्यांकन तथा प्रभाव, सुविधाओं तथा संसाधनों का उपयोग, रोजगार और आय। इसने 23 अध्ययन पूरे कर लिए तथा 36 अध्ययन प्रगति के विभिन्न स्तरों पर थे। संस्थान ने 12 पुस्तकें प्रकाशित कीं।

9.23 मद्रास विकास अध्ययन संस्थान, मद्रास के कार्यकलापों में मुख्य रूप से तमिलनाडु की ग्रामीण और कृषि सम्बन्धी समस्याओं के विशेष सन्दर्भ में वहां के आर्थिक विकास पर जोर दिया जाता है। संस्थान में शुरू किए गए अध्ययन विविध विषयों से सम्बन्धित थे जिनमें से निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं : निर्धनता तथा ग्रामीण सामाजिक प्रणाली, ग्रामीण विकास कार्यक्रम, कृषि विपणन, ग्रामीण शिल्पकार, सिंचाई, शिक्षा, स्वास्थ्य, उत्प्रवास, स्त्री रोजगार, केन्द्र-राज्य वित्तीय सम्बन्ध व उद्योगों से सम्बन्धित अनेक विषय जैसे कि पिछड़े क्षेत्रों का औद्योगीकरण, छोटे उद्यम एकाधिकारों में वृद्धि और हथकर्घा तथा चर्म उद्योग। संस्थान ने एक ग्राम अध्ययन कार्यक्रम भी शुरू किया है। इसके अतिरिक्त, तमिलनाडु में तालाब से सिंचाई, आई० आर० डी० पी० तथा डी० पी० ए० पी० कार्यक्रम, शिवकासी में राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम और माचिस उद्योगों के मूल्यांकन से सम्बन्धित प्रायोजित परियोजनाएं शुरू की गई हैं। सात अध्ययन पूरे हो गए हैं तथा आठ प्रगति पर थे। इसने 9 कामकाजी पत्र, दो चयनिका शृंखला, एक आवसरिक पत्र तथा दो अन्तरिम रिपोर्ट प्रकाशित कीं।

संस्थान ने, वित्तीय प्रबन्ध तथा अनुसंधान संस्थान, अर्थशास्त्र विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय के सहयोग से नगर के पी-एच० डी० अध्येताओं के लिए एक पाठ्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में 20 पी-एच० डी० उम्मीदवारों ने भाग लिया। इसने पी-एच० डी० अध्येताओं तथा गाइडों की एक वार्षिक बैठक भी आयोजित की। कार्यशाला में तमिलनाडु के विभिन्न भागों में स्थित संस्थाओं और विश्वविद्यालयों के 22 पी-एच० डी० अध्येताओं तथा ग्यारह पी-एच० डी० गाइडों ने भाग लिया। संस्थान का एक अल्पकालीन इन्टर्नशिप कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम के लिए तीन अध्येताओं को मनोनीत किया गया जिन्होंने आलोच्य अवधि के दौरान तीन अध्ययन पूरे किए।

संस्थान ने 'मद्रास विकास सेमिनार शृंखला बुलेटिन' प्रकाशित किए। क्षेत्र

अध्ययन 'ग्रन्थसूची-तमिलनाडु'—साइक्लोस्टाइल रूप में निकाली गई। प्रकाशित किए गए अन्य दो प्रकाशनों में एक "तमिलनाडु में विकास असमानताएं और निर्धनता" पर, दूसरा "सातवीं पंचवर्षीय आयोजना पर कुछ विचार" लोकप्रिय क्रममाला पत्र का प्रकाशन शामिल है।

9.24 सरदार पटेल सामाजिक तथा आर्थिक अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद के अनुसंधान कार्य में प्रमुख रूप से मौद्रिक अर्थशास्त्र, उपभोग अर्थशास्त्र, क्षेत्रीय अर्थशास्त्र, शहरी और औद्योगिक अर्थशास्त्र तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, प्रौद्योगिकी अन्तरण की समस्याओं तथा बहुराष्ट्रिक निगम पर विशेष जोर देते हुए प्रयुक्त इकानामिट्रिक्स के क्षेत्र पर बल दिया जाता है। यद्यपि इन क्षेत्रों में कार्य को जारी रखा गया है तथापि संस्थान में किए जाने वाले वर्तमान अनुसंधान कार्य में जिस बात पर बल दिया जाता है वह गुजरात में रहन-सहन के आनुभाविक विश्लेषण स्तर, निर्धनता अनुक्रमणिकाओं का निर्माण और अनुमान, कमजोर वर्गों की समस्याओं, सामाजिक वन से सम्बन्धित मूल्यांकन अध्ययन, सूखा प्रधान क्षेत्रों की समस्या और प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से सम्बद्ध है। आठ परियोजनाएं पूरी की गईं तथा 16 प्रगति पर थीं। संस्थान ने दो पुस्तिकाएं प्रकाशित कीं। इसने अंग्रेजी में और गुजराती में एक-एक अर्ध वार्षिक पत्रिका प्रकाशित की। संस्थान ने "अनुसंधान रीति विज्ञान" पर चार सप्ताह का एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया। इस पाठ्यक्रम का प्रायोजन कॉलेज और विश्वविद्यालय शिक्षकों व अनुसंधान छात्रों के लिए भा० सा० वि० अ० प० द्वारा किया गया था। इसके अलावा, इसने गुजरात में सामाजिक वानिकी कार्यक्रम के मूल्यांकन तथा सामान्य प्रबन्ध में दो प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए।

9.25 विकास विकल्पों में क्षेत्रीय, पारिस्थितिक और समाज विज्ञान केन्द्र, कलकत्ता के प्रमुख अनुसंधान हित, विशिष्ट क्षेत्रीय, पारिस्थितिक और मानवीय सन्दर्भ में और सार्वजनिक नीति को प्रभावित करने वाले विज्ञान, प्रौद्योगिकी और सोसायटी की परस्पर समस्याओं से जुड़े हैं। केन्द्र में किए जाने वाले अध्ययन अनेक विषयों से सम्बद्ध हैं जैसे कि पूर्वी भारत में खाद्य प्रणालियां तथा सोसायटी, प० बंगला और उड़ीसा में उपलब्ध बायोगैस उपयोग पद्धति तथा सामाजार्थिक निहितार्थ, पूर्वी भारत में खनिज संसाधन उपयोग के लिए दीर्घावधिक नीतियां, औषध उद्योग तथा स्वास्थ्य देख-रेख व चिकित्सीय अनुसंधान के साथ इसका सम्बन्ध और मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के विभिन्न पहलू। इसने पांच अध्ययन पूरे कर लिए हैं और सात अध्ययन चल रहे हैं। केन्द्र को वर्ष 1984-85 के दौरान भा० सा० वि० अ० प० की अनुरक्षण और विकास अनुदान योजना के अन्तर्गत लाया गया। पिछले वर्षों में किए गए अध्ययनों के आधार पर केन्द्र ने 33 कामकाजी पत्र तथा 20 अनुसंधान रिपोर्टें प्रकाशित कीं। इसने, "इको-साइंस"

नामक एक पत्रिका तथा बंगला में "संस्कृति ओ समाज" नामक त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित की ।

9.26 ग्रामीण और औद्योगिक विकास अनुसंधान केन्द्र, चण्डीगढ़ को 1984-85 के दौरान सहायता-अनुदान योजना के अन्तर्गत लाया गया । आलोच्य वर्ष के दौरान केन्द्र में किए गए अनुसंधान कार्यों में देश के विभिन्न क्षेत्रों में साम्प्रदायिक हिंसा की समस्याओं और पंजाब के सीमावर्ती क्षेत्रों की विकास समस्याओं और सम्भावनाओं के अध्ययन पर बल दिया । केन्द्र ने, साम्प्रदायिक हिंसा, तथा विकास और राष्ट्रीय एकता पर इसके प्रभाव के सम्बन्ध में चार विस्तृत अन्तर-विषयक रिपोर्टें तैयार की । इसने तीन पुस्तकें प्रकाशित कीं और इसके संकाय ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए छः लेख दिए । इसके अतिरिक्त छः शोध अध्ययन पूरे किए गए और पांच पर प्रगति हुई ।

9.27 स्त्री विकास अध्ययन केन्द्र, दिल्ली के अनुसंधान प्रयासों में व्यापक दृष्टिकोण, परिप्रेक्ष्य तथा व्यवस्था को अपनाते हुए 1979 में इसकी स्थापना से ही स्त्रियों की समस्याओं के सम्बन्ध में अध्ययन करने तथा ऐसी अनुसंधान एवं कार्रवाई परियोजनाएं शुरू करने पर बल दिया जाता रहा है जिनसे स्त्रियों के विकास के लिए निर्धारित अथवा विद्यमान नीतियों की वद्यता अथवा अपर्याप्तता प्रदर्शित करने में मदद मिल सके । भ्रमणकारी समिति की सिफारिशों पर परिषद् ने केन्द्र को वर्ष 1984-85 के लिए 2.00 लाख रुपये का अनुदान दिया ताकि यह विकास के एक ऐसे दायरे में काम कर सके जिसके अन्दर अनुसंधान व अन्य कार्यकलापों का एक सामंजस्यपूर्ण कार्यक्रम कार्यान्वित किया जा सके । केन्द्र ने आलोच्य अवधि के दौरान अपनी संदर्श योजना प्रस्तुत की जिसमें अनुसंधान मुद्दों की ओर संकेत करते हुए दो विषयों पर जोर दिया गया, यथा (1) भूमि की समस्या तथा स्त्रियों का विकास, और (2) स्त्रियों की राजनीतिक सह-भागिता । प्रथम अनुसंधान कार्यक्रम से सम्बन्धित अध्ययनों में ऐतिहासिक, कानूनी और विकास आयामों को सम्मिलित किया गया है । इसके अनुसंधान कार्यक्रम की रूपरेखा के अन्दर जिस अन्य विषय की जांच करने का प्रस्ताव है वह उत्पादक संसाधनों तक स्त्रियों की पहुंच और नियंत्रण के बीच सम्बन्धों से सम्बद्ध है । दूसरे अनुसंधान क्षेत्र में शामिल किए गए अध्ययनों में पिछड़ेपन के सिद्धान्त की जांच-पड़ताल, विभिन्न संगठनों में स्त्री नेतृत्व की स्थिति और सदस्यता, संगठनात्मक आचरण तथा वैचारिक विकास आदि पर जोर देते हुए विभिन्न स्तरों पर राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक संगठनों के मामला अध्ययन से सम्बद्ध विषय शामिल थे । वर्ष 1984-85 में चार अध्ययन पूरे हुए, और सात पर कार्य जारी रहा । केन्द्र की संकाय के सदस्यों ने विभिन्न पत्रिकाओं में सोलह शोध लेख प्रकाशित किये ।

अनुसंधान संस्थाओं द्वारा आयोजित तथा प्रसारित अनुसंधान और प्रशिक्षण कार्य

अनुसंधान संस्थान	पूरे किए गए अनुसंधान	चल रहे अनुसंधान	डाक्टोरल अनुसंधान		
			पीएच.डी. प्रदान की गई	प्रस्तुत शोध निबंध	चालू
1	2	3	4	5	6
ए एन एस आई एस एस, पटना*	6	21	2	2	28
सी डी एस, त्रिवेन्द्रम**	3	29	1	3	18
सी पी आर, दिल्ली	6	7	—	—	8
सी एस एस, सूरत	5	8	—	—	5
सी एस एस एस, कलकत्ता	4	15	4	—	29
सी एस डी एस, दिल्ली	7	21	2	—	15
सी एस डी, दिल्ली V	8	12	—	—	—
जी बी पी एस एस आर आई, इलाहाबाद	4	22	—	—	5
जी आई डी एस, लखनऊ	3	15	2	—	24
जी आई एस, वाराणसी	1	4	—	—	—
आई डी एस, जयपुर	—	8	—	—	—
आई ई जी, दिल्ली /\	12	50	—	—	12
आई आई ई, पुणे	3	6	3	—	11
आई पी ई, हैदराबाद +	6	13	—	—	—
आई एस ई सी, बंगलौर	23	36	1	6	55
एम आई डी एस, मद्रास	7	8	—	1	13
एस पी आई ई एस आर, अहमदाबाद	8	16	4	3	3
सी आर ई एस एस आई डी ए, कलकत्ता	5	7	—	—	—
सी आर आर आई डी, चण्डीगढ़	6	6	—	—	—
सी डब्ल्यू डी एस, दिल्ली	4	7	—	—	—
जोड़	121	310	19	15	226

प्रकाशन		संदर्भित पत्रिकाओं में कामकाजी आवसरिक पत्र लेख	सेमिनार कार्यशालाएं	भा. सा. वि. अ. प. फैलोशिप	संकाय संख्या
प्रकाशित पुस्तकें	विनिबंध/ मिमिओग्राम				
7	8	9	10	11	12
6	—	30	9	—	20
—	—	23	18	3	21
—	7	—	4	—	5
4	11	31	12	—	10
—	2	6	13	3	15
3	—	10	—	—	14
—	5	—	4	—	6
—	—	6	8	4	6
1	3	42	2	3	11
—	—	13	2	—	16
—	—	11	—	—	8
12	50	30	16	—	34
2	—	—	9	3	7
—	—	—	6	—	17
12	—	—	22	12	41
—	2	14	3	1	12
—	—	2	2	3	15
2	—	33	—	—	27
3	4	6	3	—	8
3	—	16	4	—	26
48	84	273	135	32	319

* विश्वविद्यालय तथा कॉलेज अध्यापकों और अनुसंधानकर्ताओं के लिए 'अर्थशास्त्र में माप तथा मात्रात्मक विश्लेषण' पर एक दस द्विवसीय पाठ्यक्रम ।

** 1984-85 के बैच के लिए केन्द्र के एम० फिल० कार्यक्रम के अन्तर्गत 12 उम्मीदवार मनोनीत किए गए। पूर्ववर्ती बैच के तीन उम्मीदवारों ने तीन शोध निबंध पूरे किए।

V परिषद् ने, नगर निगम, हैदराबाद के शहरी सामुदायिक विकास सैल में काम करने वाले परियोजना अधिकारियों तथा सामुदायिक आयोजकों के लिए अनेक अल्पकालीन अनुस्थापन पाठ्यक्रम आयोजित किए। आलोच्य अवधि के दौरान डनिडा-एस आर टी ई के अन्तर्गत दो प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। समाज विज्ञानियों के लिए आंकड़ा संसाधन तकनीकों के संबंध में पहला पाठ्यक्रम, मई-जून 1984 के दौरान और सर्वेक्षण अनुसंधान विधियों के संबंध में दूसरा पाठ्यक्रम नवम्बर-दिसम्बर 1984 के दौरान आयोजित किया गया।

Λ भारतीय आर्थिक सेवा परिवीक्षार्थियों के पन्द्रहवें बैच ने, जिसमें 34 परिवीक्षार्थी शामिल थे, संस्थान में अक्तूबर 1984 में संस्थान में 9 महीने का प्रशिक्षण पूरा किया और परिवीक्षार्थियों के सोलहवें बैच ने, जिनकी संख्या 73 थी, दिसम्बर 1984 में अपना 9 महीने का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आरम्भ किया। विभिन्न राज्यों और केन्द्रीय सरकार के अधिकारियों के लिए वर्ष के दौरान निवेश आयोजना तथा परियोजना मूल्यांकन में पांच भिन्न-भिन्न पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। प्रशिक्षण संस्थाओं से सम्बद्ध अधिकारियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पहली बार प्रशिक्षार्थियों के लिए एक अनुस्थापन पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया।

+ लोक उद्यमों और संगणक प्रणाली के विभिन्न विषयों में 19 अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। अनुसंधान रीति विज्ञान संबंधी अपने ग्रीष्म पाठ्यक्रम के अन्तर्गत संस्थान ने 15 अध्यापकों तथा अनुसंधानकर्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान किया। संस्थान ने सामान्य प्रबंध में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसका प्रायोजन गुजरात राज्य नगर आपूर्ति निगम लि० ने किया था। संस्थान ने 'गुजरात में सामाजिक वानिकी कार्यक्रम' पर एक कार्यशाला भी आयोजित की जिसका प्रायोजन भारत सरकार तथा संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन ने किया था।

परिशिष्ट-1

भा० सा० वि अ० प० के सदस्य

1984-85

1. श्री जी० पार्थसारथी, अध्यक्ष, भा० सा० वि० अ० प०
2. डॉ० (श्रीमती) विमला अग्रवाल, डी—1/1, रिवर बैंक कालोनी, लखनऊ
3. श्री आनन्द स्वरूप, (16 फरवरी 1985 से), श्रीमती सरला ग्रेवाल (15 फरवरी 1985 तक) सचिव, शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110 001
4. श्रीमती ओतिमा बोर्दिआं, अपर सचिव, वित्त मंत्रालय; नई दिल्ली
5. प्रोफेसर, सुखमॉय चक्रवर्ती, दिल्ली अर्थशास्त्र विकास स्कूल, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
6. प्रोफेसर एस० गोपाल, गिरिजा, 97 राधाकृष्ण सलाई, मायलापोर, मद्रास-600 004
7. प्रोफेसर एम० एस० गोरे, कुलपति, बम्बई विश्वविद्यालय, बम्बई-400 032
8. डॉ० पी० सी० जोशी, निदेशक, आर्थिक विकास संस्थान, यूनिवर्सिटी एन्कलेव, दिल्ली
9. प्रोफेसर सी० टी० कुरिअन, मद्रास विकास अध्ययन संस्थान, 97 सैकेन्ड मेन रोड, अड्यार, गांधी नगर, मद्रास-600 020
10. श्रीमती रोमा मजुमदार (10 फरवरी 1985 से), श्री आर० पी० खोसला, (15 फरवरी 1985 तक) सचिव, समाज कल्याण विभाग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
11. प्रोफेसर मृणाल मिरि, डीन, समाज विज्ञान स्कूल, उत्तर पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय, मयूरभंज कम्पलेक्स, नोनग्थयाम्मई, शिलांग-793 014
12. श्री एम० नरसिम्हन, प्रिंसिपल, भारतीय प्रशासनिक स्टाफ कॉलेज, बेल्ला विस्ता, हैदराबाद

13. प्रोफेसर डी० पी० पट्टनायक, जवाहर लाल नेहरू फैलो, पी-8, मानसगंगोत्री, मैसूर-570 006
14. श्री आर० डी० प्रधान (11 फरवरी 1985 से), श्री एम० एम० के० वली(5 मई 1984 से 10 फरवरी 1985, श्री टी० एन० चतुर्वेदी, (4 मई 1984 तक) सचिव, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली
15. प्रोफेसर एम० वी० पायली, कुलपति (सेवा निवृत), कोचीन विश्व-विद्यालय, एम० एम० टी० कालोनी, कोचीन-683 503
16. प्रोफेसर मूनिस रज़ा, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक आयोजन, तथा प्रशासन संस्थान, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली
17. प्रोफेसर जी० राम रेड्डी, कुलपति, आन्ध्र प्रदेश खुला विश्वविद्यालय, जी-3-645, सोमाजी गुडा, हैदराबाद
18. श्री के० वी० रामानाथन, सचिव, योजना आयोग, नई दिल्ली
19. डॉ० (श्रीमती) माधुरी आर० शाह, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली
20. डॉ० जे० बी० पी० सिन्हा, प्रोफेसर, सामाजिक मनोविज्ञान, ए० एन० सिन्हा सामाजिक विज्ञान संस्थान, पटना-800 001
21. डॉ सुरजीत चन्द्र सिन्हा, सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र, यदुनाथ सरकार बिल्डिंग, 10 लेक टेरेस, कलकत्ता-700 029
22. डॉ० हेमलता स्वरूप, भूतपूर्व कुलपति, कानपुर विश्वविद्यालय, 118/98, वाटर वर्क्स कालोनी, आशोक नगर, कानपुर
23. प्रोफेसर बी० एम० उडगांवकर, टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान, होमी भाभा रोड, बम्बई
24. श्री वी० एस० वर्मा, भारत के महापंजीयक, 2-ए मानसिंह रोड, नई दिल्ली
25. प्रोफेसर प्रवीण विसारिआ, निदेशक, गुजरात क्षेत्र आयोजना संस्थान, प्रीतम राय मार्ग, अहमदाबाद-380 006
26. प्रोफेसर डी० डी० नरूला, सदस्य-सचिव, भा० सा० वि० अ० प०, नई दिल्ली

परिशिष्ट-2

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के वरिष्ठ अधिकारी

1984-85

वर्ष के दौरान भा० सा० वि० अ० प० में निम्नलिखित वरिष्ठ अधिकारी थे :

प्रोफेसर डी० डी० नरूला
सदस्य-सचिव

निदेशक

कुमारी सुशीला भान (भारतीय शिक्षा संस्थान, पुणे में प्रतिनियुक्ति पर)
डॉ० (श्रीमती) एस० राधाकृष्णन, (अध्ययन छुट्टी पर)
डॉ० (श्रीमती) आर० बरमन चन्द्र (अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग)
डॉ० टी० के० मजुमदार (अनुसंधान संस्थान और सेमिनार)
श्री एन० के० निझावन (आंकड़ा अभिलेखागार)
श्री एस० पी० अग्रवाल (प्रलेखन केन्द्र)

उप निदेशक

श्री काशमीरी सिंह (अनुसंधान सर्वेक्षण)
डॉ० एम० एम० माथुर (अनुसंधान अनुदान)
डॉ० हंस राज (अधिछात्रवृत्ति)
श्री प्रेम सिंह (अधिछात्रवृत्ति)
श्री एस० सी० श्रीवास्तव (अनुसंधान संस्थान)
डॉ० (कुमारी) एस० सरस्वती (प्रकाशन)
श्री के० जी० त्यागी (प्रलेखन केन्द्र)
सुश्री एन० रूपरेल (प्रलेखन केन्द्र)
श्री मनोहर लाल (प्रलेखन केन्द्र)
डॉ० विनोद मेहता (ए ए एस एस आर इ सी)

सहायक निदेशक

श्री हर्ष सेठी (अनुसंधान परियोजनाएं)
डॉ० अरुण पी० बाली (अनुसंधान परियोजनाएं)
डॉ० पार्थ घोष (छुट्टी पर)
श्री एम० राजन (अधिछात्रवृत्ति)
श्री आर० आर० प्रसाद (अधिछात्रवृत्ति)
श्री ए० के० चोपड़ा (अनुसंधान परियोजनाएं)
श्री ए० पी० मंगला (अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग)
श्री किशारी लाल खेड़ा (अनुसंधान परियोजनाएं)
श्री आर० एन० सक्सेना (आंकड़ा अभिलेखागार)
श्री दिनेश सी० शर्मा (प्रकाशन)
श्री एल० के० गर्ग (विक्रय)

प्रलेखन अधिकारी

श्रीमती एन० रोकडिया
श्रीमती ओ० के० चौधरी
श्रीमती प्रेम लता कत्याल
श्रीमती आबिदा वजाहत
श्रीमती मीना वालिया
श्री एस० सी० गरकोटी

वित्त

श्री एन० रामचन्द्रन, वित्तीय सलाहकार तथा मुख्य लेखा अधिकारी

प्रशासन

श्री के० एल० धर, प्रशासनिक अधिकारी
श्री रणजीत सिन्हा, सामाजिक विज्ञान समन्वय अधिकारी

परिशिष्ट-3

भा० सा० वि० अ० प० स्टाफ द्वारा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में योगदान

प्रकाशन

1. एस० पी० अग्रवाल, "उत्सव : राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय", प्रकाशन प्रभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली, 1985, 77 पृष्ठ
2. एस० पी० अग्रवाल, "सामाजिक विज्ञान प्रलेखन केन्द्र", शैक्षिक अनुसंधान संस्थान की पत्रिका, 8 (2), मई 1984, पृष्ठ 38-44
   ——————————"ए डब्ल्यू डी आई न्यूजलेटर", 15 अगस्त 1984, पृष्ठ 6
   ————————"सिस्कोम", 4 (8) अगस्त 1984, पृष्ठ 1-2
   ————————"महाराष्ट्र सुगर", 9 (12) अक्तूबर 1984, पृष्ठ 69-75
3. एस० पी० अग्रवाल, 'अन्तर-पुस्तकालय संसाधन केन्द्र', "दि हाक्क", 5 (117), 1 अप्रैल 1984, पृ० 7-5 (118), 15 अप्रैल 1984
4. एस० पी० अग्रवाल, इन्दिरा कौल और मनोहर लाल, 'सूचना अन्तरण तथा आधुनिक प्रौद्योगिकी', "जी० आई० एल० ए० बुलेटिन" 2 (2) जून 1984, पृ० 14-16
5. एस० पी० अग्रवाल, इन्दिरा कौल और मनोहर लाल, 'सूचना अन्तरण में संगणक', "फाइनेन्शियल एक्सप्रेस", 4 जून 1984, पृ० 5
6. एस० पी० अग्रवाल और मनोहर लाल, 'भारत में सामाजिक विज्ञान प्रलेखन सेवा : संक्षिप्त सर्वेक्षण', "यूनिवर्सिटी टूडे", 4 (16), 15 अगस्त 1984, पृ० 6, "लखनऊ लाइब्रेरियन" 16 (3-4), जुलाई-दिसम्बर, 1984, पृ० 91-99
7. एस० पी० अग्रवाल और मनोहर लाल, 'भारत में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पुस्तकालय और प्रलेखन केन्द्र', "भारत में पुस्तकालयों, अभिलेखागारों और सूचना केन्द्रों की पुस्तिका", खंड एक, "पुस्तकालय

तथा अभिलेखागार", सम्पादन—बी० एम० गुप्ता व अन्य, "सूचना उद्योग", नई दिल्ली : 1984 पृ० 144-162

8. विनोद मेहता, 'ब्रेज्नेव के बाद से सोवियत कृषि', (सं०) आर० आर० शर्मा, "यू एस एस आर इन ट्रांजीशन", 1922-82

9. विनोद मेहता, 'रुपयों में व्यापार क्यों', (सं०) विनोद भाटिया, "भारत-सोवियत सम्बन्ध"

10. एन० एम० पति, 'सामाजिक परिवर्तन की दिशाएं : गांधीवादी विचारधारा पर पुनर्विचार', "गांधी और आधुनिक युग",—प्राच्य तथा ओडिसी अध्ययन संस्थान, कटक, 1985

11. के० जी० त्यागी, "भारतीय राजनीतिक पद्धति और प्रक्रियाओं के सम्बन्ध में विदेशी अनुसंधान (1948-83) : एक ग्रन्थसूची", दिल्ली पिका एजेन्सीज, 1984, पृ० 347

12. के० जी० त्यागी और आबिदा वजाहत, "भारतीय तथा विश्व मामले: विदेशी विद्वानों द्वारा किए गए कार्यों की एक ग्रन्थसूची (1947-83)", दिल्ली पिका एजेन्सीज, 1985, पृ० 132

13. एस० पी० अग्रवाल, 'सामाजिक प्रलेखन केन्द्र' (हिन्दी) "युग मर्यादा", 13 (4), अप्रैल 1984, पृ० 9-11

अनुसंधान रिपोर्ट

1. एस० सरस्वती, "आत्म सम्मान की दिशा में : एक नये विश्व के सम्बन्ध में पेरियार ई वी आर", पृ० 425

2. के० के० सिद्ध, "युवाओं से सम्बद्ध सूचक", यूनेस्को को प्रस्तुत

शोध-पत्र

1. आर० बरमन चन्द्र, "दि थाई सेनारिओ : सामाजिक विज्ञानों में भारत-थाई सहयोग की सम्भावनाएं", चोलालोंगकोर्ण विश्वविद्यालय के तत्वावधान में बैंगकाक में हुए थाई अध्ययन सम्मेलन में प्रस्तुत शोध-पत्र, 21-24 अगस्त 1984

2. एस० पी० अग्रवाल, मनोहरलाल, और मीना वालिया, "भारत में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पुस्तकालय/सूचना केन्द्र स्थिति रिपोर्ट", 30वां अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन, 28-31 जनवरी 1985, जयपुर में प्रस्तुत, 'पुस्तकालय संग्रहों का निर्माण तथा पुस्तकालय व सूचना सेवाओं के वास्ते राष्ट्रीय नीति : सेमिनार दस्तावेज', (सं०)

पी० बी० मंगला, दिल्ली आई० एल० ए०—1985, पृ० 129-42

3. एस० पी० अग्रवाल और मनोहर लाल, "तीसरे विश्व के देशों में सूचना नीति", एस आई एस चौथा वार्षिक सम्मेलन, 27-28 दिसम्बर 1984, मद्रास: शोध-पत्र, नई दिल्ली, एस आई एस, 1984, पृ० 17
4. एस० पी० अग्रवाल और मनोहर लाल, "सामाजिक विज्ञानों में दस्तावेज आपूर्ति प्रणाली", आई ए एस एल आई सी ग्यारहवां राष्ट्रीय सेमिनार, 26-29 नवम्बर 1984, हैदराबाद : शोध-पत्र, कलकत्ता, आई ए एस एल आई सी, 1984, पृ० 93-102
5. विनोद मेहता, "सोवियत मध्य एशिया तथा तीसरे विश्व देशों का विकास अनुभव", सोवियत अध्ययन केन्द्र, बम्बई विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में प्रस्तुत शोध-पत्र (मुद्रणाधीन)
6. एन० एम० पति, "भारत में युवा नीति", विश्व युवक केन्द्र, नई दिल्ली में जुलाई 1984 में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में प्रस्तुत शोध-पत्र ।

पी-एच० डी० डिग्री

1. अरुण बाली ने "दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापकों तथा अध्यापन व्यवसाय का एक समाज शास्त्रीय अध्ययन", विषय पर अपना शोध-पत्र सितम्बर 1984 में दिल्ली विश्वविद्यालय को प्रस्तुत कर दिया ।
2. केशव देव गौड ने, "राजस्थान में निर्धनता की समस्या : इसकी सीमा, मापदण्ड और समाधान (भरतपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में)" विषय पर अपना शोध-पत्र अक्तूबर 1984 में राजस्थान विश्वविद्यालय को प्रस्तुत कर दिया ।
3. विजय नाथ सोंधी को लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा "आजादी के बाद से भारत की व्यापार नीति" नामक शोध-पत्र के लिए अगस्त 1984 में पी-एच० डी० की डिग्री प्रदान की गई ।
4. के० जी० त्यागी, को "भारत की संयुक्त समाजवादी पार्टी की विचारधारा, नीतियां और कार्यक्रम" नामक उनके शोध-पत्र के लिए मई 1984 में मेरठ विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० डिग्री प्रदान की गई ।

विविध

अंग्रेजी

1. एस० पी० अग्रवाल द्वारा 'मोरल फेब्रिक आफ इण्डियन कल्चर', "दि हाव्क" 5 (118), अप्रैल 15, 1984, पृ० 4
2. एस० पी० अग्रवाल तथा मनोहर लाल द्वारा "सामाजिक विज्ञानों में प्रलेख आपूर्ति प्रणाली (दिल्ली के पुस्तकालयों के विशेष सन्दर्भ में)", नवम्बर 26-29, 1984 को हैदराबाद में आई ए एस एल आई सी सम्बन्धी ग्यारहवें राष्ट्रीय सेमिनार में प्रस्तुत शोध-पत्र: कलकत्ता, आई ए एस एल आई सी, 1984, पृ० 93-102
3. एस० पी अग्रवाल तथा मनोहर लाल द्वारा "तीसरे विश्व में सूचना नीति : समय की आवश्यकता", 27-28 दिसम्बर 1984 को सूचना विज्ञान सोसायटी के सम्मेलन तथा चौथे वार्षिक अधिवेशन में प्रस्तुत शोध-पत्र, नई दिल्ली, सूचना सेवा सोसायटी, 1984, पृ० 7
4. एस० पी० अग्रवाल द्वारा 'गांधी तथा राष्ट्रीय एकता', "दि हाव्क" 5 (105), 1 अक्तूबर, 1984, पृ० 1-2
5. एस० पी० अग्रवाल द्वारा "शिक्षा—हमारे लिए इसका क्या अर्थ है", "यूनिवर्सिटी टूडे" 4 (16), 15 अगस्त 1984, पृ० 14, "दि हाव्क" 6 (127) 1 सितम्बर 1984, पृ० 1

हिन्दी

1. एस० पी० अग्रवाल द्वारा 'मानव जीवन की महिमा', "भक्तिमाला", 1 (4), 1984, पृ० 26-27
2. एस० पी० अग्रवाल द्वारा 'भारतीय परम्परा में सदाचार', "भक्ति-माला", 2 (3), दिसम्बर 1984, पृ० 19-22
3. एस० पी० अग्रवाल द्वारा 'बापू का ग्राम राज्य', "विकास मार्ग", 24 (5), 1984, आवरण पृष्ठ
4. एस० पी० अग्रवाल द्वारा 'गांधीजी और ग्राम विकास', "अवध पुष्पांजलि", 6 (2-3), सितम्बर-अक्तूबर 1984, पृ० 13-15
5. एस० पी० अग्रवाल द्वारा 'गिलहरी बोली', "नन्दन" अप्रैल 1984, पृ० 19-21

6. एस० पी० अग्रवाल द्वारा 'गाड़ी उड़ चली', "नन्दन" 2 (5), मार्च 1985, पृ० 12-14

7. एस० पी० अग्रवाल द्वारा 'माटिनू कबूतर' (गुजराती अनुवाद), "फुलवाड़ी" जून 24, 1984, पृ० 12

8. एस०पी० अग्रवाल द्वारा 'हारजीत' (गुजराती अनुवाद), "फुलवाड़ी", नवम्बर 23, 1984, पृ० 4

परिशिष्ट-4

स्वीकृत परियोजनाएं

1. जी० सी० तिवारी, गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद, "उ० प्र० में हिमालयाई वनों का पारिस्थितिक तथा आर्थिक प्रबन्ध", 71,820 रु० ।

2. एस० आर० चिरमाडे, व्यापार अर्थशास्त्र विभाग, एम० जे० कॉलेज, जलगांव, "दहेज प्रणाली का अर्थशास्त्र, जलगांव जिले के नशीरबाद गांव का एक प्रयोगिक अध्ययन", 5,000 रु० ।

3. पी० एल० सबलोक, अर्थशास्त्र स्नातकोत्तर अध्ययन तथा अनुसंधान विभाग, जिवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, "भारत का औद्योगिक विकास बैंक तथा मध्य प्रदेश के पिछड़े क्षेत्रों का विकास", 7,500 रु० ।

4. आर० के० गोविल, अर्थशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, "कृषि में विकास तथा असमानता: इलाहाबाद जिले में एक माइक्रो स्तरीय अध्ययन", 9,975 रु० ।

5. असीम चौधरी, अर्थशास्त्र विभाग, उत्तरी बंगाल विश्वविद्यालय, जि० दार्जिलिंग, "बागान प्रधान अर्थव्यवस्था में स्थिरता और दोहरापन: प० बंगाल में जलपाईगुडी जिले का मामला—क्षेत्रीय अर्थ विकास का एक अध्ययन", 7,350 रु० ।

6. रंजना, स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र विभाग, दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत, "आवक प्रेषणों का एक अध्ययन—जि० सूरत, गुजरात—एक प्रायोगिक अध्ययन", 7,350 रु० ।

7. एम० बलराम सिंह, भूगोल विभाग, वाई० के० कॉलेज, वांगजिंग, मणिपुर सरकार, मणिपुर, "मणिपुर में शहरीकरण की हाल ही की प्रवृत्तियां", 5,000 रु० ।

8. टी० वसंत कुमारन, भूगोल विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास, "स्वास्थ्य देख-रेख तथा व्यवस्थापक का स्थानिक विश्लेषण: तंजावूर जिले में उपभोक्ता स्थानिक आचरण", 45,150 रु० ।

9. आर०एच० ढोलकिया, अर्थशास्त्र विभाग, एम०एस० विश्वविद्यालय,

बडोदा, "आर्थिक विकास के स्तर और दर में अन्तर-क्षेत्रीय भिन्नता: कनाडा और भारत का एक तुलनात्मक अध्ययन," 4,200 रु० ।

10. एम० एम० कोठारी, आर्थिक प्रशासन तथा वित्तीय प्रबन्ध विभाग, राजकीय कॉलेज, अजमेर, राजस्थान, "राजस्थान राज्य में शहरी विकास न्यासों द्वारा गृह स्थलों के विकास की प्रगति तथा सम्भावनाओं का मूल्यांकन", 21,000 रु० ।

11. एस० पी० शुक्ला, राजकीय डिग्री कॉलेज, न्यू इटानगर, अरुणाचल प्रदेश, "कृषि क्षमता तथा आयोजना के विशेष सन्दर्भ में अरुणाचल प्रदेश का विकास तथा वास्तविक पहुंच : एक भू-आर्थिक जांच", 55,335 रु० ।

12. सैबल सरकार, सामाजिक अध्ययन संस्थान, सेवाभारती, जि०मिदनापुर, "हल्दिया औद्योगिक परिसर में अनौपचारिक क्षेत्र की गतिशीलता", 31,970 रु० ।

13. कुरिअकोज माम्कपोट्टम, श्रीराम औद्योगिक सम्बन्ध तथा मानव संसाधन केन्द्र, नई दिल्ली, "भारतीय प्रबन्धक का यूनियनकरण", 67,830 रु० ।

14. दलीप एस०स्वामी और अशोक गुलाटी, दक्षिण दिल्ली परिसर,दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "खाद्यान्न के क्षेत्र में सरकारी हस्तक्षेप के कुछ पहलू : एक इकानामिट्रिक विश्लेषण", 60,460 रु० ।

15. एच० आर० शेषागिरी राव, टी० ए० पाई प्रबन्ध संस्थान, एम० आई० टी० कैम्पस, मनीपाल, "ग्राम विकास के लिए स्वैच्छिक एजेन्सियां : मनीपाल प्रयोग", 45,990 रु० ।

16. एस० के० पालित, क्वार्टर नं० 1, उद्यान मार्ग, यूनिट-1, भुवनेश्वर, "भारत के जूट उद्योग की व्यवहार्यता का एक अध्ययन : सम्भावनाएं तथा विगत", 29,500 रु० ।

17. लक्ष्मी नारायण भगत, अर्थशास्त्र विभाग, सेंट कोलम्बस कॉलेज, हजारीबाग, (बिहार), "छोटा नागपुर में एक जनजातीय जिले के एक गांव में निवेश-उत्पादन प्रणाली", 4,725 रु० ।

18. एस० एस० कहलौन, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र विभाग, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना, "पंजाब में समेकित ग्राम विकास कार्यक्रम के सुचारु कार्यान्वयन में अन्तर्विष्ट तकनीकी-आर्थिक, सामाजिक तथा संगठनात्मक बाधाओं की दृष्टि से क्षेत्रीय भिन्नताओं का विश्लेषण", 74,235 रु० ।

19. आर०जी० नम्बियार, सरदार पटेल आर्थिक तथा सामाजिक अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद, "भारत में व्यापार का उदारीकरण : प्रभाव और परिणाम", 60,165 रु० ।

20. हरभजनसिंह, अर्थशास्त्र विभाग, श्री गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, "भारत में शहरी आय में असमानता की सीमा और कारण : दिल्ली का मामला अध्ययन", 58,590 रु० ।

21. डी० आर० शाह, ग्राम अध्ययन विभाग, दक्षिण गुजरात विश्व-विद्यालय, सूरत, "ग्राम परिवर्तन के एक साधन के रूप में डेरी सह-कारीकरण: सूरत जिले का एक मामला", 45,410 रु० ।

22. एस० एन० चौधरी, बाल स्वास्थ्य संस्थान, डॉ० बिरेश गुहा स्ट्रीट, कलकत्ता, "ग्रामीण समाज में विशेष रूप से महिलाओं के लिए व्यावसायिक अघमशीलता कार्यान्वित करने के लिए संभावना अध्ययन का प्रस्ताव", 10,000 रु० ।

23. सुधीर सोनालकर, आर० बी० आर० आर० काले ट्रस्ट, 129/बी/1 इरनडवाना, पुणे, "पुणे तथा हैदराबाद में साम्प्रदायिक दंगों की जांच", 9,975 रु० ।

24. सुलभा ब्रह्मे, शंकर ब्रह्मे समाज विज्ञान ग्रंथालय, 129/बी/2 इरनड-वाना, पुणे, "एक आदर्श मूल्य संरचना की हिन्दू धारणा और रामायण : एक प्रारम्भिक अध्ययन", 9,975 रु० ।

25. वी० भास्कर राव, लोक प्रशासन विभाग, काकतीय विश्वविद्यालय वारंगल, "तेलुगु देशम पार्टी का जन्म और एन०टी० आर० सरकार की स्थापना : एक राजनीतिक और प्रशासनिक मूल्यांकन", 9,670 रु० ।

26. पी० के० दत्ता, राजनीतिक विज्ञान विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता, "प० बंगाल में राजस्व प्रशासन", 9,030 रु० ।

27. उमा रामास्वामी, आर्थिक तथा सामाजिक अध्ययन केन्द्र, निजामिआ प्रेक्षणशाला परिसर, बेगमपेट, हैदराबाद, "1951-81 के दौरान आंध्र प्रदेश की अनुसूचित जातियों के बीच सामाजार्थिक परिवर्तन", 8,400 रु० ।

28. एन० सी० सक्सेना, भारत का राजदूतावास, काबुल, विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली, "उत्तर प्रदेश की जाति तथा राजनीतिक अर्थ-व्यवस्था (1950-80)", 4,000 रु० ।

29. सजल बासु, समाज शिक्षण केन्द्र, 7 नन्दी स्ट्रीट कलकत्ता, "गुटबंदी की राजनीतिः प० बंगाल में मिली-जुली राजनीति में इसका महत्त्व", 38,670 रु० ।

30. एस० मोहन्ती, समाजशास्त्र विभाग, सम्बलपुर विश्वविद्यालय, सम्बल पुर, "सजायाफ्ताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि: उडीसा में जेल वासियों का एक सर्वेक्षण", 27,300 रु० ।

31. संयुक्ता कोशल, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, अरविन्द आश्रम, नई दिल्ली, "लदाखी में भाषाई भिन्नता का सामाजिक-भाषाई अध्ययन", 1,16,000 रु० ।

32. ओमेर बिन सईद, राष्ट्रीय औद्योगिक इंजीनियरी प्रशिक्षण संस्थान, विहार लेक, पो० एन० आई० टी० आई० ई०, बम्बई, "ओ० डी० तथा गैर-ओ० डी० संगठनों में संगठनात्मक प्रतिबद्धता, अन्तर-वैय-क्तिक आवश्यकताएं तथा संघर्ष प्रबन्ध नीतियों का अध्ययन", 57,750 रु० ।

33. वी० सुदर्शन और एम० ए० कलाम, नृविज्ञान विभाग, मद्रास विश्व-विद्यालय, मद्रास, "आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम जिले में हरिजनों का इस्लाम धर्म स्वीकार करने का नृविज्ञान सम्बन्धी अध्ययन", 9,261 रु० ।

34. एन०एस० बोस, इतिहास विभाग, यादवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता, "बंगाल के सार्वजनिक जीवन में स्त्रियों की उभरती हुई भूमिका", 1885-1939", 28,980 रु० ।

35. रामाश्रय राय, ग्राम विकास संस्थान, आलोक निकेतन, वेस्टर्न बोरिंग रोड, पटना, "विकास का चित्र : बिहार का अध्ययन", 74,418 रु०

36. आर० सुन्दर राजन और आर० के० मुटाटकर, दर्शनशास्त्र विभाग, पूना, विश्वविद्यालय, पुणे, जनजातीय जातियों के परिवर्तन का अध्ययन : एक अन्तर-विषयक दृष्टिकोण", 89,850 रु० ।

37. राजीव धवन, विधि विभाग, ब्रुनेल विश्वविद्यालय, ओक्सब्रिज, मिडिलसैक्स, यू बी एस 3 पी एच, "इलाहाबाद में न्याय का उच्च-न्यायालय", 9,975 रु० ।

38. असगर अली इंजीनियर, इस्लाम अध्ययन संस्थान, इरेने काटेज, दूसरी मंजिल, सान्ताक्रूज (पूर्वी बम्बई), "गुजरात की छुट-पुट मुस्लिम जातियों का अध्ययन", 1,72,350 रु० ।

39. सुरेन्द्र चोपड़ा, राजनीतिक विज्ञान विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, "पाकिस्तान तथा आर० सी० डी० देश", 67,200 रु० ।

40. सुरजन सिंह शर्मा, उन्नत अध्ययन संस्थान, मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ, "गुटबंदी : पूर्ववृत्त और परिणाम : पश्चिम उ० प्र० के एक ब्लाक के दो गांवों का तुलनात्मक अध्ययन", 4,935 रु० ।

41. सुभाष सी० कश्यप, लोक सभा सचिवालय, संसद भवन, नई दिल्ली, "जवाहरलाल नेहरू तथा संसदीय प्रणाली : संसदीय प्रणाली के विकास और कार्यकरण के विशेष सन्दर्भ में भारत की राजनीतिक प्रणाली के विकास में पण्डित नेहरू द्वारा निभाई गई भूमिका की जांच", 1,95,000 रु० ।

42. वी० आर० कृष्णा अय्यर, "सतगम्य" एम० जी० रोड, इरनाकुलम, कोचीन, "पर्यावरणात्मक कानून में गहन अध्ययन", 76,500 रु० ।

43. आर० एल० मौर्य, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर कॉलेज, पिथोरागढ़ (उ० प्र०), "कुमायुं की अनुसूचित जातियों के जीवन पर नियोजित प्रक्रियाओं के प्रभाव का अध्ययन", 40,370 रु० ।

44. ए० शिवमूर्ति, भूगोल विभाग, प्रेसीडेन्सी कॉलेज, मद्रास, "मद्रास में अपराध का सार्वजनिक बोध", 36,225 रु० ।

45. एस०ए०एच०हक्की और बी० रहमतुल्ला, राजनीति विज्ञान विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, "नागालैण्ड राजनीति, 1960-1980 : एक विकास अध्ययन", 15,000 रु० ।

46. प्रसान्त रे, राजनीति विज्ञान विभाग, प्रेसीडेन्सी कॉलेज, कलकत्ता, "उत्तरउपनिवेशीय राज्य द्वारा राजनीतिक संघर्ष का प्रबन्ध: राजनीतिक अध्ययन के लिए इसके निहितार्थ", 27,090 रु० ।

47. पण्डित अमरनाथ, 20 भारती कालोनी, इन्द्रप्रस्थ एक्सटेंशन, विकास मार्ग, नई दिल्ली, "सामाजिक परिवर्तन तथा मूल्य बदलाव के संदर्भ में पतरोन-घराना कड़ी तथा शिक्षण प्रणालियों के विशेष संदर्भ में हिन्दुस्तानी संगीत के विकास पर इसका प्रभावा", 78,960 रु० ।

48. वी० वीराराघवन, ज़ाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "संगठनात्मक वातावरण तथा नेतृत्व कारगरता तथा उच्च, मिडिल व निम्न निष्पादन वाले स्कूलों

में अनुकूलता विवरण का एक तुलनात्मक विश्लेषण", 70,560 रु० ।

49. एल०सी० गुप्ता, प्रबन्धक विकास संस्थान, जीवन तारा बिल्डिंग, 5, पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली, "औद्योगिक रुग्णता : प्रबन्ध पहलू", 49,980 रु० ।

50. राजीव धवन, विधि विभाग, ब्रुनेल विश्वविद्यालय, आक्सब्रिज, मिडिलेक्स, यू बी एस, 3 पी एच, "इलाहाबाद में न्याय का उच्च न्यायालय", 86,800 रु० ।

51. एम० जे० रबी सिंह, प्रेसीडेन्सी कॉलेज, मद्रास, "तंजावुर जिले के मन्दिरों का समाजशास्त्रीय अध्ययन", 8,925 रु० ।

52. ए० के० तिवारी, भूगोल विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय, राजस्थान "भारतीय मरुभूमि के गांवों में अनुसूचित जाति आवासीय क्षेत्र : परिवर्तनशील कार्यात्मक कार्यकलापों तथा संरचनात्मक स्वरूपों में एक मामला अध्ययन", 5,000 रु० ।

53. सक्ति मुखर्जी, वाणिज्य तथा व्यापार प्रबन्ध विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता, "नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के संदर्भ में अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक कानून", 5,000 रु० ।

54. के० रंजन, भाषा विभाग, तमिलनाडु विश्वविद्यालय, तंजावूर, "प्राथमिक स्कूली बच्चों द्वारा तमिल पढ़ने/लिखने के सम्बन्ध में, बोली जाने वाली तमिल के प्रभाव का एक प्रायोगिक अध्ययन", 9,975 रु० ।

55. आर० टी० जंगम, राजनीतिक विज्ञान विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड, "प्रशासन तथा प्रबन्ध के वर्तमान सिद्धान्त", 6,950 रु० ।

56. डी० वेलाप्पन, एस० टी० हिन्दू कॉलेज, नगरकोइल, "दक्षिण भारतीय कृषकों की सामाजार्थिक गतिशीलता : तनचिल नाडु में गांवों का अध्ययन", 9,371 रु० ।

57. वी० के० श्रीवास्तव, सांख्यिकी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, "ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों के बीच मृत्यु जोखिम पद्धति", 10,000 रु० ।

58. एस० एस० बिन्द्रा, राजनीतिक विज्ञान विभाग, गुरु नानक देव विश्व विद्यालय, अमृतसर, "पाकिस्तान की विदेश नीति के निर्धारक", 6,425 रु० ।

59. मुरारी लाल, 2/198 विष्णुपुरी, अलीगढ़ (उ० प्र०) "वैदिक तथा पौराणिक गाथाओं और परम्पराओं के सामाजार्थिक निहितार्थ," 9,975 रु० ।

60. अतिय हबीब, क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "एशिया के गेटवे नगर : कलकत्ता का एक मामला अध्ययन, 1800-1982", 27,835 रु० ।

61. पीताम्बर नेलवाल, अर्थशास्त्र विभाग, डी०ए०वी० कॉलेज, कानपुर, "ग्रामीण औद्योगीकरण की समस्याएं तथा सम्भावनाएं : उत्तर प्रदेश में औद्योगिक सहकारिताओं का एक मामला अध्ययन", 10,000 रु० ।

62. के०नारायणन नायर, विकास अध्ययन केन्द्र, उल्लूर, त्रिवेन्द्रम(केरल). "तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले में सिंचाई पद्धति और इसका कार्यकरण", 63,630 रु० ।

63. जी० एस० अरोडा, समाजशास्त्र और नृविज्ञान विभाग, सामाजिक विज्ञान स्कूल, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद, "प्रौद्योगिकी अन्तरण : प्रयोगशाला से उपभोक्ता तक", 9,765 रु० ।

64. बी०पी०पाण्डे, गांधी अध्ययन संस्थान, राजघाट, वाराणसी, "ग्रामीण उत्तर प्रदेश में एक समान सम्पत्ति संसाधनों के उपयोग की पद्धति", 30,555 रु० ।

65. लल्लन प्रसाद, व्यापार अर्थशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दक्षिण कैम्पस, बेनितो जुआरेज मार्ग, नई दिल्ली, "अव्यवस्थित क्षेत्र की समस्याएं : बनारस के जरी उद्योग का एक आनुभाविक अध्ययन", 10,000 रु० ।

66. बी० एस० खन्ना, परामर्शदाता, ग्राम विकास सार्वजनिक प्रबन्ध, 711 सैक्टर-11-बी, चण्डीगढ़, "बंगलादेश में कृषि सुधार और ग्राम विकास : नीतियां सार्वजनिक नीतियां, संस्थात्मक व्यवस्था, स्वैच्छिक कार्रवाई और प्रभाव", 9,600 रु० ।

67. अरुण गोयल, 36 सी, कनाट प्लेस, नई दिल्ली और अशोक चौधरी, 'विकास्प', सामाजिक संगठन, 4/1075, चकराता रोड, सहारनपुर, "सहारनपुर जिले में वन उद्योग का अध्ययन : उत्पादन, प्राप्ति और विपणन की पद्धति तथा सम्बन्ध", 9,975 रु० ।

68. शिव रंजन मिश्रा, अर्थशास्त्र विभाग, विश्वभारती, शान्ति निकेतन,

"रोजगार तथा आय वितरण पर सिचाई के प्रभाव का अध्ययन : प० बंगाल में मयुरक्षी नहर सिचाई परियोजना का मामला अध्ययन", 6,825 रु० ।

69. शिवबहल सिंह, समाजशास्त्र विभाग गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, "उ० प्र० में उद्यमशीलता विकास के सामाजिक और आर्थिक आयाम : एक प्रायोगिक अध्ययन", 10,000 रु० ।

70. के० जे० श्रीवास्तव, अर्थशास्त्र विभाग, पी० पी० एन० कॉलेज, 96/12 महात्मा गांधी मार्ग, कानपुर, "कानपुर में उत्प्रवास तथा रोजगार अवसर", 62,420 रु० ।

71. देवकी जैन, सामाजिक अध्ययन ट्रस्ट संस्थान, एस० एम० एम० थिएटर शिल्प संग्रहालय, 5 दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली, "विकास का भारतीय स्त्रियों का अनुभव", 46,500 रु० ।

72. टी० वी० एस० राममोहन राव, मानविकी तथा सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर, "एक फर्म की आन्तरिक व्यवस्था की आर्थिक कार्यकुशलता", 16,630 रु० ।

73. एस०सी० शर्मा, भूगोल विभाग, एम० एल० के० (पी०जी०) कॉलेज, बलरामपुर, गोंडा (उ० प्र०), "समेकित ग्राम विकास के लिए माइक्रो स्तरीय आयोजना, बलरामपुर ब्लाक, जि० गोंडा का एक मामला अध्ययन", 50,925 रु० ।

74. एस० सी० बंसल, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग, जे० वी० जैन कॉलेज, सहारनपुर, "कृषि अर्थव्यवस्था में समेकित क्षेत्रीय विकास आयोजना : सहारनपुर जिले का एक अध्ययन", 31,920 रु० ।

75. जी० प्रसाद और के० वी० राव, वाणिज्य तथा व्यापार प्रशासन विभाग, नागार्जुन विश्वविद्यालय, नागार्जुन नगर, "राज्य स्तरीय लोक उद्यम : वित्तीय प्रबन्ध की समस्याओं का अध्ययन", 77,590 रु० ।

76. एस० एल० तुलसयान, वाणिज्य विभाग, कोशी कॉलेज, खगरिया, "सीमान्त और छोटे किसानों की समस्याएं : अलौली ब्लाक, जिला-खगरिया, उत्तरी बिहार के सन्दर्भ में अध्ययन", 30,975 रु० ।

77. पी० एल० टी० गिरिजा, भारतीय स्त्री अध्ययन संस्थान, 13 न्यू कालोनी, नुनगाम्बक्कम, मद्रास, "मद्रास में स्त्री निर्माण कामगारों की सामाजार्थिक स्थिति", 52, 458 रु० ।

78. पी० के० राज, स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र विभाग, भद्रक कॉलेज, भद्रक, "उड़ीसा में क्षेत्रीय विकास तथा उद्यम उपलब्धियां", 29,085 रु० ।

79. के० चक्रधर राव, अर्थशास्त्र विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, "कृषि परिवर्तन तथा उत्पादन सम्बन्ध : आन्ध्र प्रदेश में एक अध्ययन", 71,190 रु० ।

80. ई० एन० बी० राव, ग्राम विकास विभाग, आन्ध्र विश्वविद्यालय, स्नातकोत्तर विस्तार केन्द्र, श्रीकाकुलम, "समेकित क्षेत्र विकास सम्बन्धी परियोजना : नरसन्नापेट, तालुक, जिला-श्रीकाकुलम, (आ० प्र०) का एक मामला अध्ययन", 23,100 रु० ।

81. डी० वी० गिरि, स्नातकोत्तर औद्योगिक सम्बन्ध तथा श्रम कल्याण विभाग, बरहामपुर विश्वविद्यालय, बरहामपुर, "उड़ीसा के मुद्रण उद्योग में औद्योगिक सम्बन्ध : कटक का एक मामला अध्ययन", 7,350 रु० ।

82. जी० एन० राव, विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम, 'कृषि पिछड़ापन तथा माचिस उद्योग में बाल श्रमिक : तमिलनाडु के शिवकाशी क्षेत्र का एक मामला अध्ययन', 43, 155 रु० ।

83. बी० सी० मेहता, अर्थशास्त्र विभाग, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, "भारत में क्षेत्रीय कृषि प्रणालियां और निर्धनता : निर्धनता के ढांचे तथा अन्य सह्-सत्वों का अध्ययन", 68,880 रु० ।

84. सुशीला नायर तथा के० स्वामीनाथन, प्यारेलाल गांधी अध्ययन तथा अनुसंधान प्रतिष्ठान, एन-1, तारा अपार्टमेंट, कालकाजी, नई दिल्ली, "दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह् की लोकप्रियता", 53,550 रु० ।

85. ए० डी० सिंह, मठवा मेटल्स एण्ड ट्यूब लि; मठवा हाउस, पटना, "इस्पात उद्योग में सामूहिक लेन-देन का बदलता माडल", 99,120 रु० ।

86. वीणा मजुमदार, सुरिन्दर जेतली, नारायण बनर्जी तथा मानशी मित्रा, स्त्री विकास अध्ययन केन्द्र, बी-43, पंचशील एनक्लेव, नई दिल्ली, "स्त्रियों का काम और पारिवारिक नीतियां : उत्तर प्रदेश, बिहार और प० बंगाल में तीन क्षेत्र अध्ययन", 1,93,830 रु० ।

87. मेथ्यू कुरियन, भारतीय क्षेत्रीय विकास अध्ययन संस्थान, कोट्टयम (केरल), "एशिया (केरल राज्य) में स्त्रियों के काम और पारिवारिक काम का एक तुलनात्मक अध्ययन", 55,950 रु० ।

88. सुधीर० के० मुखोपाध्याय, मानव संसाधन विकास केन्द्र, अर्थशास्त्र विभाग, कल्याणी विश्वविद्यालय, कल्याणी, और बहूनिष्क घोष, अर्थशास्त्र विभाग, कल्याणी विश्वविद्यालय, कल्याणी, "आय, रोजगार तथा काम में स्त्रियों का अंश: एक मेक्रो-माइक्रो आर्थिक जांच", 65,940 रु० ।

89. नीरा देसाई, एस० एन० डी० टी० महिला विश्वविद्यालय, स्नातकोत्तर अध्ययन तथा अनुसंधान विभाग, 'नाथीबाई ठाकरसे रोड, पत्तर हाल बिल्डिंग, बम्बई, "एफ दक्षिण गुजरात ग्राम समुदाय में स्त्रियों का काम तथा पारिवारिक नीतियां", 48,930 रु० ।

90. प्रभा मेहाले, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ "स्त्रियों का काम और पारिवारिक नीतियां: कर्नाटक में बसवियों का एक अध्ययन", 54,600 रु० ।

91. करुणा अहमद, जाकिर हुसेन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "सामाजिक परिवर्तन तथा गतिशीलता के सन्दर्भ में स्त्रियों का काम, शिक्षा और पारिवारिक नीतियां", 51,450 रु० ।

92. मैत्रेयी कृष्ण राज तथा दिव्य पाण्डे, स्त्री अध्ययन सम्बन्धी अनुसंधान यूनिट, एस० ए० डी० टी० महिला विश्वविद्यालय, विठलदय विद्याविहार, जुहू रोड, सान्ताक्रुज (पश्चिम), बम्बई, "दक्षिण रत्नागिरि जिला, महाराष्ट्र में बेंत बांस शिल्पकारों के परिवारों के बीच स्त्रियों का काम और पारिवारिक नीतियां", 40,530 रु० ।

93. मालविका कारलेकर, जामिआ मिलिया इस्लामिया, जामिया नगर, नई दिल्ली, "बदलती हुई पारिवारिक नीतियां और शिक्षित स्त्रियां: प० बंगाल का एक मामला अध्ययन", 19,950 रु० ।

94. एस० सी० पटनायक, विश्लेषणात्मक तथा प्रयुक्त अर्थशास्त्र विभाग, उत्कल विश्वविद्यालय, वाणी विहार, भुवनेश्वर, "उड़ीसा में कृषि निष्पादन: एक अन्तर-जिला संरचना में नीति निष्पादन तथा प्रभाव अध्ययन: एक प्रायोगिक अध्ययन", 24,875 रु० ।

95. नारायण सिन्हा, अर्थशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, "भारतीय अर्थ-व्यवस्था के लिए माइक्रो माडल की परिकल्पना : एक इकानामिट्रिक विश्लेषण", 46,463 रु० ।

96. आर० टी० तिवारी, गिरि विकास अध्ययन संस्थान, बी-42, निराला

नगर, लखनऊ, "उ० प्र० में ग्रामीण उद्योग तथा ग्राम विकास", 1,19,070 रु० ।

97. इन्दिरा रोथरमुंड, विकास अध्ययन तथा कार्यकलाप केन्द्र, 994/4, हनुमान मन्दिर पथ, पुणे, "महाराष्ट्र में कृषि/ग्राम विकास कार्यक्रमों में लगे संगठनों की शक्ति संरचना का अध्ययन : महाराष्ट्र के सांगली जिले में एक मामला अध्ययन", 86,940 रु० ।

98. रामजी श्रीवास्तव, मनोविज्ञान विभाग, शिबली राष्ट्रीय कॉलेज, आजमगढ़, "शोर के साथ अनुकूलता तथा इसके मनोवैज्ञानिक प्रभाव" 10,000 रु० ।

99. के० शेषाद्रि, राजनीतिक अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "भारतीय संदर्श का समकालीन मार्क्सवादी विचार", 21,630 रु० ।

100. चित्रा नायक, भारतीय शिक्षा संस्थान, 128/2, जे० पी० नायक रोड, कोथरूड, पुणे, "सभी के लिए शिक्षा", 5,000 रु० ।

101. वी० के० कूल, राष्ट्रीय दृष्टिहीन संस्थान, 116 राजपुर रोड, देहरादून (उ० प्र०) और एस० जे० सिंह, मनोविज्ञान विभाग, सागर विश्वविद्यालय, सागर, "ट्रांसलेशन एण्ड क्रास माडल एसीमीटरी ट्रांसफर ऑफ किनेस्थेटिक एण्ड विजुअल इंफार्मेशन: सम स्टडीज ऑन दि परफोर्मेन्स ऑफ ब्लाइण्ड एण्ड डैफ सबजेक्टस", 63,420 रु० ।

परिशिष्ट 5

पूरे हुए अनुसंधान

क—अनुसंधान परियोजनाएं

1. एम० ए० कुरेशी, विधि विभाग, जबलपुर विश्वविद्यालय, जबलपुर (म० प्र०), "भारत में वक्फों के प्रशासनिक तथा कानूनी नियंत्रण के सामाजिक-कानूनी निहितार्थ"।
2. एस० ए० एच० हक्की, राजनीतिक विज्ञान विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (उ० प्र०) "राज्य विधान सभा चुनाव : राजनीतिक आचरण का एक अध्ययन"।
3. ए० श्रीकुमार मैनन, मनोविज्ञान विभाग, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर, "नोकरियों और व्यवसायों का उनकी प्रेरणात्मक समताओं के अनुसार एक आनुभाविक अध्ययन"।
4. बशीरुद्दीन अहमद, विकासशील सोसायटी अध्ययन केन्द्र, 29, राजपुर रोड, दिल्ली, "सातवीं लोक सभा चुनाव"।
5. अरुण के० गुप्ता, माडल शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, बी० सी० रोड, जम्मू, "जम्मू नगर के स्कूलों में संस्थात्मक पर्यावरण की संकल्पना की वैधता : एक प्रयोगिक अध्ययन"।
6. सारथी आचार्य और प्रवीण पत्रकार, स्त्री विकास अध्ययन केन्द्र, बी-43, पंचशील एनक्लेव, नई दिल्ली, "धान खेती प्रणाली में स्त्रियां।"
7. एम० होराम, राजनीतिक विज्ञान विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय, मणिपुर, एक ही क्षेत्र परिषद् के क्षेत्राधिकार के अन्दर विकास बोर्ड के कामकाज की पद्धति का मामला अध्ययन।"
8. एच० आर० चतुर्वेदी, विकासशील सोसायटी अध्ययन केन्द्र, 29 राजपुर रोड, दिल्ली, "उत्तर प्रदेश के मुसलमान और हिन्दू परिवार: एक अन्वेषण अध्ययन"।
9. डी० एम० पेस्टनजी, भारतीय प्रबन्ध संस्थान, वस्त्रपुर, अहमदाबाद,

"उत्पादकता तथा इसके मनोवैज्ञानिक सह-तत्व।"

10. आर० डी० मोहोता मोहता निवास, नेलसन स्केअर, छिन्दवाड़ा रोड, नागपुर, "प्रश्न विज्ञान के सम्बन्ध में प्रायोगिक अध्ययन : शिक्षण/प्रशिक्षण विधि।"

11. डी० एम० पेस्टनजी, भारतीय प्रबन्ध संस्थान, वस्त्रपुर, अहमदाबाद, "मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक साधनों की दूसरी पुस्तिका।"

12. वाई० उदय चन्दर, 7033 कम्बान्ड वर्कशाप, द्वारा 99 ए० पी० ओ०, "तेलगांना में जनजातीय लोगों की राजनीतिक सहभागिता।"

13. सुधीर सोनालकर, शंकर ब्रह्में समाजविज्ञान ग्रन्थालय, 129बी/2 इरूण्डवाना, पुणे, "राजा राम मोहन राय तथा गांधी का एक तुलनात्मक अध्ययन।"

14. एन० सुब्बा रेड्डी, नृविज्ञान विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास, "कृषि का यंत्रीकरण और तमिलनाडु के एक गांव में जाति तथा वर्ग के आयाम।"

15. एच० आर० त्रिवेदी, सांस्कृतिक तथा शहरी नृविज्ञान संस्थान, 5, कृष्ण सागर, जीवराज पार्क, अहमदाबाद, "सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन तथा परस्पर चचेरे भाई-बहन की शादी को देखते हुए सौराष्ट्र के मेड़ों की पुनः जांच तथा अध्ययन।"

16. अबन टी० भाटिया, अंग्रेजी विभाग, लक्ष्मीबाई कॉलेज, अशोक विहार, दिल्ली, "बहुभाषी पर्यावरण में बच्चे का भाषा विकास।"

17. पी० आर० सावंत, भूगोल विभाग, किसानवीर महाविद्यालय, वई (सतारा), "नदी बांध का निर्माण और प्रभावित गांवों का पुनर्वास : अपर कृष्णा वैली में दो गांवों का एक मामला अध्ययन : व्याहली और चन्दावाड़ी, जिला सतारा।"

18. ज्योतिमय सेन, समाज विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कलकत्ता, 10 लेक टेरेस, कलकत्ता, "प० बंगाल में ग्रामीण बस्तियों का आकार, विभाजन और संरचना की गतिशीलता : मामला अध्ययन।"

19. वी० पी० दत्त, चीनी और जापानी अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्व-विद्यालय, दिल्ली, "भारत की विदेश नीति।"

20. ए० के० वकील, राजनीतिक विज्ञान और लोक प्रशासन विभाग, संगमनेर नगर पालिका कॉलेज, संगमनेर, जि० अहमदनगर, और के० पी० धोंगड़े, पेमराज शारदा कॉलेज, अहमदनगर, "मुसलमानों

की आर्थिक स्थिति और उनकी राजनीतिक जागरूकता : अहमदनगर शहर तथा औरंगाबाद के निकट ग्रामीण क्षेत्र का एक सर्वेक्षण ।"

21. डी० जे० भौमिक राजनीतिक विज्ञान विभाग, उत्तरी बंगाल विश्वविद्यालय, राजा राममोहनपुर, जि. दार्जिलिंग, प० बंगाल में संयुक्त मोर्चे का परीक्षण, 1967-70 ।"

22. अनिल कुमार भट्टाचार्य, समाजशास्त्र विभाग, कल्याणी विश्वविद्यालय, प० बंगाल, "ग्राम विकास : बाल श्रम की मांग तथा उर्वरता ।"

23. डी० रजैय्या, अर्थशास्त्र विभाग, राजकीय पिंगले महिला कॉलेज, वारंगल, आन्ध्र प्रदेश, "केन्द्रीय सरकार के औद्योगिक तथा वाणिज्यक उपक्रमों में लाभों का अध्ययन ।"

24. के० आर० जी० नायर, व्यापार अर्थशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दक्षिणी कैम्पस, बेनितो जुआरेज मार्ग नई दिल्ली, "विकासशील अर्थव्यवस्था में पिछड़े क्षेत्र : उड़ीसा का मामला अध्ययन ।"

25. बी० ए० पाण्डया, अर्थशास्त्र विभाग, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट(गुजरात), "सौराष्ट्र की अम्लीय समस्या का एक अध्ययन ।"

26. के० के० खखर, अर्थशास्त्र विभाग, और एच० जी० पटेल, समाजशास्त्र विभाग, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट, "प्रौद्योगिकीय परिवर्तन तथा सामाजार्थिक प्रभाव : सौराष्ट्र क्षेत्र के मछेरों का एक अध्ययन ।"

27. आई० कादिर, सामाजिक औषध तथा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, सामाजिक विज्ञान स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "शहडोल जिला, म० प्र० में सामुदायिक स्वास्थ्य कामगार योजना ।"

28. के० सी० विजय कुमार, वाणिज्य तथा प्रबन्ध अध्ययन विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय, कालीकट, "केरल में सहकारी क्षेत्र में यात्रा परिवहन परिचालनों का एक अध्ययन ।"

29. एम० ए० आम्मेन तथा पी० पी० पिल्ले, अर्थशास्त्र विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय, कालीकट, "ग्रामीण परिवर्तन की गतिशीलता : केरल का एक मामला अध्ययन ।"

30. एन० के० अरविंदाक्षण नायर, भारतीय विकास अध्ययन संस्थान,

पुल्लरीकुन्नु, कोट्यम, "केरल में कृषि श्रमिक : एक प्रायोगिक अध्ययन।"

31. ए० सी० मिनोचा और एच० एस० यादव, क्षेत्रीय आयोजना तथा आर्थिक विकास विभाग, भोपाल विश्वविद्यालय, भोपाल, "मध्य प्रदेश में छोटे तथा मंझले नगरों का एक अध्ययन।"

32. जी० एस० दास, राष्ट्रीय बैंक प्रबन्ध संस्थान, 85 नेपिअन सी० रोड, बम्बई, "लाभप्रद रोजगार आचरण तथा इसके निर्धारक।"

33. गोलक बिहारी नाथ, अर्थशास्त्र विभाग, देवगढ़ कॉलिज, देवगढ़, जिला सम्बलपुर, उड़ीसा, "एक पुनर्वासाधीन गांव का सामाजार्थिक सर्वेक्षण।"

34. पी० जी० के० पाणिकर, विकास अध्ययन केन्द्र, उल्लूर, त्रिवेन्द्रम, "केरल में चावल की उच्च पैदावार वाली किस्में अपनाना : पालघाट तथा कुट्टानन्द के चुने हुए गांवों का अध्ययन।"

35. टी० एल० शंकर और गीता गौरी, लोक उद्यम संस्थान, विश्वविद्यालय कैम्पस, हैदराबाद, "भारत में औद्योगिक लोक उद्यमों की मूल्य नीतियां तथा पद्धतियां।"

36. आर० ए० शर्मा, वाणिज्य विभाग, दक्षिण दिल्ली कैम्पस, दिल्ली विश्वविद्यालय, बेनितो जुआरेज रोड, नई दिल्ली, "भारतीय उद्योग में उद्यम निष्पादन।"

37. डी० के० शर्मा, क्षेत्रीय विश्लेषण संस्थान, ई 3/49 क्षेत्र कालोनी, भोपाल, "ग्राम विकास में सामाजिक-धार्मिक पंथों की भूमिका : अमरावती जिले का एक मामला अध्ययन।"

38. जे० महेन्द्र रेड्डी, अर्थशास्त्र विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, "आन्ध्र प्रदेश में दालों और तेलहनों की मांग और पूर्ति का एक विश्लेषण।"

39. गिरीश के० मिश्रा और राज किशोर मेहरा, सामाजिक विकास परिषद, 53 लोदी एस्टेट, नई दिल्ली, "लोक उद्यमों का स्थान तथा क्षेत्रीय विकास : बी० एच० एल० यूनिट का एक मामला।"

40. एस० वेणु, मानविकी अकादमी, फ्लेट 20, जयपोर टैरेस, 219 अवाई शनमुघम रोड, मद्रास, "भारत में औद्योगिक सकेन्द्रण : आनुभाविक प्रमाण।"

41. जान कुरिअन और ए० वैद्यनाथन, विकास अध्ययन केन्द्र, उल्लूर,

त्रिवेन्द्रम, आन्तरिक केरल राज्य में "समुद्रीय मतस्य का विपणन : एक प्रारम्भिक अध्ययन ।"

42. रत्न खसमाबिस और ज्योति प्रकाश चक्रवर्ती, व्यापार अध्ययन विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता, "प० बंगाल कृषि में अधिशेष उपयोग का तरीका : नदिया जिला एक मामला अध्ययन ।"

43. एस० आर० चिरमाड़े, एम० जे० कॉलेज, जलगांव, "दहेज प्रथा के अर्थशास्त्र पर एक प्रायोगिक अध्ययन रिपोर्ट : जलगांव जिले में नशीराबाद गांव का एक प्रायोगिक अध्ययन ।"

44. सत्यभामा, सामाजिक विकास परिषद, 53, लोदी एस्टेट, नई दिल्ली, "छोटे किसानों के विशेष सन्दर्भ में संस्थात्मक कृषि क्रैडिट (अल्प-कालीन ऋण) तथा फसल उत्पादन ।"

45. मैत्रेयी कृष्ण राज, एस० एन० डी० टी० महिला विश्वविद्यालय, विठलदास विद्यानगर, सान्ताक्रुज (पश्चिम), बम्बई, "वस्त्र उद्योग में स्त्री श्रमिकों की सामार्थिक स्थितियां ।"

46. एम० सुकुमारन नायर, भारतीय क्षेत्रीय विकास अध्ययन संस्थान, पुल्लारीकुन्नु, कोट्टयम, "केरल में स्त्री संगठनों का एक मूल्यांकन अध्ययन ।"

47. सुधीर सोनालकर, शंकर ब्रह्मे समाज विज्ञान ग्रन्थालय, 129-बी/2, इरनडवाना, पुणे, "औद्योगिक बम्बई की काली भूमिका ।"

48. एस० गुहान, मद्रास विकास अध्ययन संस्थान, 79 सेकेण्ड मेन रोड, गांधीनगर, अडयार, मद्रास और बी० बी० अत्रेय, अर्थशास्त्र विभाग, भारती दसन विश्वविद्यालय, तिरुचिरापल्ली, "तमिलनाडु में राज्य के गांवों का एक सर्वेक्षण ।"

49. रुद्र प्रसाद सेनगुप्त, विकास विकल्पों में क्षेत्रीय पारिस्थितिक तथा सामाजिक अध्ययन केन्द्र, फ्लेट नं०-3, 32, गोविन्द अयुड्डी रोड, कलकत्ता, "प० बंगाल में ग्रुप थिएटर अभियान की सामाजार्थिक विषयवस्तु और महत्व ।"

50. शकुन्तला बालारमन, मनोविज्ञान विभाग (सेवानिवृत्त), भा० प्रौ० सं०, मद्रास, "प्रबन्धकीय कारगकरता का पूर्वानुमान : एक अन्वेषणात्मक अध्ययन ।"

51. अजीत कुमार सिंह, अर्थशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ, "ग्राम परिवर्तन कीगतिशीलता उत्तर प्रदेश का मामला,

1951-81।"

52. सारथी आचार्य, ग्रामीण अध्ययन यूनिट, टाटा समाज विज्ञान संस्थान, देवनार, बम्बई, "खाद्य सुरक्षा स्थिति पर खाद्य संसाधन उद्योग का प्रभाव : एक अन्वेषणात्मक अध्ययन ।"

53. नीलम वर्मा, मनोविज्ञान विभाग, सुन्दरवती महिला कॉलेज, भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, "अन्तर-वैयक्तिक परिप्रेक्ष्य में नेतृत्व तरीके, चरण-II।" .

54. आशीष कुमार बनर्जी, अर्थशास्त्र विभाग, शहरी आर्थिक अध्ययन केन्द्र, विश्वविद्यालय कला कॉलेज, 56 ए० बी० टी० रोड, कलकत्ता, "भारत में एक शहरी श्रम बाजार की संरचना तथा कार्यकरण: कलकत्ता में दो रिहायशी बस्तियों का सर्वेक्षण ।"

55. उमा सेखरन, प्रबन्ध विभाग, व्यापार तथा प्रशासन कॉलेज, दक्षिणी इलिनोइस विश्वविद्यालय, कारबोनडेट, इलिनोइस, "ग्रीष्म 1981 के दौरान भारत में बैंकों में प्रबन्धकों के सर्वेक्षण के सम्बन्ध में रिपोर्ट ।"

56. जवाहरलाल, वाणिज्य विभाग, श्रीराम कामर्स कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, "विविधिकृत कम्पनियों द्वारा आंशिक रिपोर्टिंग ।"

57. एन० पी० पाटिल, भारतीय आर्थिक तथा सामाजिक परिवर्तन संस्थान, बंगलौर, "कर्नाटक में अधिशेष विहित भूमि की वसूली और वितरण, कृषि उत्पादन पर भूमि सुधार उपायों का प्रभाव तथा भूमिधारी गरीबों व भूमिहीनों के बीच सामाजार्थिक परिस्थितियों में परिवर्तन ।

58. पी० के० राव और अंजनेयुलु, विकास अनुसंधान केन्द्र, सी-15, मधुरा नगर, हैदराबाद, "नगरपालिका राजस्व की सम्भावना तथा गतिशीलता : हैदराबाद नगर निगम का एक मामला अध्ययन ।"

59. एस० एन० सिंह, लोक प्रशासन विभाग, लखनऊ, विश्वविद्यालय, लखनऊ, "लखनऊ में उचित मूल्य की दुकानों के विशेष सन्दर्भ में लोक प्रशासन प्रणाली ।"

60. एम० एल० मोंगा, राष्ट्रीय श्रम संस्थान, ए/बी-6, सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली, "औद्योगिक अनुशासनहीनता : इसके सह-तत्वों का एक अन्वेषणात्मक अध्ययन ।"

61. एच० सी० श्रीवास्तव और एम० के० चतुर्वेदी, समाजशास्त्र विभाग,

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, "मध्यस्थ के रूप में ग्रामीण प्रभावशाली व्यक्तियों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन : वाराणसी के चार विकास खण्डों पर आधारित एक अध्ययन।"

62. सारथी आचार्य, ग्रामीण अध्ययन यूनिट, टाटा समाज विज्ञान संस्थान, पोस्ट बाक्स नं० 8313, सिओन ट्राम्बे रोड, देवनार, बम्बई, "तीसरे विश्व में स्त्रिया तथा कृषि विकास।"

63. आर० एस० दीक्षित, भूगोल विभाग, इसाबेल्ला थोबर्न कॉलेज, लखनऊ, "उ० प्र० के हमीरपुर जिले में बाजार केन्द्रों का स्थानिक संगठन।"

64. कामिनी अधिकारी, भारतीय प्रबन्ध संस्थान, कलकत्ता, जोका डायमण्ड हारबर रोड, अलीपुर, पो० आ० कलकत्ता, "1970 में प० बंगाल में औद्योगिक उद्यमी : वर्ग निर्माण की गतिशीलता में सामाजिक उत्पत्ति।"

65. एम० कुतुम्ब राव, स्नातकोत्तर वाणिज्य विभाग, हिन्दू कॉलेज, मछलीपटनम, "नवें दशक में सहकारी नेतृत्व : आन्ध्र प्रदेश के कृष्णा जिले का एक मामला अध्ययन।"

66. दुर्गानन्द सिन्हा, ए० एन० सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान, पटना, "कुछ सातत्य दक्षताएं प्राप्त करने का परस्पर सांस्कृतिक अध्ययन।"

67. एस० एन० जैन, भारतीय विधि संस्थान, भगवान दास रोड, नई दिल्ली, "विधायी प्रक्रिया : नीति निर्माण : एक अध्ययन।"

68. जी० बी० शाह, मनोविज्ञान विभाग कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता, "नेत्रहीन व्यक्तियों की भावना की बाह्य अभिव्यक्ति के सम्बन्ध में एक प्रयोगात्मक अध्ययन।"

69. एस० वेणुगोपाल राव, निश्चल, 8-2-542, रोड नं० 7, बनजारा हिल्स, हैदराबाद, "अपराध के शिकार : एक सामाजिक-कानूनी अध्ययन।"

70. पार्थ एस० घोष, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, "भारत की गुटनिरपेक्षता की राजनीति तथा अमरीका व सोवियत रूस।"

71. एन० आर० इनामदार, राजनीति तथा लोक प्रशासन विभाग, पूना विश्वविद्यालय, पुणे, "महाराष्ट्र में जिला आयोजना : एक राज-

नीतिक प्रशासनिक अध्ययन।"

72. निर्मल बनर्जी, सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कलकत्ता, 10 लेक टेरेस, कलकत्ता, "विकासशील देशों में स्त्रियां तथा औद्योगिकरण।"

73. के० आर० सिंह, पश्चिम एशिया तथा अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन स्कूल, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "ईरान : सुरक्षा की खोज।"

74. ए० आर० एन० श्रीवास्तव, नृविज्ञान विभाग, रविशंकर विश्व-विद्यालय, रायपुर, "बदलते हुए मूल्य और जनजातीय सोसायटी : बिहार और म० प्र० की ओरांव व मुण्डा जनजातियों के विशेष सन्दर्भ में जनजातीय मूल्य अनुस्थापनों की एक नृविज्ञानीय जांच।"

75. आर० के० भाद्र, समाजशास्त्र विभाग, उत्तरी बंगाल विश्वविद्यालय, जि० दार्जिलिंग, "ऊपरी असम में वंश प्रथा, परम्परा और वर्गी-करण।"

76. सत्यबाला तायल, समाज कार्य संस्थान, नागपुर, "शारीरिक रूप से विकलांगों की सामाजिक स्वीकार्यता।"

77. जे० मरीचन, लोयोला समाज विज्ञान कॉलेज, त्रिवेन्द्रम, "शक्ति सरंचनाएं तथा क्रेडिट प्रणाली।"

78. रामाश्रय राय, विकासशील सोसायटी अध्ययन केन्द्र, 29 राजपुर रोड, दिल्ली, "विकास परियोजना की लक्ष्य प्रक्रियाएं तथा सूचक।"

79. आर० एम० सरकार, समाज संस्कृति आलोचना ओ गवेषणा परिषद, 28/1/1, पीताम्बर छतक लेन, कलकत्ता, "प० बंगाल के बाउलों का जीवन और कार्यकलाप : एक सामाजिक-मनोवैज्ञानिक-सांस्कृतिक अध्ययन।"

1984-85 के दौरान प्राप्त रिपोर्टें

राष्ट्रीय अधिछात्रवृत्ति

1. वी० एम० दाण्डेकर

वरिष्ठ अधिछात्रवृत्तियां

1. टी० सी० दासवाणी
2. रघुनाथ राम
3. राजेन्द्र एम० चक्रवर्ती
4. पी० सी० चटर्जी
5. पी० एन० रस्तोगी
6. करुणा चौधरी
7. जी० सान्ती
8. डी० पी० नायर
9. अरुण मजुमदार
10. के० के० जार्ज
11. वी० के० बाबा
12. रामचन्द्र गांधी
13. बुद्ध देव चौधरी
14. इन्दिरा रोथरमुंड
15. ई० ए० रामास्वामी
16. रत्ना नायडु

सामान्य अधिछात्रवृत्तियां

1. ए० एस० अब्राहम
2. असगर अली इंजीनियर

युवा समाज विज्ञानी अधिछात्रवृत्तियां

1. भंवर सिंह
2. आर० ए० पी० सिंह

उत्तर-डाक्टोरल

1. प्रभाती मुखर्जी
2. नजमुल अबेदीन
3. रमा कान्त
4. अनुराधा गुप्ता

परिशिष्ट-6

प्रदान की गई अधिछात्रवृत्तियां

वरिष्ठ अधिछात्रवृत्तियां

1. के० डी० कपूर, "सोवियत रूस तथा तीसरे विश्व में परमाणु विस्तार।"
2. मनोरंजन मोहन्ती, "उड़ीसा : अर्ध-विकास की राजनीति।"
3. ज़फर अली उजान, "पाकिस्तान : सामाजिक-राजनीतिक उथल-पुथल तथा परिवर्तनों के परिप्रेक्ष्य।"
4. डी० एन० गधोक, "संसद में समितियां।"
5. आलोक राय, "जार्ज ओरवेल तथा आमूल निराशा की विचारधारा।"
6. अशोक आर० केलकर, "भाषा इतिहास, संस्कृति इतिहास और इतिहास।"
7. ओ० पी० बक्शी, "राजनीतिक जांच का तर्क: समाज विज्ञानों के लिए कार्ल पोपर की क्रिया विधि का अध्ययन।"
8. वी० एन० देशपाण्डे, 'सामाजिक विज्ञान के दर्शन का अध्ययन।"

सामान्य अधिछात्रवृत्तियां

1. विजय सी० कट्टी, 'भारत का उसके पड़ोसी देशों—बंगलादेश, नेपाल श्रीलंका और पाकिस्तान के साथ व्यापार, 1970-1980।"
2. मनमोहन शर्मा, "उभरते हुए आर्थिक व्यापार तथा सम्भाव्य अनिश्चितताओं के अन्तर्गत पोर्ट-फोलिओ निवेश।"
3. बी० एच० तबरीजी, "राजनीतिक अर्थव्यवस्था में अन्तर-क्षेत्रीयता: 1820-1870 (जान स्टुअर्ट मिल के आर्थिक तथा राजनीतिक विचारों के सन्दर्भ में)।
4. विशम्भर सिंह, "नेपाल की तराई में बदलती हुई सामाजिक आर्थिक स्थितियां: नेपाल तराई में भारतीय मूल के लोगों का अध्ययन।"

5. नीला मुखर्जी, "डालर क्षेत्र: भारतीय क्षेत्रीय बकाया के भुगतान का अध्ययन—1951-1982।"

डाक्टोरल अधिछात्रवृत्तियां

आलोच्य अवधि के दौरान निम्नलिखित संस्थात्मक डाक्टोरल अधिछात्रवृत्तियां प्रदान की गई।

1. संजय सिन्हा, आर्थिक विकास संस्थान, दिल्ली, 'आजादी के बाद बिहार की सामाजिक संरचना, पिछड़ी जातियां तथा ताकत की राजनीति।"
2. के० वी० रामास्वामी, आर्थिक विकास संस्थान, दिल्ली, "भारतीय उद्योग में तकनीकी कार्यकुशलता के कुछ पहलू।"
3. हेलेन वांगेइमायुम, आर्थिक विकास संस्थान, दिल्ली, "वंशानुगत अल्पसंख्यक और राष्ट्रीय जीवन के साथ उनके एकीकरण की समस्या।"
4. के० सी० समल, गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ, "शहरी अनौपचारिक क्षेत्र का अर्थशास्त्र: सम्बलपुर का एक मामला अध्ययन।"
5. योगेश कुमार, गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ, "व्यावसायिक संरचना और विकास।"
6. विनीत पाण्डे, गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ, "भारत के विशेष सन्दर्भ में औद्योगिक मूल्य पद्धति।"
7. इशिता चटर्जी, सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कलकत्ता, "बांगला भांगेर जुगे बंगाली बुद्धिजीवी देर रूप रूपान्तर (1905-1911) (बंगाल के विभाजन काल में बंगाली बुद्धिजीवियों की भूमिका तथा इसकी प्रकृति और अन्तरण)।"
8. इंद्राणी घोष, सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कलकत्ता, "भारत के कुछ चुने हुए राज्यों में कृषि उत्पादन में वृद्धि तथा उतार-चढ़ाव को प्रभावित करने वाले भिन्न-भिन्न कारण।"
9. गोविन्द चन्द्र रथ, सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कलकत्ता, "उडीसा की जनजातियों पर औद्योगिकरण का प्रभाव।"

10. एम० कुन्हामन, विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम, "धान की खेती में तथ्यों का अनुपात और मजदूरी अंश: केरल का एक मामला अध्ययन।"
11. बी० के० सुधाकर रेड्डी, विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम, "कृषि में पूंजीवाद का विकास: आंध्र प्रदेश का एक मामला अध्ययन।"
12. तीर्थंकर राय, विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम, "पं० बंगाल में 1950 के बाद से औद्योगिक संगठन में परिवर्तन तथा औद्योगिक विकास।"
13. दुर्गम राजा शेखर, विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम, "आंध्र प्रदेश में कृषक गतिशीलता: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में एक अन्तर-क्षेत्रीय अध्ययन।"
14. हृस्सेले ए० ड्रबू, विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम, "जम्मू और काश्मीर में बदलती हुई कृषि प्रणाली।"
15. के० रवि, विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम, "उत्पादन: केरल की धान अर्थव्यवस्था की उत्पादकता स्थिरता लक्षण।"
16. प्रकाश दत्त, भारतीय शिक्षा संस्थान, पुणे, "शिक्षा (अन्तर-विषय)।"
17. सीमान्तीनी खोट, भारतीय शिक्षा संस्थान, पुणे, "स्त्रियों के लिए गैर-औपचारिक शिक्षा।"
18. वी० यू० भाटकर, भारतीय शिक्षा संस्थान, पुणे, "अनुसूचितजातियों के बीच शैक्षिक असमानताएं।"
19. आशा आयंगर, मद्रास विकास अध्ययन संस्थान, मद्रास, "तमिलनाडु की मूंगफली अर्थ-व्यवस्था।"
20. कनकराज ओझा हिना, सरदार पटेल आर्थिक तथा सामाजिक अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद, "भारतीय प्रमुख उद्योगों में पूंजी उपयोग और लाभकारिता।"
21. सी०वी० रामाराव, सरदार पटेल आर्थिक तथा सामाजिक अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद, "भारत में व्यापार का उदारीकरण: इसके प्रभाव तथा परिणाम।"
22. जयेश के० शास्त्री, सरदार पटेल आर्थिक तथा सामाजिक अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद, "भारतीय कर प्रणाली का एक आनुभाविक अन्वेषण।"

23. रवि चन्द्रन, सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन संस्थान, बंगलौर, "आर्थिक नीति: प्रदूषण निरोधात्मक नियन्त्रण के लिए रूपरेखा।"

प्रायोजित कार्यक्रम

आयुर्विज्ञान समाजशास्त्र के लिए स्त्री अध्ययनों, नृविज्ञान, स्वास्थ्य देखरेख, और शारीरिक विकलांग व्यक्तियों के वास्ते अधिक्षात्रवृत्ति कार्यक्रम के अन्तर्गत 1984-85 के दौरान कोई अधिछात्रवृत्ति नहीं प्रदान की जा सकी। किन्तु यह योजना चालू है और इसे बन्द नहीं किया गया है।

विदेशी अध्येता

विदेशी अध्येताओं के लिए अधिछात्रवृत्ति कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित अध्येताओं को डाक्टोरल अधिात्रछवृत्तियां प्रदान की गई—

1. मोहम्मद ग्यासुरुद्दीन मोल्ला, "बंगलादेश में खाद्य सहायता का वितरण।"
2. वी० बी० बज्राचार्य, "नेपाल में कृषि विकास के कुछ पहलू (12 महीनों के लिए अल्पावधि अधिछात्रवृत्ति)।

अल्पावधि डाक्टोरल अधिछात्रवृत्तियां

1. राम शरण गौरहा, "उन्नत कृषि प्रौद्योगिकी के विस्तार में राष्ट्रीय प्रदर्शन का प्रभाव।"
2. गगनदीप कौर, "विभिन्न पर्यावरणों में किशोरों द्वारा प्रयुक्त रक्षा प्रणालियां तथा स्कूल व घर में उनके अनुकूल पर उनका प्रभाव।"
3. प्रमोद कुमार, "प्रबन्धकीय संचालन तकनीक: इनके निर्धारक और परिणाम।"
4. एम. राजावेलु "पांण्डिचेरी में मद्यनिषेध नीति का एक आर्थिक मूल्यांकन: कुछ पहलू और कामगार वर्ग के परिवार बजटों पर इसका प्रभाव।"
5. पी० सुकुमारन नायर, "भारत बंगलादेश सम्बन्ध 1971-79।"
6. सत्यप्रकाश पाण्डा, "उडीसा की कोयला खानों में श्रमिक: उनके काम, जीवन और कल्याण का एक अध्ययन।"
7. पी० परमेश्वर, "आ० प्र० में केन्द्रीय सहकारी बैंकों द्वारा निपेक्ष प्रेरणा।"

8. एन० लक्ष्मी नरसिहा राव, "विशाखापटनम औद्योगिक इकाइयों में हड़ताल के निर्धारक ।"

9. आर० जे० आई० समुल, "शहरी अर्थ-व्यवस्था में अनौपचारिक सम्बन्ध ।"

10. सुधीर चन्द्र मिश्रा, "उडीसा में हथकरघा उद्योग की समस्याएं ।"

11. जैश राजशुक्ला, 'भारत में ग्राम विकास विकल्प, जि० फैजाबाद: एक मामला अध्ययन ।'

12. एन० वी० राजेश्वरी, "आ० प्र० के अन्यकरण के विशेष सन्दर्भ में परिवार नियोजन स्वीकारकर्ताओं की बदलती हुई पद्धति ।"

13. अरविन्द प्रताप सिह, "भारत में जिला संचरण में आयोजना: एक भौगोलिक विश्लेषण ।"

14. जितेन्द्र नाथ मोहन्ती, "चीन-भारत सम्बन्धों में एक तथ्य के रूप में सोवियत रूस, 1950-80 ।"

15. नलिनी पन्त, "जौंसार बावर समुदाय में बहुविवाह प्रणाली में स्त्रियों की सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य समस्यायें ।"

16. मीना नन्दा, "सरकारी आश्वासन सम्बन्धी समिति के विशेष सन्दर्भ में भारत में संसदीय समितियां ।"

17. महाराज सिंह, "वर्ग अनुकूल में बाह्य-अनिबन्धन प्रेरणाओं की भूमिका ।"

18. मोहम्मद मुशाहीदुल्लाह खान, "मध्य वर्गों के पृथक तथा संयुक्त परिवारों में बच्चों के पालन पोषण के प्रति माता-पिता की अभि-वृत्तियों तथा मूल्यों का एक अध्ययन ।"

19. परवेज अहमद अब्बासी, "मुसलमानों के बीच सामाजिक वर्गीकरण: पश्चिमी उ० प्र० में गद्दी जाति का एक अध्ययन ।"

20. सी० रमेश बाबू, "नैतिक विकास ।"

21. मोलेपति हरी, "उर्वरता आचरण पर आधुनिकीकरण का प्रभाव ।"

22. रमेशचन्द्र चौधरी, "टोंक जिले में बेकार जमीनों की उर्वरता और उपयोग ।"

23. एस० राय, "उ०प्र० में शहरी छोटे नगरों की अर्थ-व्यवस्था में अनौप-चारिक क्षेत्रों की भूमिका: गाजीपुर शहर का एक मामला अध्ययन ।"

24. के० पद्मनाभन, "तमिलनाडु के उत्तरी आर्काट जिले में जगरी विपणन का आर्थिक विश्लेषण।"
25 वी० बी० पत्तनशेट्टी, "परस्पर विवाहों के जैवकीय परिणाम।"
26. सुदर्शन कुमारी दगोरिआ, 'छात्र उपलब्धि के प्रति एस०आई० माडल में परिचालन क्षमताओं के सापेक्ष अंशदान।"
27. रंजना सिंह, "गिरिडीह जिले के विशेष सन्दर्भ में बिहार में पंचायत राज का कामकाज।"
28. विद्युत शिखा, "आगरा शहर में आय स्तर तथा उर्वरता स्तर।"
29. ए० मुस्तफा, "तमिलनाडु में बाढ़।"
30. ज्ञानेन्द्र शर्मा, "जिला ग्राम विकास एजेन्सी की परियोजना कार्यान्वयन पद्धति तथा डेरी लाभ प्राप्तकर्त्ताओं पर इसके प्रभाव का विश्लेषण।"
31. रछपाल सिंह, "पंजाब में उप-पर्वतीय क्षेत्रों के लिए वर्षा स्थितियों के अन्तर्गत कृषि उत्पादन नीति।"
32. टी० विश्वेश्वर राव, "हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड, विशाखापटनम में औद्योगिक सम्बन्धों का अध्ययन।"
34. सीतारानी अस्थाना, "राजनीतिक शिक्षा-संकल्पनों, विषयवस्तु और विधि का एक समालोचनात्मक अध्ययन।"
34· के० एस० क्षीरसागर, सामूहिक राजनीति में नरकेसरी अभ्यंकर: सामन्त वर्ग संघर्ष का नेतृत्व।"
35. के० गोपीनाथन पिल्ले, "डॉ० राम मनोहर लोहिया का राजनीतिक दर्शन"।
36. सन्ध्या उपाध्याय, "पूर्वी उ० प्र० में औद्योगिक कामगारों की सामाजिक स्थिति।"
37. मंजू कुमारी, "किशोर अपराध के कारण—वाराणसी के दो सुधार गृहों में पुरुष अपराधियों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।"
38. डी० हिमाचलम, "पिछड़े क्षेत्र में उपभोक्ता सहकारिता—आ० प्र० के रायलसीमा क्षेत्र के सन्दर्भ में एक अध्ययन।"
39. के० चक्रपाणी रेड्डी, "समाकलित ग्राम विकास कार्यक्रम का प्रभाव: आ० प्र० के कुडापा जिले का एक मामला अध्ययन।"
40. मदन सी० पाल, "दिल्ली के बिशेष सन्दर्भ में महानगर में दहेज प्रथा

का एक समाजशास्त्रीय अन्वेषण।"

41. आर० एस० राव, "भारत में केन्द्र-राज्य वित्तीय सम्बन्ध और सहायता-अनुदान।"

42. आनन्द इनबनथन, "दिल्ली में तमिल प्रवासी : अनुकूलन शैली का एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण"।

43. सी० बीरभद्र राव, "आ० प्र० में कृषि सम्बन्ध और राजनीतिक शक्ति संरचना के साथ इसका सम्बन्ध —कृष्णा जिले का एक मामला अध्ययन।"

44. वी० आर० कल्लीअप्पन, "ग्रामीण कृषि, स्त्रियों की स्थिति और भूमिका।"

45. एस० पी० सिंह, "हरियाणा के सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों में कार्य पूंजी की व्यवस्था।"

46. के० वी० जोसेफ, "केरल में उत्प्रवास और आर्थिक विकास।"

47. सी० बालासुब्बैया, "मुद्रास्फीति के लिए लेखा।"

48. एस० विजयलक्ष्मी, "बंगलौर जिले में अनिश्चितता के अन्तर्गत अधिकतम कृषि तथा पशु उत्पादन निर्णय।"

49. एस० के० मिश्रा, "वंचित लोगों का राजनीतिक और विधायीआचरण: उड़ीसा के अनु० जाति तथा अनु जनजाति विधान सभा सदस्यों का एक अध्ययन।"

50. लाइश्राम वी० सिंह, "व्यावसायिक पद्धति और आर्थिक विकास के स्तर: मणिपुर में जनजातियों का एक मामला अध्ययन, 1961-81।"

51. शमिता चौहान, "मनोवैज्ञानिक भिन्नताओं के कार्य के रूप में कॉलेज छात्रों की स्तर आकांक्षाओं का अध्ययन करना।"

52. दिनेश चन्द्र शर्मा, "युद्धों, बाह्य आक्रमणों और आंतरिक असन्तोष के दौरान संवैधानिक आपात स्थिति: भारतीय अनुभव।"

53. मासूमा खातून, "मासिक धर्म पर चुने हुए बाहरी साधनों, प्रेरक रोशनी, उत्सुकता, हीनता के प्रभाव।"

54. विक्रमादित्य राय, "किसान आन्दोलन के बदलते सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक आधारों का समाज वैज्ञानिक विश्लेषण: गाजीपुर के किसान आन्दोलन के सन्दर्भ में एक अध्ययन।"

55. दिनेश कुमार सिंह, "दक्षिणी एशिया की शान्ति राजनीति में निरन्तरता एवं परिवर्तन : आठवें दशक में भारत-पाक सम्बन्धों के विशेष सन्दर्भ में ।"

56. डी० आनन्द नायडु "कम्बोडियाई राजनीति में क्हमेर रौगे की भूमिका, 1960-79 ।"

57. बालकृष्ण रे, "अपर नर्मदा बेसिन (म० प्र०) में कृषि, पोषक पत्तियां तथा ग्राम स्वास्थ्य ।"

58. शहला फरहंग आजाद, "बच्चों पर बेन्डेर गेस्टाल्ट का मानकीकरण ।"

59. गुरचेन सिंह, "भारत में बदलती हुई सामाजिक प्रणाली तथा नया मध्यम वर्ग—एक सामाजिक-ऐतिहासिक सन्दर्भ ।"

60. टी० कृष्णामूर्ति, "तेलंगाना क्षेत्र में ग्रामीण बाजारों का आयोजन तथा कार्यकरण ।"

61. आशुतोष वार्ष्णेय, "कृषि मूल्य नीतियों के राजनीतिक आधार : भारत का मामला ।"

62. अखिल गुप्ता, "कृषि समुदाय में तकनीकी परिवर्तन तथा सामाजिक संरचना के बीच सम्बन्ध ।"

63. कुसुम वी० दामले, "साइकोमोटर टास्क के अध्ययन तथा अनुरक्षण के निर्धारकों के रूप में वैयक्तिक बुद्धि और प्रथा विभाजन का एक प्रयोगात्मक अध्ययन ।"

64. मनोरमा शर्मा, "असमी मध्यम वर्ग का उद्भव और उसका प्रभुत्व की ओर अग्रसर होना ।"

65. आशुतोष पण्डित, "विशेष सेवाओं के अभाव में अपने विकलांग बच्चों को संभालने और शिक्षित करने में ग्रामीण माता-पिता को प्रशिक्षित करने के लिए शैक्षिक सामग्री का विकास ।"

66. बी० बी० बज्राचार्य, "नेपाल में कृषि विकास के कुछ पहलू ।"

67. हरिबंश यादव, "पासिस अनुसूचित जाति की सामाजार्थिक स्थिति ।"

68. एलेक्स जार्ज, "कुट्टनाड के पुलयों के विशेष सन्दर्भ में केरल के पुलयों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन ।"

69. मोहम्मद अकबर अंसारी, "भारत में मुस्लिम उद्यमशीलता का विकास; मुरादाबाद का एक मामला अध्ययन, 1947-80 ।"

70. एल० रहमान खान, "मुस्लिम मजलिस के विशेष सन्दर्भ में 1964 से 79 तक भारत में मुस्लिम राजनीति।"

71. सोमनाथ शर्मा, "वैयक्तिक आजादी के नए आयाम : एक सामाजिक—कानूनी अध्ययन।"

72. बी० सुगुनाम्मा, "आ० प्र० राज्य में कामकाजी स्त्रियों के धार्मिक नियम तथा सांस्कारिक प्रथाएं"।

73. एच० जी० देवराज, "मैसूर जिले में कृषि के लिए संस्थात्मक वित्त : छोटे तथा सीमान्त किसानों का एक मामला अध्ययन, 1970-80।"

74. ब्रजेश चन्द्र पुरोहित, "निगमित बचत आचरण : एक इकानामिट्रिक विश्लेषण।"

75. एल० एन० पी० मोहन्ती, "उड़ीसा में शहरी शासन तथा राज्य सरकार : अधिलंघन तथा निलम्बन की समस्या का एक समालोचनात्मक अध्ययन और स्थानीय निकायों की स्वायत्तता पर इसका प्रभाव।"

फुटकर अनुदान

1. बागाली सेइप्पा, "वेल्लारी और रायचूर जिलों में ग्रामीण क्षेत्रीय बैंकों के विशेष सन्दर्भ में कर्नाटक में क्षेत्रीय बैंक तथा ग्रामीण किकास", 2,700 रु०।
2. मोहिन्दर पाल, "हरियाणा में ग्रामीण परिवारों का बचत और निवेश आचरण", 3,000 रु०।
3. उमा बिष्ट, "स्कूली वातावरण की दृष्टि से अवर-स्नातक छात्रों तथा अध्यापकों के बीच अन्तर-वैयक्तिक विश्वास का अध्ययन", 4,350 रु०।
4. शशि गिलानी, "बौद्धिक योग्यताएं, अभिभावक अभिवृत्ति पर सामाजिक-सांस्कृतिक प्रेरक वातावरण का प्रभाव तथा प्राथमिक स्कूलों के बच्चों की आकांक्षाओं का स्तर", 1,800 रु०।
5. अनम्मा चेरिअन, "पी० आई० जे० और टी० वी० के चुने हुए स्वास्थ्य, पोषण और परिवार नियोजन कार्यक्रम की विषयवस्तु का विश्लेषण और खेडा जिले के चुने हुए गांवों के ग्रामीण लोगों द्वारा जानकारी प्राप्त करने पर उनका प्रभाव", 3,600 रु०।

6. ज्योति प्रकाश पटनायक, "ग्राम विकास के लिए वाणिज्यिक बैंक वित्त : सम्बलपुर जिले का एक मामला अध्ययन", 2,200 रु० ।
7. सुनील कुमार, "बिहार में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक तथा ग्रामीण विकास : वैशाली क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक के विशेष सन्दर्भ में समस्याओं तथा सम्भावनाओं का एक अध्ययन", 1,550 रु० ।
8. प्रताप सिंह सेंगर, "व्यावसायिक अधिमानताओं की विकासात्मक प्रवृत्तियों का एक अध्ययन तथा माध्यमिक स्तर के लड़कों के बीच कुछ मनः सामाजिक परिवर्तनशीलों के साथ उनका सम्बन्ध", 3,500 रु० ।
9. पी० एल० यादव, "विभिन्न आयामों में सामाजार्थिक स्थिति और सांस्कृतिक वातावरण के कार्यों के रूप में उत्सुकता, निराशा और मानसिक विषन्नता तथा हाई स्कूलों के छात्रों का फेल होना", 5,000 रु० ।
10. एन० एच० कामदार, "समायोजन तथा रोजगार सन्तुष्टि : स्कूल अध्यापकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन", 3,500 रु० ।
11. पी० आर० एस० गौतम, "चम्बल प्रयाग, म० प्र० का यातायात भूगोल", 2,000 रु० ।
12. सत्य देव सिंह, "कक्षा वातावरण, उपलब्धि, प्रेरणा तथा छात्र उपलब्धि के रूप में राजस्थान के उच्चतर माध्यामिक स्कूलों के प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व आचरण गुणों की निर्णयात्मक शैली का अध्ययन", 4,750 रु० ।
13. नगेन्द्र सिंह, "शिक्षण भूमिका निष्पादन तथा कार्यकुशलता के प्रति अभिवृत्ति की दृष्टि से समाकालित तथा परम्परागत विधियों के माध्यम से प्रशिक्षित अध्यापकों का एक तुलनात्मक अध्ययन", 3,000 रु० ।
14. ओ० पी० शर्मा, "लखनऊ जिले के बाजार केन्द्र : एक भौगोलिक विश्लेषण", 2,750 रु० ।
15. बसंत मेहता, "राजस्थान में लीड बैंक योजना का आयोजन और कामकाज: यूनाइटेड कामर्शियल बैंक, स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर तथा बैंक आफ बडौदा का एक अध्ययन", 2,550 रु० ।
16. नन्दिनी रामेश्वर राव, "आदिलाबाद, आन्ध्र प्रदेश की एथनोपुरातत्वविद्या के पहलू" 3,750 रु० ।

17. एन. आदिनारायण, "आयु विवाह तथा हिन्दू और मुसलमानों के बीच इसके निर्धारक", 2,000 रु० ।
18. इन्दर सेन, "पंजाब कृषि में उत्पादकता तथा तकनीकी परिवर्तन", 1,700 रु० ।
19. बी. एल. नरसिम्हा मूर्ति, "भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के वाणिज्यिक बैंकों में क्रेडिट आयोजना तथा व्यवस्था का अध्ययन", 3,500 रु० ।
20. जोसेफ सुन्दरम, "प्रथम पीढी शिक्षार्थियों तथा परम्परागत शिक्षार्थियों के सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक लक्षणों का एक तुलनात्मक अध्ययन", 2,900 रु० ।
21. आर. जी. देसाई, "कृषि विकास के लिए अल्पावधि वित्त: बेल्लारी जिला, कर्नाटक में चुनी हुई कृषक सेवा सोसायटियों का एक अध्ययन", 2,500 रु० ।
22. आरिफ हसन, "नेतृत्व प्रभावशालिता का अधीनस्थ तथा कार्य विशेषताएं तथा माडरेटर्स", 501.85 रु० ।
23. नरेन्द्र कुमार दुशारा, "1959-77 अवधि के दौरान तिमाही आंकड़ों का उपयोग करके भारत में मूल्यों का अध्ययन", 1573.80 रु० ।
24. तुलसी पटेल, "राजस्थान ग्राम में जनसंख्या तथा सोसायटी", 2,500 रु० ।
25. कैलास स्वरूप, "सम्बलपुर जिला, प० उड़ीसा के विशेष सन्दर्भ में क्रडिट के लिए छोटे किसानों की मांग", 2,500 रु० ।
26. मदन मोहन शर्मा, "भारत में विश्वविद्यालयों में वित्तीय प्रबंध प्रथाओं का एक अध्ययन", 3,200 रु० ।
27. नीला त्रिवेदी, "भारत में ग्रामीण स्त्रियों के लिए गैर-औपचारिक शिक्षा", 4,700 रु० ।
28. एस. सेलवानाथन, "पिछड़ेपन का अर्थशास्त्र: तमिलनाडु में हरिजनों का एक मामला अध्ययन", 4,000 रु० ।
29. अरुण कुमार पालीवाल, "औद्योगिक श्रमिकों के बीच दुर्घटना से सम्बद्ध कारण", 1,800 रु० ।
30. परशा राम बिन्दा, "परिकल्पनाओं में भूमियों के जरिए प्राकृतिक संसाधनों की समाकलित आयोजना", 4,250 रु० ।
31. मेहर सिंह, "भारत में ईसाई लोगों की बदलती हुई वितरण प्रणालियां

1881-1971", 4,000 रु० ।

32. कुलभूषण वारीकू, "सोवियत मध्य एशिया तथा काश्मीर मध्य एशिया में आंग्ल-सोवियत प्रतिद्वन्दिता के सन्दर्भ में एक अध्ययन", 2,250 रु० ।

33. जसवंत सिंह चमक, "पंजाब में कृषि क्षेत्र का आर्थिक माडलिंग: एक रीति प्रेरणात्मक दृष्टिकोण", 4,000 रु० ।

34. स्वतन्त्र जैन, "विभिन्न कार्यों पर के० आर० के एक कार्य के रूप में कार्यकुशलताओं की प्राप्ति तथा समाप्ति पर व्यक्तित्व तथा बुद्धि का प्रभाव", 3,750 रु० ।

35. सी० एस० रंगाराजन, "उद्योग में श्रमिक तथा अफसरशाही पद्धति: तमिलनाडु में औद्योगिक विवादों के कुछ पहलुओं का एक अध्ययन", 1,800 रु० ।

36. जगदीश नारायण जाट, "हिन्दू सोसायटी में भूमिका समायोजन तथा तलाक: पूर्वी राजस्थान में तलाकों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन", 2,000 रु० ।

37. केटालनो रोबर्टो, "धर्मों के प्रति बम्बई कॉलेज वालों की अभिवृत्ति", 1,300 रु० ।

38. रजनी जोशी, "कुमायुं विश्वविद्यालय के कर्मचारियों में आत्म-संक्रमण को प्रभावित करने वाले कारणों का अध्ययन", 1,800 रु० ।

39. प्रकाश रत्न झा, "आर्थिक विकास में कृषि की भूमिका: 1966-67 से 1982-83 तक भारतीय अर्थव्यवस्था का अध्ययन", 2,700 रु० ।

40. हरबंस लाल टन्डन, "दो कृति संस्थाओं में वैज्ञानिकों की भूमिका की आकांक्षाएं तथा भूमि का निष्पादन", 1,550 रु० ।

41. मंजू अग्रवाल, "विश्वविद्यालय छात्रों के बीच जीवन महत्त्व का एक अध्ययन", 2,000 रु० ।

42. ए. के. सैहपाल, "उत्तरी क्षेत्र में रुग्ण कपड़ा मिलों के वित्तीय प्रबन्ध का एक अध्ययन", 3,950 रु० ।

43. टी. ए. खान, "स्थानिक विकास में सेवा केन्द्रों की भूमिका उ० प्र० में हमीरपुर जिले की मौधना तहसील का एक मामला अध्ययन", 3,500 रु० ।

44. राज लक्ष्मी, "आयोजना अवधि, (1950-51 से 1980-81) के

दौरान बिहार में कृषि गतिशीलता का क्षेत्रीय विश्लेषण", 3,500 रु० ।

45. प्रमिला सेठ, "कार्मिक नीतियों का चित्रण तथा चुने हुए औद्योगिक यूनिटों की प्रथाएं", 4,000 रु० ।

46. जयानन्द तिवारी, "सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्र में औद्योगिक संबंधों का एक तुलनात्मक अध्ययन", 1,800 रु० ।

47. जोसेफ थामस, "शिक्षा, रोजगार, आय अनुपात के विशेष सन्दर्भ में केरल में उच्च शिक्षा के कुछ आर्थिक पहलू", 2,650 रु० ।

48. वईकोम कुमार सिंह, "मणिपुर में मूल्य और गैर-मूल्य कारणों के प्रति कृषि आपूर्ति प्रतिक्रियाएं 1951-1981", 4,442 रु० ।

49. के. एस. सुब्रमण्यनः "1953 से 1961 की अवधि के विशेष सन्दर्भ में आजादी के बाद की अवधि में भारतीय साम्यवादी आन्दोलन का वैचारिक विकास", 5,000 रु० ।

50. महाबीर यादव, "उच्च तथा निम्न सामाजार्थिक स्थिति वाले छात्रों के कक्षा अध्ययन आचरण तथा विज्ञान में उनके निष्पादन का एक अध्ययन", 1,500 रु० ।

51. आर. एस. विश्वकर्मा, "दिगवात: बांदा जिले में एक गांव में गुटबंदी का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन", 2,550 रु० ।

52. फखरुद्दीन अहमद, "मुस्लिम बुनकर सहकारी समिति : वाराणसी जिले के जैतपुरा वार्ड पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन" 1,950 रु० ।

53. सुषमा रानी, "हरिद्वार और इसकी शहरी बस्तियां: रहने तथा भूमि उपयोग पद्धति में परिवर्तनों का एक अध्ययन", 2,700 रु० ।

54. एस. श्रीवास्तव, "कुष्ठरोगअस्पताल में डॉक्टर-रोगी सम्बन्ध का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन", 2, 550 रु० ।

55. टी. आर. हाथी, "ऑपरेशन फ्लड-I और II का गुजरात की अर्थ-व्यवस्था पर प्रभाव", 3,000 रु० ।

56. वी. साथी आनेसन, "1900 ई० से आज तक कन्याकुमारी जिले में सामाजिक परिवर्तन: आर्थित इतिहास के परिप्रेक्ष्य में एक समालोचनात्मक अध्ययन", 2,900 रु० ।

57. जगवीर एस यादव, "विश्व बैंक परियोजना के अधीन हरियाणा में कृषि विस्तार का मूल्यांकन", 1,750 रु० ।

58. राम सूरत, "थोक व्यापार का भूगोल: पूर्वी उ. प्र. की कृषि मण्डियों का एक मामला अध्ययन", 4,000 रु० ।

59. नारायण शर्मा "कृषि में प्रौद्योगिकीय परिवर्तन और रोजगार : रांची जिले का एक मामला अध्ययन", 3,700 रु0 ।

60. विरेन्द्र एस० सिंह, "बिहार में पालामऊ के बंधक मजदूरों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन", 1,795 रु० ।

61. शान्ति मिश्रा, "बुन्देली बोली क्षेत्र में मानक हिन्दी : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन", 3,335 रु० ।

62. एम० ए० एच० सिद्दीकी, "भारत के तट का राजनीतिक भूगोल : हिन्द महासागर क्षेत्र में भारतीय भू राजनीतिक क्षेत्र का एक अध्ययन", 2,000 रु० ।

63. एम० के० सेन, "जनजातीय स्कूली बच्चों में रचनात्मकता से सम्बद्ध पर्यावरणात्मक तथ्य", 2,340 रु० ।

64. अलमीन अली, "भूमि बद्ध राज्य और अन्तर्राष्ट्रीय कानून : नेपाल की भूमिका के विशेष सन्दर्भ में भूमि बद्ध राज्यों के सम्बन्ध में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का एक अध्ययन", 3, 800 रु० ।

65. रंजना रे, "पुनः प्राप्त सुन्दरवन, प० बंगाल में मृदा लक्षण और भूमि उपयोग", 2,500 रु० ।

66. सेम्युल दयाल, "पूर्वी उ० प्र० के चुने हुए जिलों में भू-धारणों के आकार के अनुसार सापेक्ष आय का एक अध्ययन", 2,750 रु० ।

67. रविशंकर श्रीवास्तव, "भारतीय कृषि में फालतू तथा पूंजी संचयन का समायोजन : कृषि स्तर तथा कुल आंकड़ों के आनुभाविक विश्लेषण पर आधारित एक अध्ययन", 5,000 रु० ।

परिशिष्ट-7

प्रलेखन तथा ग्रन्थसूचीय सेवा के लिए सहायता-अनुदान

एसोसिएशन/संस्था		राशि (रुपये)
1. भारतीय विश्वविद्यालय एसोसिएशन, नई दिल्ली—'भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा समाज विज्ञानों में प्रदत्त डाक्टोरल प्रकाशन के डिग्रियों की वार्षिक अनुमक्रणिका' के लिए।		2, 000.00
2. आचरणात्मक विज्ञान केन्द्र, नई दिल्ली—'हिन्दू-मुसलमान तनाव के विशेष सन्दर्भ में साम्प्रदायिक आचरण का अध्ययन—एक ग्रन्थसूचीय विश्लेषण के लिए।'		3,453.75
3. दिल्ली पुस्तकालय एसोसिएशन, दिल्ली—'भारतीय प्रेस अनुक्रमणिका खण्ड 16 और 17 'के प्रकाशन के लिए	2,000.00 8,000.00	10,000.00
4. भारतीय विश्व कार्य परिषद, नई दिल्ली—पुस्तकालय के अनुरक्षण के लिए(इसके द्वारा अभिदत्त पत्रिकाओं के अतिरिक्त)।		1,20,000.00
5. भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली—"बिबलिओग्राफिक कंट्रोल एण्ड डिस्ट्रिब्युशन मेकेनिज्म आफ स्टेट गवर्नमेन्ट्स' प्रकाशनों के अध्ययन तथा "ए सिलेक्ट बिबलिोग्राफी आफ स्टेट गवर्नमेंट्स पब्लिकेशन्स" केसंकलन के लिए।		3,612.91
6. भारत सरकार पुस्तकाध्यक्ष एसोसिएशन, नई दिल्ली—स्वर्ण जयन्ती समारोह तथा 7 से 9 अक्तूबर 1983 तक नई दिल्ली में चौथा अखिल भारतीय पुस्तकालयअधिवेशन आयोजित करने के लिए।		1,000.00
7. भारतीय पुस्तकालय एसोसिएशन, नई दिल्ली—7		

से 10 अक्तूबर 1982 तक लखनऊ में 18 वां अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन आयोजित करने के लिए।	1,000.00
8. भारतीय पुस्तकालय एसोसिएशन, नई दिल्ली—28 से 31 जनवरी 1984 तक जयपुर में तीसवां अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन आयोजित करने के लिए।	4,000.00
9. भारतीय कृषि अर्थशास्त्र सोसायटी, बम्बई—कृषि अर्थशास्त्र सम्बन्धी लेखों की अनुक्रमणिका तैयार करने के लिए।	5,000.00
10. लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ—लखनऊ में समाज विज्ञानों में पत्र-पत्रिकाओं की यूनियन लिस्ट संकलित करने के लिए।	5,000.00
11. नागरी प्रचारिणी सभा, नई दिल्ली—समाज विज्ञानों में हिन्दी भाषा प्रकाशनों की ग्रन्थसूची संकलित करने के लिए।	10,000.00
12. उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद—26 से 29 दिसम्बर 1984 तक हैदराबाद में 11वां आई० ए० एस०एल०आई० सी० राष्ट्रीय सेमिनार के आतिथ्य के लिए।	4,000.00
13. मेसर्स पीना एजेन्सीज, नई दिल्ली—"फारेन रीसर्चिज इन इनडियन पालिटिकल सिस्टम्स एण्ड प्रोसेसिज", की 25 प्रतियां खरीदने के लिए।	3,656.25
14. समाज विज्ञान मण्डल, पुणे, "एनसाइक्लोपिडिआ आफ सोशल साइन्सिज इन मराठी" तैयार करने के लिए।	31,200.00
15. श्री एस० पी० अग्रवाल तथा श्री ए० बिश्वास "इण्डियन एज्यूकेशनल डाक्यूमेंट्स सिंस इन्डीपेन्डेंस, कमिटीज, कमीशन्स, एण्ड कन्फरेन्सिज" को अद्यतन बनाने के लिए।	2,271.05

परिशिष्ट-8

प्रकाशनों की बिक्री तथा वितरण

I. अप्रैल 1984 से मार्च 1985 तक कुल बिक्री—54,452.72

II. भा० सा० वि० अ० प० पत्रिकाओं तथा प्रकाशनों का वितरण।

1. भा० सा० वि० अ० प० अनुसंधान सार त्रैमासिक खण्ड 11, अंक 1-4 (जन०-दिस० 1982) और खण्ड 12, अंक 1-2 (जन०-जून० 1983)।
2. भारतीय शोध निबन्ध सार खण्ड 10, अंक 3-4 (जुलाई-दिसम्बर 1981)।
3. भा० सा० वि० अ० प० सार और समीक्षा पत्रिका : समाजशास्त्र, खण्ड 12, अंक 2 (जुलाई-दिसम्बर 1983) तथा खण्ड 13, अंक। (जनवरी-जून 1984)।
4. भा० सा० वि० अ० प० सार और समीक्षा पत्रिका: राजनीतिक विज्ञान, खण्ड 10, अंक 2 (जुलाई-दिसम्बर 1984)।
5. भा० सा० वि०अ०प० सार और समीक्षा पत्रिका : अर्थशास्त्र खण्ड 12, अंक 1-4 (जन०-दिस०-1982)।
6. भा० सा० वि० अ० प० सार और समीक्षा पत्रिका: : राजनीतिक विज्ञान, खण्ड 11, अंक 1 (जनवरी-जून 1984)।

III. भा० सा० वि० अ० प० अनुदान वाले प्रकाशन/पत्रिकाओं का वितरण।

1. लोक प्रशासन में प्रलेखन, खण्ड-12, अंक 2 और 3 (अप्रैल-सितम्बर 1984)।
2. पर्यावरण संरक्षण तथा अन्तर्राष्ट्रीय कानून—एस० भट्ट द्वारा।
3. भारतीय प्रेस अनुक्रमणिका खण्ड 16, अंक 3-4 से 11-12 और खण्ड 17, अंक 1-2 से 5-6।

परिशिष्ट-9

प्रकाशन अनुदान

अनुसंधान रिपोर्ट

1. अतुल शर्मा, "केन्द्रीय सरकार के खर्च का आर्थिक प्रभाव"।
2. पी० के० बोस, "बंगाल के जनजातीय क्षेत्रों में जनजातियों के बीच सामाजिक वर्गीकरण"।
3. एस० के० राय, "कृषि का गहनीकरण: उ० प्र० के मैदानों में एक अध्ययन"।
4. एस० भट्ट, "पारिस्थितिक विश्व सोसायटी के लिए पर्यावरणात्मक कानून"।
5. आर० चटर्जी, "सी० आर० दास तथा भारतीय श्रम आन्दोलन, 1920-24।"
6. एच० एस० वर्मा, "बम्बई, न्यू बम्बई और महानगर क्षेत्र विकास प्रक्रिया तथा आयोजना पाठ।"
7. रमाकान्त अग्निहोत्री, "अंग्रेजी में कालों के प्रयोग में भिन्नता : एक सामाजिक-भाषाई परिप्रेक्ष्य।"
8. ए० प्रसाद, "पारम्परिक तथा औपचारिक सहयोग : कार्यकरण प्रभाव तथा समस्याएं।"
9. (श्रीमती) अंजना पी० देसाई, "अहमदाबाद के प्रमुख नगर में पर्यावरणात्मक बोध के कुछ पहलू।"
10. एल० एम० भोले, "भारत में मुद्रा नियन्त्रण तकनीकों में वर्ग के संदर्भ में निवेश तथा अन्य खर्च के प्रति प्रतिक्रिया।"
11. वी० के० बावा, "महानगर शासन का संगठन और वित्त व्यवस्था।"
12. ए० सी० मिनोचा, "म०प्र० में छोटे तथा मध्यम दर्जे के नगरों का एक अध्ययन।"

13. टी०वी०एस० राममोहन राव, "रेलवे कडी में भाड़ा सेवा की असमान आपूर्ति।"

14. जॉन कुरियन, "केरल मत्स्य अर्थ-व्यवस्था में विपणन की भूमिका।"

15. इमरान कदीर, "शहडोल जिले (म० प्र०) में सामुदायिक स्वास्थ्य कामगार योजना।"

16. इंदिरा हिरवे, "निर्धनता उन्मूलता के लिए कार्यक्रम—लक्ष्य वर्ग अनुमोदन की एक समालोचना।"

डाक्टोरल शोध निबन्ध

1. जौहरी लाल, 'व्यापार उद्यमों में नेतृत्व पद्धतियां तथा शक्ति विभाजन।"
2. रामनिवास साहू, "छत्तीसगढ की मुण्डा भाषाओं का सर्वेक्षण।"
3. बिजेन्द्र के० शर्मा, "भारतीय राज्यों में राजनीतिक अस्थिरता।"
4. शिव बहादुर सिंह, "नेपाल के राजनीतिक विकास पर भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रभाव।"
5. जी० सी० श्रीवास्तव, "रांची में कृषि में पूंजी निर्माण तथा श्रम उत्पादकता पर शहरी विकास का प्रभाव।"
6. श्यामनाथ, "राजस्थान में महत्त्वपूर्ण केन्द्रीय तथा राज्य करों का भार।"
7. एम० एम० जैन, "राजस्थान में डेरी उप-क्षेत्र की विकास प्रणाली।"
8. आर० एस० बक्शी, "विकास की दिशा में राजनीतिक सामंतवादी तथा अफसरों की अन्योन्यक्रिया का अध्ययन।"
9. बी० जी० जे० तिलक, "शिक्षा के निष्पादन में असमानता।"
10. एस० सिन्हा, "क्षेत्रीय संरचना प्रक्रियाएं तथा विकास की पद्धतियां।"
11. धर्मवीर, "नेपाल में कॉलेज छात्रों की सामाजिक पृष्ठभूमि।"
12. सी० एम० पालीवाल, "मध्यप्रदेश में आदिवासियों का आर्थिक विकास।"
13. आर० पी० सिंह, "वाराणसी में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस।"

14. एफ० एम० साहू, "प्रभावी संवेदनशीलता तथा बोध पद्धतियां।"
15. जितेन्द्र कौर, "भारत में निर्णय लेने में दबावसमूहों की भूमिका।"
16. मुनीर आलम, "व्यावसायिक संरचना के पूर्वानुमान में कुछ समस्याएं —एक आनुभाविक अध्ययन।"
17. एस० एच० अंसारी, 'गाजीपुर में सगोत्र बस्ती का विकास तथा स्थानिक संगठन।"
18. जी० अनुराधा, "ट्राईसेम के अधीन उद्यम विकास।"
19. डी० पी० पाल, "भारतीय अर्थ-व्यवस्था में संरचनात्मक अन्तर-निर्भरता : एक अन्तर-अस्थाई अध्ययन।"
20. के० डी० शर्मा, "रोहतक : शहरी भूगोल का एक अध्ययन।"

परिशिष्ट-10

1984-85 के दौरान प्राप्त आंकड़ा सेटों की सूची

1. अशोक मुखोपाध्याय, "पं० बंगाल में नगरपालिका चुनाव और शहरी नेतृत्व ।"
2. के०एम० डेका, "असम में छठे आम चुनावों (विधान सभा) का एक अध्ययन ।"
3. वाई, उदय चन्दर, "तेलंगाना में जनजातीय लोगों की राजनीतिक सहभागिता ।"
4. आर० ई० बेंजामिन, "मदुरई जिले के चुने हुए गांवों में उर्वरता विनियम सम्बन्धी मनःसामाजिक कारणों तथा परिवार नियोजन विधियों पर उनके प्रभाव का अध्ययन ।"
5. दिनेश मेहता, "शहरी तथा ग्रामीण उत्प्रवास के आचरणात्मक पहलू ।"
9. तारेस मित्रा, "पं० बंगाल में समाज सेवा पर सार्वजनिक खर्च के वितरण का सर्वेक्षण ।"
7. पी० रामलिंगस्वामी (श्रीमती), "चिकित्सा शिक्षा के खर्च का अनुमान ।"
8. भारतीय प्रशासनिक स्टॉफ कॉलेज, हैदराबाद, "तेलंगाना क्षेत्र में प्राथमिक स्कूलों में स्थिरता तथा बीच में ही पढ़ाई छोड़ देने वाले छात्र, 1972-73 ।"

परिशिष्ट-11

1984-85 के दौरान व्यवस्थित आंकड़ा सेटों की सूची

1. बी० डी० देसाई, "दक्षिण गुजरात के दुग्ध उत्पादकों का एक सामाजार्थिक अध्ययन।"
2. जी० एस० भल्ला, "संरचनात्मक परिवर्तन, आय वितरण : पंजाब में हरी क्रांति के प्रभाव का अध्ययन।"
3. ए० के० मुखोपाध्याय, "प० बंगाल में नगरपालिका चुनाव और शहरी नेतृत्व।"
4. के० एम० डेका, "असम में छठे आम चुनावों (विधान सभा) का एक अध्ययन।"
5. आर० ई० बेंजामिन, "मदुरई जिले के चुने हुए गांवों में उर्वरता विनियमन सम्बन्धी मनःसामाजिक कारणों तथा परिवार नियोजन विधियों पर उनके प्रभाव का अध्ययन।"
6. अंजना देसाई, "अहमदाबाद के मुख्य नगर में पर्यावरणात्मक बोध के कुछ पहलू।"
7. डी०एन० पाठक, "गुजरात में राजनीतिक आचरण-1971।"
8. आर० के० अग्रवाल, "विवाह के विशेष सन्दर्भ में एक समान सिविल संहिता के प्रति सामाजिक वर्गों की अभिवृत्तियां।"
9. सी०पी०सिंह, "भारत में संसदीय चुनावों का स्थानिक विश्लेषण।"
10. के० वी० रमन, "विशाखापटनम में अव्यवस्थित क्षेत्रों की संरचना और कार्यकरण।"
11. एच० आर० चतुर्वेदी, "गुजरात और उड़ीसा में विकास में नागरिक सहभागिता।"
12. जी० डी० ठाकोर, "कृषकों की कृषि सम्बन्धी समस्याओं का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।"

परिशिष्ट-12

आंकड़ा संसाधन में मार्गदर्शी तथा परामर्श सेवाएं उन अध्येताओं की सूची जिन्होंने 1984-85 के दौरान इन सुविधाओं का लाभ उठाया

सामाजिक अध्ययन केन्द्र, सूरत

1. पी०एु० कोली, अर्थशास्त्र विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, "कोल्हापुर जिले में दुग्ध सहकारिताओं का विकास और आर्थिक महत्त्व।"

विकासशील सोसायटी अध्ययन केन्द्र, दिल्ली

2. अर्चना नौरिया, राजनीतिक विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, "विकास, निष्पादन और बोध : पिछड़े अल्पसंख्यक समुदाय का एक मामला अध्ययन।"
3. एन० कानन, समाजशास्त्र विभाग, अन्नामलाई विश्वविद्यालय, अन्नामलाई, "औद्योगिकरण के प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।"
4. एस० दास, समाजशास्त्र विभाग, अन्नामलाई विश्वविद्यालय, अन्नामलाई, "सापेक्ष वंचना का एक तुलनात्मक विश्लेषण।"
5. के० आर० शर्मा, क्षेत्रीय शिक्षा कॉलेज, भोपाल, "जनजातीय छात्रों की शैक्षिक जीवन पद्धति का एक अध्ययन।"

गोखले राजनीति तथा अर्थशास्त्र संस्थान, पुणे

6. दासवाणी (श्रीमती), भारतीय शिक्षा संस्थान, पुणे।
7. आर० जी० जोशी, कोंकण कृषि विद्यापीठ, दपोली, जि० रत्नागिरि।

टाटा समाज विज्ञान संस्थान, बम्बई

8. एन० डी० वासमात्कर, नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर, "चन्द्रपुर जिले में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों पर कल्याण

प्रशासन तथा योजनाओं का प्रभाव।"

9. आर० वाई० माहोर, नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर, 'प्राथमिक शिक्षा का अर्थशास्त्र : नागपुर जिले का एक मामला अध्ययन।"
10. डी० के० लालदास, समाज कार्य स्कूल, हैदराबाद, "आंध्र प्रदेश में एकसमान पारिश्रमिक अधिनियम, 1976 के कार्यान्वयन का एक अध्ययन।"
11. बी० के० पटनायक, पूना विश्वविद्यालय, पुणे, "वैज्ञानिक प्रवृत्ति : स्नातकोत्तर छात्रों के बीच एक आनुभाविक अध्ययन।"
12. वीणा एस० एस० "जैविकीय और प्राकृतिक विज्ञानों में उच्चतम और निम्मतम उपलब्धिकर्ताओं का वैयक्तिक और उपलब्धि प्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन" नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर।"
13. एल० यू० कुलकर्णी, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।
14. मदस सी० पाल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "महानगर दिल्ली में दहेज प्रथा का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।"
15. पी० बी० कुलकर्णी, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।
16. दीपा दासिन (श्रीमती), नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर।

आंकड़ा अभिलेखागार, भा० सा० वि० अ० प० नई दिल्ली

17. जोया हसन (श्रीमती), राजनीतिक अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "अलीगढ़ जिले में सामाजिक संरचना और राजनीतिक प्रक्रिया, 1950-80।"
18. नीलम वर्मा (कु०) मनोविज्ञान विभाग, एस० एम० कॉलेज, भागलपुर, "अन्तर-वैयक्तिक सम्बन्ध तथा प्रबन्ध प्रणालियां (चरण-II)।"
19. अली बाकेर, विकासशील सोसायटी अध्ययन केन्द्र, दिल्ली, "बस्ती निजामुद्दीन का पारिवारिक सर्वेक्षण।"
20. सुषमा दुबे, शिक्षा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, "रचनात्मक विचारधारा के विकास पर शैक्षिक प्रभावों का एक पारिस्थितिक अध्ययन।"
21. एस० जे० मसक्युत्ता, जेसुदूत एजुकेशन फाउण्डेशन, दिल्ली।
22. के० के० सिद्ध, भा० सा० वि० अ० प० नई दिल्ली, "महानगर

"दिल्ली" में दहेज प्रथा का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।"

23. जगवीर सिंह यादव, अर्थशास्त्र विभाग, एम० डी० विश्वविद्यालय, रोहतक, 'प्रशिक्षण तथा भ्रमण पद्धति के अन्तर्गत हरियाणा में कृषि कृषिविस्तार का मूल्यांकन : एक विश्व बैंक परियोजना।"

24. कंचन सिंह, भूगोल विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ, "एक पिछड़े क्षेत्र में क्षेत्रीय विकास तथा आयोजना : बुन्देलखण्ड, जि० बांदा का एक मामला अध्ययन।"

25. गति कृष्ण कार, राजनीतिक विज्ञान विभाग, एम०डी० विश्वविद्यालय, रोहतक, "हरियाणा कामगार और हरियाणा में राजनीति : औद्योगिक श्रमिकों में राजनीतिक अनुस्थापन मतदान अधिमानताओं का अध्ययन।"

26. सुदेश हेमराज (श्रीमती), समाज कार्य विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली, "तपैदिक रोगियों के मनः सामाजिक पहलुओं का एक अध्ययन।"

27. कमर हसन, "मनोविज्ञान विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, "मुस्लिम युवकों की अभिवृत्तियों, आकांक्षाओं और आशंकाओं का एक अध्ययन।"

परिशिष्ट-13

आंकड़ा संग्रह, सेमिनार/सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारतीय अध्येताओं द्वारा विदेशों का दौरा तथा अधिक ठहरना

अध्येता का नाम	सम्बद्धन संस्था	उस देश का नाम जहां का दौरा किया	विषय/सम्मेलन/सेमिनार	अवधि
1	2	3	4	5
1. प्रो० अनिल के० गुप्ता	भारतीय प्रबन्ध संस्थान, अहमदाबाद	ग्रीस	सी आई आर आई ई सी का पन्द्रहवां अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन	16-18 अप्रैल 1984
2. प्रो० अपर्णा बोस	इतिहास विभाग, दिल्ली विश्व-विद्यालय, दिल्ली	नीदरलैंडस	मानव संसाधनों का अंन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन	17-21 अप्रैल 1984
3. डॉ० एन० सान्याल	समाज विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कलकत्ता	कनाडा	अन्तर्राष्ट्रीय बंगाल अध्ययन सम्मेलन	1-3 जून 1984
4. डॉ० (श्रीमती) सुधाराव	राष्ट्रीय शैक्षिक आयोजना तथा प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली	आस्ट्रेलिया	शैक्षिक मूल्यांकन पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन	11-15 जून 1984
5. प्रो० गोपालकृष्णन	कृषि उत्पादन आयोग, आन्ध्र प्रदेश	अमरीका	"विश्वविद्यालय शिक्षण सुधारने" पर दसवां अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन	4-7 जुलाई 1984
6. डॉ० पी० एस० घोष	भा० सा० वि० अ० प०, नई दिल्ली	इटली	दसवां आई एस ओ डी ए आर सी ओ सम्मेलन	17-27 जुलाई 1984

1	2	3	4	5
7. डॉ० पी० राधा	योजना आयोग, नई दिल्ली	नार्वे	अन्तर्राष्ट्रीय रीति गतिशीलता सम्मेलन	1-5 अगस्त 1984
8. श्रीमती जी० जे० उन्नीथन	निदेशक, अध्ययन सलाहकार ब्यूरो, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	डेनमार्क	परामर्श के उन्नयन के लिए अन्तर्राष्ट्रीय गोलमेज सम्मेलन	5-9 अगस्त 1984
9. डॉ० आर० के० अग्निहोत्री	रीडर, भाषा विभाग, दिल्ली विश्व-विद्यालय, दिल्ली	बेल्जियम	प्रयुक्त भाषाविदों की 7वीं विश्व कांग्रेस	5-10 अगस्त 1984
10. डॉ० एन० एस० एस० नारायण	भारतीय सांख्यिकी संस्थान, बंगलौर	अमरीका	आई एफ डी आर एस सम्मेलन	6-10 अगस्त 1984
11. श्री एम० के० जैन	मुख्य पुस्तकाध्यक्ष एवं प्रलेखन अधिकारी, योजना आयोग, नई दिल्ली	केनिया	पुस्तकालय एसोसिएशनों तथा संस्थानों के अन्तर्राष्ट्रीय संघ का 50वां महासम्मेलन	19-25 अगस्त 1984
12. प्रो० सच्चिदानन्द सहाय	दक्षिण एशियाई अध्ययन केन्द्र, गया	थाईलैण्ड	"थाई अध्ययनों" पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन	22-24 अगस्त 1984

1	2	3	4	5
13. कुमारी मुमताज खातून	अनुसंधान अध्येता, इतिहास विभाग, गोहाटी विश्वविद्यालय, गोहाटी	थाईलैण्ड	"थाई अध्ययनों" पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन	22-24 अगस्त 1984
14. प्रो० एन० एस० आयंगर	भारतीय सांख्यिकी संस्थान, बंगलौर	आस्ट्रेलिया	अन्तर्राष्ट्रीय इकानामिट्रिक सोसायटी की आस्ट्रेलियाई बैठक	23-25 अगस्त 1984
15. डॉ० (श्रीमती) एस० सिन्हा	रीडर, भूगोल, शिक्षा और मानविकी विभाग, रा० श० अ० प्र० प०, नई दिल्ली	फ्रांस	25वीं अन्तर्राष्ट्रीय भौगोलिक कांग्रेस	27-31 अगस्त 1984
16. प्रो० वी० के० श्रीवास्तव	रीडर, भूगोल, गोरखपुर विश्वविद्यालय	"	"	"
17. डॉ० एस० सुबैय्या	प्राध्यापक, भूगोल, मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास	"	"	"
18. डॉ० एस० के० पाल	रीडर, भूगोल, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	"	"	"
19. डॉ० आर० पी० कौशिक	सह-प्रोफेसर, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन स्कूल जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	त्रिनीडाड	केरिबियन में ईस्ट इण्डियनों पर तीसरा सम्मेलन	28 अगस्त 5 सित० 1984

1	2	3	4	5
20. श्री जोगिन्दर सहाय	रीडर, समाजशास्त्र विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी	फिनलैण्ड	पूंजीवादी और समाजवादी संगठन के संबंध में तीसरी कार्यशाला	29-31 अगस्त 1984
21. प्रो० जी० सी० गुप्ता	मनोविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	मेक्सिको	अन्तर्राष्ट्रीय परस्पर सांस्कृतिक मनोविज्ञान एसोसिएशन की सातवीं कांग्रेस	29 अगस्त 1 सित०1984
22. डॉ० (श्रीमती) शालिनी	रीडर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	"	"	"
23. डॉ० ई० एस० के० घोष	रीडर, मनोविज्ञान इलाहाबाद, विश्वविद्यालय, इलाहाबाद	"	परस्पर सांस्कृतिक मनोविज्ञान एसोसिएशन की सातवीं कांग्रेस	29 अगस्त-1 सित० 1984
24. प्रो० रामाधार सिंह	भारतीय प्रबन्ध संस्थान, अहमदाबाद	"	मनोविज्ञान की 23वीं अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस	2-7 सितम्बर 1984
25. प्रो० एम० ए० मुतालिब	निदेशक, नगरीय पर्यावरणात्मक क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्र, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद	प० जर्मनी	गृह तथा आयोजना विश्व कांग्रेस का 37वां अन्तर्राष्ट्रीयसंघ	10-14 सित० 1984

1	2	3	4	5
26. प्रो० पी० एस० मंगला	डीन, कला संकाय, दिल्ली विश्व-विद्यालय, दिल्ली	नीदरलैंड्स	बदलते हुए विश्व में बदलते हुए विश्व विकास में सूचना के उपयोग पर कार्यशाला और एफ आई डी प्रयोजित कांग्रेस	17-27 सित० 1984
आंकड़ा संग्रह				
1. प्रो० एम० वी० पायली	महानिदेशक, उद्यमशीलता अध्ययन केन्द्र, कोचीन	कनाडा अमरीका	भारत में वंशानुगत तथा भाषाई अल्पसंख्यकों के हितों के प्रोत्साहन के लिए विधायी तथा प्रशासनिक उपाय	अक्तूबर 1984-16 दिन के लिए
2. श्री के० के० विरमानी	रीडर, राजनीतिक विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	जाम्बिया	जाम्बिया में राष्ट्रवादी आंदोलन	मई से अगस्त 1984—चार महीनों के लिए
3. श्री रविन्द्र आर० पांडे	प्राध्यापक, दिल्ली अर्थशास्त्र स्कूल, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	यू० के०	आयोजना का सिद्धान्त	मई-जून 1984—दो महीने के लिए

1	2	3	4	5
4. श्री पी० के० मेहता	एस० जी० टी० बी० खालसा कॉलेज, नई दिल्ली	बैंगकाक	विकासशील देशों में विदेशी पूंजी की कारगरता	24 अगस्त 1984 से 24 दिन के लिए
5. श्री के० कार्की हुसैन	जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	चीन	चीन-भारत अन्योन्यक्रिया-दक्षिण तथा दक्षिण पूर्व एशिया—आठवें दशक में	15 अगस्त से 15 सितम्बर 1984
6. प्रो० ए० आर० देसाई	जय कुटीर, बम्बई	यू० के०	भारत में राष्ट्रीय एकता तथा धर्म	सितम्बर से अक्तूबर 1984—छ: सप्ताह के लिए
अधिक प्रवास				
1. प्रो० सुरेन्द्र चोपड़ा	राजनीतिक विज्ञान विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर	यू० के०	विश्व इस्लाम धर्म के सन्दर्भ में पाकिस्तान तथा मुस्लिम विश्व	अगस्त 1984—तीन सप्ताह के लिए

1	2	3	4	5
2. प्रो० सतीश चन्द्र	ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र, जवाहर-लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली	यू० के०	अध्ययन और विकास : विकास में परिवर्तन	मई से जून 1984—30 दिन के लिए
3. प्रो० जसबीर सिंह	भूगोल विभाग, कुरुक्षेत्र विश्व-विद्यालय, कुरुक्षेत्र	फ्रांस	भारत का आर्थिक भूगोल	सितम्बर 1984—10 दिन के लिए
4. प्रो० रशीदुद्दीन	राजनीतिक अध्ययन केन्द्र, जवाहर-लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली	स्विटजरलैंड	नि:शस्त्रीकरण तथा विकास	मई 1984—दो सप्ताह के लिए

परिशिष्ट-14

वर्ष 1984-85 के दौरान अनुसंधान संस्थानों को अनुदानों का विवरण

(लाख रुपये)

क्रम सं०	संस्था का नाम	योजनेतर आवर्ती आवंटन	योजनेतर आवर्ती वितरण	योजनागत आवर्ती आवंटन	योजनागत आवर्ती वितरण	योजनेतर आवर्ती आवंटन	योजनेतर आवर्ती संवितरण	जोड़ आवंटन	जोड़ संवितरण
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	आई एस ई सी, बंगलौर	10.64	10.44	0.35	0.22	1.85	—	12.64	10.66
2.	सी डी एस, त्रिवेन्द्रम	8.75	8.75	—	—	5.00	6.85	13.75	15.60
3.	सी एस एस एस, कलकत्ता	9.50	9.50	—	—	—	—	9.50	9.50
4.	जी आई एस, वाराणसी	6.23	6.23	—	—	3.40	0.48	6.63	6.63
5.	ए एन एस आई एस एस, पटना	6.00	6.00	—	—	2.63	2.50	8.63	8.50
6.	आई पी ई, हैदराबाद	3.50	3.50	—	—	4.50	6.50	8.00	10.00
7.	आई ई जी, दिल्ली	10.44	10.44	0.50	0.50	4.00	3.90	14.94	14.84

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
8.	सी एस एस, सूरत	3.50	3.50	0.50	0.50	4.00	1.08	8.00	5.08
9.	सी एस डी एस, दिल्ली	8.89	8.89	0.62	0.62	---	—	9.51	9.51
10.	एम आई डी एस, मद्रास	4.50	4.50	1.00	1.00	2.00	2.45	7.50	7.95
11.	आई आई ई, पुणे	2.70	2.70	0.94	0.50	1.00	0.95	4.64	4.15
12.	जी आई डी एस, लखनऊ	5.00	5.00	0.75	0.75	12.00	12.00	17.75	17.75
13.	सी पी आर, दिल्ली	3.75	3.75	—	—	2.95	2.95	6.70	6.70
14.	एस पी आई ई एण्ड एस आर, अहमदाबाद	6.80	6.80	—	—	1.00	1.70	7.80	8.50
15.	जी बी पी एस एस आई, इलाहाबाद	—	—	5.35	5.35	—	—	5.35	5.35
16.	सी एस डी, हैदराबाद	—	—	2.40	2.35	—	—	2.40	2.35
17.	आई डी एस, जयपुर	—	—	2.75	2.75	—	0.72	2.75	3.47
18.	सी आर ई एस एस आई डी ए, कलकत्ता	—	—	2.00	2.00	—	—	2.00	2.00
19.	सी आर आर आई डी, चण्डीगढ़	—	—	4.00	4.00	5.00	5.00	9.00	9.00
20.	सी डब्ल्यू डी एस, दिल्ली	—	—	2.00	2.00	—	—	2.00	2.00
	कुल जोड़	90.00	90.00	23.16	22.54	46.33	47.00	159.49	159.54

सर्वेक्षण अनुसंधान प्रशिक्षण केन्द्र, दिल्ली =3.60 लाख रुपये

ए० एन० सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान, पटना

अनुसंधान

वर्ष के दौरान निम्नलिखित अनुसंधान परियोजनाएं पूरी हो गईं : (1) प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन कोष्ठ का पांचवां मूल्यांकन, (2) मुजफ्फरपुर तथा इटावा कृषि बाजारों का अन्तिम मूल्यांकन, (3) क्षेत्र विकास परियोजना में सामाजिक निवेश, (4) सरकारी कार्यक्रम के माध्यम से विकास, (5) बिहार ग्रामीण सड़कों का मूल्यांकन, (6) संघर्ष और सहयोग की गतिशीलता ।

अठारह परियोजनाएं चल रही थीं : (1) दक्षिण बिहार कृषि की राजनीतिक अर्थव्यवस्था, (2) बिहार तथा उड़ीसा के सूखा-प्रधान क्षेत्रों का बैंच-मार्क अध्ययन, (3) सामुदायिक शिक्षा तथा सहभागिता में विकास कार्यकलाप, (4) उथले ट्यूबवेल और गंगा के मैदानों में ग्रामीण विकास, (5) बिहार में रोजगार तथा निर्धनता की गतिशीलता, (6) बिहार तथा उड़ीसा के सूखा-प्रधान क्षेत्रों में सामाजार्थिक स्थितियों का बैंच-मार्क अध्ययन, (7) बिहार में रोजगार तथा निर्धनता की गतिशीलता, (8) उथले ट्यूबवेल और सरकारी कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण विकास, (9) बिहार में आन्तरिक उत्प्रवास, (10) लघु उद्योग : उनकी खुशहाली तथा रुग्णता को प्रभावित करने वाले कारण, (11) कृषि संरचना, कृषक गतिशीलता और सामाजिक परिवर्तन, (12) दक्षिण बिहार की राजनीतिक अर्थ-व्यवस्था, (13) बच्चों में जाति जागरूकता, (14) क्षेत्र अध्ययन ग्रन्थसूची, (15) कार्य मूल्य के सामाजिक-प्रौद्योगिकीय निर्धारक, (16) बाल पालन प्रथाएं, (17) बिहार में नक्सलवादी गतिविधियां, और (18) बिहार ग्रामीण सड़कों का मूल्यांकन ।

वर्ष के दौरान संस्थान के निम्नलिखित तीन सैल कार्यरत रहे : (1) प्रौढ़ शिक्षा, (2) हरिजन सैल, (3) बिहार कृषि बाजारों का मूल्यांकन ।

सेमिनार तथा सम्मेलन

अनेक विख्यात विद्वानों ने संस्थान का दौरा किया और सेमिनार आयोजित किए तथा व्याख्यान दिए । उनमें निम्नलिखित सम्मिलित थे : (1) प्रोफेसर होवर्ड बारिम गार्लेट, कैनसास विश्वविद्यालय, लारेंस, फुल ब्राइट प्रोफेसर, जेवियर औद्योगिक सम्बन्ध संस्थान, जमशेदपुर, (i) "भारत में प्रबन्ध विकास अध्ययन",

(ii) "प्रबन्ध विकास कार्यक्रम का प्रभाव" (2) प्रोफेसर रामाधार सिन्हा, भारतीय प्रबन्ध संस्थान, अहमदाबाद, "सामाजिक चेतनता में आरोप", (3) श्रीमती शक्ति अहमद, वरिष्ठ फैलो, राष्ट्रीय शैक्षिक आयोजना तथा प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली, "राष्ट्रीय शिक्षक आयोग का काम और शिक्षकों की स्थिति का सर्वेक्षण", (4) प्रो० सुरिन्दर सूरी, भूतपूर्व प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, "पंजाब संकट", (5) प्रोफेसर टी० के० ओम्मेन, अध्यक्ष, सामाजिक विधि-अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "भारतीय सन्दर्भ में समाज शास्त्र तथा विचारधारा", (6) प्रोफेसर एस० आर० महेश्वरी, प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान, भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली, "भारत में ग्राम विकास प्रशासन", (7) श्री केनेथ सी० वीमेल, संयुक्त राज्य सूचना सेवा, कलकत्ता, "अमरीकी चुनावों की स्मृतियां", और (8) प्रोफेसर अल्बोर्ट बी० चेरन्स, सामाजिक विज्ञान विभाग, लौबोरो विश्वविद्यालय, यू० के० "संगठन तथा समाज पर नई प्रौद्योगिकी का प्रभाव", "कार्यशील जीवन की कोटि"।

निर्धनता तथा विकास पर एक राष्ट्रीय सेमिनार 16 से 18 अप्रैल 1984 तक आयोजित किया गया। संस्थान के संकाय सदस्यों द्वारा वर्ष के दौरान आवधिक सेमिनार आयोजित किए गए।

संकाय

डॉ० एस० एन० झा ने नवम्बर 1984 में संस्थान में राजनीतिक विज्ञान के प्रोफेसर का पद सम्भाल लिया। मनोविज्ञान में प्राध्यापक श्री आरिफ हसन, जो सुलभ प्रयुक्त अनुसंधान संस्थान के सामाजिक अनुसंधान खण्ड में चले गए थे, अपने पद पर वापस आ गए। समाज शास्त्र के प्राध्यापक डॉ० वी० बी० मन्डल और डॉ० रमेश प्रसाद सिन्हा को योग्यता पदोन्नति योजना के अन्तर्गत समाज-शास्त्र में रीडर के पद पर पदोन्नत कर दिया गया है।

प्रोफेसर डी० सिन्हा, निदेशक को, अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस, मेक्सिको के दौरान ग्रामीण बस्तियों में मनोविज्ञान के सम्बन्ध में वार्ता देने के लिए एक अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने अगस्त 1984 में मेक्सिको में हुए मनोविज्ञान सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भी भाग लिया।

प्रोफेसर सच्चिदानन्द ने, "भारत में जाति, वर्ग और पद्धतियों पर सम्मेलन' में भाग लेने के लिए फिलाडेलफिया का दौरा किया। वापस लौटते हुए उन्होंने कोरनेल विश्वविद्यालय, कोरनेल, प्राच्य तथा अफ्रीकी अध्ययन स्कूल, लन्दन, ब्राडफोर्ड विश्वविद्यालय में अन्तर-सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र आदि जैसी कुछ अन्य संस्थाओं का दौरा किया।

प्रोफेसर हरीशंकर प्रसाद प्रधान ने "बिहार में निर्धनता तथा रोजगार" सम्बन्धी परियोजना के सम्बन्ध में अप्रैल 1984 में अपने अनुसंधान दल के तीन सदस्यों के साथ जेनेवा का दौरा किया। उन्होंने जून 1984 में ससेक्स विश्वविद्यालय का भी दौरा किया और व्याख्यान दिया।

"कार्य मूल्य" सम्बन्धी अपनी भा० सा० वि० अ० प० परियोजना के सम्बन्ध में प्रोफेसर जे० बी० पी० सिन्हा, सात सप्ताह के लिए (जुलाई-अगस्त 1984) जापान गए। उन्होंने, (क) परस्पर-सांस्कृतिक मनोविज्ञान के लिए अन्तर्राष्ट्रीय एसोसिएशन, (ख) सितम्बर 1984 में मेक्सिको में मनोविज्ञान सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस, (ग) अगस्त 1984 में मेक्सिको में मनोविज्ञान सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस से सम्बन्धित संगोष्ठी की भी अध्यक्षता की। उन्हें, दर्शन तथा मानव विज्ञान प्रभाग, यूनेस्को, पेरिस से एक करार भी प्राप्त हुआ और उन्होंने "आयोजना का सामाजिक मनोविज्ञान : एक भारतीय परिप्रेक्ष्य" पर एक विनिबन्ध भी तैयार किया था।

पाठ्यक्रम

संस्थान ने "अर्थशास्त्र में मात्रात्मक विश्लेषण" पर एक पाठ्यक्रम आयोजित किया।

पी-एच० डी० कार्यक्रम

पी-एच० डी० के लिए 32 अध्येताओं का अनुसंधान कार्य चल रहा था और दो अध्येताओं ने अपने-अपने शोध निबन्ध प्रस्तुत कर दिए।

पुस्तकालय

इस समय पुस्तकालय में पुस्तकों के 22,414 खण्ड हैं। इनमें अधिकांश सन्दर्भ ग्रन्थ हैं। इसके अतिरिक्त, रिपोर्टों और जिल्दबंधी पत्रिकाओं के 13,502 खण्ड हैं। 1984-85 में, 1,040 पुस्तकें तथा पत्रिकाओं के 116 खण्ड व रिपोर्टें पुस्तकालय में शामिल की गईं।

निधियां

प्राप्तियां	(रुपये)	अदायगियां	(रुपये)
1	2	3	4
प्रारम्भ में बकाया	3,36,757.99	स्टाफ का वेतन और भत्ते	13,53,184.68
राज्य सरकार से अनुदान		(सामान्य निर्वाह् निधि सहित)	
(1) आवर्ती अनुदान	7,09,500.00	डाक्टोरल फैलो	41,330.16
(2) अनावर्ती अनुदान	1,86,703.00	यात्रा भत्ता	11,541.90
भा०सा०वि०अ०प० से अनुदान		पुस्तकालय	1,36, 149.72
		प्रकाशन	29,275.00
(1) आवर्ती अनुदान	5,27,000.00	कार तथा जीप का रख-रखाव	19,679.37
(2) अनावर्ती अनुदान	28,000.00	भवन का अनुरक्षण	39,613.49
जयन्ती वर्ष अनुदान	2,12,000.00		
संस्थान के अपने संसाधन	80,933.60	प्रतिलेखन का अनुरक्षण	3,447.46
		मोटर पम्प का अनुरक्षण	2,738.60
		बगीचे का अनुरक्षण	1,981.70
		अतिथि गृह का अनुरक्षण	259.19
		अनुसंधान	12,013.01
		फर्नीचर तथा उपस्कर	6,345.30
		त्योहार पेशगी	5,400.00
		लेखा-परीक्षा शुल्क	4,200.00
		पुस्तकालय भवन	52,934.46
		विद्युत उपकरण तथा सज्जा	16,787.67
		विज्ञापन	2,896.00
		वर्दी	4,891.50
		सामूहिक बीमा	5,039.20

1	2	3	4
		डाकखर्च तथा तार	6,632.55
		मुद्रण तथा लेखन-सामग्री	15,985.19
		टेलीफोन	17,197.00
		रजत जयन्ती वर्ष	50,581.83
		प्रबन्ध कार्यक्रम	52.50
		संगणक	10,895.34
		कानूनी खर्च	462.00
		आकस्मिक कर्मचारी	6,999.76
		विविध	6,424.28
		विकास तथा कल्याण कोष के लिए क्रेडिट	37,407.00
		जोड़	19,02,345.86
		अन्त में बकाया	1,78,548.73
कुल जोड़	20,80,894.59	कुल जोड़	20,80,894.59

विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम

प्रशिक्षण कार्यक्रम

केन्द्र के अकादमिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय का प्रयुक्त अर्थशास्त्र में एम०फिल पाठ्यक्रम तथा पी-एच०डी० कार्यक्रम शामिल हैं। वर्ष 1984-85 के लिए एम० फिल पाठ्यक्रम में, जो सितम्बर 1984 में प्रारम्भ हुआ, 12 छात्र दाखिल किए गए। पिछले बैचों के तीन छात्रों ने अपने शोध निबन्ध पूरे कर लिए।

इस समय केन्द्र में पी-एच० डी० डिग्री के लिए पंजीकृत छात्रों की संख्या 18 है—15 जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के अधीन और 3 केरल विश्व-विद्यालय के अधीन। इनमें से एक अध्येता श्री थामस आइज़ेक को उनके शोध निबंध "वर्ग संघर्ष तथा औद्योगिक संघर्ष और औद्योगिक संरचना : केरल में नारियल रेशा बुनाई उद्योग का अध्ययन, 1859:1980"(प्रोफेसर एन० कृष्णाजी के मार्ग-दर्शन में) के लिए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा डिग्री प्रदान की गई। तीन अध्येताओं ने अपने शोध निबन्ध प्रस्तुत कर दिए।

वर्ष 1983-84 के लिए केन्द्र के माध्यम से प्रदत्त तीन संस्थात्मक डाक्टो-रल फैलोशिप प्राप्तकर्ताओं ने फैलोशिप का कार्य सम्भाल लिया। भा० सा० वि० अ० प० द्वारा वर्ष 1984-85 के लिए केन्द्र के लिए तीन और डाक्टोरल फैलो-शिप निर्धारित की गई, जिनके लिए चयन कार्य पूरा हो गया है। लेकिन चूंकि उन्हें पी-एच० डी० के लिए पंजीकरण से पहले की एक आवश्यक शर्त, अर्थात् एम० फिल० पाठ्यक्रम का समापन पूरी करनी थी, इसलिए वे समय पर शामिल नहीं हो सके।

अनुसंधान कार्यक्रम

निम्नलिखित अध्ययन पूरे किए गए : (1) पी० जी० के० पाणिकर और सी० आर० सोमन "स्त्रियों और बच्चों की स्थिति का बैंचमार्क सर्वेक्षण— केरल के पांच चुने हुए जिलों का एक सामाजार्थिक सर्वेक्षण",(2) जान कुरियन: "केरल का मत्स्य अर्थ-व्यवस्था में मत्स्य विपणन की भूमिका", (3) के० नारायणन नायर, डी० नारायणन, "नारियल की जड़ का रोग : उत्पादन में हानि तथा उसकी गह-नता का एक विश्लेषण",—सी० पी० सी० आर० आई० नारियल विकास बोर्ड, कृषि विश्वविद्यालय और आर्थिक तथा सांख्यिकी निदेशालय के सहयोग से एक

सर्वेक्षण के सम्बन्ध में रिपोर्ट ।

निम्नलिखितों के सम्बन्ध में कार्य प्रगति पर था', (1) चिरंजीव सेन, सी० राममनोहर रेड्डी, नाटा डुबवुरी, मिहिर शाह और सवित पाधी, 'कृषि संरचना और परिवर्तन में क्षेत्रीय भिन्नताओं के सम्बन्ध में अध्ययन', (2) जी०एन० राव, के० नारायणन नायर, डी० नारायण, पी, शान्ता और पी० सिवनन्दन : 'केरल में नारियल विकास योजना का एक पूर्वव्यापी मूल्यांकन', (3) ए० वैद्यनाथन, चिरंजीव सेन, गीता सेन और पी० शिवनन्दन, 'दक्षिण भारतीय चाय उद्योग की विकासात्मक समस्याओं का अध्ययन', (4) जी० एन० राव और वाई० जॉन : 'रेलवे तथा वस्तु बाजार का विकास : कपास की खेती के विशेष सन्दर्भ में आन्ध्र प्रदेश के कुडाप्या जिले का एक मामला अध्ययन', (5) मृदुल इपेन, 'भारतीय कताई उद्योग के सम्बन्ध में एक अध्ययन', (6) चिरंजीव सेन, गीता सेन, पी० के०एम० थरकन और सुनील मणि, 'रबड़ उत्पाद उद्योगों का एक अध्ययन', (7) चन्दन मुखर्जी, डी० नारायण, मृदुल इपेन, अदिप्तो मुण्डले, अशोक कुमार नाग और राजराम दास गुप्त, 'स्वचालन सहायक उद्योगों का एक अध्ययन',(8)गीता सेन और लीला गुलाटी, 'भारत में स्त्री इलेक्ट्रानिक्स श्रमिकों का एक अध्ययन', (9) पी० आर० गोपीनाथन नायर, 'केरल से अरब जगत जाने वाले उत्प्रवासी श्रमिकों के सम्बन्ध में अध्ययन', (10) के० नारायणन नायर, डी० नारायण, 'तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले में सिंचाई प्रणाली और इसका कामकाज',(11) जी० एन० राव, 'कृषि पिछड़ापन और माचिस उद्योग में बाल श्रमिक—तमिलनाडु के शिवकासी क्षेत्र का एक मामला अध्ययन', (12) के० के० सुब्रमण्यन, पी० मोहनन पिल्लै (केल्ट्रान के डा० भाटकर के सहयोग से), 'विकास का अर्थशास्त्र और पूंजीगत सामान उद्योगों में माइक्रो इलेक्ट्रानिक्स का अनुप्रयोग', (13) पी0 एस० जार्ज और चन्दन मुखर्जी, 'केरल की चावल अर्थव्यवस्था पिछले 25 वर्षों के दौरान सत्रों के अनुसार विभिन्न जिलों में क्षेत्र, उत्पादन तथा उत्पादकता में प्रवृत्तियों का एक विश्लेषण', (14) जान कुरिअन, 'समुद्रीय संसाधन के नियमन तथा प्रबन्ध से सम्बन्धित प्रश्न', (15) रमन महादेवन, 'एक स्वदेशी पूंजीवादी श्रेणी के विकास के कुछ पहलू, 1914-84', (16) रमन महादेवन, 'जाति तथा निर्धनता के सम्बन्ध में चित्रण : जीवन के लिए निर्धन एज्हवा परिवार की संघर्ष गाथा', (17) चन्दन मुखर्जी, एन०एस० एस०, 'खपत खर्च वितरण अनुमानों की विश्वसनीयता', (18) चन्दन मुखर्जी (डा०ए० वैद्यनाथन के साथ संयुक्त रूप से), 'खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि तथा उतार-चढ़ाव राज्यवार विश्लेषण', (19) के० नारायणन नायर, 'प्रौद्योगिकी संस्थाएं तथा कृषि परिवर्तन : पश्चिमी यूरोप तथा भारत का एक तुलनात्मक अध्ययन', (20) के० नारायणन नायर, 'टु बीफ और नाट टु बीफ : विश्व खाद्यान्न उत्पादन के सम्बन्ध में पशुओं और पुरुषों के बीच

प्रतियोगिता का अध्ययन', (21) जी०एन० राव, 'आन्ध्र प्रदेश में सिचाई का। विकास, 'सी०ई०एस० एस०, हैदराबाद के समूह में सम्मिलित किया जाने वाला एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण', (22) के० एन० राज, 'भारत में कृषि संरचना और परिवर्तन, 'अन्तर-क्षेत्रीय तथा परस्पर-क्षेत्रीय भिन्नताओं का एक विश्लेषण लगभग 1750 से लगभग 1980 तक', (23) के० एन० राज, 'भारतीय विकास की ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था, 1950-85 एक प्रस्तावना', (24) एन० शान्ता, 'फर्मों का विभेदक निष्पादन—कुछ प्रारम्भिक परिणाम', (25) पी० शिवनन्दन स्लेटर, 'गांव का पुनः सर्वेक्षण-वडारंकुरिस्सी—दक्षिणी ऊंची भूमि—नीडमंगड तालुक में दो जनजातीय बस्तियों का एक सामाजार्थिक अध्ययन', (26) के० के० सुब्रमण्यन, 'केरल के औद्योगिक क्षेत्र के कुछ पहलू', (27) पी० के० माइकल थरकन, 'एक मध्यम वर्ग की खोज में : आधुनिक ट्रावणकोर सामाजिक इतिहास में जांच', (28) पी० के० माइकल थरकन, 'सेंट मेरी चर्च, पल्लीपुरम की गुम्बद-पत्थर खुदाई और आगे अनुसंधान की सम्भावनाएं (एम० आर० राघवन वारियर तथा राजन गुरुक्कल के साथ)', (29) टी०एन० कृष्णन, 'परिवार, उर्वरता ऊर्जा और अर्थ-व्यवस्था के सम्बन्ध में एक विनिबंध'।

पूरे हो गए अनुसंधान-पत्र

(1) मृदुल इपेन : भारतीय उद्योग में रोजगार की संरचना, 'जनगणना आंकड़ों से कुछ निष्कर्ष', (2) पी० एस० जार्ज : 'भारत में खाद्यान्नों के सार्वजनिक वितरण के कुछ पहलू—भारत में उपभोक्ता प्रधान खाद्य सहायता केरल में खाद्य सुरक्षा और खाद्यान्नों का सार्वजनिक वितरण', (3) आई० एस० गुलाटी और के० के० जार्ज : 'केन्द्र—राज्य संसाधन अन्तरण : 1951-84 सी० डी० एस० डब्ल्यू० पी० न० 202 का एक मूल्यांकन : राज्य विषयों में केन्द्रीय हस्तक्षेप : आर्थिक सेवाओं का एक विश्लेषण', (4) एम० कुन्हमन : 'केरल की जनजातीय अर्थ-व्यवस्था, 'एक अन्तर-क्षेत्रीय विश्लेषण', (5) जान कुरिअन : 'तकनीकी सहायता परियोजनाएं और सामाजार्थिक परिवर्तन : केरल के मत्स्य विकास अनुभव में नार्वेयाई हस्तक्षेप', 'केरल में समुद्री मत्स्य उत्पादन : विगत प्रवृत्तियां, भविष्य की सम्भावनाएं', 'तमिलनाडु तथा गुजरात के भारतीय राज्यों में नई नौका तकनीकें लागू करने के सामाजार्थिक प्रभाव की जांच', (6) रमन महादेवन : 'व्यापार और राजनीति : भारतीय पूंजीवादी वर्ग और राष्ट्रीय आन्दोलन के बीच विकासशील सम्बन्धों के बारे में कुछ विचार, 'ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय औद्योगीकरण : इस क्षेत्र में अनुसंधान की समस्याओं और कुछ प्रमुख प्रश्नों का सर्वेक्षण करने वाला एक नोट', (7) सुनील मणि : '1970 के दशक में भारतीय प्राकृतिक रबड़ बाजार के सूची समायोजन मामले के साथ एक कृषि कच्ची सामग्री के लिए मूल्य

उतार-चढ़ाव, 'भारतीय टायर उद्योग में सकेन्द्रण तथा बाजार शक्ति', (8) डी० नारायण : 'भारत में इलायची के मूल्यों और उत्पादन में उतार-चढ़ाव तथा प्रवृत्तियां, 'भूमि की भूख तथा वन काटना : केरल में इलायची वाली पहाड़ियों का एक मामल अध्ययन', 'नारियल और नारियल के तेल मूल्यों की अन्योन्यक्रिया : व्यापारिक हितों की भूमिका', (9) के० नारायणन नायर : 'भारत में श्वेत क्रांति : तथ्य और प्रश्न', 'भारत में पशु उपयोग', (10) पी० मोहनन पिल्ले : 'बहुराष्ट्रिक निगम तथा राष्ट्रीय प्रौद्योगिकीय क्षमता---बहुर्राष्ट्रिय तथा भारतीय औषध उद्योग 'केरल में सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम', (11) जी०एन० राव : 'आन्ध्र प्रदेश में तालाब से सिंचाई—एक मामला अध्ययन', (12) के० एन० राज : 'संयुक्त राज्य और विश्व अर्थ-व्यवस्था', सामाजिक अध्ययन केन्द्र में 27 और 28 अगस्त 1985 को दिया गया आर०सी० दत्त स्मारक व्याख्यान, '1952-53 से 1982-83 तक की अवधि के दौरान भारत में आर्थिक विकास के सम्बन्ध में कुछ टिप्पणियां', 'संदर्श में विकेन्द्रीकरण : इन्दिरा गांधी विकास आयोजना तथा केन्द्र राज्य सम्बन्ध, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा तथा वित्तीय प्रणाली और प्रश्न : एक अर्थवोर्म का विचार', (13) सी०राममनोहर रेड्डी : 'वरहाद में ग्रामीण श्रमिक बाजार : भारत में वर्षा आधारित कृषि में कृषि श्रमिकों का एक मामला अध्ययन', 'बरार में कपास तथा कृषि श्रमिक', (14) चिरंजीव सेन तथा गीता सेन : 'स्त्रियों का घरेलू काम और आर्थिक कार्यकलाप : राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के परिणाम (संयुक्त लेखन)—स्त्री अध्ययनों की समीक्षा', (15) चिरंजीव सेन : 'चीन में हाल ही के कृषि सुधारों से सम्बन्धित कुछ प्रश्न—कृषक भिन्नता में अन्तर क्षेत्रीय भिन्नताएं—1970 के दशक के प्रारम्भ में पंजाब और महाराष्ट्र की तुलना', (16) गीता सेन : 'स्त्रियों और खाद्य के प्रति बदलते हुए अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य—एक मूल्यांकन—विकास, संकट, और वैकल्पिक दृष्टिकोण—तीसरे विश्व की स्त्रियों के संदर्श', (17) एन० शान्ता : 'निजी नियमित क्षेत्र में पूंजी निर्माण में प्रवृत्तियां तथा कुछ सम्बद्ध प्रश्न —भारत में छोटी तथा बड़ी फर्मों का विकास—एक ऐतिहासिक विश्लेषण,' (18) पी० शिवनन्दन : 'भारत में इलायची के मूल्यों और उत्पादन में प्रवृत्तियां तथा उतार-चढ़ाव, 'कृषि श्रमिकों का पुनर्वास : केरल के एक गांव में सातत्य और परिवर्तन की प्रक्रिया', (19) के० के० सुब्रमण्यम : 'भारतीय पूंजीगत वस्तुओं में विकास, विशिष्टीकरण तथा प्रौद्योगिकीय गतिशीलता की प्रवृत्तियां : उद्योगों की समीक्षा—चीन के औद्योगिकरण में विदेशी प्रौद्योगिकी—1980 के दशक में चीनी प्रौद्योगिकी नीति', (20) पी०के० माइकल थरकन : 'केरल में चाय बागानों का विकास : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य', 'भारतीय टायर उद्योग में प्रतिद्वन्द्विता : 1963-84', 'ऐतिहासिक अनुसंधान के लिए स्वदेशी स्रोत सामग्री : अभिलेखों के कोलेनकोडे संग्रह की प्रस्तावना', 'केरल राजनीति में साम्प्रदायिक तत्त्वों का

प्रभाव : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य', (21) टी० एन० कृष्णन : 'भारत के केरल राज्य में शिशु मृत्युदर', "एसाइनमेंट चिल्ड्रन" में प्रकाशित, केरल के स्वास्थ्य आंकड़े', (22) पी० जी०के० पाणिकर और सी०आर० सोमन : 'केरल का स्वास्थ्य स्तर : आर्थिक पिछड़ेपन की विडम्बना तथा स्वास्थ्य विकास', (23) पी० जी० के० पाणिकर : 'केरल में बाल देख-रेख प्रणाली तथा शिशु मृत्युदर पर इसका प्रभाव ।'

सेमिनारों/सार्वजनिक व्याख्यानों की सूची

केन्द्र में निम्नलिखित सेमिनारों का आयोजन किया गया : (1) डॉ० पी० एस० जार्ज, विकास अध्ययन केन्द्र : 'वित्तीय वर्ष बदलने के सम्बन्ध में', (2) प्रोफेसर विपन चन्द्र, ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्व-विद्यालय : 'पंजाब स्थिति—ऐतिहासिक विकास तथा वर्तमान संकट', (3) प्रोफे-सर हिशाषी नकामुरा, रयोकोकु विश्वविद्यालय, क्योटो : 'दक्षिण भारत तथा श्रीलंका में संचित सिंचाई प्रणाली का अधिक विकास', (4) आर० नागराज, विकास अध्ययन केन्द्र : 'भारतीय विनिर्माण उद्योगों में उप-ठेकेदारी का विकास : बंगलौर अनुभव', (5) डा० दिपतेन्द्र बनर्जी, इतिहास विभाग, बर्दवान विश्व-विद्यालय : 'मार्क्स तथा भारतीय ग्राम समुदाय का मूल रूप', (6) डॉ० प्रवीण विसारिआ, निदेशक, गुजरात क्षेत्र आयोजना संस्थान : 'जनांकिकी में वर्तमान अनुसंधान के कुछ पहलू', (7) मार्क केस्सेलमेन, प्रोफेसर, शासन, कोलम्बिया विश्वविद्यालय : 'रीगन का पुनर्चुनाव : वैयक्तिक सफलता अथवा कन्जरवेटिव लोकप्रियता लहर', (8) डॉ० एलिजाबेथ वलकेनिअर, राजनीतिक विज्ञान विभाग, कोलम्बिया विश्वविद्यालय : 'आर्थिक विश्व में पूर्व', (9) डॉ० मोनी नाग, वरिष्ठ एसोसिएट, नीति अध्ययन केन्द्र, जनसंख्या परिषद् न्यूयार्क : 'पंजाब के मामदानी गांव का पुनः अध्ययन', (10) प्रोफेसर मार्था विसिनस, मिशिगन विश्वविद्यालय : 'स्त्री प्रवर्तक : 'शिक्षित स्त्रियों के लिए काम के नए अवसर, 1850-1914', (11) प्रोफेसर जान ब्रेमन, सामाजिक अध्ययन संस्थान, हेग तथा समाजशास्त्र विभाग, इरासमस विश्वविद्यालय, रोटरडम: 'दक्षिण गुजरात में ग्राम श्रमिक तथा रोजगार', (12) सुनील मणि और पी० के० माइकल थरकन, विकास अध्ययन केन्द्र, 'भारतीय टायर उद्योग में प्रतिद्वन्दिता के तत्त्व, 1930-84', (13) जान कुरिअन, विकास अध्ययन केन्द्र : 'केरल का मत्स्य विकास अनुभव तथा नार्वेजियाई अनुभव', (14) थरिअन जार्ज, सहायक प्रोफेसर, कृषि विश्वविद्यालय रईचुर तथा पी० के० माइकल थरकन, विकास अध्ययन केन्द्र : 'केरल में चाय बागान का विकास : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य', (15) पी० के० माइकल थरकन, विकास अध्ययन केन्द्र : 'सेंट मेरी के चर्च पल्लीपुरम के गुम्बद

शिलालेख, और आगे अनुसंधान का विषय', (16) प्रोफेसर ए० वैद्यनाथन, मद्रास विकास अध्ययन संस्थान, 'चीन : कुछ वर्तमान प्रवृत्तियां', (17) फिलिप स्कालटेस, लेक्चरर, आई० एस० आई०, नई दिल्ली : 'सार्वजनिक सामान की इष्टतम मूल्य नीति : बेल्जियम में कम वाल्टेज बिजली का एक मामला अध्ययन', (18) लुक लिरूथ, प्राध्यापक, आई० एस० आई०, नई दिल्ली : 'अधूरी सूचना के कल्याण निहितार्थ'।

केन्द्र ने निम्नलिखित सार्वजनिक व्याख्यानों का भी आयोजन किया :

(1) 'अन्तर्राष्ट्रीय जनसंख्या सम्मेलन : प्रश्न तथा फल', डॉ० नफीस सादिक, सहायक महासचिव, यू० एन० एफ० पी० ए०, न्यूयार्क', (2) 'भारत में पोषण स्तर तथा निर्धनता के सम्बन्ध में विवादों में निहित प्रश्न', डॉ० पी० वी० सुखात्मे, फैलो, रायल सोसायटी, तथा प्रधान, विज्ञानों के विकास के लिए महाराष्ट्र एसोसिएशन, (3) "दि सेक्रेड काऊ" तथा अन्य फिल्में: श्री विष्णु माथुर, कनाडाई प्रसारण निगम।

पुस्तकालय

20 जनवरी 1985 को स्टाक की स्थिति इस प्रकार थी : पुस्तकें 73,711, माइक्रोफिल्म 716, कामकाजी कागज 5,680, नक्शे तथा चार्ट इत्यादि 657। पुस्तकालय में 453 पत्र-पत्रिकाएं मंगाई जाती हैं।

स्टाफ

प्रोफेसर पी० जी० के० पाणिकर 30 अप्रैल 1985 को सेवा से निवृत्त हो गए। वह शुरूआत से ही केन्द्र के निदेशक थे। उनके स्थान पर प्रोफेसर टी०एन० कृष्णन, फैलो ने निदेशक का पद सम्भाल लिया। प्रोफेसर ए० वैद्यनाथन, फैलो, 1 सितम्बर 1984 को स्वेच्छा से सेवानिवृत हो गए। डॉ० चिरंजीव सेन तथा डा० गीता सेन को फैलो के रूप में नियुक्त किया गया। डॉ० सुदीप्तो मुण्डले ने मई 1985 में केन्द्र से त्याग पत्र दे दिया। डा०के०के० सुब्रमण्यन ने मार्च 1985 में भ्रमणकारी फैलो के रूप में केन्द्र में कार्यभार सम्भाल लिया।

निधियां

प्राप्तियां	लाख रु०	अदायगियां	लाख रु०
प्रारम्भ में बकाया	0.83	वेतन और भत्ते	13.11
भा० सा० वि० अ० प०	12.85	भविष्य निधि	0.87
केरल सरकार	20.00	परियोजनाएं	6.61
परियोजनाएं	4.03	पुस्तकालय	5.33
अपने संसाधन	2.16	उपस्कर और फर्नीचर	0.77
		भवन निर्माण	4.23
		परिवार लाभ योजना	0.53
		डाकखर्च और टेलीफोन	1.36
		मुद्रण और लेखन सामिग्री	0.77
		यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता	0.56
		मरम्मत और रख रखाव	2.08
		प्रतिलेखन प्रभार	0.23
		पी-एच०डी० अधिछात्रवृत्तियां	0.15
		अन्य विविधि खर्च	4.33
		अन्त में बकाया	7.94
जोड़ :	48.87		48.87

नीति अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली

अनुसंधान

वर्ष के दौरान निम्नलिखित नीति अध्ययन पूरे किए गए : (1) दक्षिण एशिया में खाद्य सुरक्षा तथा कृषि आधार, (2) हिमालयाई परिस्थिति-प्रणाली विकास, (3) मूल्य सूचक और उनके नीति सम्बन्धी उपयोग, (4) भारत और इसके पड़ोसी : अविश्वास का क्षेत्र, (5) भारत के लिए प्रौद्योगिकी नीति, और, (6) 1980 के दशक के लिए विदेशी नीति प्रश्न।

निम्नलिखित अनुसंधान अध्ययन प्रगति पर थे : (1) दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग और विकास, (2) दक्षिण एशिया में राष्ट्र निर्माण और क्षेत्रीय सहयोग, (3) अन्तर्राष्ट्रीय बैंकिंग और अर्थ-व्यवस्था, (4) राष्ट्रीय एकता, (5) स्वास्थ्य और पोषण नीति, (6) एक नीति संस्था के रूप में मंत्रिमंडल, (7) हिमालय की स्थिति, और (8) कार्मिक चयन में अनुसंधान तथा विकास।

प्रकाशन

वर्ष के दौरान केन्द्र ने निम्नलिखित अध्ययन प्रकाशन मिमिओग्राफ रूप में निकाले : (1) आर० जी० मिश्रा, "लेखा परीक्षा तथा खातों में खुले प्रश्न के सम्बन्ध में निष्पादन का विश्लेषण", (2) आर० जी० मिश्रा, "वर्तमान मामले तथा सामान्य ज्ञान की परीक्षा में उम्मीदवारों के निष्पादन का विश्लेषण", (3) पी० डी० मेलगांवकर, "भारत के लिए प्रौद्योगिकी नीति", (4) भवानी सेनगुप्त, "विश्व— जिसमें हम रहते हैं : बाहर से एक दृष्टि", (5) एस० एस० मराठे, "भारत में औद्योगिक नीति—विगत और सम्भावनाएं", (6) वी० ए० पाई० पनन्दीकर, "विकास के लिए प्रशासन", (7) आर० एस० देशपाण्डे, "मूल्य सूचक और उनके नीति सम्बन्धी उपयोग"।

सेमिनार तथा सम्मेलन

वर्ष के दौरान केन्द्र ने निम्नलिखित सेमिनार/सम्मेलन आयोजित किए। उनके लिए सहयोग दिया : (1) औद्योगिक नीति, (2) अन्तर्राष्ट्रीय बैंकिंग और अर्थ-व्यवस्था, (3) दक्षिण एशिया में राष्ट्र निर्माण तथा क्षेत्रीय सहयोग (सेमिनार, 5-9 मार्च 1985 को गोआ में आयोजित हुआ), और (4) हिमालय परिस्थित प्रणाली विकास।

अनुसंधान अधिछात्रवृत्तियां

वर्ष के दौरान आठ अनुसंधान अधिछात्रवृत्तियां दी गईं। केन्द्र से सम्बद्ध दो अध्येताओं को भा० सा० वि० अ० प० अधिछात्रवृत्तियां प्रदान की गईं।

अनेक राज्य सरकारों, सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों, संस्थाओं और निजी क्षेत्रों के निगमों ने केन्द्र को सहायता देना जारी रखा।

संगणक सेवाएं

केन्द्र के संगणक यूनिट ने भर्ती परीक्षण कार्य : सांख्यिकीय विश्लेषण किया और विकास दर से सम्बन्धित माडलों का निर्धारण किया। यूनिट ने केन्द्र को विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं, विशेष रूप से मूल्यों और सामान्यत: मूल्य नीति के क्षेत्र में और कृषि मूल्यों के क्षेत्र में विशेष रूप से प्रणाली सहायता प्रदान की। एक वर्ड प्रोसेसर खरीदा गया है।

पुस्तकालय

वर्ष के दौरान केन्द्र के पुस्तकालय में 933 पुस्तकें और शामिल की गईं, जिन्हें मिलाकर, जिल्दबंधी पत्रिकाओं समेत, खण्डों की कुल संख्या 4,938 हो गई। पुस्तकालय ने 136 अनुसंधान पत्रिकाएं भी मंगवाईं और 40 पत्रिकाएं दानस्वरूप प्राप्त हुईं। पुस्तकालय में तेरह दैनिक समाचार-पत्र प्राप्त हुए। अनुसंधान अध्येताओं तथा केन्द्र के अन्य स्टाफ सदस्यों को प्लेन पेपर कापिअर की सुविधाएं प्रदान की गईं।

अतिथि

केन्द्र ने अनेक प्रख्यात अतिथियों का स्वागत किया तथा उसके साथ महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं और प्रश्नों पर चर्चा की। उनमें उल्लेखनीय हैं : श्री एम० नरसिम्हन, प्रिंसिपल, प्रशासकीय स्टाफ कॉलेज, हैदराबाद; श्री बी० भट्टाचार्य, मुख्य महा प्रबन्धक और श्री आर० पी० गोयल, भूतपूर्व अध्यक्ष, श्री एस० पद्मनाभन और श्री बी० डी० दीक्षित, उप प्रबन्धक निदेशक, भारतीय स्टेट बैंक; श्री एल० पी० सिंह, भूतपूर्व राज्यपाल, असम तथा उत्तर-पूर्व; श्री रामाश्रय राय, प्रोफेसर, विकासशील सोसायटी अध्ययन केन्द्र, दिल्ली; प्रोफेसर शमसुल हक, अध्यक्ष, शासी बोर्ड, बंगलादेश अन्तर्राष्ट्रीय तथा नीति अध्ययन संस्थान; डा० बी० बी० मिश्रा, भूतपूर्व कुलपति, भागलपुर विश्वविद्यालय; श्री फ्लोरिस पी०, ब्लेकेनबर्ग, नृविज्ञानी, ट्वैनटे प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, प्रौद्योगिकी तथा विकास वर्ग, नीदरलेण्डस; डॉ० डगलस वर्नी,

प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, योर्क विश्वविद्यालय, कनाडा; श्री० पी० उपेन्द्र, संसद सदस्य तथा महामंत्री, तेलुगुदेशम पार्टी; डा० जे० एस० तेजा, अवर सचिव (राजनीति), विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली; श्री अशोक जेतली, भूतपूर्व सचिव एवं विकास आयुक्त, जम्मू और काश्मीर; डा० चरण वाधवा, आर्थिक सलाहकार, बी० एच० ई० एल०, नई दिल्ली; डा० एम० एल० दीवान, भूतपूर्व प्रमुख, एशिया क्षेत्रीय ब्यूरो, एफ० ए० डी०, रोम; डा० उत्पल बनर्जी, कार्यकारी निदेशक, कम्प्युट्रोनिक्स इण्डिया लि०, नई दिल्ली; डा० एस० एम० शाह, परामर्शदाता, आई०, आई० पी० ए०, नई दिल्ली; श्री ए० जी० नूरानी, अधिवक्ता तथा पत्रकार, बम्बई; डा० जे० डब्लयु बोर्कमन, राजनीतिक विज्ञान विभाग, विसकोंसिन विश्वविद्यालय, अमरीका; डॉ० एलन ए० प्लाट, समन्वयक यूरोपीय सुरक्षा अध्ययन, रेण्ड कारपोरेशन, केलिफोर्निया, अमरीका; प्रोफेसर एस० दास गुप्त, लोक विकास तथा प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली; डॉ० के० एस० कृष्णस्वामी, भूततूर्व उप गवर्नर, भारतीय रिजर्व बैंक और सम्प्रति सदस्य, आर्थिक तथा योजना परिषद्, कर्नाटक; डॉ० एस० एस० मराठा, भूतपूर्व सचिव, उद्योग मंत्रालय; डॉ० एम० हुमायुं खान, पाकिस्तान के राजदूत, श्री रिआज खोखर, मिनिस्टर, पाकिस्तानी राजदूतावास, नई दिल्ली; श्री रामासुब्रमण्यम, सचिव, केन्द्र-राज्य सम्बन्ध आयोग; डा० अनिल देवलालिकर, पेनसिलवानिआ विश्वविद्यालय, अर्थशास्त्र विभाग; डा० एस० के गांधे, अवर विकास आयुक्त और विशेष सचिव (आयोजना), गोआ, दमन और दीव, पणजी, गोआ; डॉ०पोन्ना विगनराजा, महासचिव, अन्तर्राष्ट्रीय विकास सोसायटी, रोम; डॉ०भरत कोइराला क्षेत्रीय निदेशक, वर्ल्डव्यु इन्टरनेशनल फाउन्डेशन, काठमाण्डु, नेपाल; श्रीजुमा-वोल्टर म्वापचु, तंजानिया; प्रोफेसर ग्याल डी० नेस, मिशिगन विश्वविद्यालय, एन आर्बर, मिशिगन अमरीका; डॉ० शेखर शाह, फोर्ड काउंडेशन, नई दिल्ली; डॉ० जीन रेसीन, फैलो, भूगोल, राष्ट्रीय वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र, फ्रांस; डॉ० एलेग्जेण्डर वी० उस्वातोव, "न्यु टाइम्स", मास्को; डॉ० पीटर पाउडेन, प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, प्रशासनिक अध्यक्ष विभाग, मेनचेस्टर विश्वविद्यालय, यू० के०; श्री रामतनु मैत्रा, सम्पादक, "फ्यूजन एशिया", नई दिल्ली; डॉ० (श्रीमती) सुसान्ने मोवात, उपनिदेशक, सामाजिक विज्ञान प्रभाग, अन्तर्राष्ट्रीय विकास अनुसंधान केन्द्र, ओटावा; प्रोफेसर लिउ चुआंग-युआन, प्रोफेसर, दक्षिण एशियाई अध्ययन संस्थान, चीनी समाज विज्ञान अकादमी और पेकिंग विश्वविद्यालय; श्री अलवन काउटो, निदेशक, राष्ट्रमण्डल सचिवालय, लन्दन; श्री एरिक सोलहेम, सचिव, केन्द्रीय समिति, समाजवादी वामपंथी दल, नार्वे; प्रोफैसर मर्टिन वर्लेट, समाज-शास्त्री, पेरिस; डा० मेक्स लिउस, राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय अनुसंधान केन्द्र, फ्रांस; न्यायमूर्ति वी० शिवसुब्रमण्यम, भूतपूर्व सर्वोच्च न्यायालय न्यायाधीश; श्री

लंका, कोलम्बो; डा० मैथिली श्मिड्टस, डीन, लोंग विश्वविद्यालय, अमरीका, श्री शिगेरू यूडा, निदेशक, जापानी प्रसारण निगम का नई दिल्ली ब्यूरो; प्रोफेसर डगलस हेग, अध्यक्ष, आर्थिक तथा सामाजिक अनुसंधान परिषद, यू० के० लंदन; श्री जी० एम० मीमौसी, परियोजना निदेशक, राष्ट्रीय टेलेमेटिक्स विकास केन्द्र, प्रोफेसर अल्बर्ट हीर्शमन, उच्च अध्ययन संस्थान, प्रिंसटन, प्रोफेसर माइरन वीनर, प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, एम० आई० टी० कैम्ब्रज, मेसाचुसेटस, अमरीका; श्री एल०के०झा, अध्यक्ष, आर्थिक प्रशासन सुधार आयोग, नई दिल्ली; श्री पी०के० दवे०, भूतपूर्व राजदूत, ई० ई० सी०; श्री एस० ए० दवे०, कार्यकारी निदेशक, भारतीय औद्योगिक विकास बैंक, बम्बई; श्री एस० भूतलिंगम, भूतपूर्व सचिव, आर्थिक कार्य, भारत सरकार; प्रोफेसर आर० के० हज़ारी, अर्थशास्त्री तथा भूत-पूर्व उप गवर्नर, भारतीय रिजर्व बैंक, बम्बई; डॉ० एलोट एल० टेपर, सहायक अध्यक्ष, राजनीतिक विज्ञान विभाग, कार्लस्टन विश्वविद्यालय, ओटावा, कनाडा; डॉ० अटिले अघ, और डा० (श्रीमती) मेगडेलना, हंगरी।

निधियां

प्राप्तियां	(लाख रुपये)	अदायगियां	(लाख रुपये)
भा० सा० वि० अ० प०	3.75	वेतन	8.28
सदस्यता शुल्क	0.98	पुस्तकालय पुस्तकें तथा पत्रिकाएं	1.22
परीक्षा तथा परीक्षण शुल्क	8.67	मुद्रण तथा लेखनसामग्री	0.28
परियोजनाएं	14.80	भवन, उपस्कर और फर्नीचर	6.14
अन्य आय	2.53	सम्मेलन, व्याख्यान तथा परियोजना खर्च	9.72
		अन्य स्थापना तथा विविध खर्च	4.85
		खर्च की तुलना में अधिक आय	0.24
जोड़ :	30.73		30.73

विकास विकल्पों में वैज्ञानिक तथा क्षेत्रीय पारिस्थितिक अध्ययन केन्द्र (सी आर ई एस एस आई डी ए), कलकत्ता

आलोच्य वर्ष के दौरान प्रो० ए० वैद्यनाथन की अध्यक्षता में भा० सा० वि० अ० प० द्वारा गठित एक भ्रमणकारी समिति की सिफारिश के आधार पर इस केन्द्र को वित्तीय सहायतार्थ सहायता-अनुदान योजना के अन्तर्गत लाया गया। सार्वजनिक नीति को प्रभावित करने वाले विशिष्ट क्षेत्रीय और पारिस्थितिक मानव संदर्भों के विरुद्ध विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा सोसायटी के परस्पर-पहलुओं से सम्बद्ध क्षेत्रों के विषय में कार्य करने के लिए विभिन्न विषयों वाले अनुसंधान-कर्ताओं के वास्ते एक मंच प्रदान करने के उद्देश्य से केन्द्र की स्थापना एक विद्वत पंजीकृत सोसायटी के रूप में 1979 के मध्य में की गई थी। केन्द्र के मुख्य अनुसंधान कार्यकलाप मुख्य रूप से पूर्वी भारत के तीन राज्यों, अर्थात् पश्चिम-बंगाल, उड़ीसा और बंगाल तक सीमित रहे हैं। केन्द्र द्वारा किए जाने वाले अनुसंधान कार्य का मुख्य उद्देश्य, व्यावसायिक व्यक्तियों के समान हित को एक विशिष्ट क्षेत्रीय, पारिस्थितिक मानव स्थिति में विशिष्ट समस्याओं के अध्ययन और समाधान के लिए एक अन्तर-विषयक परिप्रेक्ष्य में एक मंच पर लाना है। केन्द्र अर्थशास्त्रियों, सांख्यिकीविदों, समाजशास्त्रियों, नृविज्ञानियों, भूगोलवेत्ताओं, खनिज इंजीनियरों, जल विज्ञानियों, जैव-रसायन इंजीनियरों, वनस्पति विज्ञानियों, भूगर्भ वैज्ञानिकों तथा चिकित्सा वैज्ञानिकों के सक्षम और इच्छुक बहु-विषयक दलों की सेवाएं प्राप्त करने में समर्थ रहा।

अनुसंधान

केन्द्र ने निम्नलिखित विषयों के सम्बन्ध में अनुसंधान आयोजित किए : (1) पूर्वी भारत में खाद्य पद्धतियां तथा सोसायटी। इसने, पिछले चार वर्षों में 45 समूहों में सर्वेक्षण द्वारा अपार आंकड़े एकत्र किए हैं। इस प्रकार एकत्रित आंकड़ों को, इसके विभिन्न घटकों में काम करने वाले अनुसंधानकर्ताओं के समूचे बहु-विषयक दल को उपलब्ध कराया जाएगा। आलोच्य वर्ष के दौरान संस्थान ने पुन:सर्वेक्षण के लिए पश्चिम बंगाल में छ: समूहों को और उड़ीसा में चार को चुना है। घरों के सूचीकरण का काम पूरा हो गया है और बायो-मास परियोजना के लिए क्षेत्र कार्य चल रहा है। भरी हुई सभी अनुसूचियों की पंच करने से पहले की

छानबीन तथा सम्पादन कार्य पूरा हो गया है। बोध अध्ययन के अनेक प्रायोगिक अध्ययन किए गए और जांचकर्त्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

केन्द्र ने, परियोजना के निम्नलिखित पहलुओं के सम्बन्ध में अध्ययन आयोजित किए :

(1) उत्तर-पश्चिमी गेहूं-क्षेत्र तथा पूर्वी चावल-क्षेत्र-विरोधाभासी पद्धतियां, (2) खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि और अस्थिरता, (3) खाद्य, पोषाहार तथा स्वास्थ्य तक पहुंच, (4) पूर्वी भारत में जलवायु भिन्नता और खाद्य प्रणालियां, (5) वर्षा भिन्नता के सह-निर्धारक, (6) वर्षा का सम्भावित वितरण, (7) "सूखे" और "नमी" वाले सप्ताहों की सम्भावित अवधि, (8) वर्षा में दीर्घकालिक प्रवृत्तियां तथा चक्र, (9) जनविज्ञानीय क्षेत्र तथा बाढ़, (10) नदी बेसिन :

(क) सतही पानी क्षमता
(ख) महानदी तथा दामोदर का जलविज्ञानीय विश्लेषण
(ग) आधार प्रवाह
(घ) बाढ़ अध्ययन
(ङ) पर्यावरणात्मक बोध अध्ययन

पिछले पांच वर्षों का अध्ययन किया गया है। इस प्रक्रिया में आठ हजार टाइप पृष्ठों का सृजन हुआ और पांच कामकाजी खंड निकाले गए। जिला स्तर पर माध्यमिक तथा प्राथमिक दोनों ही स्रोतों से महत्त्वपूर्ण आंकड़े पर्याप्त मात्रा में एकत्र किए गए हैं। माध्यमिक आंकड़े निम्नलिखितों से सम्बन्धित हैं : जल विज्ञानीय स्थिति, वर्षा तथा तापमान, मिट्टी, कृषि-जलवायु जोन, पशु संसाधन, बाढ़ और सूखे, कृषि उत्पादन तथा पैदावार, कृषि वस्तुओं का प्रवाह, कृषि वस्तुओं का साप्ताहिक मूल्य, कृषि क्रेडिट, भू-सीमा, भूमि उपयोग, मृत्यु-दर व अन्य जनांकिकी परिवर्तनशील तत्त्व। इन आंकड़ों का एक बहुत बड़ा भाग 50 से 100 वर्षों की अवधि के लिए संकलित किया गया है। पूर्वी भारत के तीन राज्यों के एक लाख घरों के क्षेत्र सर्वेक्षण के आधार पर एकत्रित आंकड़ों में परिवारों का आकार और सरंचना, परिवर्तन तथा जाति, रोजगार और कार्यकलाप पद्धतियां, भूमि का वितरण, सम्पत्ति तथा ऋणग्रस्तता, कृषि और गैर-कृषि पूंजी, आय और उपभोक्ता खर्च, कृषि प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य और पोषाहार तथा अन्य सामाजार्थिक घटक शामिल हैं।

3. पश्चिम बंगाल तथा उड़ीसा में उपलब्ध बायो-मास उपयोग पद्धति तथा सामाजार्थिक निहितार्थों का सर्वेक्षण

आलोच्य वर्ष के दौरान, इस परियोजना के कार्य में मुख्यत: आंकड़ों का परिशोधन और विश्लेषण तथा सर्वेक्षण के सम्बन्ध में जिलेवार रिपोर्ट तैयार

करना शामिल था। उपलब्ध बायो-मास के सम्बन्ध में सर्वेक्षण की विधि, सर्वेक्षण तथा विश्लेषण के ब्यौरे, कुछ परिणामों के साथ, पिछली वार्षिक सामान्य रिपोर्ट में प्रकाशित किए गए। इस अवधि के दौरान, ग्रामीण जनसंख्या द्वारा बायो-मास की उपयोग पद्धति के सर्वेक्षण के घटक के सम्बन्ध में आंकड़ों का परिशोधन और विश्लेषण किया गया। सर्वेक्षण तथा निष्कर्षों की कुछ महत्त्वपूर्ण बातें नीचे दी गई हैं। अभी तक इस परियोजना के सम्बन्ध में रिपोर्टों के छः खण्ड पूरे हो चुके हैं।

4. खनिज संसाधन उपयोग के लिए दीर्घकालिक नीति-पूर्वी भारत का एक अध्ययन

डॉ० बी० चट्टोपाध्याय के अधीन एक कार्य दल गठित किया गया था और एक एप्रोच पत्र तैयार किया गया जिसमें समस्याएं तथा सम्भव समाधान सुझाए गए। और आगे कार्य करने के लिए इसे एक अनुसंधान डिजाइन के रूप में स्वीकार किया गया। क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय संदर्भ में इस क्षेत्र की आधार-धातुओं के उपयोग के लिए नीतियां विकसित करने के सम्बन्ध में सूचना एकत्र करने के वास्ते साहित्य का भी एक व्यापक सर्वेक्षण किया गया, इस सर्वेक्षण का उद्देश्य, नीति निर्माण को प्रभावित करने वाले राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही प्रकार के तत्त्वों का पता लगाना तथा देश की समग्र और क्षेत्रीय अर्थ-व्यवस्था व विकासात्मक पहलुओं पर उनके प्रभाव का अध्ययन करना भी था।

5. औषधि उद्योग : स्वास्थ्य देख-रेख तथा चिकित्सा अनुसंधान के साथ इसके परस्पर-प्रभाव का अध्ययन

स्वास्थ्य देख-रेख कार्यक्रम, आधुनिक औषध प्रणाली के आधार पर तैयार किए गए हैं जबकि बड़ी संख्या में लोग अपनी-अपनी जीवन पद्धतियों और स्वदेशी पद्धतियों पर भरोसा करते हैं। अधिकांश स्वास्थ्य देख-रेख कार्यक्रम, चिकित्सा शिक्षा, सरकारी तथा गैर-सरकारी स्तर पर द्विपक्षीय सम्पर्कों, "एड" तथा यू० एन० एजेन्सियों के माध्यम से विशेषज्ञों द्वारा दी गई सलाह तथा औषध कम्पनियों के कार्यचालन के जरिए पश्चिमी देशों में प्रचलित प्रणाली से अत्याधिक प्रभावित हैं।

आलोच्य अवधि के दौरान मलेरिया के विभिन्न पहलुओं के बारे में अध्ययन किए गए।

केन्द्र ने, विदेश मंत्रालय द्वारा दी गई वित्तीय सहायता से, भारत-बंगला-देश सम्बन्धों में अध्ययन का एक केन्द्र स्थापित किया है। यह केन्द्र, मुख्य रूप से, बंगलादेश के प्राकृतिक तथा मानवीय संसाधनों की राजनीतिक अर्थ-व्यवस्था के सम्बन्ध में मात्रात्मक और विवरणात्मक सूचना के एक भण्डार का काम करेगा।

केन्द्र, इस सूचना को एक रीतिबद्ध ढंग से वर्गीकृत और प्रलेखित करेगा। यह केन्द्र, भारत-बंगला देश सम्बन्धों को प्रभावित करने वाली तथा आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थितियों और विकास से सम्बन्धित परिस्थिति, घटनाओं, प्रक्रियाओं, मतों और निर्णयों को सही ढंग से प्रलेखित करेगा।

केन्द्र ने, बंगलादेश की अर्थ-व्यवस्था, सोसायटी, संस्कृति और इतिहास के सम्बन्ध में, वहां से कुछ प्रकाशनों (पुस्तकें, पत्रिकाएं और पत्रों) का एक संग्रह एकत्रित किया है और हाल ही में प्रकाशित कुछ पुस्तकें तथा विशिष्टीकृत पत्रिकाएं प्राप्त की हैं। इसने, ढाका दैनिक "संवाद" और "बंगलादेश आब्जर्वर" के पिछले अंक प्राप्त किए हैं। संस्थान के एक दल ने बंगलादेश का दौरा किया और लगभग 200 अनुसंधान संगठनों के साथ प्राथमिक सम्पर्क स्थापित किया और बंगलादेश विकास अध्ययन संस्थान के साथ प्रकाशनों के आदान-प्रदान की व्यवस्था की।

कामकाजी पत्र तथा पूरी हुई रिपोर्ट

केन्द्र ने, इसके द्वारा किए गए विभिन्न अध्ययनों के संबंध में 33 कामकाजी पत्र प्रकाशित किए और उन्हें संबंधित एजेन्सी के पास भेजा। इसके अलावा, इसके संकाय सदस्यों ने विभिन्न अध्ययनों के सम्बन्ध में 20 रिपोर्टें प्रकाशित कीं।

प्रकाशन

केन्द्र ने "इकोसाइंस" नामक अपने प्रकाशन के तीसरे खण्ड अंक 2 और बंगला त्रैमासिक "संस्कृति ओ समाज" के नियमित अंकों का प्रकाशन किया।

अनुसंधान कार्य के प्रसार के लिए केन्द्र का एक दृश्य-श्रव्य यूनिट हैं जिसने वै० औ० अ० प० के अनुरोध पर एक माड्यूल तैयार किया। केन्द्र द्वारा प्रदान की गई सामग्री की मदद से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद् ने शिक्षण साधनों के सम्बन्ध में श्रव्य-दृश्य सामग्री पर एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया।

निधियां

वित्तीय संसाधनों की कमी के कारण केन्द्र को अपने कार्यकलापों तथा स्टाफ में कमी करनी पड़ रही है। इसे मुख्यतः यू एन डी पी, यू एन ई पी, और एफ ए ओ द्वारा वित्त पोषित परियोजनाओं से निधियां प्राप्त होती हैं, जो समाप्त हो गई हैं। केन्द्र ने राष्ट्रीय कृषि तथा ग्राम विकास बैंक, वै० औ० अ० प०, कनाडा

के आई डी आर सी तथा फ्रांस के "ओरस्टोम" के साथ पत्र-व्यवहार किया है किन्तु कोई राशि उपलब्ध नहीं हो सकी। आलोच्य वर्ष के दौरान केन्द्र का बजट 29.43 लाख रुपये का था।

निधियां

आय	(लाख रुपये)	खर्च	(लाख रुपये)
प्रारम्भ में बकाया	3.20	वेतन	2.81
भा० सा० वि० अ० प० से अनुदान	2.00	किराया	0.36
वै० औ० अ० प० से अनुदान	2.00	मुद्रण तथा लेखनसामग्री	0.31
संयुक्त राष्ट्र तथा राष्ट्रीय एजेन्सियों से परियोजना अनुदान	20.98	संगणक	0.86
		अन्य स्थापना संबंधी मामले	1.08
भारत-बंगलादेश संबंधों के अध्ययन के लिए केंद्र के वास्ते विदेश मंत्रालय से अनुदान	1.25	परियोजनाएं	17.71
		भारत-बंगलादेश संबंधों के अध्ययन के लिए केन्द्र	1.16
		अन्त में बकाया	5.14
	जोड़ : 29.43		29.43

ग्रामीण तथा औद्योगिक विकास अनुसंधान केन्द्र, चण्डीगढ़

इस केन्द्र की स्थापना, सार्वजनिक और अकादमिक जीवन, सिविल सेवाओं तथा उद्योगों से सम्बन्धित स्वतंत्र विचारकों के एक दल द्वारा सितम्बर 1978 में की गई थी। इस केन्द्र का उद्देश्य, मानविकी, भारतीय संस्कृति, तुलनात्मक धर्म, सामाजिक विज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान, उद्योगों में अकादमिक अनुसंधान के प्रोन्नयन तथा अध्ययन के लिए उपयुक्त पर्यावरण की व्यवस्था करना तथा शिक्षा की उन्नति और समेकित ग्राम विकास, प्रकाशनों को प्रोत्साहित करना, ज्ञान का प्रसार करना तथा देश-विदेश के विचारकों के बीच चर्चाएं आयोजित करना है।

केन्द्र ने, समाज विज्ञानों के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य में लगे अनुसंधान संस्थाओं को सहायता-अनुदान की भा० सा० वि० अ० प० योजना के अन्तर्गत अनुरक्षण तथा विकास अनुदानों के लिए अनुरोध किया था। केन्द्र की प्रार्थना पर विचार करने तथा अपनी सिफारिशें देने के वास्ते भा० सा० वि० अ० प० ने प्रोफेसर पी०सी० जोशी की अध्यक्षता में एक भ्रमणकारी समिति स्थापित की थी। भ्रमणकारी समिति ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी जिस पर परिषद् ने विचार किया और उसे अनुमोदित कर दिया। भारत सरकार के अनुमोदन से केन्द्र को 1984-85 से वित्तीय सहायता के लिए अनुदान सहायता की योजना के अन्तर्गत लाया गया।

केन्द्र अपने नये परिसर में चला गया है। भा० सा० वि० अ० प० के अलावा इसे राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र तथा उत्तर प्रदेश की सरकारों से निधियां प्राप्त हुईं और इसने भारत में साम्प्रदायिक हिंसा की समस्या के सम्बन्ध में अनुसंधान परियोजनाएं शुरू कीं।

अनुसंधान

केन्द्र ने निम्नलिखित अनुसंधान पूरे किये :

1. राजस्थान (जयपुर) में साम्प्रदायिक हिंसा तथा विकास और राष्ट्रीय एकता पर इसका प्रभाव।
2. गुजरात (अहमदाबाद और वदोदरा) में साम्प्रदायिक हिंसा तथा विकास और राष्ट्रीय एकता पर इसका प्रभाव।
3. महाराष्ट्र (अहमदनगर और पुणे) में साम्प्रदायिक हिंसा तथा विकास

और राष्ट्रीय एकता पर इसका प्रभाव ।

4. आन्ध्र प्रदेश (निजामाबाद तथा हैदराबाद) में साम्प्रदायिक हिंसा तथा विकास और राष्ट्रीय एकता पर इसका प्रभाव ।
5. साम्प्रदायिकता : विश्लेषण की रूपरेखा की दिशा में ।
6. पंजाब के सीमावर्ती क्षेत्रों में विकास की समस्याओं तथा सम्भावनाओं के सम्बन्ध में प्रारम्भिक अध्ययन ।

प्रकाशन

वर्ष के दौरान केन्द्र ने निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किये :

पुस्तकें

1. "पंजाब संकट : संदर्भ तथा प्रवृत्तियां"
2. "उत्तरी क्षेत्र : विकास की समस्याएं तथा सम्भावनाएं ।"
3. "पंजाब में साम्प्रदायिक तनावों के सम्बन्ध में समाचारों की अनुक्रमणिका तथा सार" खण्ड-1 ।

लेख

(क) 'साम्प्रदायिकता तथा राष्ट्रीय एकता : विश्लेषण की रूपरेखा' भाग I, II और III, "मेनस्ट्रीम", फरवरी 1985—प्रमोदकुमार तथा भूपेन्द्र यादव द्वारा ।

(ख) "मध्य प्रदेश की जनजातियां : समस्याएं तथा सम्भावनाएं", प्रमोद कुमार तथा भूपेन्द्र यादव द्वारा ।

(ग) "जनजातीय क्षेत्रों में विकास", सतीश कुमार द्वारा एक पुनर्विलोकन ।

(घ) "अव्यवस्था में विकास"—भूपेन्द्र यादव द्वारा ।

(ङ) "जनजातियां : मिथ्या तथा वास्तविकताएं"—भूपेन्द्र यादव तथा नवशरण जी० सिंह द्वारा ।

(च) "जनजातीय उप-योजना : एक समालोचनात्मक मूल्यांकन" प्रमोद कुमार तथा अतुल सूद द्वारा ।

लेख संख्या (ख), (ग), (घ), (ङ), और (च), "लिंक" के फरवरी 1985 के 'मध्य प्रदेश की जनजातियां' सम्बन्धी विशेष अंक में प्रकाशित किए गये थे ।

भ्रमणकारी विद्वान

निम्नलिखित विद्वानों ने केन्द्र का दौरा किया : प्रोफेसर विपिन चन्द्र; प्रोफेसर एम० एस० अगवानी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; प्रोफेसर एस० एस० बल, कुलपति तथा प्रोफेसर जे० एस० ग्रेवाल, गुरु नानक देव विश्व-विद्यालय, अमृतसर; प्रोफेसर एस० एस० जोहल, कुलपति, प्रोफेसर बी० एल० अब्बी और प्रोफेसर एच० के० मनमोहन सिंह, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला; प्रोफेसर शीदेव कुमार, वाटरलू यूनिवर्सिटी, कनाडा; प्रोफेसर आर० एन० डोगरा, अध्यक्ष, पंजाब शिक्षा सुधार आयोग; प्रोफेसर ए० डब्ल्यू०, सिंघम, न्यूयार्क विश्व-विद्यालय; डॉ० अनिल सदगोपाल, किशोर भारती, बनकेडी (मध्य प्रदेश)।

केन्द्र ने निम्नलिखित व्याख्यानों और वार्त्ताओं का आयोजन किया :—

1. श्री टी० एन० कौल, "नवें दशक में भारत की विदेश नीति के प्रश्न"।
2. डॉ० मुल्क राज आनन्द, "नेहरू : धर्मनिरपेक्षता की परिकल्पना"।
3. प्रोफेसर राजा रमन, "भारत में वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकीय प्रगति—इसका महत्त्व"।
4. श्री बी० के० नेहरू "सार्वजनिक सेवाएं"।
5. प्रोफेसर ए० एम० खुसरो, "सातवीं पंचवर्षीय योजना में नये आयाम"।
6. श्री फिरोज अहमद, "पाकिस्तान में राष्ट्रीयता का प्रश्न"।
7. श्री जफर अली उजान, "पाकिस्तान की राजनीति में नये आयाम"।
8. प्रोफेसर वाई० के० अलघ, "सातवीं पंचवर्षीय योजना में विकास नीतियां"।
9. श्री खुशवंत सिंह, "समकालीन भारत में साम्प्रदायिकता के खतरे"।
10. प्रोफेसर विपिन चन्द्र, "साम्प्रदायिकता : समाधान"।
11. डॉ० एस० गोपाल, "नेहरू की विरासत"।
12. प्रोफेसर एम० जुबेरी, "विश्व इलेक्ट्रानिक युद्ध-क्षेत्र तथा निर्गुट देश"।
13. डॉ० डी० डी० नरुला, "पंजाब का सामाजार्थिक विकास : समस्याएं तथा सम्भावनाएं"।
14. प्रोफेसर जी० एस० भल्ला, "भारतीय विकास की राजनीतिक अर्थ-व्यवस्था"।
15. श्री के० सुब्रमण्यम, "नवें और दसवें दशक में सुरक्षा"।

16. प्रोफेसर रईस अहमद, "वैज्ञानिक-प्रौद्योगिकी शिक्षा तथा राष्ट्रीय विकास"।
17. डॉ० अपूर्व बरुआ, "असम समस्या : एक अवलोकन"।
18. श्री जसकरण तेजा, "भारत और उसके पड़ोसी"।
19. डॉ० टी० के० मजुमदार, "शहरी सामाजिक गतिविधियों के अध्ययन की दिशा में"।
20. डॉ० के० एस० शिलवांकर, "भारत में राष्ट्र निर्माण"।

इसके अलावा केन्द्र ने निम्नलिखित कार्यशालाएं तथा सम्मेलन आयोजित किये :

1. पुनश्चर्या पाठ्यक्रम तथा कार्यशाला।
2. साम्प्रदायिकता, साम्प्रदायिक हिंसा, धर्मनिरपेक्षता तथा राष्ट्रीय एकता की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए चार सप्ताह का अनुसंधान रीति विज्ञान पुनश्चर्या पाठ्यक्रम, जनवरी 1985। यह पाठ्यक्रम पूर्णकालिक और अंशकालिक अनुसंधानकर्ताओं के लाभार्थ आयोजित किया गया था।
3. साम्प्रदायिकता से निपटने के लिए उपाय तथा साधन सुझाने के लिए साम्प्रदायिकता के हानिकारक परिणामों पर एक कार्यशाला, नवंबर 1984। इस कार्यशाला में 21 चुने हुए छात्रों, कार्यकर्ताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, कॉलेज अध्यापकों तथा सेवानिवृत्त कर्मचारियों आदि ने भाग लिया।

केन्द्र ने, "साम्प्रदायिक हिंसा और विकास तथा राष्ट्रीय एकता पर इसके प्रभाव" पर चार विस्तृत अन्तर-विषयक रिपोर्टें तैयार कीं, जिन्होंने साम्प्रदायिकता तथा साम्प्रदायिक दंगों की समस्या के समाधान के लिए विद्यमान दृष्टिकोणों की समालोचना के आधार का काम किया और इनमें साम्प्रदायिकता से निपटने व वैज्ञानिक प्रवृत्ति, तर्कसंगत दृष्टिकोण और धर्मनिरपेक्ष विचार जाग्रत करने के लिए वैकल्पिक नीति का सुझाव दिया गया। इनमें से तीन रिपोर्टें (गुजरात में अहमदाबाद और वदोदरा, महाराष्ट्र में अहमदनगर और पुणे तथा आन्ध्र प्रदेश में निजामाबाद और हैदराबाद) गृह मंत्रालय, भारत सरकार को प्रस्तुत की गईं और चौथी रिपोर्ट राजस्थान सरकार को (जयपुर के संबंध में) प्रस्तुत की गई।

संकाय सदस्यों को अकादमिक संगठनों के अलावा, केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के निकायों, बैंकों व अन्य संगठनों में प्रतिनिधित्व प्राप्त था।

पुस्तकालय

आयोच्य वर्ष के दौरान 2,000 और पुस्तकें शामिल की गईं। एक पृथक पत्रिका खण्ड स्थापित किया गया और 46 नई पत्रिकाएं मंगाई गईं।

एक कार्टोग्राफी खण्ड की स्थापना की गई और उसे केन्द्र के अनुसंधान स्कन्ध से सम्बद्ध किया गया।

भवन

केन्द्र के मुख्य भवन के निर्माण का प्रथम चरण पूरा हो गया।

निधियां

प्राप्तियां	(लाख रुपये)	अदायगियां	(लाख रुपये)
भा० सा० वि० अ० प० योजनेतर	4.00	वेतन	3.90
पंजाब सरकार	3.00	क्षेत्रकार्य, जांचकर्ता, सर्वेक्षण इत्यादि	2.50
भा० सा० वि० अ० प० अनावर्ती	5.00	पुस्तकालय तथा अनुसंधान-कर्ताओं के कमरे के लिए पुस्तकालय पुस्तकें, फर्नीचर, उपस्कर	3.32
उत्तर प्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र राज्यों से परियोजना अनुदान	5.28	सेमिनार, सम्मेलन, व्याख्यान, साभूहिक चर्चाएं आदि	1.40
हरियाणा सरकार (पूंजीगत)	2.00	फुटकर	1.79
		सी आर आर आई ओ भवन पर खर्च (प्रथम चरण) अनावर्ती पूंजीगत अनुदानों में से वहन किया गया	9.42
	जोड़ 19.28		जोड़ 22.33

सामाजिक अध्ययन केन्द्र, सूरत

केन्द्र के अनुसंधान अध्ययन मुख्यत: निम्नलिखित विषयों पर केन्द्रित रहे : सम्मिलित समाजशास्त्र, नृविज्ञान, राजनीति विज्ञान, आर्थिक इतिहास, सामाजिक भाषाएं और शिक्षा। बहु-विषयक अनुसंधान के अलावा, केन्द्र, शिक्षण, परामर्श, प्रशिक्षण, सामाजिक आयोजना और विकास कार्यक्रमों के मूल्यांकन कार्य में सक्रिय रूप से लगा हुआ है। यह, अनुसंधान अध्येताओं, कॉलेज तथा विश्वविद्यालय शिक्षकों, आयोजकों, प्रकाशकों आदि की अलग-अलग स्तर पर और विभिन्न सरकारी तथा गैर-सरकारी शैक्षिक सेवाओं और विकास एजेन्सियों की संस्थात्मक स्तर पर आवश्यकताओं को पूरा करता है।

स्टाफ में प्रमुख परिवर्तन

प्रोफेसर आई० पी० देसाई, जो समाजशास्त्र के एक विख्यात प्रोफेसर थे, 26 जनवरी 1985 को स्वर्ग सिधार गए। केन्द्र में फैलो डॉ० विद्युत जोशी ने वर्ष के दौरान केन्द्र से त्याग-पत्र दे दिया। डॉ० सुधीर चन्द्र और डॉ० अरविन्द दास ने वरिष्ठ फैलो के रूप में और श्री पी० एम० मैथ्यु ने अनुसंधान एसोसिएट के रूप में कार्यभार सम्भाल लिया।

अनुसंधान

केन्द्र ने निम्नलिखित परियोजनाएं पूरी कीं :

1. गुजरात में स्थिति, श्रेणी और प्रभुत्व,
2. भारतीय संग्रहालयों में जनजातीय कला,
3. नरसन्द का एक सामाजार्थिक अध्ययन, एक गांव का पुनर्ध्ययन,
4. स्कूलों में जनजातीय लड़कियों द्वारा दाखिला न लेना (पोशीना क्षेत्र में दस गांवों का एक अध्ययन),
5. उत्तरी बिहार में मैथिली भाषा आन्दोलन : एक सामाजिक भाषाई जांच। चल रहे अनुसंधान अध्ययन इस प्रकार हैं :

(1) विशिष्ट वर्ग की राजनीति तथा लोगों के दांव-पेंच : बडोदा के दंगों का एक मामला, (2) सूरत जिले का एक सांख्यिकीय चित्र, (3) ट्रेड यूनियन

आन्दोलन में प्रजातन्त्र : एक मामला अध्ययन, (4) सामूहिक आन्दोलन तथा सामाजिक परिवर्तन, (5) दक्षिण गुजरात के आदिवासियों के बीच सामाजिक सुधार : 19वीं और 20वीं शताब्दी का प्रारम्भ, (6) राष्ट्रीय सेवा योजना : एक मूल्यांकन अध्ययन, (7) आई० टी० डी० पी० का एक मूल्यांकन : दहोद का मामला, और (8) गुजरात में अनुसूचित जनजातियों के सम्बन्ध में अनुसंधान : एक पुनर्विलोकन ।

प्रलेखन

केन्द्र के पुस्तकालय के एक भाग के रूप में एक प्रलेखन एकक की स्थापना की गई है। इस वर्ष, जिला आयोजना बोर्ड, सूरत के अनुरोध पर 600 से अधिक प्रविष्टियों को शामिल करते हुए सूरत जिले के सम्बन्ध में एक ग्रन्थसूची तैयार की गई ।

प्रकाशन

केन्द्र ने विभिन्न भारतीय और विदेशी पत्रिकाओं में 31 अनुसंधान पत्र तथा चार पुस्तकें प्रकाशित कीं और खण्डों का सम्पादन किया। इसने गुजराती में चार पुस्तकें भी प्रकाशित कीं । इसके अलावा, संकाय सदस्यों ने, मिमिओग्राफ रूप में 11 रिपोर्टें और कामकाजी पत्र भी तैयार किए। केन्द्र ने, अपनी त्रैमासिक पत्रिका "अर्थात" के चार अंक भी प्रकाशित किए।

पुस्तकालय

केन्द्र के पुस्तकालय ने 480 पुस्तकें प्राप्त कीं तथा 136 से अधिक पुस्तकें दानस्वरूप प्राप्त हुईं । इस समय पुस्तकालय में जिल्दबंधी पत्रिकाओं को मिलाकर कुल 12,128 खण्डों का संग्रह है । पुस्तकालय को आदान-प्रदान आधार पर विभिन्न संस्थाओं से भी संस्थात्मक प्रकाशन प्राप्त हो रहे हैं। पुस्तकालय में आज-कल 167 पत्रिकाएं—62 विदेशी और 105 भारतीय—मंगाई जाती हैं।

शिक्षण, मार्गदर्शन, परामर्श और सदस्यता

केन्द्र के संकाय द्वारा किए गए शिक्षण कार्यों में निम्नलिखित शामिल हैं : घनश्याम शाह, राजनीतिक विज्ञान विभाग, शिकागो विश्वविद्यालय, अमरीका—मार्च-जून 1984 के दौरान, (2) एस० पी० पुनालेकर, समाजशास्त्र विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बल्लभ विद्यानगर, जनवरी-फरवरी 1985।

संकाय सदस्यों के पर्यवेक्षण में फिलहाल निम्नलिखित छात्र अपनी पी० एच० डी० डिग्री के लिए कार्य कर रहे हैं: एस० पी० शिव रेड्डी, "हरिजन

राजनीतिक नेता", पी० एन० सेठ, "पंचायत राज तथा विकास : आनन्द ताल्लुक (गुजरात) का मामला", अर्जुन पटेल "बदलती हुई स्थितियों में जाति : गुजरात के कोलियों का मामला", ई० एन० अशोक कुमार "कृषि विस्तार तथा ग्रामीण विकास में सम्प्रेषण कड़ी", और राजेन्द्र क्षेत्री, "मणिपुर में सामाजिक आन्दोलन।" भा० सा० वि० अ० प० मार्गदर्शन तथा परामर्श योजना के अन्तर्गत केन्द्र ने अनुसंधान रीति विज्ञान तथा आंकड़ा विश्लेषण में कॉलेज शिक्षकों तथा अनुसंधानकर्ताओं को परामर्श सेवाएं प्रदान करना जारी रखा। अनेक संकाय सदस्य, परामर्श समितियों और विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थानों के बोर्डों तथा सरकारी ऐजेन्सियों से सम्बद्ध थे, जिनमें जिला आयोजना बोर्ड, सूरत और गुजरात सरकार की अनुसूचित जनजातियों और पिछड़े वर्गों के कल्याण के लिए सातवीं पंचवर्षीय योजना समिति की सदस्यता भी शामिल है।

केन्द्र के अतिथि

केन्द्र के अतिथियों में कॉलेज अध्यापक, पी० एच० डी० अध्येता, सरकारी विभागों के अधिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता और देश-विदेश में अकादमिक संस्थाओं के विद्वान शामिल हैं।

संकाय परिचर्चा

इस तिमाही परिचर्चा में संकाय के सदस्य, पुस्तकों, समस्याओं और सैद्धान्तिक तथा समसामयिक रुचि की घटनाओं पर चर्चा करने के अलावा, अपने अनुसंधान अध्ययनों के सम्बन्ध में डाक्टोरल छात्रों और कुछ आमंत्रित व्यक्तियों के साथ अपने विचारों और अनुभवों का आदान-प्रदान करते हैं। आलोच्य अवधि के दौरान, निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गई : "भारत में कृषक आन्दोलन (घनश्याम शाह)", और "कोइलकारो परियोजना—बिहार : कुछ टिप्पणियां (कश्यप मनकोडी)", और "जल प्रदूषण नियंत्रण की राजनीति तथा औद्योगिक प्रतिरोध (प्रियवदन पटेल)।"

व्याख्यान

वर्ष 1984-85 के दौरान निम्नलिखित व्याख्यान/सेमिनार आयोजित किए गए : (1) डॉ० और श्रीमती वेशा, ग्रोनिंगन विश्वविद्यालय, हॉलैण्ड "सूरत में रक्त-आधान : कुछ चिकित्सीय सामाजिक पहलू", 4 अप्रैल 1984, (2) श्री जगन्नाथ पति, दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत "सूरत में विद्युत कर्घा चालक", 27 अप्रैल 1984, (3) प्रोफेसर आर० एल० मेयर्स, केलिफोर्निया

विश्वविद्यालय, अमरीका, "क्षेत्रीय आयोजना : एक परिप्रेक्ष्य", 16 जून 1984-ग्राम अध्ययन विभाग, दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत के सहयोग से, (4) प्रोफेसर एस० पी० साठे, विधि कॉलेज, पुणे, "विधि का समाजशास्त्र", 18 जून 1984, (5) श्री राहुल भीमजिआनी, गांधी नगर, "जागरूकता पैदा करने की प्रक्रिया के रूप में विकेन्द्रीकृत आयोजना", 26 जून 1984, (6) श्रीमती इला पटेल, स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय, स्टैनफोर्ड, "ग्राम अनौपचारिक शिक्षा तथा भारत में राज्य", 10 जुलाई 1984, (7) डॉ० फ्रेंक परलिन, इरस्मस विश्वविद्यालय, नीदरलेण्ड्स, "तुलनात्मक यूरोपीय तथा भारतीय परिप्रेक्ष्य में पूंजीवाद तक परिवर्तन", 27 नवम्बर 1984, (8) डॉ० बिन्दु देसाई, कुक काउन्टी हॉस्पिटल, शिकागो, अमरीका, "अमरीका में वंश तथा औषधि", 1 दिसम्बर 1984, (9) प्रो० के० डब्ल्यु० वान डेर वीन, एन्थ्रापॉलोजिश सोशिओलोजिश सेन्ट्रम, अमस्टर्डैम, "चिकित्सीय विधियां तथा सामाजिक संरचनाएं", 19 जनवरी 1985, (10) प्रोफेसर डेविड आरनोल्ड, लैसेस्टर विश्वविद्यालय, यू० के०, "अपराध करने वाली जनजातियां तथा वीर जातियां, : भारत में अपराध तथा सामाजिक नियंत्रण", 14 फरवरी 1985, (11) डॉ० रोबर्ट वरिकायिल, दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत, "शंकर तथा हेगेल के सम्बन्ध में एक सामाजिक-दार्शनिक तुलना" 1 मार्च 1985।

सेमिनार

भा० सा० वि० अ० प० पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, बम्बई की वित्तीय सहायता से केन्द्र ने 16-17 फरवरी 1985 को "औद्योगिक श्रमिक तथा सामाजिक परिवर्तन" पर एक क्षेत्रीय सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार में कुल 15 पत्र पढ़े गए और उन पर चर्चा की गई। पत्रों में, राजनीतिक अर्थव्यवस्था तथा औद्योगिक सम्बन्धों के उप-क्षेत्रों के आनुभाविक और सैद्धान्तिक पहलुओं को शामिल किया गया। तीन क्षेत्रों, अर्थात् महाराष्ट्र, गुजरात और गोआ में आंकड़ों में सम्मिलित मामलों पर ब्योरेवार चर्चा की गई। चर्चा में लगभग 40 व्यक्तियों ने (सूरत से बाहर के 18 व्यक्ति) भाग लिया। "दक्षिण गुजरात : विगत और वर्तमान" पर व्याख्यान माला के अन्तर्गत केन्द्र ने "वीर के रूप में व्यापारी : सत्रहवीं शताब्दी में सूरत के इतिहास में व्यापारियों की भूमिका" विषय पर एक व्याख्यान आयोजित किया। यह व्याख्यान 15 नवम्बर 1984 को एम० टी० बी० आर्ट्स कॉलेज, सूरत में वेक फोरेस्ट यूनिवर्सिटी, नार्थ कारोलिना, अमरीका के प्रोफेसर बालकृष्ण गोविन्द गोखले ने दिया।

निधियां

प्राप्तियां	(लाख रुपये)	अदायगियां	(लाख रुपये)
भा० सा० वि०			
अ० प०	3.50	वेतन	5.10
गुजरात सरकार	3.40	पुस्तक/पत्रिकाएं	0.65
गुजरात सरकार से देय	0.10	उपस्कर/फर्नीचर	0.09
अधिक खर्च	0.24	भवन अनुरक्षण	0.25
		विविध खर्च	0.95
		प्रकाशन	0.20
जोड़	7.24		7.24

समाज विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कलकत्ता

अनुसंधान परियोजनाएं

वर्ष 1984-85 के दौरान निम्नलिखित परियोजनाएं पूरी की गईं :

1. पूर्वी भारत में कृषि पूंजी निर्माण, 1900-1950 : अध्ययन की अवधि कुछ और बढ़ा दी गई (1956-57 तक)।
2. राष्ट्रवादी विचार।
3. असम का नया इतिहास।
4. असम में 1983 का विधान सभा चुनाव : इसकी पृष्ठभूमि और निहितार्थों का एक विश्लेषण।

निम्नलिखित परियोजनाएं चल रही थीं : (1) पूर्वी भारत के कोयला खान श्रमिकों के बीच मांग निर्माण : 1939-79, (2) कलकत्ता पत्तन की पृष्ठभूमि का अध्ययन, (3) 1707 से 1885 तक भारत का इतिहास, (4) बड़े कृषि देशों में राज्य तथा सामाजिक संगठन, (5) समाज तथा संस्कृति : उथल-पुथल, प० बंगाल, (6) आधुनिक भारत में समाज विज्ञान का इतिहास और सामाजिक सन्दर्भ, (7) भारत में विदेशी सहयोग तथा प्रौद्योगिकी का हस्तान्तरण तथा स्वदेशी उद्योग का विकास, (8) जनजातीय लोगों, विशेषतः भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के जनजातीय लोगों के इतिहास, संस्थाओं और समस्याओं के ऐतिहासिक और तुलनात्मक ढांचे में एक अध्ययन, (9) उत्तर प्रदेश के हिमालयाई जिलों में वनविद्या तथा सामाजिक विरोध आन्दोलन, 1880-1980, (10) भारत में रोज़गार, उत्पादकता और उत्पादन पर माइक्रोइलेक्ट्रानिक्स के प्रभाव का अध्ययन, (11) जमशेदपुर में औपचारिक तथा अनौपचारिक क्षेत्रों का विकास—संकल्पना, सिद्धान्त, स्थानिक संगठन तथा संयोजन, (12) मध्य-बीसवीं शताब्दी में बंगाल का आर्थिक इतिहास, (13) मार्क्सवाद तथा सामाजिक परिवर्तन, (14) कलकत्ता 1951-81, और (15) सोलहवीं शताब्दी और सत्रहवीं शताब्दी के बीच बंगाल में भक्ति आन्दोलन का रूपान्तरण : बंगाल में वैष्णव धर्म में वैचारिक तथा रीति वैज्ञानिक परिवर्तनों के सामाजिक सन्दर्भ का अध्ययन।

प्रकाशन

वर्ष के दौरान निम्नलिखित आवसरिक पत्र तथा विनिबन्ध प्रकाशित किए गए :

1. अशोक सेन, "सामन्तवाद से पूंजीवाद तक परिवर्तन तथा वेबर, ग्रामसी तथा पूंजीवाद।"
2. अमलेन्दु गुहा, "नव-वैष्णववाद से विद्रोह तक : 18वीं शताब्दी के अन्त में असम में कृषि उथल-पथल और सामन्तशाही का संकट।"
3. सुनील कुमार मुन्शी, "प० बंगाल में शहरीकरण की प्रवृत्ति के सम्बन्ध में कुछ टिप्पणियां।"
4. ज्ञानेन्द्र पाण्डे, "कांग्रेस तथा राष्ट्र, 1917-1947।"
5. मनोज कुमार सान्याल, "प० बंगाल के जिलों में चावल का मूल्य और भूहस्तान्तरण।"
6. पार्थ चैटर्जी, "बंगाल 1920-1947 : भूमि का प्रश्न।"
7. सुधीर चक्रवर्ती, "कृष्णनगरेर मृतशिल्प ओ मृतशिल्पी समाज (बंगाली में)।"

व्याख्यानमाला

8. अमित भादुरी, "प्रभुत्व, अवरोध तथा प्रतिबल।"

स्टाफ

वर्ष के दौरान राजनीति विज्ञान में फैलो श्री अंजन कुमार घोष, भूगोल में अस्थाई फैलो डॉ० माया दत्त, राजनीति विज्ञान में अस्थाई फैलो श्री रामचन्द्र गुहा, अर्थशास्त्र में अस्थाई फैलो श्री देवदास बनर्जी केन्द्र में सम्मिलित हो गए।

पी-एच० डी० कार्यक्रम

केन्द्र के अकादमिक स्टाफ के पर्यवेक्षण में 35 छात्रों ने वर्ष के दौरान अपना पी-एच० डी० का अध्ययन जारी रखा, श्रीमती शुक्ला सेन ने अपनी पी-एच० डी० की डिग्री प्राप्त की और चार छात्रों ने अपना पी-एच० डी० शोध निबन्ध कलकत्ता विश्वविद्यालय को प्रस्तुत कर दिया। उनके शोध निबन्धों के शीर्षक इस प्रकार थे : (1) सुक्ला सेन, "अनुपजाऊ गंगा डेल्टा में ग्रामीण बस्तियों के विकास की प्रक्रियाओं का विश्लेषण, (2) शुभेन्दु दास गुप्त, "भारत में संगठित

उद्योग और विदेशी प्राइवेट पूंजी तथा प्रौद्योगिकी के बीच संयोजन", (3) ताप्ती दत्त गुप्ता, "रवीन्द्रनाथ टैगोर के सामाजिक विचारों के विकास और ढांचे का एक ऐतिहासिक विश्लेषण", (4) अतिस दास गुप्त, "अठारहवीं शताब्दी के बंगाल में फकीर तथा संन्यासी उथल-पुथल", और (5) नरीकी नकाजातो, "पूर्वी बंगाल के ढाका प्रभाग का कृषि ढांचा, 1870-1905।"

शिक्षण/व्याख्यान/सेमिनार

केन्द्र के अधिकांश अकादमिक स्टाफ ने कलकत्ता विश्वविद्यालय, कल्याणी विश्वविद्यालय तथा प्रेसीडेन्सी कॉलेज में अंश कालिक शिक्षण का अपना कार्य जारी रखा।

समाजशास्त्र, नृविज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, और कृषकों के अध्ययन से सम्बन्धित इतिहास के क्षेत्रों से कुछ नवीनतम साहित्य पर और अधिक व्यापक रूप से व्याख्यान, पठन तथा चर्चाएं आयोजित करने के लिए सामूहिक चर्चा आयोजित की गई। सामूहिक चर्चाओं में, "यूरोप में सामन्तशाही से पूंजी-वाद तक रूपान्तरण" और "कृषक वर्ग का अध्ययन" विषय पर विचार किया गया।

सन् 1981 में गठित कृषक अध्ययनों सम्बन्धी कार्य दलों ने, जिनकी अनेक बैठकें और चर्चाएं हो चुकी हैं, एक नए विषय का अध्ययन शुरू किया है और समकालीन भारत के सम्बन्ध में एक कार्य दल आयोजित किया। इस दल का उद्देश्य भारत में समकालीन सामाजिक प्रक्रियाओं, संरचनाओं, और संस्थाओं की वैज्ञानिक समझ-बूझ समक्ष विकसित करना है और यह भारतीय समाजशास्त्र, नृविज्ञान, अर्थशास्त्र तथा राजनीति विज्ञान के क्षेत्रों में पिछले दो दशकों में विशेष रूप से तैयार किए गए साहित्य पर विचार, समीक्षा और मूल्यांकन करने के लिए साप्ताहिक बैठकें आयोजित करता है।

वर्ष 1984-85 के दौरान अनुसंधान सेमिनार कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्र में 16 स्टाफ सेमिनार आयोजित किए गए तथा चार अनुसंधान-पत्रों पर चर्चा की गई। वक्ताओं में विदेशों के वक्ता भी शामिल थे : डॉ० स्टीफन गौरली, ऑक्स-फोर्ड विश्वविद्यालय, यू०के०; प्रोफेसर लुसा मेलडोलेसी, कलाबिआ विश्वविद्यालय इटली; डॉ० ओमकार गोस्वामी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; प्रोफेसर विलियम, एच० शफे, सह-निदेशक, नागरिक अधिकार तथा वंश अध्ययन केन्द्र, ड्यूक विश्व-विद्यालय, अमरीका; श्री एच० के० रक्षित, भूतपूर्व निदेशक, भारतीय मानव-विज्ञान सर्वेक्षण, कलकत्ता; डॉ० शाहिद अमीन, इतिहास विभाग, जामिआ मिलिआ इस्लामिया, नई दिल्ली; डॉ० अशोक मित्रा, वित्त मन्त्री, प० बंगाल सरकार; प्रोफेसर डब्ल्यु० एम० रोजर लोइस, इतिहास विभाग, टेक्साज विश्व-

विद्यालय, आस्टिन, अमरीका; डॉ० स्टीवन एम० लुकेस, फैलो तथा ट्युटर, राजनीति विज्ञान तथा राजनीतिक समाजशास्त्र, बल्लीओल कॉलेज, ऑक्सफोर्ड; डॉ० दीपेश चक्रवर्ती, भारतीय तथा इंडोनेशियाई अध्ययन विभाग, मेलबोर्न विश्व-विद्यालय, आस्ट्रेलिया; प्रोफेसर रवी चक्रवर्ती, समाजशास्त्र विभाग, केलिफोर्निया, स्टेट यूनिवर्सिटी, सेक्रामेंटो, अमरीका; प्रोफेसर एडवर्ड सी० मोल्टन, इतिहास विभाग, विश्वविद्यालय कॉलेज, मनीतोबा विश्वविद्यालय, कनाडा; डॉ० वी० जी० खोरोस, वरिष्ठ फैलो, सोवियत रूस विज्ञान अकादमी प्राच्य अध्ययन संस्थान, सोवियत रूस; प्रोफेसर ए० बी० बटाला, मेक्सिको राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, मेक्सिको, प्रोफेसर फ्रेड० आर० डलमायर, प्रोफेसर सरकार, नोतरे डामे विश्व-विद्यालय, अमरीका; श्री देबीदास बनर्जी, श्रीमती संयुक्ता दास, श्रीमती रूमा चटर्जी (सी० एस० एस० एस० सी०), श्री सुभेन्दु दास गुप्त, भारतीय प्रबन्ध संस्थान, कलकत्ता; श्री रामकृष्ण चटर्जी, सान्तिपुर कॉलेज, नदिया, आदि। इसके अतिरिक्त छः आन्तरिक स्टाफ सेमिनार आयोजित किए गए।

सार्वजनिक व्याख्यान

विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम के प्रोफेसर के० एन० राज ने, "संयुक्त राज्य और विश्व-अर्थ-व्यवस्था" पर अगस्त 1984 में आर० सी० दत्त व्याख्यान दिया। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रोफेसर सव्यसांची भट्टाचार्य ने, "वर्ग संघर्ष और राष्ट्रीय संघर्ष : बम्बई में श्रम और पूंजी, 1919-1931" पर नवम्बर 1984 में एस० जी० ड्युस्कर व्याख्यान दिया। प्रेसीडेन्सी कॉलेज, कलकत्ता के प्रोफेसर मिहिर रक्षित ने, "व्यापार तथा विकास के कुछ पहलू" पर फरवरी 1985 में आर० सी० दत्त व्याख्यान दिया।

भारत—प० जर्मनी सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत अवैतनिक भ्रमणकारी विद्वान के रूप में केन्द्र से सम्बद्ध, कुमारी क्रिस्टा एलिजाबेथ वोत्तचर ने "भारत में जूट उद्योग" पर अपना अनुसंधान कार्य जारी रखा। अवैतनिक भ्रमणकारी विद्वान के रूप में केन्द्र से सम्बद्ध ब्राउन विश्वविद्यालय, अमरीका की सह-नृविज्ञान प्रोफेसर डॉ० लीना फुज्जती-ओस्टर अपनी "स्त्रियों की भूमिका तथा शहरी धर्म का विकास" नामक अपनी अनुसंधान परियोजना पर कार्य कर रही हैं। कोलम्बिया विश्वविद्यालय, न्यूयार्क के राजनीतिक विज्ञान विभाग के प्रोफेसर मार्क केस्सेलमन को, "प्रणाली के अन्दर अभिशासन बनाम गतिशीलता : उदार प्रजातन्त्रों के अन्दर क्रान्तिकारी आन्दोलनों के अवसर और समस्याएं : भारत और फ्रांस का मामला" विषय पर कार्य करने के लिए एक अवैतनिक भ्रमणकारी फैलो के रूप में केन्द्र से सम्बद्ध किया गया। केन्द्र से सम्बद्ध डॉ० मंजुश्री चाकी सरकार, भा० सा० वि० अ० प० वरिष्ठ फैलोशिप के अन्तर्गत "आधुनिक

भारत में दहेज प्रथा : एक पारम्परिक प्रथा की सामाजिक गतिशीलता" पर कार्य कर रहे हैं। श्री सत्यजीत दास गुप्त, श्रीमती रूमा चटर्जी, श्रीमती मैत्रेयी बरूआ, श्री सिद्धार्थ गुहा रे, श्री अभिजीत गुहा, श्रीमती रीना बासु और श्रीमती विमला चांद, भा० सा० वि० अ० प० डाक्टोरल फैलो के रूप में केन्द्र से सम्बद्ध हैं। इसके अलावा, श्रीमती इद्राणी घोष, श्रीमती एश्ता चटर्जी, श्री सुजीत नारायण चट्टोपाध्याय, और श्री गोविन्द चन्द्र रथ को फैलोशिप योजना के अन्तर्गत चुना गया है।

अतिथि

सोवियत रूस के एक प्रतिनिधिमण्डल ने फरवरी 1985 में केन्द्र का दौरा किया। इस प्रतिनिधिमण्डल में निम्नलिखित विद्वान शामिल थे : प्रोफेसर वी० पी० फिलातोव (अध्यक्ष, इतिहास विभाग, समाज विज्ञान अकादमी, सोवियत रूस), प्रोफेसर जी० के० शिरोकोव (उप निदेशक, प्राच्य अध्ययन संस्थान, सोवियत रूस, समाज विज्ञान अकादमी), डॉ० वी० ए० शुरिगिन, ("प्रावदा" में विकासशील देशों के विद्वान), श्री आई० वाई० गोलुबयेव (महासचिव, सोवियत-भारत मित्रता सोसायटी के महामंत्री और सम्पादक, "सोवियत नारी"), श्री ई० पी० इवानोव, (कलकत्ता में सोवियत रूस के महाकोंसुल), श्री एन० केमेलबायेव (निदेशक, गोर्की सदन, कलकत्ता)। प्रतिनिधिमण्डल ने केन्द्र के अकादमिक सदस्यों के साथ भेंट की।

इसके अतिरिक्त, अनेक विख्यात भारतीय और विदेशी विद्वानों ने केन्द्र का दौरा किया, जिनमें निम्नलिखित शामिल थे : प्रोफेसर मसानोरी कोगा, सामाजिक अध्ययन संकाय, हितोत्सुबाशी विश्वविद्यालय, टोक्यो, जापान, प्रोफेसर लुई चुआंग-युआन, सह-प्रोफेसर, राजनीतिक अर्थ-व्यवस्था और उपाध्यक्ष, पाकिस्तान और बंगलादेश अध्ययन विभाग, दक्षिण एशियाई अध्ययन संस्थान, चीनी समाज विज्ञान अकादमी, प्रोफेसर फ्रेड आर० डलमायर, प्रोफेसर, सरकार, नोतरे डाम विश्वविद्यालय, अमरीका, डॉ० जीअचिन ओस्टरहेल्ड, हमबोल्ट विश्वविद्यालय, बर्लिन (ज० ज० ग०), श्री ब्रिअन थोम्पसन, ब्रिटिश हाई कमीशन, नई दिल्ली, डॉ० सिडनी मिन्त्ज, प्रोफेसर नृविज्ञान, जोह्न्स होपकिन्स विश्वविद्यालय, अमरीका, प्रोफेसर रवि चक्रवती, केलिफोर्निया स्टेट विश्वविद्यालय, अमरीका, डॉ० फ्रानकोइस ग्रोस, निदेशक, इकोले फ्रेनसाइज डी० ओरिएन्ट, पेरिस, श्रीमती लारिसा ए० कनयाजिन्सकया, निदेशक, आर्थिक विज्ञान तथा वरिष्ठ अनुसंधान स्टाफ सदस्य, अन्तर्राष्ट्रीय श्रम आन्दोलन संस्थान, विज्ञान अकादमी, सोवियत रूस।

केन्द्रीय/राज्य सरकार तथा अन्य एजेन्सियों को प्रदान की गई परामर्श/मार्गदर्शी सेवाएं

केन्द्र के अकादमिक स्टाफ सदस्यों ने केन्द्रीय और राज्य सरकार की विभिन्न आयोजना, विकास, परामर्श निकायों/समितियों तथा विभिन्न अन्य एजेन्सियों, जैसे कि भारतीय स्टेट बैंक, राज्य आयोजना बोर्ड, प० बंगाल सरकार, राष्ट्रीय भूमि आयोग, भारत सरकार, राज्य भूमि-उपयोग बोर्ड, पश्चिम बंगाल सरकार, परामर्शदाता बोर्ड, प० बंगाल राज्य गजेटीयर्स, कला तथा वाणिज्य अध्ययन बोर्ड, मणिपुर विश्वविद्यालय, शासी बोर्ड, भारतीदसन सामाजिक विज्ञान स्कूल, तिरुचिरापल्ली, प० बंगाल सरकार के सूचना तथा सांस्कृतिक कार्य विभाग के भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का एक खण्ड तैयार करने के लिए तथा पुरातत्त्वीय परामर्शदाता समितियां, शासी निकाय, आर० आर० एल० एफ० अनुसंधान सलाहकार समिति, सांस्कृतिक अनुसंधान संस्थान, केन्द्रीय सलाहकार समिति, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, प्रबन्ध समिति तथा अनुसंधान सलाहकार समिति, रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान, एन० के० बोस मानव विज्ञान अध्ययन स्मारक प्रतिष्ठान, वाराणसी, भारतीय मानवविज्ञान सोसायटी, कार्यकारी समिति, बिरला औद्योगिक तथा प्रौद्योगिकीय संग्रहालय, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद्, मानविकी अनुसंधान बोर्ड, उत्तर-पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, बम्बई का आलेख पेनल, स्नातकोत्तर कला अध्ययन संकाय परिषद्, कलकत्ता विश्वविद्यालय, प० बंगाल सरकार की स्वतन्त्रता संग्राम की एलबम प्रकाशित करने के लिए सलाहकार समिति, सूचना तथा सांस्कृतिक कार्य विभाग, शासी निकाय, वैचारिक तथा शब्दावली सम्बन्धी विश्लेषण के लिए समिति, अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय एसोसिएशन तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति विज्ञान एसोसिएशन की एक स्थायी समिति (महासचिव, अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, यूनेस्को के मनोनीत के रूप में), प० बंगाल की स्वतन्त्रता संग्राम सम्बन्धी स्थायी प्रदर्शनी के लिए सलाहकार समिति इत्यादि ।

पुस्तकालय

पुस्तकालय में पुस्तकों के 534 खण्ड और जोड़े गए जिन्हें मिलाकर पुस्तकों की कुल संख्या 8,503 हो गई। चालीस खण्ड उपहारस्वरूप प्राप्त हुए । 35 पत्रिकाओं के अलावा, जो उपहारस्वरूप और अथवा विनिमय के आधार पर प्राप्त हो रही हैं, 104 पत्रिकाओं का चन्दा पुन: भेजा गया, इनमें से 83 पत्रिकाएं भारत में और 56 विदेश में प्रकाशित होती हैं । पुस्तक-भिन्न सामग्री की दो सौ मदें भी प्राप्त की गईं ।

संक्षिप्त ग्रन्थसूचियों, समाचार-पत्र कतरनों, अन्तर-पुस्तकालय ऋण आधार पर पुस्तकों की सप्लाई, चुनी हुई पत्रिकाओं के सूचक तैयार करने और प्रतिलेखन की सुविधाएं जारी रहीं।

वर्ष के दौरान पुस्तकालय ने निम्नलिखित संस्थाओं के साथ आदान-प्रदान कार्यक्रम स्थापित किए : (1) चीनी समाज विज्ञान अकादमी (बैंजिग, चीन), और (2) विकास अध्ययन प्रभाग, (यूनेस्को, पेरिस)।

निधियां

प्राप्तियां	(लाख रुपये)	अदायगियां	(लाख रुपये)
भा० सा० वि०			
अ० प०	9.50	वेतन तथा भत्ते	15.70
प० बंगाल सरकार	9.50	अनुसंधान कार्यक्रम/सेमिनार आदि	0.26
विविध तथा अन्य	1.20	पुस्तकालय	0.95
परियोजनाएं तथा फैलोशिप	0.85	फर्नीचर तथा उपस्कर	0.34
		प्रकाशन तथा मुद्रण	0.30
		स्थापना तथा अन्य	2.50
		परियोजनाएं तथा फैलोशिप	0.80
जोड़	20.85		20.85

विकासशील सोसायटी अध्ययन केन्द्र, दिल्ली

महत्त्वपूर्ण घटनाएं

केन्द्र ने अपने अस्तित्व के 21वें वर्ष में प्रवेश किया और विकास समस्याओं तथा प्रश्नों के विभिन्न क्षेत्रों में इसके बहु-विषयक अनुसंधान प्रयासों में इसका योगदान जारी रहा। केन्द्र को प्रोफेसर सुखमय चक्रवर्ती के बहुमूल्य परामर्श तथा मार्गदर्शन का बहुत लाभ हुआ जो दो अवधियों तक शासी बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में कार्य करने के बाद सेवानिवृत्त हो गये। प्रोफेसर रविन्दर कुमार ने नए अध्यक्ष का पद सम्भाल लिया। केन्द्र में तीन वर्ष तक निदेशक के पद पर रहने के बाद प्रोफेसर बशीरुद्दीन अहमद ने केन्द्र छोड़ दिया और श्री डी० एल० सेठ उनके स्थान पर आ गए।

स्टाफ

यू० एन० विश्वविद्यालय की परियोजना "सामाजिक वास्तविकता के जन-जातीय बोध" पर दो वर्ष तक काम करने के बाद सुरेश शर्मा, अनुसंधान एसो-सिएट ने पुनः केन्द्र में कार्य ग्रहण कर लिया।

वर्ष के दौरान निम्नलिखित अनुसंधान/अध्ययन/परियोजनाएं पूरी की गई:

1. जयन्त बन्दोपाध्याय, "दून घाटी परियोजना, चरण-1"।
2. शंकर बोस, "भारत में स्त्रियों की राजनीतिक सहभागिता।"
3. गिरि देशिंगकर, "विकास के सम्बन्ध में एशियाई परिप्रेक्ष्य, चरण-1।"
4. गोपाल कृष्ण, "भारत में साम्प्रदायिक हिंसा : सदर के दंगों का एक मामला अध्ययन।"
5. रामाश्रय राय, "मानव अर्थ-व्यवस्था : एक संदर्शात्मक खोज, चरण-1।"
6. रामाश्रय राय, "विकास के लक्ष्य, प्रक्रियाएं तथा सूचक।"
7. सुरेश शर्मा, "साधन सम्बन्धी वैधता की समालोचना की दिशा में : मध्य भारत में जनजातीय बोध का एक मामला अध्ययन।"

जो अनुसंधान अध्ययन चल रहे थे उनमें निम्नलिखित शामिल हैं : (1) 1952 के बाद से राज्य चुनावों के सम्बन्ध में एक आंकड़ा स्रोत पुस्तक का संकलन, (2) हरिजन प्रबुद्ध वर्ग का अभिज्ञान निर्माण और आत्म-निर्धारण, (3) 1985 के लोक सभा चुनाव : ग्राम मामला अध्ययन, (4) उत्तर प्रदेश में बुनियादी शिक्षा, (5) हरियाणा विधान सभा चुनाव, (6) लोक सभा सदस्य : सामाजार्थिक पृष्ठभूमि, (7) गांधी और हमारा युग, (8) विश्व समस्याओं के सम्बन्ध में कला रिपोर्ट की स्थिति, (9) विधि की लक्षणात्मक समालोचना : वर्तमान ज्ञान मीमांसा के लिए इसके निहितार्थ, (10) दिल्ली की गन्दी बस्तियों का एक अध्ययन, (11) भावावेशों का एक परस्पर-सांस्कृतिक अध्ययन, (12) सर्वोदय : भारत और श्रीलंका में दो मामले अध्ययनों का एक तुलनात्मक अध्ययन, (13) विज्ञान, संस्कृति और हिंसा, (14) लोकप्रिय संस्कृति के स्तर पर पूर्व-पश्चिम झरोखे, (15) चीनी सैनिक प्रणाली, (16) शान्ति और रूपान्तरण, (17) चीन में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी, (18) आधारभूत संगठन और आन्दोलन : प्रजातान्त्रिक सिद्धांत के लिए निहितार्थ ।

प्रकाशन

केन्द्र के संकाय ने निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किए :

1. सुधीर कक्कड़, "आन्तरिक विश्व", जर्मन तथा स्पेनिश संस्करण ।
2. रामाश्रय राय, "स्वयं तथा समाज : गांधीवादी विचारधारा में एक अध्ययन ।"
3. रामाश्रय राय, टी० एम० विनोदकुमार और वी० बी० सिंह "ग्राम विकास में समस्याएं ।"

केन्द्र ने, "चीन रिपोर्ट" और "विकल्प" दो पत्रिकाओं का प्रकाशन जारी रखा ।

"चीन रिपोर्ट" एक द्विमासिक पत्रिका है जिसने प्रकाशन के 21वें वर्ष में प्रवेश किया है । इसमें मुख्यत: चीन की जानकरी, पूर्व एशियाई पर्यावरण और चीन-भारत सम्बन्धों पर लेख होते हैं । पत्रिका में लेख, समीक्षाएं और पुस्तक विवेचना शामिल होती है । इसमें, भारत-चीन सम्बन्धों और चीनी स्रोत सामग्री के अनुवादों का प्रलेखन भी सम्मिलित होता है । अब इसमें दक्षिण-पूर्व और दक्षिण एशियाई पर्यावरण को भी शामिल करके इसका विषय-क्षेत्र बढ़ाने का प्रस्ताव है ।

"विकल्प" केन्द्र की एक त्रैमासिक पत्रिका है जो विश्व-व्यवस्था संस्थान के सहयोग से प्रकाशित की जाती है । इसके प्रकाशन के दस वर्ष पूरे हो गये हैं । यह

एक नीति-प्रधान पत्रिका है जिसमें विश्व-व्यवस्था तथा विश्व निहितार्थों वाली क्षेत्रीय तथा विशिष्ट देशीय समस्याओं और नीतियों पर भी लेख व आलेख सम्मिलित होते हैं।

केन्द्र के संकाय ने भारतीय और विदेशीय पत्रिकाओं के लिए अनेक लेख प्रकाशनार्थ भेजे व अनेक खण्डों का सम्पादन किया।

सेमिनार, व्याख्यान तथा सम्मेलन

भ्रमणकारी विद्वानों द्वारा केन्द्र में आयोजित सेमिनारों और संकाय सदस्यों द्वारा विभिन्न अवसरों पर दिए गए व्याख्यानों तथा संगोष्ठियों से, विकास संबंधी समस्याओं के बारे में संवाद और चर्चाओं के क्षेत्र को व्यापक बनाने के केन्द्र के प्रयासों को बल मिला। इसके अतिरिक्त केन्द्र के चीन वर्ग ने अनेक सेमिनार आयोजित किए जिनमें केन्द्र के संकाय तथा दिल्ली में व अन्यत्र रहने वाले चीनी विद्वानों ने भाग लिया।

वर्ष के दौरान केन्द्र द्वारा निम्नलिखित सेमिनार आयोजित किए गए : (1) मुहम्मद शमसुल हक, बंगलादेश नीति अध्ययन संस्थान, "नीति अध्ययनों का क्षेत्र", (2) जोल बरकन, आईओवा विश्वविद्यालय, "राजनीतिक दायित्व और ग्रामीण विकास नीति', (3) ब्रूस मजलिश, मेसाच्यूसैट्स प्रौद्योगिकी संस्थान, "मार्क्स क्यों", (4) कपिल राज, पेरिस, "भारतीय समाज में विज्ञान की भूमिका", (5) स्टीवन एम० लुकेश, सम्पादक, राजनीतिक अध्ययन, वाशिंगटन, "प्राधिकार तथा वैधता", (9) क्लाउडे अल्वारेस, रस्टिक, गोआ, "आपरेशन फ्लड", (7) एल्बर्ट ओ० हीर्शमैन, उच्च अध्ययन संस्थान, प्रिंस्टन, "प्रियोक्ति से पुनरुक्ति तक", (8) अगेहानन्द भारती, सैथरीकूज विश्वविद्यालय, न्यूयार्क, "दक्षिण एशिया में आक्रमण के मानवविज्ञान की दिशा में", (9) अत्तिला अघ, हंगरी अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध संस्थान, "विश्व संरचना तथा राष्ट्र निर्माण", (10) रावमुण्डो पाणिकर, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, सान्ता बारबरा, "प्रौद्योगिकी की मृगतृष्णा।"

शिक्षण तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम

सत्रह डाक्टोरल उम्मीदवारों ने केन्द्र के संकाय के मार्गदर्शन का लाभ उठाया। इस वर्ष ऐसे दो डाक्टोरल उम्मीदवारों ने अपनी पी-एच० डी० डिग्री प्राप्त की व एक अन्य उम्मीदवार ने अपना शोध निबन्ध प्रस्तुत कर दिया। इन सत्रह उम्मीदवारों में से दस भा० सा० वि० अ० प० की डाक्टोरल फैलोशिप प्राप्तकर्ता थे।

केन्द्र, सामाजिक विकास परिषद् के सहयोग तथा भा० सा० वि० अ० प० की वित्तीय सहायता से, सर्वेक्षण, अनुसंधान, रीतिविज्ञान और आंकड़ा संसाधन

में अध्येताओं को प्रशिक्षण देने के लिए अनुसंधान सुविधा (सर्वेक्षण अनुसंधान प्रशिक्षण केन्द्र) का संचालन करता है। इस वर्ष भी तीन-तीन सप्ताह के दो पाठ्यक्रम—एक आंकड़ा संसाधन के सम्बन्ध में (मई 1984) और दूसरा अनुसंधान रीतिविज्ञान में (नवम्बर 1984)—आयोजित किए गए, जिनमें देश भर के इक्यावन प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया।

परामर्श तथा मार्गदर्शन

अपनी संसाधन सीमाओं के अन्दर केन्द्र ने हमेशा ही आनुभाविक अनुसंधान कार्य में लगे अध्येताओं को अपने आंकड़े स्रोत उपलब्ध कराकर तथा भा० सा० वि० अ० प० की मार्गदर्शन व परामर्श सेवाओं के जरिए सहायता पहुंचाकर उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास किया है। इस वर्ष लगभग छः अध्येताओं ने इन सेवाओं का लाभ उठाया। इसके अलावा अनेक अन्य अध्येताओं ने भा० सा० वि० अ० प० योजना से अलग अपनी-अपनी अनुसंधान समस्याओं के बारे में केन्द्र के संकाय से परामर्श किया।

विगत की तरह, केन्द्र के संकाय को, अनेक अनुसंधान संस्थाओं, अकादमिक समितियों की शासी निकायों और समाज विज्ञान संगठनों और पत्रिकाओं के सम्पादकीय बोर्डों में प्रतिनिधित्व प्राप्त है। कुछ संकाय सदस्य, सरकार तथा स्वैच्छिक एजेन्सियों व यू० एन० यू०, यूनेस्को और यूनिसेफ जैसी यू० एन० एजेन्सियों के साथ परामर्शदाता के रूप में भी काम कर रहे हैं।

विकासशील सोसायटी अध्ययन केन्द्र

अनुरक्षण अनुदान

31-3-1984 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए प्राप्ति और अदायगी लेखा

प्राप्तियां	रुपए	अदायगियां	रुपए	रुपए
1	2	3	4	5
भा० सा० वि० अ० प० से प्राप्त अनुदान	8,05,428.70	**1. स्थापना**		
जमा—विविधि आय	46,272.51	अनुसंधान स्टॉफ का वेतन	2,46,660.00	
शुद्ध घाटा-वर्ष के दौरान	22,514.02	सहायक स्टाफ का वेतन	59,563.80	
		महंगाई वेतन	85,149.40	
		अतिरिक्त महंगाई भत्ता	1,50,382.50	
		मकान किराया भत्ता	68,875.91	
		नगर प्रतिकर भत्ता	16,873.17	
		निदेशक का भत्ता	7,500.00	

प्राप्तियां	रुपये	अदायगियां	रुपये	रुपये
		तदर्थ मंहगाई भत्ता	35,397.50	
		अन्तरिम सहायता	17,230.00	
		एस०पी०एफ० में केन्द्र का अंशदान	31,975.00	
		उपदान	19,410.00	
		साइकिल भत्ता	900.00	
		चिकित्सा	7,800.00	
		स्थापना	24,625.14	
				7,72,342.42
		2. लेखन सामग्री		3;068.49
		3. तार व डाकखर्च		
		तार	1,489.00	
		डाकखर्च	3,397.75	
				4,886.75

प्राप्तियां	रुपये	आयगियां	रुपये	रुपये
		4. यात्रा और सवारी भत्ता		
		यात्रा	3,170.45	
		स्थानीय सवारी	3,009.06	
		वाहन चलाने की लागत	9,645.78	
				15,825.29
		5. फुटकर		
		टेलीफोन	9,206.16	
		बिजली	13,400.10	
		पानी	4,665.19	
		लेखा परीक्षक की फीस	3,500.00	
		अन्य	33,854.16	64,625.61
		6. सम्पत्ति कर		8,968.00
		7. परिसम्पत्तियां		2,926.00
जोड़ :	8,74,215.23			8,74,215.23

सामाजिक विकास परिषद्, नई दिल्ली

महत्वपूर्ण घटनाएं

प्रारम्भ से ही परिषद् के एक सदस्य के रूप में इससे सम्बद्ध प्रोफेसर के० ए० नक्वी की अप्रैल 1984 में मृत्यु हो गई। इस रिक्त स्थान को प्रोफेसर एम० एस० ए० राव को एक सदस्य के रूप में नियुक्त करके भरा गया।

अनुसंधान

निम्नलिखित अनुसंधान अध्ययन पूरे हो गए :

(1) सार्वजनिक उद्यमों के स्थान और क्षेत्रीय विकास : बी० एच० ई० एल० यूनिटों का एक मामला—भा० सा० वि० अ० प० द्वारा वित्त पोषित। (2) छोटे किसानों के विशेष सन्दर्भ में कृषि उधार का अन्तर-सम्बन्ध और कृषि उत्पादन—भा० सा० वि० अ० प० द्वारा वित्त पोषित। (3) कमजोर वर्गों की वित्त-व्यवस्था : सी एस डी तथा बैंक ऑफ बड़ोदा के बीच सहयोगात्मक दृष्टि-कोण—बी ओ बी द्वारा वित्त पोषित। (4) अनुसूचित जातियों के कृषकों के बीच कृषि प्रथाएं—गृह मंत्रालय द्वारा स्वीकृत। (5)हरियाणा में समाकलित ग्राम विकास कार्यक्रम का मूल्यांकन—ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार। (6) भारत में बीच में ही पढ़ाई छोड़ देने वालों की संख्या तथा कारणों का अध्ययन : एक डेस्क अध्ययन—यूनिसेफ द्वारा वित्त पोषित। (7) बच्चों के त्याग और निराश्रितों के सम्बन्ध में डेस्क अध्ययन—यूनिसेफ द्वारा वित्त पोषित। (8) भारत में कामकाजी बच्चों की समस्या : एक डेस्क अध्ययन—यूनिसेफ द्वारा वित्त पोषित।

पिछले दो वर्षों के दौरान परिषद् के दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय के अनुसंधान कार्यकलापों में वृद्धि हुई है। शुरू किए गए अधिकांश अध्ययनों/परियोजनाओं में मुख्य रूप से चार वर्गों, अर्थात् (1) निर्धन, (2) असुविधा प्राप्त, (3) असुरक्षित, (4) विकलांग, के अन्तर्गत विभाजित, समाज के कमजोर वर्गों के सामाजार्थिक कल्याण पर जोर दिया गया। निर्धनों में शहरी और ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों के लोग शामिल थे, अर्थात् गन्दी बस्तियों में रहने वाले लोग, छोटे तथा सीमान्त किसान, मछेरे इत्यादि। असुविधाप्राप्त लोगों में जनजातियां, अनुसूचित जातियां तथा पिछड़े वर्ग शामिल हैं। "असुरक्षित" के अन्तर्गत स्त्रियां, बच्चे और वृद्ध

लोग शामिल हैं। "विकलांग" के अन्तर्गत नेत्रहीन, बहरे, शारीरिक रूप से विकलांग तथा मानसिक रूप से अवरुद्ध व्यक्ति शामिल हैं।

वर्ष 1984-85 के दौरान निम्नलिखित अनुसंधान अध्ययन/परियोजनाएं पूरी की गईं: (1) आन्ध्र प्रदेश के गुन्तूर जिले में फिल्टर पाइन्टों का विगत मूल्यांकन अध्ययन—राष्ट्रीय कृषि तथा ग्रामीण विकास बैंक द्वारा वित्त पोषित। (2) आन्ध्र प्रदेश के तीन जिलों में लघु ग्रामीण विद्युत सहकारिताएं गठित करने की सम्भावनाओं का अध्ययन—आ० प्र० राज्य विद्युत बोर्ड द्वारा वित्त पोषित। (3) पांच राज्यों में मत्स्य सहकारिताओं का एक अध्ययन—राष्ट्रीय सहकारिता विकास निगम द्वारा वित्त पोषित—अध्ययन का आन्ध्र प्रदेश अंश दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा किया गया था।

एक महत्त्वपूर्ण घटना, भारतीय स्टेट बैंक की पहल पर "ग्रामीण विकास के लिए संस्थात्मक वित्त" के सम्बन्ध में एक पीठ-एवं-परियोजना की मंजूरी थी।

उपरोक्त क्रम संख्या 2, 4 और 5 को छोड़कर सभी अध्ययनों के सम्बन्ध में रिपोर्टें मिमिओग्राफ रूप में तैयार की गईं।

हैदराबाद शाखा में निम्नलिखित अध्ययन/परियोजनाएं चल रही थीं: (1) आन्ध्र प्रदेश और राजस्थान में बाल विवाह की समस्या के सम्बन्ध में एक वैज्ञानिक अध्ययन—समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार। (2) हैदराबाद और सिकन्दराबाद की चुनी हुई गन्दी बस्तियों में अनुसूचित जातियों के बीच रोजगार तथा बेरोजगारी की पद्धति—गृह मंत्रालय। (3) आंध्र प्रदेश में ग्रामीण विद्युतीकरण कार्यक्रमों का मूल्यांकन—आ० प्र० राज्य विद्युत बोर्ड द्वारा वित्त पोषित। (4) विद्युतीकृत तथा गैर-विद्युतीकृत क्षेत्रों में विकास विभेदक—ग्रामीण विद्युतीकरण निगम द्वारा वित्त पोषित। (5) हैदराबाद और सिकन्दराबाद की चुनी हुई 16 गन्दी बस्तियों में स्त्रियों और बच्चों की सामाजार्थिक स्थिति। (6) हैदराबाद और सिकन्दराबाद की दस चुनी हुई गन्दी बस्तियों में पोषण हस्तक्षेप कार्यक्रम का प्रभाव।

वर्ष 1984-85 के दौरान दिल्ली में निम्नलिखित परियोजनाएं/अध्ययन चल रहे थे:

(1) सहकारी तिलहनों के विपणन तथा परिशोधन का अध्ययन-राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम द्वारा वित्त पोषित। (2) भू तथा भू-आधारित संसाधनों के साथ जनजातीय समुदायों के परम्परागत सम्बन्धों के सन्दर्भ में संस्थात्मक वित्त की समस्याएं—राष्ट्रीय कृषि तथा ग्रामीण विकास बैंक द्वारा वित्त-पोषित। (3) भारत के मध्य भाग में जनजातीय क्षेत्रों में साम्प्रदायिक भूमि संसाधनों पर सर्वेक्षण एवं बस्ती परिचालनों और विकास एवं प्रशासनिक उपायों का प्रभाव—फोर्ड प्रतिष्ठान द्वारा वित्त पोषित। (4) अरुणाचल प्रदेश के हस्तशिल्पों का

तकनीकी-सांस्कृतिक अध्ययन—विकास आयुक्त, हस्तशिल्प, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित। (5) आई सी डी एस पर्यवेक्षकों के रोजगार प्रशिक्षण के सम्बन्ध में मूल्यांकन अध्ययन—राष्ट्रीय सार्वजनिक सहयोग तथा बाल विकास संस्थान। (6) बम्बई तथा कलकत्ता महानगरों में गृहहीन बच्चों का अध्ययन—यूनिसेफ द्वारा वित्त पोषित।

हैदराबाद स्थित परिषद् के दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय में एक अन्य महत्त्वपूर्ण घटना, यू० के० के समुद्रपारीय विकास प्रशासन की हैदराबाद गन्दी बस्ती सुधार परियोजना से सम्बन्धित है जो भौतिक तथा सामाजिक निवेशों द्वारा हैदराबाद और सिकन्दराबाद के दो नगरों में 207 गन्दी बस्तियों को ऊंचा उठाने के सम्बन्ध में थी। हैदराबाद नगर निगम द्वारा परिषद् के हैदराबाद कार्यालय को, उपरोक्त परियोजना में सभी स्तरों पर इस कार्यक्रम में कार्यरत कार्मिकों के प्रशिक्षण, मामला अध्ययन आदि सहित समवर्ती मूल्यांकन के लिए एक एजेन्सी के रूप में चुना गया है।

सेमिनार/कार्यशालाएं और प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय हैदराबाद द्वारा "हैदराबाद गन्दी बस्ती सुधार परियोजना" पर 3 सितम्बर 1984 को एक कार्यशाला आयोजित की गई। चर्चा के विषय, परियोजना के डिजाइन तथा इसके उद्देश्य, इसके कार्यान्वय की प्रक्रिया, मूल्यांकन की अपेक्षा रखने वाले सामाजार्थिक कारण तथा मूल्यांकन की पद्धतियों से सम्बन्धित थे।

परिषद् के हैदराबाद स्थित कार्यालय ने गन्दी बस्ती सुधार परियोजना में लगे हैदराबाद नगर निगम के इंजीनियरों, डॉक्टरों, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं तथा अन्य उच्च पदाधिकारियों के लिए कार्यशालाएं आयोजित कीं।

दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय ने हैदराबाद नगर विकास प्राधिकरण के अधिकारियों के लिए एक अल्पकालीन प्रशिक्षण एवं अनुस्थापन पाठ्यक्रम आयोजित किया। इसमें भाग लेने वालों में मध्य स्तरीय अधिकारीगण, इंजीनियर, सामाजिक कार्यकर्ता और प्रशासक शामिल थे।

आलोच्य अवधि के दौरान, "इनिडा—एस आर टी सी" के अन्तर्गत प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। समाज विज्ञानियों के लिए आंकड़ा संसाधन तकनीकों के सम्बन्ध में पहला पाठ्यक्रम मई-जून 1984 में तथा सर्वेक्षण अनुसंधान विधियों के सम्बन्ध में दूसरा पाठ्यक्रम नवम्बर-दिसम्बर 1984 में आयोजित किया गया।

परामर्श सेवाएं

परिषद् का आंकड़ा संसाधन यूनिट, संगणक कार्यक्रम तथा विभिन्न अनुसंधान संस्थानों और विश्वविद्यालयों के अनुसंधान अध्येताओं को संगणक कार्यक्रम तथा आंकड़ा विश्लेषण सम्बन्धी सुविधाएं प्रदान करता है। वर्ष के दौरान परिषद् ने चालीस से अधिक पी० एच० डी० छात्रों को ऐसी सुविधाएं प्रदान कीं और उनके आंकड़ा विश्लेषण कार्य में उनकी मदद की।

भा० सा० वि० अ० प० की वरिष्ठ फैलोशिप

राजशाही विश्वविद्यालय, बंगलादेश के भूतपूर्व कुलपति तथा विश्वभारती विश्वविद्यालय में एक भ्रमणकारी प्रोफेसर डॉ० मज्हरुल इस्लाम, जिन्हें "सामाजिक परिवर्तन तथा लोकगाथा--बंगलादेश समेत गंगा की घाटी" पर कार्य करने के लिए जनवरी 1984 में एक वरिष्ठ फैलोशिप प्रदान की गई थी, ने उपरोक्त विषय पर अपना कार्य जारी रखा। भा० सा० वि० अ० प० ने उनकी फैलोशिप एक वर्ष के लिए और बढ़ा दी है, अब यह 31-12-1985 तक चलेगी।

दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद

कार्यकारी अध्यक्ष तथा अवैतनिक निदेशक डॉ० बी० वेंकटापैय्या, क्षेत्रीय कार्यालय को अपना सर्वोपरि मार्गदर्शन तथा दिशा-निर्देश प्रदान करते रहे और वह प्राय: हैदराबाद का दौरा करते रहते हैं। संयुक्त निदेशक (क्षेत्रीय) डॉ० के० एस० भट ने हैदराबाद कार्यालय की देखभाल करना जारी रखा। इस कार्य में एक वरिष्ठ अनुसंधान फैलो, एक कनिष्ठ अनुसंधान फैलो, अनुसंधान सहायक व अन्य प्रशासनिक तथा सहायक स्टाफ उनकी मदद करता है।

कार्यान्वित की जा रही विभिन्न परियोजनाओं/अध्ययनों के सम्बन्ध में कार्य की प्रगति की समीक्षा करने के लिए पिछले वर्ष स्थापित सलाहकार समिति की नियमित अन्तरालों पर बैठकें होती रहती हैं और वह सम्बद्ध परियोजना प्रमुखों को आवश्यक मार्गदर्शन और परामर्श देती रहती है।

भा० सा० वि० अ० प० अनुदान की मदद से हैदराबाद में स्थापित पुस्तकालय का और अधिक पुस्तकें तथा पत्रिकाएं खरीदकर विस्तार किया गया।

निधियां

दिल्ली और हैदराबाद दोनों ही स्थानों पर परिषद् के स्टाफ तथा अन्य अवस्थापना सम्बन्धी सुविधाओं आदि पर वर्ष 1984-85 के दौरान लगभग

9.33 लाख रुपये खर्च हुए।

वर्ष 1984-85 के दौरान दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र के कार्यालय, हैदराबाद पर उसके अनुरक्षण और विकास के लिए लगभग 2.56 लाख रुपये का व्यय हुआ, जो इस प्रकार है :

निधियां

प्राप्तियां	(लाख रुपये)	अदायगियां	(लाख रुपये)
भा० सा० वि० अ० प०		वेतन/मानदेय	1.65
बकाया अनुदान		पुस्तकालय	0.22
आगे लाया गया	0.06	उपस्कर	0.10
1984-85 के दौरान	2.34	किराया, दरें तथा कर	0.08
प्राप्त परिषद् के अपने	0.16	पी० ओ० एल० वाहन अनुरक्षण	0.11
स्रोत		अन्य स्थापना व्यय	0.25
			2.41
		गन्दी बस्ती अध्ययन	0.15
जोड़ :	2.56		2.56

गांधी अध्ययन संस्थान, वाराणसी

महत्वपूर्ण घटनाएं

एक विख्यात हिन्दी लेखक और गांधीवादी विचारक श्री जैनेन्द्र कुमार ने 21 नवम्बर, 1984 को "गांधीजी का आविष्कार" विषय पर गांधी स्मारक व्याख्यान दिया।

स्टाफ के बीच महत्वपूर्ण परिवर्तन

संस्थान के निदेशक डा० के० के० सिंह ने संस्थान की सेवाओं से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर, संस्थान के एक वरिष्ठ प्रोफेसर, प्रोफेसर नागेश्वर प्रसाद, कार्यवाहक निदेशक के रूप में काम कर रहे हैं।

अनुसंधान कार्यकलाप

आलोच्य अवधि के दौरान निम्नलिखित परियोजनाएं पूरी हो गई: डॉ० के० के० सिंह, "अनुसूचित जातियों का एक तुलनात्मक अध्ययन : आर्थिक कार्यक्रम में भाग लेना और भाग न लेना"' डॉ० बी० पी० पांडे, "सामान्य सम्पत्ति संसाधनों की उपयोगिता की पद्धति", प्रोफेसर राजा राम शास्त्री, भ्रमणकारी प्रोफेसर तथा एसोसिएट, "धर्म तथा अहिंसा", श्री धर्मपाल, भ्रमणकारी प्रोफेसर, "गांधीजी के विचारों की जड़ें", और डॉ० जी० एस० दुबे, "भारत में गरीबी : कारण और निवारण"।

निम्नलिखित विनिबन्ध श्रृंखला तैयार की गई : (1) बी०पी० पांडे, "उ०प्र० में कुटीर और ग्राम उद्योगों का एक अध्ययन", (2) एम० शोवेब, "हरिजनों के बीच शिक्षा तथा गतिशीलता", (3) सुनील सहस्रबुद्धे, "विज्ञान की एक उभरती हुई आलोचना", (4) जी० एस० दुबे, "माथेरान पहाड़ी नगर : श्रमिकों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन एवं विकास योजना" (हिन्दी), (5) एल० एन० चन्दोला, "उद्योग के विभिन्न आय वर्गों की खपत पद्धति : डीजल इन्जन कारखाना, वाराणसी का एक अध्ययन", (6) बी० एन० जुयाल, "एक कृषक समाज में शोषण : बांदा जिले (उ० प्र०) में पुलिस ज्यादतियों का अध्ययन", (7) वी० आर० दत्ता, "शहरी शासन तथा राजनीति में निर्णय लेना", (8) एस० एस० सिंह और एस० सुन्दरम्, "अभिज्ञान का निर्धारण : हरिजन

प्रबुद्ध वर्ग का अध्ययन", (9) आर० के० अवस्थी, "शहरी विकास और नगर निगम की भूमिका : कानपुर नगर का एक अध्ययन", (10) नागेश्वर प्रसाद, "ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यों का विकेन्द्रीकरण", (11) डी० आर० यादव, "पूर्वी उत्तर प्रदेश में कमजोर वर्गों पर भू-सुधारों का आर्थिक प्रभाव", और (12) आर० बी० सिंह, "भारत में निर्माण कार्य का दर्शन और विषय-वस्तु ।

निम्नलिखित नई अनुसंधान परियोजनाएं शुरू की गईं : (1) राजनीति तथा भूमि सुधार, (2) प्रदूषण तथा जागरूकता की सामाजिक लागत, (3) अव्यवस्थित क्षेत्र में रोजगार की स्थितियां—तैयारशुदा वस्त्र उद्योग में महिला श्रमिकों का एक अध्ययन, (4) वाराणसी के मुसलमानों में शिक्षा, और (5) मुख्य सेविकाओं द्वारा आंगनवाड़ी के मध्य स्तरीय पर्यवेक्षण की प्रभावकारिता ।

सेमिनार/सम्मेलन

संस्थान ने दो सेमिनार आयोजित किए : (1) "गांधी; जयप्रकाश और लोहिया : क्रांति की कल्पना और साधन", जयप्रकाश नारायण और डॉ० राम मनोहर लोहिया के जन्म दिन के अवसर पर 11-12 अक्तूबर, 1984 को, और (2) 3 जनवरी, 1985 को "सातवीं पंचवर्षीय योजना" पर । इसके अतिरिक्त, संस्थान के संकाय सदस्यों ने विभिन्न राष्ट्रीय सेमिनारों और सम्मेलनों में 9 पत्र प्रस्तुत किए ।

प्रकाशन

संस्थान ने "इण्टर डिसिप्लीन" खण्ड सोलह, अंक एक और दो, 1984 का प्रकाशन किया । संकाय सदस्यों द्वारा विभिन्न समाज विज्ञान पत्रिकाओं में तेरह लेख और पत्र प्रकाशित किए गए ।

पुस्तकालय

संस्थान के पुस्तकालय में विभिन्न समाज विज्ञानों तथा मानविकी विषयों पर 17,413 खण्ड हैं । 1984-85 के दौरान 314 खण्ड जोड़े गए । वर्ष के दौरान 122 भारतीय और विदेशी पत्रिकाएं मंगाई गईं अथवा संस्थान की पत्रिका के साथ आदान-प्रदान के फलस्वरूप प्राप्त की गईं ।

विद्वानों के दौरे

(1) विटनबर्ग, ओहिआ विश्वविद्यालय, अमरीका के प्रोफेसर विस्वाल्डिस क्लाइव के नेतृत्व में प्रोफेसरों के एक दल ने 28 जनवरी, 1984 को संस्थान का दौरा किया, (2) अन्तर्राष्ट्रीय विकास के लिए नार्वेयाई एजेन्सी श्री ग्रेड

वाल्सटोर्म और स्त्री विकास अध्ययन केन्द्र, दिल्ली की डॉ० गोविन्द केलकर ने "लड़कियों के लिए गैर-औपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के वास्ते सहायता प्रदान करने वाले गैर-सरकारी संगठनों और स्थानीय संस्थाओं की भूमिका" पर चर्चा करने के लिए 2-3 अगस्त 1984 को संस्थान का दौरा किया, (3) आचार्य जी० एस० दाण्डेकर ने 17 अगस्त 1984 को शिक्षा पर एक वार्ता दी, (4) श्री बाल विजय भाई, एक प्रख्यात सर्वोदय विचारक ने 1 अक्तूबर 1984 को "अहिंसा और संघर्ष संकल्प" पर एक वार्ता दी, (5) श्री जैनेन्द्र कुमार, एक विख्यात हिन्दी लेखक और गांधीवादी विचारक, 23 नवम्बर 1984, (6) डॉ० एम० डी० श्रीनिवास और डॉ० अशोक झुनझुनवाला, पी० पी० एस० टी० ने 11 दिसम्बर 1984 को "आधुनिक विज्ञान के स्वदेशी विचार की दिशा में" पर वार्ता दी, और (7) श्री मनमोहन चौधरी, एक विख्यात सर्वोदय-विचारक तथा संस्थान के प्रबन्धक मण्डल के एक वरिष्ठ सदस्य ने अमरीका के दौरे से वापस आने पर अमरीकी दौरे के अपने अनुभवों के बारे में व्याख्यान दिया।

"धर्म और अहिंसा" व्याख्यान माला के अन्तर्गत तीन व्याख्यान आयोजित किए गए: (1) श्री मौलाना शफी-उर-रहमान अंसारी, "इस्लाम और अहिंसा", 9 अगस्त 1984, (2) श्री सुरिन्दर सूरी, "सिख धर्म और अहिंसा", 28 अगस्त 1984, (3) संत तरलोक सिंह, "सिख धर्म"।

वित्त

आलोच्य वर्ष के दौरान निम्नलिखित सहायता अनुदान प्राप्त हुए :

निधियां

प्राप्तियां	(लाख रुपये)	अदायगियां	(लाख रुपये)
भा० सा० वि० अ० प०	6.23	वेतन तथा भत्ते	10.31
उत्तर प्रदेश सरकार	5.50	मुद्रण तथा लेखन सामग्री	0.18
संस्थान के अपने संसाधन	0.43	डाकखर्च, टेलीफोन तथा तार	0.16
परियोजनाएं	0.06	भा० म०/दै० भत्ता	0.52
उत्तर प्रदेश सरकार		वाहन	0.12
(अनावर्ती अनुदान)	1.14	पुस्तकालय	0.57
आय की तुलना में		कैम्पस अनुरक्षण	0.24
व्यय का आधिक्य	0.51	सेमिनार तथा परियोजनाएं	0.11

प्राप्तियां	(लाख रुपये)	अदायगियां	(लाख रुपये)
		फुटकर	0.44
		पत्रिका	1.15
		परियोजनाएं	0.11
		पुस्तकालय भवन का निर्माण	0.95
	जोड़ : 13.86		13.86

गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ

1. संस्थान का भवन

वर्ष के दौरान एक महत्त्वपूर्ण घटना, संस्थान के लिए भवन का निर्माण थी जो मार्च 1985 के अन्त तक ऐसी स्थिति में पहुंच गया था कि वहां अप्रैल 1985 में कार्यालय ले जाने की योजना तैयार करना संभव हो गया। पांच मंजिली इमारत में संस्थान के मुख्य भवन में संकाय, अनुसंधान तथा प्रशासनिक स्टाफ कार्यालय के लिए 51 कमरे और संगणक व अन्य सुविधाएं हैं, तीन सेमिनार एवं समिति कक्ष और पुस्तकालय हॉल तथा एक तीन मंजिला छात्रावास एवं अतिथि-गृह है जिसमें दस होस्टल कमरे तथा आठ अतिथि कक्ष हैं, साथ ही रसोई, भोजन तथा मनोरंजन स्थल की भी सुविधा है। यह भवन मार्च 1985 तक उपयोग के लिए तैयार था तथा निदेशक का निवास स्थान, 9 दो-दो कमरे वाले मकान तथा 9 एक-एक कमरे वाले और 7 एक-एक कमरे वाले यूनिटों वाली रिहायशी इकाइयों को अन्तिम रूप दिया जा रहा था। मार्च 1985 में भवनों का उद्घाटन कराने के लिए समारोह आयोजित किया गया। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी ने 30 मार्च 1985 को भवन का उद्घाटन किया। इस समारोह की अध्यक्षता, संस्थान के अध्यक्ष श्री पी० एन० हकसर ने की थी। समारोह में भा० सा० वि० अ० प० का प्रतिनिधित्व, परिषद् के सदस्य-सचिव डॉ० डी० डी० नरूला ने किया था। उत्तर प्रदेश राजकीय निर्माण निगम द्वारा निर्मित संस्थान के भवन की अनुमानित लागत लगभग 127 लाख रुपये है और फर्नीचर व उपस्कर की लागत 20 लाख रुपये आंकी गई है। निर्माण लागत तथा भवन को सज्जित करने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने संस्थान को 73 लाख रुपये और भा० सा० वि० अ० प० ने 63 लाख रुपये का अनुदान दिया है।

2. पुस्तकालय

संस्थान के पुस्तकालय ने वर्ष के दौरान लगभग 1,600 ग्रन्थ खरीदे जिन्हें मिलाकर पुस्तकालय में पुस्तकों की कुल संख्या 10,200 हो गई। पुस्तकालय इस समय 145 पत्र-पत्रिकाएं (66 भारतीय व 79 विदेशी) मंगा रहा है। 1977 से अब तक के खण्ड (जबकि संस्थान के पुस्तकालय की स्थापना की गई थी) खरीदे गए हैं। इसके अलावा, कुछ महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं के पिछले खण्ड भी प्राप्त किए गए हैं।

पुस्तकालय को, विश्व बैंक तथा आर्थिक सहयोग और विकास संगठन की "भण्डारण पुस्तकालय योजना" में शामिल कर लिया गया है, जिसके अन्तर्गत उनके प्रकाशन उपहार स्वरूप प्राप्त हो रहे हैं।

3. अनुसंधान

संस्थान द्वारा शुरू किए गए अनुसंधान अध्ययनों में विविध प्रकार के विषय शामिल हैं लेकिन उनमें से अधिकांश विषय उत्तर प्रदेश राज्य का इसके विभिन्न क्षेत्रों और विषयों में प्रगति से सम्बन्धित थे। विभिन्न परियोजनाओं के अध्ययन किए गए प्रमुख पहलू, कृषि और ग्रामीण विकास, क्षेत्रीय विकास और आयोजना, औद्योगीकरण तथा सामाजिक व भौतिक अवस्थापना से सम्बद्ध थे।

वर्ष के दौरान निम्नलिखित अनुसंधान अध्ययन पूरे किए गए : (1) निरंजन पंत, "उत्तर प्रदेश में संगठन प्रौद्योगिकी तथा सिचाई प्रणाली का कार्य निष्पादन", (2) जी० पी० मिश्रा, "बदलती हुई कृषि व्यवस्था में ग्रामोद्योग", (3) निरंजन पंत, "सामूहिक ट्यूबवैल : पूर्वी गंगा के मैदानों में कृषकों की अत्यन्त लघु सिचाई का एक संगठनात्मक विकल्प"।

पहले प्रारम्भ किए गए निम्नलिखित अध्ययन प्रगति के विभिन्न स्तरों पर थे : (1) टी० एस० पपोला और वी० एन० मिश्रा, "उत्तर प्रदेश में कृषि विकास तथा इसकी क्षमता", (2) टी० एस० पपोला और एम० एस० अशरफ, "भारत में हस्त-मुद्रण उद्योग का अर्थशास्त्र", (3) टी० एस० पपोला और जी० पी० मिश्रा, "कृषि में उत्पाद वृद्धि, रोजगार और मजदूरी", (4) टी० एस० पपोला, जी० पी० मिश्रा और आर० टी० तिवारी, "उत्तर प्रदेश और राजस्थान के सूखा-प्रधान क्षेत्रों में सामाजार्थिक स्थितियों का बैंच-मार्क अध्ययन", (5) बी० के० जोशी, "वन, मनुष्य और विकास : उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों के विशेष सन्दर्भ में एक सामाजार्थिक अध्ययन", (6) टी० एस० पपोला और आर० सी० सिन्हा, "उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था के सम्बन्ध में आंकड़ों के स्रोतों का प्रलेखन", (7) हिरणमय धर, "बिहार में कृषि परिवर्तनों की स्थिति", (8) बी० के० जोशी तथा पी० एन० पांडे, "उत्तराखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों में ऊर्जा उपयोग"।

वर्ष के दौरान निम्नलिखित नए अध्ययन शुरू किए गए : (1) टी० एस० पपोला, आर० सी० सिन्हा और वी० वी० सुब्रमण्यम (टीपीसीओ), "लखनऊ तथा कानपुर नगरों में उत्प्रवास के सामाजार्थिक पहलू", (2) आर० टी० तिवारी, "उत्तर प्रदेश में ग्रामोद्योग तथा ग्राम विकास", (3) टी० एस० पपोला और आर०टी० तिवारी, "ग्रामीण भूमिहीन रोजगार गारंटी कार्यक्रम : एक मूल्यांकन", (4) टी० एस० पपोला, "ग्रामीण औद्योगीकरण : भारत में कृषि विकास के साथ इसके सम्बन्ध का अध्ययन", (5) टी० एस० पपोला और पी० एन० पाण्डे,

"खादी में स्त्री श्रमिक : उत्तर प्रदेश में कताई वाली स्त्रियों की आर्थिक स्थिति और स्तर का अध्ययन", (6) जी० पी० मिश्रा, "उत्तर प्रदेश में भूमि, उत्पादक तथा कृषि : भारत में उपनिवेशीय शासन के सन्दर्भ में एक अध्ययन", (7) टी० एस० पपोला और ए० जोशी, "औद्योगिक विकास के लिए आर्थिक सहायता : उत्तर प्रदेश में उद्योगों पर प्रोत्साहनों के प्रभाव का एक अध्ययन" ।

डाक्टोरल छात्रों के लिए मार्गदर्शन तथा फैलोशिप

निम्नलिखित दो छात्रों को, जिन्होंने कुछ अवधियों के लिए फैलोशिप के आधार पर संस्थान में काम किया था, वर्ष के दौरान कुमायुं विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० डिग्री प्रदान की गई : (1) एस० एस० खन्का : "एक पिछड़ी अर्थ-व्यवस्था में श्रमिक बल, रोजगार तथा बेरोजगारी : कुमायुं का अध्ययन", (2) वी० के० गोयल", "गाजियाबाद का औद्योगीकरण" ।

संस्थान के संकाय सदस्यों के मार्गदर्शन में चौबीस और छात्र, कुमायुं तथा कानपुर विश्वविद्यालयों की पी० एच० डी० डिग्री के लिए काम कर रहे हैं। उनमें से चौदह को भा० सा० वि० अ० प० की फैलोशिप प्रदान की गई है।

भारत में राष्ट्र निर्माण, 1947-84 पर संगोष्ठी

भवनों के उद्घाटन अवसर पर, संस्थान ने, "भारत में राष्ट्र निर्माण" पर एक दो दिन की संगोष्ठी (29-30 मार्च 1985) आयोजित की । संगोष्ठी में, राजनीतिक प्रणाली, प्रजातन्त्र, धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक परिवर्तन और एकता, आर्थिक विकास के अस्थाई और स्थानिक पहलू और उभरती हुई आर्थिक स्थिति जैसे विषयों पर चर्चा की गई ताकि इस बात की जांच की जा सके कि राष्ट्रीय जीवन के ये पहलू और इनकी प्रवृत्तियां, भारत के समेकित, धर्मनिरपेक्ष और आत्म-निर्भर बनने में किस प्रकार योग दे रहे हैं अथवा बाधा पहुंचा रहे हैं। संगोष्ठी में सामाजिक-राजनीतिक प्रणाली में हाल ही के तनावों और धर्मनिरपेक्षता की संकल्पना तथा व्यवहार पर विशेष रूप से चर्चा की गई। इसमें, आर्थिक विकास में बढ़ती हुई अन्तर-वर्ग तथा स्थानिक असमानताओं और उनके सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ पर भी चिन्ता व्यक्त की गई। संगोष्ठी में अकादमिक तथा अन्य क्षेत्रों के लगभग 50 विद्वानों ने भाग लिया, जिनमें निम्नलिखितों का नाम उल्लेखनीय हैं, : श्री पी० एन० हकसर, प्रोफेसर पी० एन० मसालदान, प्रोफेसर प्रधान एच० प्रसाद, प्रोफेसर जी० एस० भल्ला, प्रोफेसर सी० पी० भाम्बरी, प्रोफेसर रूपरेखा वर्मा, प्रोफेसर शीला भल्ला और प्रोफेसर योगेन्द्र सिंह ।

वर्ष के दौरान प्रकाशन

क—अनुसंधान रिपोर्ट

निरंजन पंत "उत्तर प्रदेश में सिंचाई प्रणाली की प्रौद्योगिकी तथा कार्य निष्पादन (मिमिओग्राफ रूप में)" और आर० पी० राय, "ग्रुप ट्यूबवैल्स : पूर्वी गंगा के मैदानों में लघु कृषक सिंचाई प्रणाली का एक संगठनात्मक पहलू (मिमिओ-ग्राफ रूप में)", जी० पी० मिश्रा, आर० पी० राय और बी० के० वाजपेयी, "पूर्वी उत्तर प्रदेश में बदलती हुई कृषि परिस्थिति में ग्रामोद्योग तथा कृषि : एक माइक्रो स्तरीय जांच" (मिमिओग्राफ रूप में)।

ख—कामकाजी-पत्र

वाई०पी० सिंह, "ग्रामीण नियोजन में स्थानीय संस्थाओं की भूमिका" (हिन्दी में), जी० पी० मिश्रा, "भारत में विकास तथा वृद्धि की क्षेत्रीय संरचना : कुछ प्रस्तावना टिप्पणियां", फहीमुद्दीन : "विपणनीकृत अधिशेष तथा विपणन : कृषि प्रक्रिया की संरचना : एक अध्ययन", जी० एस० मेहता, "उत्तर प्रदेश में ग्रामीण शिल्पकारों की स्थिति : कुमायुं पर्वतों में दो चुने हुए गांवों का अध्ययन", जी० एस० मेहता, 'विकास के मार्ग तथा क्षेत्र : उपयोगिता तथा प्रभाव का एक अध्ययन" सी० एस० अधिकारी, "आई आर डी पी के अन्तर्गत ऋण संवितरण तथा कमजोर वर्गों को लाभ : साल्ट ब्लाक, अल्मोडा (उ० प्र०) का एक मामला अध्ययन", हिरणमय धर, "ग्राम अध्ययन : समस्याएं तथा सम्भावनाएं", पी० वरैय्या, 'भारत में भू-सुधार : कांग्रेस पार्टी का तर्क', पी० एन० पाण्डे और पी० एस० गरिआ, 'भारत में अप्रयुक्त कोष', जी० एस० मेहता, 'वंश समानता और भारत में शैक्षिक अवसरों में असमानता : साहित्य की एक समीक्षा', बी० के० बाजपेयी और डी० के० बाजपेयी, 'कृषि क्षमता का प्रबन्ध और कृषि उत्पादन', फहीमुद्दीन और डी० के० बाजपेयी, 'कृषि पर सूखे का प्रभाव : कुछ टिप्पणियां', सी० एस० अधिकारी और पी० एस० गरिआ, 'कृषि श्रमिकों की आर्थिक स्थिति : बांसवाडा जिले (राजस्थान) में गढ़ी ब्लाक का एक मामला अध्ययन', आर० टी० तिवारी 'भारत में आर्थिक संरचना तथा क्षेत्रीय विकास', डी० एन० कक्कड़ "भारत में उच्च शिक्षा तथा विकास : कुछ प्रश्न तथा समस्याएं', डी० एस० मेहता, 'आय वितरण तथा शैक्षिक अवसर', पी० एस० गरिआ और सी० एस० अधिकारी, 'गरीबी उन्मूलन का रामबाण : रिंगल उद्योग', (हिन्दी में); आर० टी० तिवारी, 'भारत में कृषि विकास तथा उत्पादकता के स्तरों में क्षेत्रीय भिन्नता : एक अस्थाई अध्ययन', पी० एन० पाण्डे और डी० के० बाजपेयी, 'उत्तर प्रदेश में ग्रामीण पेय जल की आपूर्ति,' पी० एस० गरिआ तथा सी० एस० अधिकारी, 'लघु एवं कुटीर उद्योगों की

उपेक्षा: एक अवलोकन (विकास खण्ड कपलोत, अलमोड़ा के सम्बन्ध में) (हिन्दी में)', पी० ईश्वरैय्या, 'मार्क्सवादी क्रांतिकारी सिद्धान्त तथा प्रथा', आर० सी० त्यागी "उत्तर प्रदेश में चीनी उद्योग की समस्याएं तथा सम्भावनाएं', वाई० पी० सिंह, 'लखनऊ नगर में अव्यवस्थित क्षेत्र तथा उत्प्रवास'।

संस्थान ने, निरंजन पंत तथा रवि पी० राय द्वारा 'लघु कृषक सिंचाई के संबंध में सामुदायिक ट्यूबवैल्स' पर एक पुस्तक प्रकाशित की।

घ—पत्रिकाओं में अनुसंधान पत्र तथा पुस्तकों के लिए लेख

टी० एस० पपोला, 'भारत में समाज विज्ञान विकास के संबंध में राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य, 'टी० एस० पपोला और बी० के० जोशी, 'पर्वतीय क्षेत्रों में विकास में जनांकिकी, अर्थ-व्यवस्था, और पर्यावरण', जे० एस० सिंह, टी० एस० पपोला और फहीमुद्दीन, 'उत्तर प्रदेश में औद्योगिक विकास में तेजी : मिथ्या अथवा वास्तविकता', आर०टी० तिवारी, 'भारत में आर्थिक संरचना तथा क्षेत्रीय विकास', 'कृषि विकास तथा उत्पादकता के स्तरों में भिन्नता', पी० एन० पांडे, 'उत्प्रवास मात्र विकास, 'किस प्रकार नवीकरण योग्य आय के स्रोत हमारे गांवों की सहायता करते हैं', जी० एस० मेहता, 'विकास के मार्ग तथा क्षेत्र : उपयोगिता तथा निहितार्थ का अध्ययन', वाई० पी० सिंह, 'क्षेत्रीय नियोजन में स्थानीय संस्थाओं की भूमिका', फहीमुद्दीन, 'कृषि पर सूखे का प्रभाव', 'ग्रामीण औद्योगीकरण के प्रति दृष्टिकोण', 'कृषि उत्पादों की विपणन संरचना : एक अध्ययन', बी० के० वाजपेयी, 'कृषि उत्पादकता में क्षेत्रीय असमानताएं : भेदपूर्ण अवस्थापना का परिणाम : एक मामला अध्ययन', 'भारत में अन्तर-क्षेत्रीय औद्योगिक असमानताएं, जी० पी० मिश्रा, पी० एस० गरिआ, 'वन एवं पर्यावरण', रवि प्रकाश राय, 'एक' झूठ अर्ध-सत्य हो सकता हैं', विनोद सी० अग्रवाल (स०), सी० एस० अधिकारी, 'प्रयत्नों का बढ़ता महत्त्व, उत्तर प्रदेश, जुलाई 1984'।

डी० एन० कक्कड़, 'उत्तर प्रदेश में ग्राम विकास कार्यक्रमों के माध्यम से क्षेत्रों को संतुलित करना', पी ईश्वरैय्या 'आन्ध्र प्रदेश में ग्राम अधिकारियों के पदों की समाप्ति : जमीन पर एक क्रान्ति'।

ङ—सम्मेलनों, सेमिनारों और कार्यशालाओं में पत्र

जी० पी० मिश्रा, बी० के० बाजपेयी और फहीमुद्दीन 'उत्तर प्रदेश में नियंत्रित बाजार', जी० पी० मिश्रा और बी० के० बाजपेयी, 'उत्तर प्रदेश कृषि में विकास की क्षेत्रीय संरचना : पूर्वी तथा बुन्देलखंड क्षेत्रों का एक तुलनात्मक अध्ययन', वाई० पी० सिंह, 'ग्रामीण नियोजन में स्थानीय संस्थाओं की भूमिका'।

अन्य संस्थाओं और एजेन्सियों के साथ सलाहकार, परामर्श तथा अकादमिक सहयोग

संस्थान के अनेक संकाय सदस्यों ने केन्द्रीय और राज्य स्तरों के परामर्श पैनलों और विश्वविद्यालय व अन्य संस्थाओं के अकादमिक निकायों के सदस्यों के रूप में सहयोग दिया। वर्ष के दौरान उनमें से कुछ उल्लेखनीय हैं : उत्तर प्रदेश संसाधन उपयोगिता तथा कराधान जांच समिति के अध्यक्ष के रूप में डॉ० टी० एस० पपोला की नियुक्ति तथा उन्हें भू-आबद्ध विकास देशों की मार्गस्थ परिवहन समस्याओं से सम्बन्धित 'अंकटाड' विशेषज्ञों दलों के सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया।

भा० सा० वि० अ० प० सार और समीक्षा पत्रिका (अर्थशास्त्र)

भा० सा० वि० अ० प० ने, डॉ० टी० एस० पपोला के संयुक्त सम्पादन में अपनी भा० सा० वि० अ० प० सार और समीक्षा पत्रिका (अर्थशास्त्र) के वर्ष 1983-84 के लिए पाण्डुलिपि तैयार करने का काम संस्थान को सौंप दिया। खण्ड 13 (1982) की पाण्डुलिपि तैयार करके वर्ष के दौरान उसे भा० सा० वि० अ० प० को भेज दिया गया। इसे परिषद् ने प्रकाशित कर दिया है। उसके बाद परिषद् ने वर्ष 1984-85 के दौरान पत्रिका के प्रकाशन का काम संस्थान को सौंपने का निर्णय किया। वर्ष के दौरान खण्ड 6 (1976 का बकाया काम) के प्रकाशन का काम पूरा किया गया। इसके अतिरिक्त खण्ड 13 (1983) के चार अंकों की पाण्डुलिपियां भी तैयार की गईं।

निधियां

प्राप्तियां	(लाख रुपये)	(लाख रुपये)	अदायगियां	(लाख रुपये)
1. संस्थान (अनुरक्षण तथा विकास) खाता-प्रारंभ में बकाया		0.42	**स्थापना** संस्थान परियोजनाएं तथा फैलोशिप	10.86
आवर्ती अनुदान			मुद्रण तथा लेखन सामग्री	0.74
			वाहन परिचालन तथा अनुरक्षण	0.14
भा० सा० वि० अ० प०	5.75			
उ० प्र० सरकार	6.00	11.75	डाकखर्च, टेलीफोन तथा तार	0.49

आवर्ती अनुदान (भवन का निर्माण)			यात्रा तथा सवारी	0.69
भा० सा० वि० अ० प०	40.00		पुस्तकें पत्रिकाएं, पत्र और पुस्तकालय देखरेख	1.68
उ० प्र० सरकार	32.07	72.07	फर्नीचर तथा उपस्कर	0.20
2. परियोजनाएं			उ० प्र० राजकीय निर्माण निगम को अग्रिम	57.88
प्रारम्भ में बकाया	1.69		अन्त में बकाया	15.23
वर्ष के दौरान समाप्त	2.16	3.85	अन्य	1.82
3. फैलोशिप				
प्रारम्भ में बकाया	0.21			
वर्ष के दौरान प्राप्त	1.22	1143		
4. अन्य प्राप्तियां		0.21		
		जोड़ 89.73		जोड़ 89.73

गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद

प्रोफेसर के०ए० नकवी की मृत्यु के कारण हुई रिक्ति में उत्तर प्रदेश सरकार ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रोफेसर औलाद अहमद सिद्दीकी को शासी बोर्ड का एक सदस्य नियुक्त किया, बोर्ड ने संस्थान के निदेशक के रूप में प्रोफेसर ए० डी० पन्त की सेवावधि बढ़ा दी, डॉ० पी० एस० अधिकारी को उप-पुस्तकाध्यक्ष नियुक्त किया गया और डॉ० जी० एस० सिंह ने संस्थान में अनुसंधान फैलो का कार्यभार सम्भाल लिया।

संस्थान जिस किराए के भवन में स्थित है वहां स्थान तथा अन्य अवस्थापना सम्बन्धी सुविधाओं की कमी के कारण 1984-85 के दौरान संस्थान के कार्यकलापों और संकाय का विस्तार करने में बाधा पहुंची। इस अवधि के दौरान संस्थान ने अपने पुस्तकालय को आयोजित करने, और कुछ संकाय सदस्यों, अनुसंधान छात्रों और फैलों को कामकाज के लिए स्थान प्रदान करने के वास्ते अतिरिक्त भवन प्राप्त किया।

वर्ष के दौरान संस्थान के प्रमुख कार्यकलापों में निम्नलिखित सम्मिलित हैं: (1) देश में आयोजनकर्ताओं को अनुसंधान परामर्श सेवाएं, (2) विकास तथा समानता की समस्याओं के सम्बन्ध में माइक्रो-स्तरीय अध्ययन, और कम विकसित क्षेत्रों के वास्ते विकास नीतियां, (3) उत्तर प्रदेश राज्य के लिए विकासात्मक एटलस डिजाइन करना, (4) वन पारिस्थितिकी तथा ग्रामीण घरों में खाना पकाने की ऊर्जा के उपयोग के सम्बन्ध में अध्ययन, (5) डाक्टोरल तथा उत्तर-डाक्टोरल अनुसंधान छात्रों के लिए मार्गदर्शन, (6) उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से ग्रामीण स्त्रियों के रोजगार के लिए कार्रवाई एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना, (7) देश की वर्तमान सामाजार्थिक समस्याओं के सम्बन्ध में राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित करना, तथा (8) समाज विज्ञान के विषयों पर विख्यात विद्वानों द्वारा व्याख्यानों का आयोजन।

अनुसंधान

वर्ष के दौरान संस्थान ने निम्नलिखित अनुसंधान परियोजनाएं पूरी कीं:

(1) "इलाहाबाद की गन्दी बस्तियां—एक सामाजिक-आर्थिक चित्रण", (2) "एक पिछड़े क्षेत्र में ग्राम सेवा केन्द्रों का स्थानिक संगठन—उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले का एक मामला अध्ययन", (3) "शंकरगढ़, उत्तर प्रदेश के पत्थर

तोड़ने वाले," (4) "मतदाता, सातवीं लोकसभा चुनावों के अवसर पर बोध"।

निम्नलिखित अनुसंधान परियोजनाएं प्रगति पर थीं : (1) बुन्देलखण्ड क्षेत्र में कृषि श्रमिकों का सामाजार्थिक चित्रण, (2) उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का प्रभाव, (3) रोजगार तथा मजदूरी पर कृषि के यांत्रिकीकरण का प्रभाव, (4) पूर्वी उत्तर प्रदेश में कृषि श्रमिकों का जीवन तथा रहन-सहन की परिस्थितियां : एक आचरणात्मक अध्ययन, (5) उत्तर प्रदेश में भूमि अन्तरण, (6) उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्र पर आधुनिक उद्योग का आर्थिक प्रभाव (योजना आयोग, भारत सरकार),(7) उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रायोजित उत्तर प्रदेश की आयोजना एटलस, (8) इलाहाबाद सामाजिक वन प्रभाग में सामाजिक वन कार्यक्रम का एक आनुभाविक अध्ययन,(9) इलाहाबाद सामाजिक वन प्रभाग की गन्दी बस्ती वाले क्षेत्रों के बच्चों का स्वास्थ्य और उनकी पोषाहार स्थिति, (10) इलाहाबाद के रिक्शा चालक (भा० सा० वि० अ० प० द्वारा प्रायोजित), (11) इलाहाबाद का शहरी अनौपचारिक क्षेत्र, (12) पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लिए विकास नीतियां (योजना आयोग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित), (3) मार्क्स के अर्थशास्त्र की तकनीक और प्रयोजन, (14) उत्तर प्रदेश में हिमालयाई वनों का पारिस्थितिक तथा आर्थिक प्रबन्ध (भा०सा०वि०अ० प० द्वारा प्रायोजित), (15) उत्तर प्रदेश में एन०आर०ई०पी०कार्यक्रम का मूल्यांकन, (16) ट्यूबवैल सिंचाई की क्षमताएं : खेतों को पानी देने की सामाजिक गतिशीलता, (17) हरिजन संसद सदस्यों की राजनीति और राजनीतिक संस्कृति, (18) हमीरपुर और जालौन जिलों में आई० आर० डी० पी० का मूल्यांकन (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रायोजित), (19) ग्रामीण पूर्वी उत्तर प्रदेश में पोषाहार स्तर, (20) ग्रामीण पूर्वी उत्तर प्रदेश में पूंजी निर्माण, (21) उत्तर प्रदेश में सामाजार्थिक परिवर्तनों का प्रबुद्ध वर्ग बोध—उत्तर प्रदेश के विधान सभा सदस्यों का एक मामला अध्ययन, और (21) सामाजिक परिवर्तन तथा हरिजन समाज की संरचना।

आवसरिक पत्र

संस्थान के संकाय ने निम्नलिखित आवसारिक पत्र प्रकाशित किए : (1) "उत्तर प्रदेश में सातवीं आयोजना के निर्माण के प्रति दृष्टिकोण", (2) "मुस्लिम अभिज्ञान और राजनीति : कुछ परिप्रेक्ष्य तथा प्रवृत्तियां," (3) "भारत में शहरीकरण का रोगहेतु विज्ञान," (4) "भारत में ग्रामीण निर्धनता की संरचना," (5) "सामाजिक संरचना : एक समकालीन आयाम," (6) "एक विकासशील अर्थव्यवस्था में जनांकिकी विकास : उत्तर प्रदेश का एक मामला अध्ययन"।

सेमिनार तथा कार्यशालाएं

संस्थान ने निम्नलिखित सेमिनार और कार्यशालाएं आयोजित कीं : (1) "उत्तर प्रदेश के लघु और मध्यम दर्जे के नगरों में नागरिक सुविधाओं का विकास" (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रायोजित), (2) "पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बुन्देलखण्ड के आर्थिक विकास के लिए नीतियां" (जी०बी०पन्त समाज विज्ञान संस्थान द्वारा प्रायोजित), (3) "आयोजना तथा ग्रामीण निर्धन", (जी०बी० पन्त समाज विज्ञान संस्थान द्वारा प्रायोजित) (4) "1980 दशक के लिए शैक्षिक नीति", (इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सहयोग से प्रायोजित)।

आन्तरिक सेमिनार

उपरोक्त के अलावा संस्थान ने निम्नलिखित आन्तरिक सेमिनार आयोजित किए : (1) छोटे तथा मध्यम दर्जे के नगरों के समेकित विकास की योजनाएं : एक विश्लेषणात्मक उद्घाटन, (2) अनौपचारिक क्षेत्र, (3) धर्मनिरपेक्षता तथा भारतीय राजनीति, (4) अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था तथा तृतीय विश्व, (5) कृषि की संसाधनवार कार्यकुशलता व उपयोग : उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले का एक मामला अध्ययन, (6) उत्तर प्रदेश के ग्रमीण क्षेत्रों में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का प्रभाव, (7) श्री चरणसिंह का अर्थशास्त्र, और (8) उत्तर प्रदेश में सातवीं योजना के निर्माण के प्रति दृष्टिकोण।

संगोष्ठी/व्याख्यान

संस्थान ने व्याख्यान तथा संगोष्ठियां आयोजित कीं जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं : (1) समाज तथा प्रदूषण, (2) विकास की दुविधा : विशेष रूप से भारत के सन्दर्भ में, (3) राष्ट्रीय विकास के प्रति नवें दशक में पर्यावरणात्मक नक्शा बनाना, और (4) राष्ट्रवाद तथा राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन।

जी० बी० पन्त स्मारक व्याख्यानमाला

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रोफेसर वाई०के०अलघ ने वर्ष 1983-84 के लिए 25, 26 और 27 मार्च 1985 को "भारत में आयोजना तथा आर्थिक नीतियों" पर तीन व्याख्यान दिए।

अनुसंधान फैलो (भा० सा० वि० अ० प०)

संस्थान से सम्बद्ध अनुसंधान फैलो तथा उनके अनुसंधान विषय इस प्रकार हैं :

(1) श्री मोहम्मद असलम (संस्थात्मक फैलो), "स्वतन्त्र भारत में मुस्लिम राजनीति", (2) कुमारी सारिका सिबोउ, "इलाहाबाद की वाणिज्यिक संरचना: विगत तथा सम्भावना", (3) कुमारी उर्मिला दास, "स्वतन्त्रता के बाद के युग में उड़ीसा में कृषक आन्दोलन", (4) कुमारी अनुराधा अग्रवाल, "स्त्रियां तथा राजनीतिक स्वतन्त्रता के बाद के युग में उत्तर प्रदेश में स्त्रियों की राजनीतिक सहभागिता", (5) श्री आर० एम० मिश्रा, "ग्रामीण सेवा केन्द्रों की विकास नीतियां: उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले का एक मामला अध्ययन"।

परामर्श तथा मार्गदर्शन

संकाय सदस्यों को केन्द्रीय सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार की विभिन्न समितियों और अनेक विश्वविद्यालयों में प्रतिनिधित्व प्राप्त था। वैयक्तिक हैसियत से वे विपणन आयोजना सम्बन्धी समिति, एम० पी० डी० सी०, यू० एन० डी० पी० तथा एफ० ए० ओ० नई दिल्ली की एक संयुक्त परियोजना, ग्रामीण क्षेत्रों में पूर्ण रोजगार के लिए नीति सम्बन्धी समिति, भारत सरकार और सातवीं आयोजना के निर्माण में किफायतीकरण सम्बन्धी समिति, उत्तर प्रदेश के साथ सहयोग कर रहे हैं।

विशिष्ट अतिथि

वर्ष के दौरान संस्थान में आने वाले विशिष्ट अथितियों में निम्नलिखित शामिल हैं: (1) प्रोफेसर टी० एस० पपोला, निदेशक, गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ (2) प्रोफेसर रशीदुद्दीन खान, भूतपूर्व, राज्य सभा सदस्य और प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, (3) प्रोफेसर वादीमिर एन्ड्रीविच यशकिन, प्रोफेसर, अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र, सोवियत रूस, (4) डॉ० जी० के० दत्त, निदेशक, राष्ट्रीय एटलस तथा थेमेटिक मेपिंग संगठन, कलकत्ता, (5) प्रोफेसर जे० ह्वाइटलेग, मेनचेस्टर विश्वविद्यालय, यू० के०, (6) प्रोफेसर योगेन्द्र सिंह, प्रोफेसर, समाज शास्त्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, (7) प्रोफेसर वाई० के० अलघ, अध्यक्ष, औद्योगिक विकास विभाग, औद्योगिक लागत और मूल्य ब्यूरो, भारत सरकार, नई दिल्ली, (8) प्रोफेसर टी० वी० सत्यमूर्ति, योर्क विश्वविद्यालय, (9) प्रोफेसर ओ० पी० द्विवेदी, डीन, समाज विज्ञान, गुइल्फ विश्वविद्यालय, कनाडा, और (10) डॉ० डी० पी० सिंह, निदेशक, लोक प्रशासन संस्थान, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

पुस्तकालय

पुस्तकालय को एक नए किराए के भवन में आयोजित किया गया। इसमें 7,150 खण्डों का संग्रह है। आलोच्य अवधि के दौरान पुस्तकालय ने 40 भारतीय और 125 विदेशी पत्रिकाएं मंगवाईं और अपने भण्डार में 971 पुस्तकें तथा पुरानी पत्रिकाओं के 179 खण्ड और शामिल किए।

निधियां

प्राप्तियां	(लाख रुपये)	अदायगियां	(लाख रु०)
पिछले वर्ष का बकाया	3.97	वेतन तथा अन्य भत्ते	5.95
भा०सा० वि० अ०प० से योजनेतर	4.87	पुस्तकालय	1.78
उ० प्र० सरकार से योजनेतर	4.50	अकादमिक कार्यक्रम	0.59
		मुद्रण तथा लेखन सामग्री	0.23
		अन्य स्थापना खर्च	2.13
परियोजना तथा फैलोशिप	7.60	परियोजना तथा फैलोशिप इत्यादि	6.41
		फर्नीचर और उपस्कर	0.37
विविध (ब्याज इत्यादि)	1.65	बकाया (भूमि के लिए अनुदान सहित)	37.17
उ० प्र० सरकार से योजनागत (भूमि के लिए)	32.06		
जोड़	54.63		54.63

भारतीय शिक्षा संस्थान, पुणे

महत्वपूर्ण घटनाएं

"शिक्षा में विकल्पों पर" जे०पी० नायक सेमिनार 31 मार्च, 1 और 2 अप्रैल 1984 को संस्थान में आयोजित किया गया। सेमिनार में देशभर के 47 से अधिक विद्वानों ने भाग लिया। भा० सा० वि० अ० प० के अध्यक्ष श्री जी० पार्थसारथी ने सेमिनार का उद्घाटन किया और केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्री कृष्ण चन्द्र पन्त ने प्रमुख अभिभाषण दिया। उद्घाटन सत्र में 500 से अधिक शिक्षाविदों तथा पुणे के अन्य नागरिकों ने भाग लिया।

स्टाफ

डॉ० पी० आर० पंचमुखी ने जुलाई 1984 में संस्थान के निदेशक का पद ग्रहण कर लिया; सुश्री सुशीला भान ने सितम्बर 1984 में संस्थान में प्रोफेसर के रूप में कार्य सम्भाल लिया; प्रोफेसर डी० ए० दभोलकर, जो 1978 से 1981 तक संस्थान के निदेशक तथा समाज विज्ञान व सामाजिक कार्रवाई परियोजना के प्रोफेसर प्रभारी थे, जुलाई 1984 में सेवानिवृत्त हो गए; प्रोफेसर एम० पी० रेगे, जो 1981 से 1984 तक संस्थान के निदेशक थे, जुलाई 1984 में निदेशक व प्रोफेसर के पद से सेवानिवृत्त हो गए।

पूरे हुए तथा शुरू किए गए अनुसंधान

"प्राथमिक शिक्षा के व्यापीकरण" पर पंचवर्षीय परियोजना मार्च 1985 में पूरी हो गई और जनवरी 1985 से यह नए रूप में चल रही है। प्राथमिक शिक्षा के व्यापीकरण के लिए साहित्य तैयार करने की परियोजना मार्च 1985 में पूरी हो गई। "ग्रामीण स्त्रियों में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी" परियोजना जुलाई 1984 में शुरू की गई थी। "व्यापक प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों के प्रशिक्षण" की परियोजना दिसम्बर 1984 में पूरी हो गई। कॉलेज छात्रों के बीच जागरूकता पैदा करने की परियोजना 1984-85 के दौरान जारी रही।

मराठवाडा के सम्बन्ध में अध्ययन तथा दो परियोजनाओं, अर्थात् "मराठवाडा में व्यावसायिक शिक्षा" तथा "मराठवाडा में अनुसूचित जातियों की समस्याओं का अध्ययन" के अन्तर्गत मामला अध्ययन वर्ष के दौरान जारी रहा।

इसके अतिरिक्त, वर्ष के दौरान दो मामला अध्ययन, अर्थात् "मराठवाडा स्नातकोत्तर शिक्षा" तथा "मराठवाडा में प्रौढ़ शिक्षा" शुरू किए गए तथा सम्पन्न हो गए।

योजना आयोग द्वारा प्रायोजित "आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु और प० बंगाल में शिक्षा का व्यावसायीकरण" नामक परियोजना का अध्ययन कार्य जनवरी 1985 में शुरू हुआ। वर्ष के दौरान, "पुणे जिले में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में भाग लेने वाले प्रौढ़ों के बीच राजनीतिक जागरूकता" का अध्ययन शुरू किया गया। "गैर-औपचारिक विज्ञान शिक्षा" का अध्ययन वर्ष के दौरान सम्पन्न हो गया।

प्रकाशन

संस्थान की मराठी भाषा में त्रैमासिक पत्रिका "शिक्षण अणि समाज" के चार अंक प्रशासित किए गए। वर्ष 1983 के लिए संस्थान का "बुलेटिन" 1984 में प्रकाशित किया गया। प्रौढ़ शिक्षा के प्रसार के लिए प्रकाशित द्विमासिक "संवादिनी" (मराठी) के वर्ष के दौरान छः अंक प्रकाशित किए गए।

अन्य प्रकाशनों में निम्नलिखित शामिल हैं : (1) जी० एस० डोंगरे, "माध्यमिक शिक्षा : कल, आज और कल", (2) ए० आर० कामत, "सामाजिक परिवर्तन तथा शिक्षा"।

सेमिनार/सम्मेलन/कार्यशाला आदि

"सामाजिक जागरूकता परियोजना" में लगे कॉलेजों के समन्वयक अध्यापकों तथा कॉलेजों के प्रिंसिपलों की एक दो-दिवसीय कार्यशाला 28 और 29 मई 1984 को आयोजित की गई। इसमें महाराष्ट्र के 30 कॉलेजों के अध्यापकों तथा लगभग 40 प्रिंसिपलों ने भाग लिया।

मराठवाडा के कॉलेज अध्यापकों के लिए अनुसंधान रीति विज्ञान में एक कार्यशाला 2 से 7 जुलाई 1984 तक स्वामी रामानन्द तीर्थ महाविद्यालय, अम्बाजोगइ में आयोजित की गई।

"भारत में शैक्षिक सुधार" पर 22 से 25 जुलाई 1984 तक नई दिल्ली में एक सेमिनार आयोजित किया गया। इसमें देश भर के 25 से अधिक विद्वानों ने भाग लिया।

संकाय सदस्यों तथा छात्रों ने, शिक्षा संबंधी पैराग्राफों के विशेष सन्दर्भ में 31 अगस्त 1984 को सातवीं आयोजना के दृष्टिकोण पत्र पर विचार किया।

संस्थान के शैक्षणिक मंच के अधीन "महाराष्ट्र में क्षेत्रीय असंतुलनों पर 29 सितम्बर 1984 को एक संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें भाग लेने वालों

में निम्नलिखित शामिल थे : पुणे से प्रोफेसर वी० एम० दाण्डेकर और प्रोफेसर नीलकान्त रथ, और औरंगाबाद से श्री गोविन्द भाई श्रोफ, श्री भुजंग राव कुलकर्णी, श्री विजयेन्द्र काबरा और प्रोफेसर वी० वी० बोरकर।

संस्थान के राज्य संसाधन केन्द्र ने कॉलेज शिक्षकों के लिए "शिक्षा तथा सामाजार्थिक विकास : संकल्पनाएं तथा कार्यक्रम" पर 10 दिसम्बर 1984 को एक कार्यशाला आयोजित की।

"कॉलेज छात्रों के लिए सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम" पर, महाराष्ट्र के विभिन्न कालेजों में इस कार्यकलाप में भाग लेने वाले अध्यापकों के लिए 11 दिसम्बर 1984 को एक-एक दिन का सेमिनार अयोजित किया गया।

भारतीय शिक्षा संस्थान, तथा स्वामी रामानन्द तीर्थ संस्थान, औरंगाबाद द्वारा "मराठवाडा में शिक्षा" पर जनवरी 1985 में औरंगाबाद में एक तीन दिन की कार्यशाला संयुक्त रूप से आयोजित की गयी। इसमें मराठवाडा क्षेत्र के 75 से अधिक अध्यापकों व अन्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

संस्थान ने 22 से 25 मई 1984 तक "शिक्षा का इतिहास" और 13 से 23 फरवरी 1985 तक "सर्वेक्षण विधियों पर" राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद् की कार्यशाला की मेजबानी की।

अतिथि

हमारे प्रख्यात अतिथियों में भा० सा० वि० अ० प० के अध्यक्ष तथा भारत सरकार की नीति आयोजना समिति के अध्यक्ष श्री जी० पार्थसारथी और केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्री कृष्ण चन्द्र पन्त शामिल थे। अन्य प्रमुख अतिथियों में निम्नलिखित शामिल थे : बारह अमरीकी हाई स्कूल शिक्षक, डॉ० क्लानडीन कोक्स, यूनिसेफ बोर्ड, न्यूयार्क में अमरीकी वैकल्पिक प्रतिनिधि; सी० रामचन्द्रन, डॉ० के० एन० हिरियानैह, और डॉ० जलालुद्दीन, रा० शै० अ० प्र० प०, नई दिल्ली; शिक्षा निदेशालय, श्रीलंका सरकार के आठ अधिकारी; श्री लक्ष्मीनारायण, उप सचिव, शिक्षा मन्त्रालय, नई दिल्ली; डॉ० सी० सी० सपरा और डॉ० जी० डी० शर्मा, एन० आई० ई० पी० ए०, नई दिल्ली; डेनियल ओडेल और जे० ई० पिण्टो, यूनिसेफ, बम्बई; वोलफ्राम मल्लीसन, फ्रांस; डॉ० सुमा चिटनिस, डॉ० तापस मजुमदार और डॉ० एम० बी० बुच, भा० सा० वि० अ० प० भ्रमणकारी समिति के सदस्यों के रूप में; कुमार शाहनी, फिल्म निर्माता; शरद काले, महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री के वैयक्तिक सचिव; डॉ० करुणा अहमद, जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; जोन कांटेनर, यू० एस० "एड", नई दिल्ली; डॉ० एस० एस० सलगांवकर, उप निदेशक, एम० आई० डी० ए०, पुणे; एम० ए० डोरघानी, ए० युसुफ जई, एन०

युसुफ आतिफ और एस० ई० मुख्तार जादा, अफगानिस्तान; रोजेर उबेरस्चलाग, फ्रांसीसी शिक्षाविद; डॉ० बी० सी० मुतैय्या, एन० आई० आर० डी०, हैदराबाद; बी० आर० जोइस, प्रोफेसर, शिक्षा ओरेगोन विश्वविद्यालय; डॉ० डीन नेलसन और रेखा वाजी, आई० डी० आर० सी०, नई दिल्ली; डॉ० जीन फ्लाउड, भा० सा० वि० अ० प० भ्रमणकारी फैलो, डॉ० ग्रिफिथ, ससेक्स विश्वविद्यालय; प्रोमेश आचार्य, कलकत्ता; जे० एल० आजाद, नई दिल्ली; पी० आर० ब्रह्मानन्द, बम्बई; अनिल बोर्डिया और एम० एल० चावला, भारत सरकार, नई दिल्ली, डॉ० एन० एस० देवधर, पुणे; डॉ० पेट्रिक डायस, फ्रेंकफर्ट विश्वविद्यालय; प्रोफेसर राम जोशी, और प्रोफेसर टी० के० टोपे, भूतपूर्व कुलपति, बम्बई विश्वविद्यालय; डॉ० विद्युत जोशी, अहमदाबाद; डॉ० वी० जी० भिडे, कुलपति, और डॉ० राम टकावाला; भूतपूर्व कुलपति, पूना विश्वविद्यालय, पुणे; भुजंगराव कुलकर्णी, औरंगाबाद, डॉ० वी० जी० कुलकर्णी, बम्बई; डॉ० एम० वी० माथुर, जयपुर; डॉ० विजया मुले, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली, डॉ० एम० पी० परमेश्वरन, त्रिवेन्द्रम; डॉ० सुरेश शुक्ला, जामिया मिलिया, नई दिल्ली, डॉ० अमरीक सिह, डॉ० एस० के० मित्रा, डॉ० एस० एम० सराफ, और श्री जनध्याला तिलक, नई दिल्ली; जे० वीराराघवन, योजना आयोग, नई दिल्ली; डॉ० के० वेंकटासुब्रह्मण्यम, मद्रास।

शिक्षण तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान का शैक्षिक अध्ययन केन्द्र, पुणे, शिक्षा में एम० फिल० (अन्तर-विषयक) के लिए पूना विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है। वर्ष के दौरान इसमें एम० फिल० के लिए आठ और पी-एच० डी० के लिए दस छात्र थे। पूना विश्वविद्यालय की भ्रमणकारी समिति ने दृढ़तापूर्वक यह सिफारिश की है कि संस्थान को विश्वविद्यालय से स्थाई सम्बद्धन प्रदान कर दिया जाए।

संस्थान के गैर-औपचारिक शिक्षा के लिए राज्य संसाधन केन्द्र ने प्रौढ़ शिक्षा के कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए।

परामर्श तथा मार्गदर्शन

प्रोफेसर पी० आर० पंचमुखी को, आर्थिक तथा आयोजना परिषद्, कर्नाटक सरकार, "वर्ष 2000 में शिक्षा" परियोजना के लिए एन० आई० ई० पी० ए० की परामर्श समिति, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर का एक प्रकाशन "पी० एस० ई० एनेलिस्ट" की पुनर्गठित सम्पादकीय परामर्श समिति, जान टिम्बरजेन विकास आयोजना संस्थान, रोहतक की राष्ट्रीय समन्वय समिति में सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया।

डॉ० चित्रा नायक ने भारत सरकार द्वारा गठित राष्ट्रीय शिक्षक आयोग के एक सदस्य के रूप में काम किया। उन्होंने महाराष्ट्र राज्य सहकारी संघ की स्त्री सहकारिता सम्बन्धी सलाहकार समिति के अध्यक्ष के रूप में काम किया। वह, प्रौढ़ शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रम सलाहकार समिति, नागपुर, पुणे, शिवाजी, बम्बई और एस० एन० डी० टी० विश्वविद्यालयों की सदस्य हैं। वह पूना विश्वविद्यालय की सीनेट और ग्राम विकास समिति की सदस्य रही हैं। उन्होंने, "पेरिस में तुलनात्मक शिक्षा" पर जुलाई 1984 में आयोजित पांचवीं विश्व कांग्रेस के समापन सत्र में भाषण दिया और जून 1984 में फ्रेंकफर्ट में आयोजित "तृतीय विश्व के देशों में शिक्षा" पर एक सेमिनार की अध्यक्षता की। वह, डी० ई०एस० एस० एच०, एन० सी० ई० आर० टी०, नई दिल्ली द्वारा मई 1984 में आयोजित "एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारत में स्कूल शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन करने" सम्बन्धी कार्यशाला की निदेशक थीं।

प्रोफेसर एस० बी० गोगाते को, पूना विश्वविद्यालय द्वारा अवर-स्नातक स्तर पर पाठ्यक्रमों के पुनर्गठन के मूल्यांकन के लिए समिति के समन्वयक के रूप में नियुक्त किया गया है। उन्हें, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर द्वारा प्रौढ़ शिक्षा के लिए तदर्थ समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। उन्हें, मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद द्वारा प्रौढ़ और संतत शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय स्तरीय समिति के एक सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया है।

डॉ० बी० डी० तिलक ने, कर्नाटक राज्य विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी परिषद् द्वारा बंगलौर में आयोजित एक दक्षता स्कूल एवं विज्ञान केन्द्र की स्थापना के सम्बन्ध में एक कार्यशाला में भाग लिया।

डॉ० एस० एस० कालबाग को, केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिकीय अनुसंधान संस्थान, मैसूर की अनुसंधान सलाहकार समिति के एक सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया है। उन्हें ग्राम प्रौद्योगिकी की उन्नति के लिए परिषद् के वैज्ञानिक पैनल के लिए भी मनोनीत किया गया है।

पुस्तकालय

वर्ष के दौरान संस्थान के पुस्तकालय में लगभग 5,046 पुस्तकें और शामिल की गई जिन्हें मिलाकर पुस्तकों की कुल संख्या 20,000 हो गई। संग्रह में शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकें भी शामिल हैं। आलोच्य वर्ष के दौरान शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित लगभग 150 भारतीय और विदेशी पत्र-पत्रिकाएं मंगाई गईं।

निधियां (अपरीक्षित)

क्रम सं०	प्राप्तियां	(लाख रुपए)	क्रम सं०	अदायगियां	(लाख रुपए)
1	2	3	4	5	6
1.	भा० सा० वि० अ० प० (आवर्ती अनुदान)	3.59	1.	वेतन	4.56
2.	महाराष्ट्र सरकार	6.46	2.	अन्य स्थापन सम्बन्धी मामले	3.26
3.	भा० सा० वि० अ० प० (पुस्तकालय के विकास के लिए अनावर्ती अनुदान)	0.95	3.	परियोजनाओं पर खर्च	20.56
4.	शिक्षा तथा संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली	3.55	4.	पुस्तकालय के विकास के लिए अनावर्ती अनुदान	0.95
5.	विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली	4.46			
6.	यूनिसेफ, नई दिल्ली	5.28			
7.	फोर्ड फाउण्डेशन, नई दिल्ली	4.49			
8.	आई० डी० आर० सी०, कनाडा	0.40			
9.	अन्य परियोजना निधि	0.15			
	जोड़ :	29.33			29.33

सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन संस्थान, बंगलौर

अनुसंधान

वर्ष के दौरान निम्नलिखित अनुसंधान परियोजनाएं पूरी की गईं :

1. कर्नाटक कृषि में प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों का एक इकानामिट्रिक विश्लेषण।
2. कर्नाटक तालाब सिंचाई कार्यक्रम का एक अध्ययन।
3. कर्नाटक में पूर्व-प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र—एक स्थिति अध्ययन।
4. भारत में कृषि विकास में समस्याएं—राज्यवार विश्लेषण।
5. प्रमुख फसलों के सम्बन्ध में उर्वरक खपत और इसकी कार्यकुशलता—राज्यवार विश्लेषण।
6. सुपारी विपणन—कर्नाटक में तीन प्रमुख नियन्त्रित बाजारों का एक मामला अध्ययन।
7. ऊर्जा परिस्थिति विज्ञान : विविधिकृत कृषि प्रणालियों का एक अध्ययन।
8. ग्रामीण कर्नाटक में बाल श्रमिक और उर्वरता।
9. एम० सी० एच० और एफ० पी० का मूल्यांकन : अनुसूचित जातियां व अन्य।
10. सहकारिता प्रबन्ध तथा कमजोर वर्ग।
11. कर्नाटक में कोशकीटपालन परियोजना का समवर्ती मूल्यांकन (1980-85)
12. समाज के कमजोर वर्गों के लिए बैंकिंग सुविधाएं : ब्याज की विभेदी दर योजना का अध्ययन (इस रिपोर्ट को अन्तिम रूप दिया जा रहा है)।
13. शहरी पर्यावरण—बंगलौर का एक मामला अध्ययन (शीघ्र ही पूरा हो जाएगा)।
14. अनुसूचित जाति की स्त्रियों के लिए रोजगार के अवसर : एक मूल्यांकन

(प्रारम्भिक मसौदा तैयार होने वाला है) ।

15. विकास में ग्रामीण सामन्त वर्ग की भूमिका (रिपोर्ट लिखने का काम चल रहा है) ।
16. शिक्षा में विभिन्न क्षेत्रों से सम्बद्ध योजनागत निधियों में आवंटन और खर्च की प्रवृत्तियों का अध्ययन (रिपोर्ट लिखने का काम पूरा हो गया है) ।
17. बंगलौर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक शिक्षा कॉलेजों के शिक्षकों की स्थिति का सर्वेक्षण (मसौदे में संशोधन किया जा रहा है) ।
18. कर्नाटक में खाद्यान्नों के लिए मांग-पूर्ति अनुमान और अल्पकालीन अनुमान (परियोजना शीघ्र पूरी हो जाएगी) ।
19. ग्रामीण परिवर्तन की गतिशीलता : कर्नाटक का एक मामला अध्ययन, 1956-76 ।
20. कर्नाटक में ग्रामीण विकास के सामाजार्थिक आयाम ।
21. कर्नाटक के कठोर पत्थर वाले इलाकों में डग-वैल निवेशों का विगत मूल्यांकन ।
22. बंगलौर की आबादी में वृद्धि और औद्योगीकरण ।
23. अभिलेख पालन तथा सूचना प्रणाली—ओक्कालेरी पी० एच० सी० का अध्ययन ।

पी-एच० डी० कार्यक्रम

डॉ० के० एन० निनान को उनके शोध निबन्ध "केरल राज्य में टेपिओका उत्पादन का अर्थशास्त्र' के लिए मैसूर विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की डिग्री प्रदान की गई ।

जून 1984 में प्रारम्भ हुए पी-एच० डी० कार्यक्रम के लिए 9 उम्मीदवारों को दाखिल किया गया । चार उम्मीदवारों के सम्बन्ध में भा० सा० वि० अ० प० फैलोशिप, एक के लिए आर० बी० आई० फैलोशिप, और शेष के लिए संस्थान की फैलोशिपों की सिफारिश की गई । एक उम्मीदवार ने कार्यक्रम से अपना नाम वापस ले लिया ।

प्रकाशन

आलोच्य अवधि के दौरान निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की गई :

1. डॉ० जी० थिमैय्या (डॉ० अब्दुल अजीज के साथ) : "भू-सुधारों की

राजनीतिक अर्थव्यवस्था", आशिष पब० हाउस, नई दिल्ली, 1984।

2. डॉ० जी० थिमैय्या : "कर डिजाइन तथा कर सुधार के सम्बन्ध में परिप्रेक्ष्य", आशिष पब० हाउस, नई दिल्ली, 1984।
3. डॉ० अब्दुल अजीज, "विकासशील अर्थव्यवस्था की श्रम समस्याएं", आशिष पब० हाउस, नई दिल्ली, 1984।
4. डॉ० अब्दुल अजीज, "शहरी निर्धन तथा शहरी अनौपचारिक क्षेत्र", आशिष पब० हाउस, नई दिल्ली, 1984।
5. डॉ० बी० के० नारायण (टी० के० लक्ष्मण के साथ, सं०), "भारत में ग्रामीण विकास—एक बहु-आयामीय विश्लेषण", हिमालय पब्लिशिंग हाउस, बम्बई, 1984।
6. डॉ० आर० एन० हदीमणि, "निर्धनता की राजनीति", आशिष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1984।
7. डॉ० अमल रे (वनिता वेंकटसुब्बैय्या के साथ), "ग्रामीण विकास तथा प्रशासन", वर्ल्ड प्रेस, कलकत्ता, 1984।
8. डॉ० एस० गिरियप्पा (एम० विवेकानन्द के साथ) "भारत में कृषि विकास", आशिष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1984।
9. एम० नागेश्वर राव, "शहरी सार्वजनिक क्षेत्र में अध्ययन", आशिष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1985।
10. डॉ० एस० नयन तारा, "ग्रामीण पर्यावरण में शिक्षा", आशिष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1984।
11. डॉ० ए० एस० सीतारामु, (एम० डी० ऊषादेवी के साथ), "ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा—बाधाएं तथा सम्भावनाएं", आशिष पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 1985।
12. डॉ० आर०एन० हादीमणि, "औद्योगिक उद्यमशीलता की गतिशीलता आशिष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1985।

सेमिनार

1. संस्थान में 29, 30 और 31 अक्तूबर 1984 को "रेशम उद्योग का अर्थशास्त्र" विषय पर एक सेमिनार आयोजित किया गया, जिसका प्रायोजन कर्नाटक रेशम उद्योग निगम ने किया था। सेमिनार का उद्‌घाटन, कर्नाटक के कोशकीट पालन उद्योग मंत्री माननीय श्री सिद्दारमैय्या ने किया था और अध्यक्ष डॉ० जी० वी० के० राव ने

अध्यक्षता की। प्रोफेसर वी० के० आर० वी० राव इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। कर्नाटक रेशम उद्योग निगम, बंगलौर के अध्यक्ष श्री मोहम्मद मोइनुद्दीन ने प्रमुख अभिभाषण दिया। इस सेमिनार में, कर्नाटक रेशम उद्योग को पेश आने वाली विभिन्न समस्याओं पर विशेष रूप से विचार किया गया। सेमिनार में जिन विषयों पर चर्चा की गई उनमें उत्पादकता पहलुओं से लेकर विपणन की उपलब्धता तथा अन्य अवस्थापना सम्बन्धी सुविधाएं शामिल थीं।

2. संस्थान में, 29 नवम्बर से 1 दिसम्बर 1984 तक "विकेन्द्रीकृत आयोजना तथा कार्यान्वियन" पर तीन दिन का एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया। इस सेमिनार का आयोजन राजाजी अन्तर-राष्ट्रीय सार्वजनिक कार्य और प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली और विकास अध्ययन संस्थान, मद्रास द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। देश भर के लगभग 40 विख्यात शिक्षाविदों, प्रशासकों, वैज्ञानिकों तथा पत्रकारों ने इस सेमिनार में भाग लिया। सेमिनार का उद्‌घाटन श्री सी० सुब्रमण्यम ने तथा अध्यक्षता प्रो० वी० के० आर० वी० राव ने की थी। प्रोफेसर के० एन० राज ने प्रमुख अभिभाषण दिया।

3. "कर्नाटक की सातवीं पंचवर्षीय योजना के प्रति दृष्टिकोण" पर दूसरा सेमिनार (आन्तरिक) 16 अक्तूबर 1984 को संस्थान में आयोजित किया गया। दोनों सत्रों की अध्यक्षता प्रोफेसर वी० के० आर० वी० राव ने की।

4. ए० डी० आर० टी० यूनिट ने 23 और 24 जनवरी 1985 को संस्थान में "ग्रामीण ऊर्जा : संकट की समस्या" पर दो दिन का एक सेमिनार आयोजित किया। उद्‌घाटन अवसर पर प्रोफेसर वी० के० आर० वी० राव मुख्य अतिथि थे। इसकी अध्यक्षता डॉ० जी० वी० के० राव ने की थी। कर्नाटक के मुख्य सचिव श्री टी० आर० सतीश चन्द्र ने उद्‌घाटन भाषण दिया। सेमिनार में बंगलौर के तथा बाहर के विभिन्न कृषि-अर्थशास्त्र अनुसंधान केन्द्रों व अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

5. संस्थान द्वारा 22 और 23 फरवरी को "कर्नाटक में कोशकीट पालन का अर्थशास्त्र" विषय पर एक सेमिनार आयोजित किया गया। आई० एस० ई० सी० के शासी बोर्ड के अध्यक्ष डॉ० जी० वी० के० राव ने सेमिनार का उद्‌घाटन किया। कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बंगलौर के कुलपति डॉ० एन० जी० पेरूर ने समारोह की अध्यक्षता की।

6. ए० डी० आर० टी० यूनिट स्टाफ द्वारा 18 मार्च 1985 को "फसल उत्पादन में ऊर्जा खपत" पर एक सेमिनार आयोजित किया गया।

7. संस्थान ने "अर्थशास्त्र में अनुसंधान रीति विज्ञान" में एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया। इसका प्रायोजन दक्षिण भारत के अर्थशास्त्र के प्राध्यापकों के लिए भा० सा० वि० अ० प० द्वारा किया गया था।

8. बंगलौर विश्वविद्यालय के कन्नड विभाग के प्रोफेसर सिद्दलिंगैय्या ने 5 अप्रैल 1984 को "दलित समस्याएं : कर्नाटक में आन्दोलन तथा साहित्य" पर एक व्याख्यान दिया।

9. गुजरात विश्वविद्यालय के भूगोल विभागाध्यक्ष डॉ० अंजना देसाई ने 10 अप्रैल 1984 को "भारतीय नगरों में सामुदायिक पर्यावरण" पर एक व्याख्यान दिया।

10. राजकोषीय मामले विभाग, आई० एम० एफ० के सलाहकार डॉ० प्रेमचन्द ने 11 अप्रैल 1984 को "विकासशील देशों में राजकोषीय नीति प्रश्नों" पर एक भाषण दिया।

11. बम्बई विश्वविद्यालय में प्रोफेसर डॉ० पी० आर० ब्रह्मानन्द ने 17 अप्रैल 1984 को "सातवीं पंचवर्षीय योजना के प्रति दृष्टिकोण" पर व्याख्यान दिया।

12. पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र विभाग के डॉ० मार्क पर्लमन ने 26 मई 1984 को "जनांकिकीय परिवर्तन तथा आर्थिक विकास" पर एक भाषण दिया।

13. भारतीय प्रबन्ध संस्थान, बंगलौर के प्रोफेसर टी० कृष्ण कुमार ने 21 जुलाई 1984 को "किराया नियन्त्रण और आवास : मिथ्या तथा वास्तविकताओं" पर एक व्याख्यान दिया।

14. लन्दन अर्थशास्त्र स्कूल में जनसंख्या अध्ययन केन्द्र के प्राध्यापक श्री टिम डायसन ने 25 जुलाई 1984 को "भारत की जनसंख्या" पर एक भाषण दिया।

15. स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क के व्यापार तथा अर्थशास्त्र केन्द्र के डॉ० प्रेम पी० गांधी ने 26 जुलाई 1984 को "अमरीकी आर्थिक विकास" में संरचनात्मक परिवर्तनों" पर एक भाषण दिया।

16. क्षेत्रीय विकास केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

के प्रोफेसर मूनिस रजा ने 2 अगस्त 1984 को "परिस्थिति विज्ञान तथा विकास" पर एक भाषण दिया।

17. योजना आयोग के भूतपूर्व उपाध्यक्ष डॉ० पी० एन० हकसर ने 10 अगस्त 1984 को "सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तनों का अध्ययन" विषय पर व्याख्यान दिया।

18. कर्नाटक सरकार के योजना विभाग के अपर सचिव डॉ० पी० जे० नायक ने 19 अक्तूबर 1984 को "सामान्य सन्तुलन सिद्धांत के अनुप्रयोग (1) सन्तुलन तथा सौदेबाजी : एजवर्थ का अनुमान, (2) सन्तुलन तथा विषम सूचना : बाजार में असफलता की समस्याओं" पर भाषण दिया।

19. मेरीलैण्ड विश्वविद्यालय, अमरीका के अर्थशास्त्र विभाग के प्रोफेसर जान क्यू आडम्स ने 7 जनवरी 1985 को "भारत में एक अनौपचारिक केन्द्र : सिद्धांत तथा साक्ष्य" पर और 17 जनवरी 1985 को "कृषक तार्किकता तथा ग्रामीण विकास नीति" पर भाषण दिया।

20. डॉ० एम० आर० भगवान, अन्तर्राष्ट्रीय ऊर्जा तथा मानव परिस्थिति विज्ञान संस्थान, स्टाकहोम, स्वीडन, ने 8 जनवरी 1985 को "1955-84 अवधि के दौरान भारत में औद्योगीकरण तथा प्रौद्योगिकीय विकास" पर भाषण दिया।

21. श्रीमती जीन फ्लाउड, फैलो, न्यूफील्ड कालेज, आक्सफोर्ड ने, 2 फरवरी 1985 को "सामाजिक सिद्धांत में वर्तमान प्रवृत्तियों" पर भाषण दिया।

22. श्री बी० वेंकटेश, महाप्रबंधक, शारीरिक रूप से विकलांगों की एसोसिएशन, बंगलौर और श्री एन० पी० ए० मथीअस, अवै० सचिव, मानसिक रूप से अवरुद्ध बच्चों की कर्नाटक अभिभावक एसोसिएशन, ने 14 मार्च 1985 को "शारीरिक तथा मानसिक अक्षमताएं तथा पुनर्वास" पर भाषण दिया।

अतिथि

1. श्री जान हेनसन, वरिष्ठ अर्थशास्त्री, विश्व बैंक, 8 अगस्त 1984।
2. प्रोफेसर जी० के० हीरेमठ, सह-प्रोफेसर, कृषि अर्थशास्त्र विभाग, कृषि कॉलेज, धारवाड, स्नातकोत्तर छात्रों के साथ, 20 अगस्त 1984।

3. डॉ० डी० डी० नरूला, सदस्य-सचिव, भा० सा० वि० अ० प०, 21 अगस्त 1984।
4. श्री कर्पुरी ठाकुर, भूतपूर्व मुख्य मन्त्री, बिहार, 12 अक्तूबर 1984।
5. श्री पेट्रिकल अनेज, विश्व बैंक, 5 दिसम्बर 1984।
6. डॉ० जीरी फारेक, अर्थशास्त्र संस्थान, चेकोस्लोवाक विज्ञान अकादमी, 5 दिसम्बर 1984।
7. श्री जी० ए० कुलकर्णी, निदेशक (मूल्यांकन) और श्री पी० एन० कपूर, विशेष कार्याधिकारी, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मन्त्रालय, भारत सरकार, 21 दिसम्बर 1984।
8. डॉ० बी० सुब्रमण्यन और डी० कुलकर्णी, क्रमशः अध्यक्ष तथा सदस्य-सचिव, सूखा प्रधान क्षेत्र पुनर्विलोकन समिति, महाराष्ट्र सरकार, 16 जनवरी 1985।
9. प्रोफेसर डी० के० सत्यनारायण सेट्टी, निदेशक, श्री वी० एन० कृष्णामूर्ति और श्री जी० ए० नानजेगोवडा, सभी संयुक्त निदेशक और श्री वाई० एन० रामकृष्णैय्या, श्री नागराज राव, श्री चेन्ना-वासप्पा और श्री ए० के० एस० मूर्ति, सभी उप-निदेशक, तकनीकी शिक्षा निदेशालय, कर्नाटक, 22 जनवरी 1985।
10. श्री बी० वेंकटापैय्या, भूतपूर्व गवर्नर, भा० रि० बैंक, 12 फरवरी 1985।
11. सुश्री वायलेट्टे ग्राफ, वरिष्ठ अनुसंधान एसोसिएट, फाउन्डेशन नेश-नाल डीसाइंसिज, पोपलिलिक्युज, पेरिस, 26 फरवरी 1985।
12. डॉ० सीता राधाकृष्णन, निदेशक, भा० सा० वि० अ० प०, 4 मार्च 1984।
13. डॉ० अतीला अघ, निदेशक, अध्यक्ष, विकासशील देश विभाग और डॉ० मेगडोलन टोथ नागी, वैज्ञानिक सचिव, डॉ० जोजसेफ बालाज्स, हंगरी, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध संस्थान, (भारत-हंगरी विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत), 4 मार्च 1985।
14. आई० आई० पी० एस० दिल्ली के छात्र, 11 मार्च 1985।
15. डॉ० जेफरेर जे० लुनस्टेण्ड, वाइस कौंसल, अमरीकी महाकौंसुलेट, मद्रास, 12 मार्च 1985।
16. डॉ० आर० ई० वागमोर, प्रोफेसर, कृषि प्रबन्ध, महात्मा फुले कृषि

विद्यापीठ, काहुरी, अहमदनगर, महाराष्ट्र, 14 मार्च 1985, और

17. डॉ० सी० हनुमन्ता राव, सदस्य योजना आयोग, 28 मार्च 1985।

पुस्तकालय

31 मार्च 1985 को आई० एस० ई० सी० पुस्तकालय में पुस्तकों की कुल संख्या 53,675 थी। इनमें पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाओं के पिछले खण्ड, क्रममाला तथा सन्दर्भ पुस्तकें व अन्य सरकारी तथा गैर-सरकारी प्रलेख शामिल हैं।

स्टाफ

अपनी कार्यावधि समाप्त हो जाने पर डॉ० एल० एस० वेंकटारमणन ने 3 अगस्त 1984 को संस्थान के निदेशक का पद छोड़ दिया। उसी दिन डॉ०जी० थिमैय्या ने संस्थान के निदेशक का पद ग्रहण कर लिया।

निधियां

प्राप्तियां	रुपये	अदायगियां	रुपये
कर्नाटक सरकार	12,00,000		
भा० सा० वि० अ० प०	10,44,000	आई एस ई सी	25,44,866
संस्थान के अपने स्रोत	2,92,209		
भारत सरकार		ए डी आर टी	3,73,646
(कृषि मन्त्रालय)	3,80,000		
भारत सरकार		पी आर सी	3,62,610
(स्वास्थ्य मंत्रालय)	3,46,270		
भारतीय रिजर्व बैंक		एस एस एम	1,18,203
(एस० एस० एम०)	1,41,900		
कर्नाटक सरकार		सी ए एस यू	2,77,217
(योजना विभाग ए०डी०ए)	2,51,000		
कर्नाटक सरकार		यू के पी	4,10,438
(निदेशक रेशम विभाग)	4,65,000		
जोड़ :	41,20,379		40,86,980

विकास अध्ययन संस्थान, जयपुर

अनुसंधान अध्ययन

निम्नलिखित अनुसंधान परियोजनाओं पर किए गए काम के फलस्वरूप अनेक पत्र लिखे गए। इनमें से कुछ परियोजनाएं वर्ष 1985-86 के दौरान पूरी हो जाएंगी :

1. उत्तर-पूर्व राजस्थान में ग्रामीण ऊर्जा पद्धतियों तथा कड़ियों का एक सर्वेक्षण : राजस्थान के पांच जिलों में क्षेत्र कार्य 15 जुलाई 1985 तक पूरा हो जाएगा।
2. राजस्थान के छः प्रगतिशील जिलों में गोबर गैस संयंत्रों का मूल्यांकन।
3. औद्योगिक यूनिट की क्षेत्रीय कड़ियां : जयपुर मेटल्स एण्ड इलैक्ट्रिकल्स लि० का एक मामला अध्ययन।
4. शिक्षा तथा विकास : प्रारम्भिक विश्लेषण और पुर्नविचार के बाद एस० डब्ल्यू० आर० सी०, तिलोनिआ रात्रि स्कूलों का व्यापक अध्ययन करने तथा "मन्द्रा" संसाधन केन्द्र, मन्द्रा, से (जो अब लगभग बन्द हो गया है) एक तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य प्रदान करने का निर्णय किया गया है।
5. बदलता हुआ रेत : चारागाहों में छोटे और बड़े पशु कौन रखते हैं। सीकर जिले के सामान्य चारागाहों तथा उनके उपयोगकर्ताओं की स्थिति के सम्बन्ध में दिसम्बर 1984 से एक दो वर्षीय अध्ययन शुरू किया गया है।
6. पश्चिम राजस्थान में उत्प्रवास तथा खानाबदोशी : दो प्रश्न। इसके अन्तर्गत निम्नलिखितों का अध्ययन किया जा रहा है : (क) पश्चिमी राजस्थान में भेड़ और बकरियों का मौसमी उत्प्रवास—उत्प्रवास का सामाजिक अर्थशास्त्र तथा पारिस्थितिक निहितार्थ तथा अन्तर्निहित मानव जनसंख्या, और (ख) सांतिआ— पश्चिमी राजस्थान की एक खानाबदोश जनजाति। पुष्कर तथा नागौर पशु मेलों में लोगों के साथ क्षेत्र सम्पर्क स्थापित किया गया।

7. अगस्त 1984 के प्रारम्भ में स्थापित स्त्री विकास अध्ययन सैल ने राज्य सरकार द्वारा शुरू किए गए स्त्री विकास कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया। जिला स्तर पर भाग लेकर तथा कार्यवाई अनुसंधान, विशेष रूप से मूल्यांकन रीति विज्ञान की दृष्टि से सतत आधार पर शैक्षणिक निवेश की व्यवस्था करके यह सैल राज्य स्तर पर कार्यक्रम तैयार करने तथा कार्यक्रम के मूल्यांकन और मानिटरिंग में परामर्श देता है। तीन पत्र तैयार किए गए हैं।

प्रकाशन

निम्नलिखित आवसरिक पत्र तैयार किए गए :

1. कान्ता आहुजा, "समाकलित ग्राम विकास : नीति तथा दृष्टिकोण—कमजोर वर्गों के लिए आयोजना" पर विशेष सेमिनार में प्रस्तुत पत्र, यह सेमिनार दिसम्बर 1984 में भुवनेश्वर में आयोजित किया गया था।
2. सुषमिता बनर्जी (कन्सलटेशन डब्ल्यू० डी०), "प्रशिक्षण कार्यक्रम के सम्बन्ध में साथिन प्रशिक्षण रिपोर्ट", पद्मपुरा 1984 में आयोजित।
3. शारदा जैन, "शिक्षा का भारतीय दर्शन—कुछ विचार", ग्रीष्म संस्थान, शिक्षा विभाग, उ० पू० प० वि० नागालैण्ड कैम्पस, कोहिमा में प्रस्तुत पत्र। "शैक्षिक प्रणाली बदलने के सम्बन्ध में टिप्पणियां", मन्द्रा प्रशिक्षण एवं संसाधन केन्द्र—एक मूल्यांकन, तथा "स्त्रियों के लिए विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी"।
4. पुरनेन्दु कबूरी, "पश्चिमी राजस्थान में मौसमी उत्प्रवास तथा खानाबदोशी"।
5. कंचन माथुर, "पुनर्विचार : स्त्रियां तथा समाज"।
6. पी० सी० माथुर, "प्राकृतिक संसाधनों के विकास तथा प्रबन्ध के सामाजिक पहलू : राजस्थान नहर परियोजना के विशेष सन्दर्भ में भारत में सिंचाई तथा जल प्रबन्ध सम्बन्धी साहित्य का सर्वेक्षण"।
7. एम० एस० राठोड़, 'छोटे तथा बड़े खेतों के बीच उत्पादकता विभेदकों के कारणों का अंशदान', "भारतीय कृषि अर्थशास्त्र पत्रिका", खण्ड 39, अंक 1, जनवरी-मार्च 1984, तथा 'ग्रामीण विकास के प्रति कृषि प्रणाली दृष्टिकोण : सीमाएं तथा विकल्प—भरतपुर जिले में एक गांव का अध्ययन'।

व्याख्यान/सेमिनार/कार्यशाला

संस्थान ने, स्त्रियों के लिए विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी सम्बन्धी कार्यशाला की कार्यवाही भी प्रकाशित की ।

संस्थान में वार्ता देने/चर्चाओं के समन्वयन के लिए निम्नलिखित विद्वानों को आमंत्रित किया गया :

1. प्रोफेसर टी० वी० सत्यमूर्ति, प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान, येल विश्वविद्यालय, अमरीका, "दक्षिण एशिया में राष्ट्रवाद का प्रश्न"।
2. प्रोफेसर ओ० वी० मलयारोव, वरिष्ठ फैलो, प्राच्य अध्ययन संस्थान, सोवियत रूस, विज्ञान अकादमी, मास्को, "भारत के आर्थिक विकास में राज्य की भूमिका" ।
3. डॉ० देवित जे० ग्रीनफेल्ड, सामाजिक नृविज्ञानी, अन्तर्राष्ट्रीय सिंचाई प्रबन्ध संस्थान, कोलम्बो, श्रीलंका, "राजस्थान नहर क्षेत्र में उपनिवेशन की समस्याएं" ।
4. प्रोफेसर एन० एस० जोधा, वरिष्ठ अर्थशास्त्री, आई० सी० आर० आई० एस० ए० टी, हैदराबाद, "राजस्थान के शुष्क क्षेत्र में पशुओं और परिस्थिति से सम्बन्धित समस्याएं" ।
5. डॉ० जयन्त पाटिल, पो० आ० बोर्डी, जिला थाणा, महाराष्ट्र, "महाराष्ट्र में सामाजिक वन पालन के प्रयोग" ।
6. प्रोफेसर रणधीरसिंह, राजनीतिक विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, "पंजाब में संकट" ।
7. प्रोफेसर दयाकृष्ण, वरिष्ठ प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र, "विकासात्मक अनुसंधान में परिप्रेक्ष्य" ।
8. स्त्री अध्ययन सैल ने चर्चाएं आयोजित कीं और निम्नलिखित को आमंत्रित किया :

(1) डॉ० अनिता डिघे, अपर निदेशक, सामाजिक विकास परिषद्, नई दिल्ली, "मूल्यांकन तथा मानिटरिंग : पुनरीक्षित परिप्रेक्ष्य" ।

(2) श्रीमती रुक्मिणी हल्दिआ, भा० प्र० से० निदेशक, स्त्री विकास कार्यक्रम, राजस्थान सरकार, जयपुर, "सहभागिता मूल्यांकन : कुछ समस्याएं"।

(3) श्रीमती कमला भसीन, एफ० एफ० एच० सी०-एफ० ए० ओ, नई दिल्ली, तथा श्रीमती आभा भैया, "फ्रीलान्सर—विकास प्रशिक्षण रीति

विज्ञान के सम्बन्ध में परिप्रेक्ष्य सम्बन्धी सम्प्रेषण"।

(4) श्रीमती जुबैदा अहमद, पहले आई० एल० ओ० के साथ, श्रीमती शहनाज अंकलेसरिआ, "दि स्टेट्समैन", नई दिल्ली, श्रीमती एलिना सेन, फैलो, सी० डब्ल्यू० डी० एस०, नई दिल्ली, और डॉ० गोविन्द केल्कर, वरिष्ठ फैलो, सी० डब्ल्यू० डी० एस०, नई दिल्ली, "स्त्रियां तथा विकास: राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संकट"।

(5) सोनल मानसिंह, ओडिसी नर्तकी तथा लेखक, "सम्प्रेषण में विकल्प"।

(6) डॉ० ज्योत्सना वासुदेव, आचरणात्मक वैज्ञानिक, पिट्सबर्ग विश्व-विद्यालय, ने "स्त्री अध्ययनों के लिए उपयुक्त अनुसंधान विधियों" पर चर्चा की।

पुस्तकालय

वर्ष के दौरान संस्थान ने पुस्तकों के 799 शीर्षक तथा गैर-पुस्तक सामग्री के अन्तर्गत 124 शीर्षक जोड़े, जिन्हें मिलाकर वर्ष के अन्त में पुस्तकों की संख्या 3,030 तथा गैर-पुस्तक सामग्री की संख्या 705 हो गई। 97 पत्रिकाएं मंगाई गईं तथा 105 पत्रिकाएं निःशुल्क आधार पर प्राप्त हुईं। संस्थान को विश्व बैंक के प्रकाशनों के लिए एक संग्रह पुस्तकालय के रूप में स्वीकार किया गया है। यह त्रैमासिक "लायब्रेरी बुलेटिन" जारी करता है। मार्च 1985 तक 15 अंक प्रकाशित किए गए।

संकाय

डॉ० (श्रीमती) शारदा जैन ने अगस्त 1984 में संस्थान में फैलो का पद सम्भाल लिया और "शिक्षा तथा विकास" पर अनुसंधान कर रही हैं तथा स्त्री विकास अध्ययन सैल का काम भी देख रही हैं। श्रीमती कंचन माथुर तथा श्रीमती कविता श्रीवास्तव ने क्रमशः एसोसिएट फैलो व जूनियर अनुसंधान फैलो के रूप में और श्री दीपक ज्ञानचन्दानी तथा श्री पुरनेन्दु कवूरी ने सितम्बर 1984 में वरिष्ठ फैलो की दो रिक्तियों में एसोसिएट फैलो के रूप में कार्य सम्भाल लिया।

निधियां

प्राप्तियां	(लाख रुपये)	अदायगियां	(लाख रुपये)
भा० सा० वि० अ० प०	1.95*	वेतन तथा भत्ते	2.64
राजस्थान सरकार	2.50	डाक खर्च, लेखनसामग्री तथा टेलीफोन	0.31
परियोजनाएं	1.45	परियोजनाएं	1.71
संस्थान की अपनी आय (बकाया सहित)	1.16	उपस्कर तथा फर्नीचर	1.26
		पुस्तकालय	0.61
		अन्य स्थापना खर्च	0.82
		शेष राशि	0.25
जोड़	7.06		7.06

* भा० सा० वि० अ० प० द्वारा वर्ष 1984-85 के लिए 1.52 लाख रुपये की रकम (0.80 लाख रु० आवर्ती तथा 0.72 लाख रु० अनावर्ती) 31 मार्च 1985 से पहले जारी की गई थी। तथापि संस्थान को यह रकम अप्रैल 1985 के प्रारम्भ में प्राप्त हुई और इसलिए इस रकम को 1985-86 के खातों में दिखाया गया है।

आर्थिक विकास संस्थान, दिल्ली

संस्थान के 16 नवम्बर 1983 को प्रारम्भ हुए रजत जयन्ती वर्ष अकादमिक कार्यक्रम इस वर्ष भी जारी रहे जिनका उद्‌घाटन स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने किया था।

रजत जयन्ती सेमिनार तथा व्याख्यानमाला

अकादमिक वर्ष 1984-85, "भारतीय अर्थ-व्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तनों" पर रजत जयन्ती सेमिनार से प्रारम्भ हुआ, जो अप्रैल 1984 में आयोजित किया गया था। इस सेमिनार में 75 से अधिक विद्वानों ने भाग लिया और निम्नलिखित आठ सत्रों में 50 से अधिक पत्रों पर चर्चा की गई : (1) 'समानता के साथ आत्म-निर्भरता, विकास के लिए नीति : भारतीय अनुभव तथा नीति विकल्प', (2) 'जनसंख्या तथा आर्थिक और सामाजिक विकास : परिप्रेक्ष्य तथा नीति', (3) '1980 दशक के लिए कृषि नीति : संरचनात्मक बाधाएं तथा प्रौद्योगिकीय सम्भावनाएं', (4) 'औद्योगिक विकास तथा स्थिरता : अवस्थापना संबंधी बाधाएं और क्षमताएं', (5) 'योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति, मूल्य नीति तथा मांग प्रबन्ध', (6) 'क्षेत्रीय तथा नृवंश अभिज्ञान : सामाजिक गतिशीलता तथा बहु-आयामीय समाज', (7) 'विकास पुनर्विचारित : बहु-विषयक तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य', (8) 'नीति विकल्पों के संबंध में समापन सत्र'।

रजत जयन्ती व्याख्यान कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित सात व्याख्यान दिये गये : (1) प्रोफेसर वी० एम० दाण्डेकर, 'क्षेत्रीय विकास में असंतुलन', (2) डॉ० आई० जी० पटेल, 'भारतीय संदर्भ में आर्थिक सिद्धान्त तथा आर्थिक नीति के सम्बन्ध में कुछ प्रतिक्रियाएं', (3) प्रोफेसर अशोक मित्रा, 'भारत में जनांकिकी वृद्धि तथा पर्यावरणात्मक अवनति', (4) प्रोफेसर के० एन० राज, 'विकेन्द्रीकृत विकास आयोजना तथा कार्यान्वयन की समस्याएं', (5) प्रोफेसर ए० एम० खुसरो, 'निर्धनता विश्लेषण की निर्धनता', (6) प्रोफेसर टी० एन० श्रीनिवास, '2000 ईसवी की दिशा में भारतीय कृषि', और प्रोफेसर राज कृष्ण, 'भारत में निर्धनता के आयाम'।

धर्म नारायण तथा बी० के० रामास्वामी स्मारक व्याख्यान

संस्थान तथा दिल्ली अर्थशास्त्र स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में चौथा धर्म नारायण स्मारक व्याख्यान डॉ० एस० आर० सेन द्वारा 'हमारे छोटे खेतों के लिए नीति' विषय पर अक्तूबर 1984 में संस्थान में दिया गया।

संस्थान तथा दिल्ली अर्थशास्त्र स्कूल व भारतीय सांख्यिकी संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में बी० के० रामास्वामी स्मारक व्याख्यान प्रोफेसर जेम्स टौबिन (नोबल पुरस्कार विजेता) द्वारा 'मेक्रो-आर्थिक सिद्धान्त के चक्र' विषय पर जनवरी में दिल्ली अर्थशास्त्र स्कूल में दिया गया।

स्टाफ तथा संगठन

प्रोफेसर पी० सी० जोशी ने निदेशक के रूप में अपना चार वर्ष का कार्यकाल पूरा कर लिया और एक सितम्बर 1984 से प्रोफेसर के० कृष्णामूर्ति को संस्थान का निदेशक नियुक्त किया गया है।

(1) डी०बी०डी० धवन, (2) डॉ०(श्रीमती) एस० मुखोपाध्याय, (3) डॉ० एस० के० रे और, (4) डॉ० के० सुब्बाराव को प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया गया। अधिवार्षिकी की आयु प्राप्त कर लेने पर प्रोफेसर पी० बी० देसाई को तीन वर्ष की अवधि के लिए पुन: प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया गया।

प्रोफेसर सी० एच० हनुमंत राव को, योजना आयोग के एक सदस्य के रूप में अपना कार्य जारी रखने के लिए अप्रैल 1986 तक एक और वर्ष के लिए अनुपस्थिति छुट्टी मंजूर की गई। प्रोफेसर एस० एन० मिश्रा तथा प्रोफेसर एस० मुखोपाध्याय ने, जो अनुपस्थिति छुट्टी पर थे, क्रमश: जनवरी और फरवरी 1985 में संस्थान में अपना कार्य फिर से सम्भाल लिया। प्रोफेसर ए० के० दास गुप्त ने, जो 1970 दशक के शुरू से संस्थान में थे, मार्च 1985 में त्याग पत्र दे दिया ताकि वह ओतागो विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के रूप में अपना कार्य सम्भाल सकें।

अनुसंधान प्रकाशन

इस वर्ष के दौरान निम्नलिखित सात पुस्तकें प्रकाशित की गई तथा पांच छप रहीं थीं। इसके अतिरिक्त संस्थान के संकाय ने निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित कीं : (1) बी० बी० भट्टाचार्य, 'सरकारी खर्च, मुद्रास्फीति तथा विकास', (2) अरुण कुमार बन्दोपाध्याय, 'कृषि उधार का अर्थशास्त्र', (3) आशिष बोस और पी० बी० देसाई, (दल के साथ), 'प्राथमिक स्वास्थ्य की सामाजिक गतिशीलता में अध्ययन', (4) के० कृष्णामूर्ति तथा बी० पण्डित, 'भारतीय अर्थव्यवस्था

की मेक्रो-इकानामिट्रिक माडलिंग', (5) डी० यू० शास्त्री, 'भारत में सूती वस्त्र उद्योग', (6) वी० के० आर० वी० राव, 'भारतीय आयोजना के प्रति नया दृष्टि-कोण', (7) एस० के० रे, 'कृषि का गहनीकरण'।

निम्नलिखित पुस्तकें छप रहीं थीं : (1) बीना अग्रवाल, 'काष्ठ ईंधन ऊर्जा संकट', (2) ब्रेमन, 'श्रमिक उत्प्रवास तथा ग्राम परिवर्तन', (3) ब्रोडे, 'धीमी गति', (4) बी० एन० गोल्डर, 'भारतीय उद्योग में उत्पादकता विकास', (5) एलेन डे० जनवरी और के० सुब्बाराव, 'भारत में कृषि मूल्य नीति और आय वितरण'।

निम्नलिखित पाण्डुलिपियां प्रकाशन के लिए तैयार हैं :

(1) जे० बी० जी० तिलक द्वारा 'शिक्षा के परिणामों में असमानता', और

(2) राजाराम दास गुप्ता द्वारा 'भारत में पोषण आयोजना'।

संस्थान द्वारा शुरू की गई परियोजनाओं के फलस्वरूप लगभग 30 अनुसंधान पत्र देश-विदेश की व्यावसायिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं और 50 से अधिक पत्र मिमिओग्राफ रूप में प्रकाशित किए गये।

संस्थान की पत्रिका 'कन्ट्रीब्युशन्स टू इण्डियन सोसिओलाजी' का प्रकाशन 'सेज' ग्रुप आफ कम्पनीज द्वारा नई दिल्ली, बेवरली हिल्स, और लन्दन से जारी रहा।

सेमिनार/कार्यशालाएं/व्याख्यान

वर्ष के दौरान संस्थान के संकाय सदस्यों तथा अन्य संस्थाओं के विद्वानों ने विविध-विषयों पर सेमिनार/कार्यशालाएं/व्याख्यान आयोजित किए। इनमें निम्नलिखित शामिल थे : एम० एन० मूर्ति, 'विभाजक समानता/कराधान तथा सरकारी क्षेत्र को वस्तुओं के लिए मूल्यों की अप्रत्यक्ष अधिकतम संरचना,' बी० एन० गोल्डर 'भारतीय विनिर्माण में समग्र तथ्य उत्पादकता वृद्धि : अन्तर-उद्योग विश्लेषण', श्लोमो रियुतलिंगर 'खाद्य सुरक्षा नीतियां', बी० बी० भट्टाचार्य तथा पी० डी० शर्मा, 'मुद्रा तथा मूल्यों के बीच आकस्मिक सम्बन्ध में मुद्रास्फीति तथा संरचनात्मक परिवर्तन—भारतीय अनुभव, 1960-83', रोमेश दीवान, 'विनिर्माण में नवीनताएं तथा अमरीकी निर्यात', ए० डी० किर्शमन, 'कड़ियों के सम्बन्ध में', के० एन० राज, 'भारत तथा विश्व अर्थ-व्यवस्था', रोबर्टो हाम, 'मेक्सिको तथा नवदेशों में जनसंख्या आयाम में हाल ही के परिवर्तन-पुरातन हो जाने की चिन्ता', होमी कातरक, 'भारत में आयातित प्रौद्योगिकी और आर एण्ड डी'।

संकाय सदस्यों ने विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा अनुसंधान संस्थाओं में व्याख्यान दिए तथा सेमिनार भी आयोजित किए और अनेक राष्ट्रीय व अन्त-र्राष्ट्रीय सम्मेलनों में पत्र प्रस्तुत किए।

शिक्षण तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम

भारतीय आर्थिक सेवा परिवीक्षार्थियों के पन्द्रहवें दल ने, जिसमें 34 परिवीक्षार्थी थे, अक्तूबर 1984 में संस्थान में अपना नौ महीने का प्रशिक्षण पूरा कर लिया तथा परिवीक्षार्थियों के सोलहवें दल ने, जिसमें 23 सदस्य हैं, अपना नौ महीने का प्रशिक्षण दिसम्बर 1984 में शुरू किया। विभिन्न राज्यों तथा केन्द्रीय सरकार के अधिकारियों के लिए वर्ष के दौरान निवेश आयोजना तथा परियोजना मूल्यांकन में पांच भिन्न-भिन्न पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। प्रशिक्षण संस्थाओं से सम्बद्ध अधिकारियों की आवश्यकता को पूरा करने के उद्देश्य से प्रशिक्षकों के लिए एक अनुसंधान पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया। इन कार्यक्रमों में कुल 54 अधिकारियों ने भाग लिया।

परामर्श सेवाएं

केन्द्रीय और राज्य सरकारों, योजना आयोग, भारतीय रिजर्व बैंक व अनेक अर्ध-सरकारी संस्थाओं ने संकाय सदस्यों को कार्य दलों, कृतक बलों, समितियों आदि में शामिल करके उनकी विशेषज्ञ सेवाओं का लाभ उठाना जारी रखा। कुछ संकाय सदस्य, देश-विदेश में प्रकाशित विख्यात पत्रिकाओं के सम्पादक मण्डलों के सदस्यों के रूप में भी सेवा करते रहे।

पी-एच० डी० कार्यक्रम

संकाय सदस्यों के पर्यवेक्षण में वर्ष के दौरान 12 अध्येता अपनी पी-एच० डी० डिग्री के लिए कार्य कर रहे थे। उनमें से चार ने अपने शोध निबन्ध प्रस्तुत कर दिये है।

पुस्तकालय

वर्ष के दौरान पुस्तकालय में लगभग 4,000 पुस्तकें शामिल की गई। पुस्तकों तथा माइक्रो प्रलेखों का कुल संग्रह लगभग एक लाख तक पहुंच गया। मंगाई गई पत्रिकाओं की संख्या 640 थी। पुस्तकालय ने संस्थान संकाय तथा अन्य अध्येताओं की प्रलेखन व ग्रन्थ-सूची सम्बन्धी सेवाएं प्रदान करना जारी रखा।

निधियां

प्राप्तियां	लाख रुपये	लाख रुपये	अदायगियां	लाख रुपये
1	2	3	4	5
भा० सा० वि० अ० प०			अनुरक्षण तथा विकास खण्ड	10.94
आवर्ती	10.66		जनसंख्या अनुसंधान केन्द्र	8.16
अनावर्ती	3.90	14.56	निवेश आयोजना परियोजना	5.52
स्वास्थ्य और परिवार कल्याण			भा० आ० से० प्रशिक्षण कार्यक्रम	6.73
मन्त्रालय			अयोजना तथा विकास खण्ड	3.05
आवर्ती	7.68		कृषि अर्थशास्त्र खण्ड	2·87
अनावर्ती	2.50	10.18	इकानामिट्रिक में भा० रि० बैंक पीठ	0.75
योजना आयोग		5.65	आई० ई० जी० मुख्य खाता	1.70
गृह मंत्रालय		6.18		
योजना आयोग		2.46		

1	2	3	4	5
कृषि तथा ग्राम विकास मंत्रालय		2.62	होस्टल	1.00
भारतीय रिजर्व बैंक		0.75	भा० सा० वि० अ० प० तथा अन्य परियोजनाएं	4.49
स्टाफ क्वार्टरों से किराया		1.70		
होस्टलवासियों से किराया		1.00		
भा० सा० वि० अ० प० तथा अन्य तदर्थ परियोजनाएं		4.49		
	जोड़ :	49.59		45.21

लोक उद्यम संस्थान, हैदराबाद

महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

संस्थान ने, राज्य स्तरीय लोक उद्यमों, केन्द्र स्तरीय लोक उद्यमों तथा लोक उद्यमों के राज्य ब्यूरो के साथ अपने कार्यकलापों को सुदृढ़ किया। संस्थान ने, आन्ध्र प्रदेश लोक उद्यम प्रबन्ध बोर्ड के साथ निकट सम्बन्ध विकसित किए। लन्दन व्यापार स्कूल, लन्दन के सहयोग से चल रहे तीन वर्षीय अनुसन्धान कार्यक्रम का पहला चरण वर्ष 1984-85 के दौरान पूरा हो गया। एम० बी० ए० (पी० ई०) कार्यक्रम के दूसरे बैच से उम्मीदवारों ने अपना अध्ययन पूरा कर लिया और संगणक विधि कार्यक्रम में स्नातकोत्तर डिप्लोमा के प्रथम बैच के छात्रों ने भी अपना अध्ययन कार्य पूरा कर लिया।

अनुसन्धान

निम्नलिखित अनुसन्धान परियोजनाएँ पूरी हो गई हैं / प्रगति पर हैं : (1) आई०पी०ई०तथा भा०सा०वि०अ०प० द्वारा वित्त पोषित लोक उपक्रमों के सम्बन्ध में सटिप्पण ग्रन्थसूची, (2) संस्थान द्वारा स्वयं वित्त पोषित भारत में राज्य स्तरीय लोक उद्यमों के सम्बन्ध में अनुसन्धान, (3) भा० सा० वि० अ० प० तथा लो० उ० सं०, द्वारा संयुक्त रूप से वित्त पोषित मामला अध्ययन अनुसन्धान परियोजना, (4) आन्ध्र प्रदेश की सरकार द्वारा वित्त पोषित ग्रामोदय कार्यक्रम के सम्बन्ध में अध्ययन, (5) ऊर्जा परामर्श बोर्ड, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित गोदावरी डेल्टा में ग्राम ऊर्जा सर्वेक्षण, (6) लोक उद्यम ब्यूरो, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित लोक उद्यमों में निगमित आयोजना।

परामर्श

संस्थान ने निम्नलिखितों के सम्बन्ध में परामर्श दिया : (1) आन्ध्र प्रदेश राज्य बीज विकास निगम, "संगठन संरचना और जनशक्ति आयोजना का एक अध्ययन", (2) आन्ध्र प्रदेश के राज्य स्तरीय लोक उद्यमों में लोक निवेश के सम्बन्ध में रिपोर्ट, (3) एम० आई० एस० नागार्जुन उर्वरक तथा रसायन सम्बन्धी रिपोर्टों की समीक्षा (1982-83), (4) गोदावरी उर्वरक तथा रसायन लिमिटेड की रिपोर्टों की समीक्षा (1982-83), (5) आन्ध्र प्रदेश औद्योगिक विकास

निगम लिमिटेड के सम्बन्ध में नकदी प्रवाह तथा निष्पादन की समीक्षा, 1983-84, (6) आन्ध्र प्रदेश औद्योगिक विकास निगम लिमिटेड की वार्षिक रिपोर्ट, 1982-83, तथा नागार्जुन रसायन तथा उर्वरक लिमिटेड, 1983-84 की समीक्षा, (7) आन्ध्र प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड में उप-केन्द्र समितियों के कामकाज का अध्ययन, (8) आन्ध्र प्रदेश सरकार में संगणकीकरण, (9) आन्ध्र प्रदेश सरकार की विशेष रोजगार योजनाओं के आयुक्त के लिए संगणक सम्बन्धी प्रशिक्षण कार्यक्रमों की विधि, डिज़ाइन और कार्यान्वयन का चुनाव, (10) बिहार राज्य चर्म विकास निगम के लिए निगमित आयोजना, (11) रिपब्लिक फोर्ज कम्पनी की समस्याएँ, 1983-84, (12) वर्ष 1983-84 के लिए आन्ध्र प्रदेश गैर-रिहायशी भारतीय निवेश निगम के वार्षिक लेखों की समीक्षा, और (13) आन्ध्र प्रदेश राज्य वित्त निगम में नकदी लेखा पद्धति और वाणिज्यिक लेखा पद्धति ।

प्रशिक्षण

सन्दर्भाधीन अवधि के दौरान निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए : (1) कर्नाटक राज्य लोक उद्यम ब्यूरो के लिए राज्य स्तरीय लोक उद्यमों का परियोजना मूल्यांकन, 16-19 अप्रैल 1984, (2) कर्नाटक राज्य लोक उद्यम ब्यूरो के लिए कार्मिक प्रबन्ध सम्बन्धी कार्यक्रम, 7-11 मई 1984, (3) आई० डी०पी० एल० एग्जीक्युटिव्ज, हैदराबाद के लिए उत्पादकता तकनीक और प्रबन्ध प्रभावशालिता सम्बन्धी इन-कम्पनी प्रशिक्षण कार्यक्रम, 13-23 जून 1984, (4) संगणक प्रणाली सम्बन्धी तीन दिवसीय अनुस्थापन कार्यक्रम, 28-30 जून 1984,(5) एन० एम० डी० सी० अधिकारियों के लिए कार्मिक प्रबन्ध संबंधी इन-कम्पनी प्रशिक्षण कार्यक्रम, 10-16 सितम्बर 1984, (6) गैर-वित्त अधिकारियों के लिए वित्त, 3-8 सितम्बर 1984, (7) लोक उद्यम ब्यूरो के सहयोग से उत्पादन प्रबन्ध लोक उद्यम सम्बन्धी कार्यक्रम, 15-18 अक्तूबर 1984, (8) लोक उद्यम ब्यूरो तथा लोक उद्यम व्यापार प्रबन्ध के सहयोग से द्वितीय आधारभूत (फाउण्डेशन) पाठ्यक्रम, 29 अक्तूबर-7 दिसम्बर 1984, (9) एन०एम०डी०सी० के वित्तीय अधिकारियों के लिए गैर-वित्त सम्बन्धी इन-कम्पनी प्रशिक्षण कार्यक्रम, 19-24 नवम्बर 1984, (10) राज्य स्तरीय लोक उद्यमों के लिए निगमित आयोजना सम्बन्धी कार्यक्रम, 12-14 नवम्बर 1984 (11) लोक उद्यम ब्यूरो के सहयोग से लोक उद्यमों में कार्यक्रम नीति आयोजना, 14-19 जनवरी 1985, (12) लोक उद्यम ब्यूरो के सहयोग से लोक उद्यमों में विपणन प्रबन्ध सम्बन्धी कार्यक्रम, 21-24 जनवरी 1985, (13) जिला स्तरीय प्रशासन में संगणक जागरूकता सम्बन्धी कार्यक्रम, 28-30 जनवरी 1985, (14) आन्ध्र

प्रदेश राज्य सचिवालय के जूनियर अधिकारियों के लिए गहन संगणक प्रशिक्षण कार्यक्रम, 11-25 फरवरी 1985, (15) प्रबन्धकों के लिए संगणक सम्बन्धी कार्यक्रम, 14-17 फरवरी 1985, (16) बैंकिंग में संगणकों के सम्बन्ध में कार्यक्रम, 14-17 फरवरी 1985, (17) लोक उद्यमों में सामग्री प्रबन्ध के सम्बन्ध में कार्यक्रम, 25-27 फरवरी 1985, (18) गोदावरी उर्वक तथा रसायन लिमिटेड में पर्यवेक्षी विकास के सम्बन्ध में इन-कम्पनी प्रशिक्षण कार्यक्रम, 4-16 मार्च, 1985, (19) जिला स्तरीय प्रशासन में संगणक जागरूकता के सम्बन्ध में कार्यक्रम, 13-15 मार्च 1985।

सेमिनार/सम्मेलन/कार्यशालाएँ

वर्ष 1984-85 के दौरान संस्थान में निम्नलिखित सेमिनार/सम्मेलन/कार्यशालाएँ आयोजित की गई :

1. बी० एच० ई० एल०, सी० एस० आई० आर० तथा "मिधानी" द्वारा प्रायोजित सरकारी क्षेत्र में आर० एण्ड डी० के प्रबन्ध के सम्बन्ध में राष्ट्रीय सेमिनार, 27-28 जुलाई 1984।
2. आन्ध्र प्रदेश राज्य उद्यमों के उच्च पदाधिकारियों के लिए संगणक आधारित सूचना पद्धतियों के सम्बन्ध में सेमिनार, 16-18 अगस्त 1984।
3. 1980 के दशक में लोक उद्यम नीति के सम्बन्ध में आई० पी० ई० लन्दन व्यापार स्कूल, अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार, 11-14 फरवरी 1985।
4. संगणकों के सम्बन्ध में उच्च प्रबन्ध मण्डल सेमिनार 19 फरवरी, 1985।
5. लोक उद्यम ब्यूरो के साथ संयुक्त रूप से आयोजित लोक उद्यमों में निगमित आयोजना के सम्बन्ध में राष्ट्रीय कार्यशाला, 21-22 फरवरी 1985।
6. आन्ध्र प्रदेश सरकार के विभागाध्यक्षों के लिए संगणकों के सम्बन्ध में उच्च स्तरीय सेमिनार, 26-27 मार्च 1985।

अतिथि

वर्ष के दौरान निम्नलिखित अतिथि संस्थान में आए : श्री आर० वासुदेवन, महाप्रबन्धक, भारत हैवी इलेक्ट्रीकल्स लिमिटेड, तिरूची; श्री एस० आर० शंकरन, भा० प्र० से, मुख्य सचिव, त्रिपुरा सरकार; प्रोफेसर आर० एस० निगम, अध्यक्ष, वाणिज्य विभाग, दिल्ली अर्थशास्त्र स्कूल, श्री बी० एन० युगन्धर, भा० प्र० से, क्षेत्रीय सलाहकार, "एस्केप", बैंकाक; श्री पी० सी० गुप्त, प्रबन्ध निदेशक, राष्ट्रीय खनिज विकास निगम, हैदराबाद; श्री आबिद हुसैन, सदस्य, योजना आयोग, भारत सरकार; प्रोफेसर डेविड चेम्बर्स, डीन तथा प्रोफेसर माइकल वेसेली, लन्दन व्यापार स्कूल, लन्दन, यू० के०; श्री एस० एम० पाटिल, भूतपूर्व

प्रबन्ध निदेशक, एच० एस० टी० लिमिटेड, बंगलौर; प्रोफेसर वैद्यनाथन, मद्रास विकास अध्ययन संस्थान, मद्रास; श्री लक्ष्मीनारायण, भा० प्र० से, निदेशक, अन्ना प्रबन्ध संस्थान, मद्रास; श्री के० आर० परमेश्वर, सलाहकार तथा डा० (श्रीमती) मृदुला कृष्णा, संयुक्त सलाहकार, परियोजना मूल्यांकन प्रभाग, योजना आयोग, भारत सरकार।

केन्द्रीय तथा राज्य स्तरीय लोक उद्यमों के क्षेत्रों में संस्थान का अनुसन्धान कार्यक्रम, नीति निर्माताओं, लोक उद्यमों के अधिकारियों तथा अनुसन्धानकर्ताओं के लिए बहुत उपयोगी रहा है। संस्थान ने अन्वेषणात्मक-विश्लेषणात्मक, तथ्य-निर्धारण और कार्यवाही-आधारित अनुसन्धान कार्य किया है। आने वाले वर्षों में संस्थान का प्रस्ताव लोक उद्यमों से सम्बन्धित सरकारी नीति से सम्बद्ध मामलों के सम्बन्ध में अनुसन्धान कार्य करने का है। ऐसे कार्य का मुख्य उद्देश्य नीति निर्माताओं और उन्हें कार्यान्वित करने वाले व्यक्तियों को निकट आने में मदद देना तथा ऐसी समझ-बूझ कायम करना है जिससे केन्द्रीय व राज्य स्तरों पर सरकारी उद्यमों को अपना काम-काज करने में मदद मिल सके।

निधियाँ

प्राप्तियाँ	(लाख रुपये)	अदायगियाँ	(लाख रुपये)
भा०सा०वि०अ०प०	3.50	वेतन तथा भत्ते	10.73
आन्ध्र प्रदेश सरकार	5.25	पुस्तकालय	0.37
चन्दे की राशि	0.35	फैलोशिप	0.24
परामर्श	1.03	आँकड़ा संसाधन/लघु संगणक	2.00
आँकड़ा संसाधन/लघु संगणक प्राप्तियाँ	2.00	प्रशिक्षण पाठ्यक्रम तथा सेमिनार	6.18
प्रशिक्षण तथा व्यावसायिक पाठ्यक्रम	9.21	प्रकाशन	0.25
आय की तुलना में व्यय का आधिक्य	1.66	मुद्रण तथा लेखन सामग्री	0.62
		डाक खर्च, टेलीफोन तथा तार	0.47
		भा० भ०/दै० भत्ता	0.26
		कैम्पस	0.33
		वाहन	0.64
		फुटकर	0.91
जोड़	23.00	जोड़	23.00

मद्रास विकास अध्ययन संस्थान, मद्रास

प्रमुख घटनाएँ

चौदहवीं अन्तर-विषयक अनुसंधान रीति विज्ञान कार्यशाला

संस्थान द्वारा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के सहयोग से 6 से 9 जून तक आई० सी० एस० ए० सम्मेलन केन्द्र, मद्रास में चौदहवीं अन्तर-विषयक अनुसंधान रीतिविज्ञान कार्यशाला आयोजित की गई। लगातार दूसरे वर्ष भी कार्यशाला का मुख्य विषय "शहरी समस्याएँ" था। कार्यशाला के लिए निम्नलिखित पत्र विशेष रूप से तैयार किए गए : सी०एम० अब्राहम द्वारा "केरल में शहरीकरण" (भारतीअर विश्वविद्यालय, कोयम्बतूर), (2) "शहरीकरण तथा शैक्षिक विकास : भारतीय अनुभवों के सम्बन्ध में कुछ प्रतिक्रियाएँ" एन० जयराम, बंगलौर विश्वविद्यालय द्वारा, (3) "शहरी क्षेत्रों में उत्प्रवास : कुछ प्रश्न" एस० मजुमदार द्वारा (मद्रास विकास अध्ययन संस्थान, मद्रास), (4) "साहित्य में नगर : कलकत्ता का एक मामला अध्ययन", श्रीमती मीनाक्षी मुखर्जी द्वारा (हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद), (5) "शहरी पद्धतियों के स्थानिक पहलू : कर्नाटक के मामले", पी० डी० मुद्रादेव द्वारा (मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास), (6) "विशाखापटनम और विजयवाडा : निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों पर शहरी प्रभाव की विरोधाभासात्मक पद्धतियों का एक अध्ययन", सी० आर० प्रसाद राव और सी० चक्रपाणि द्वारा (आन्ध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर), (7) "शहरी राजनीति : श्रेणी अथवा वंश", वी० ए० वी० शर्मा द्वारा (उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद), और (8) "शहरी नीति की समीक्षा" वहीदुद्दीन खान द्वारा (सामाजिक और आर्थिक अध्ययन केन्द्र, हैदराबाद)।

विभागाध्यक्षों की चौदहवीं बैठक

संस्थान तथा भा०सा०वि०अ०प० के दक्षिण केन्द्र द्वारा दक्षिणी राज्यों के समाज विज्ञानियों की चौदहवीं बैठक 8 और 9 दिसम्बर को संस्थान में संयुक्त रूप से आयोजित की गई। इसमें, समाज विज्ञान के छः विषयों (नृविज्ञान, अर्थ-शास्त्र, शिक्षा, विधि, राजनीतिक विज्ञान और मनोविज्ञान) के 17 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। "दक्षिण भारतीय विश्वविद्यालयों में शिक्षण तथा अनुसंधान" पर प्रमुख समीक्षा पत्र, उस्मानिया विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष

डॉ० ई०जी० परमेश्वरन ने तैयार किया था। सत्र की कार्यसूची की एक अन्य मद दक्षिणी विश्वविद्यालयों में समाज विज्ञानों में पी-एच० डी० कार्यक्रम का एक सर्वेक्षण था।

पी-एच० डी० अध्येताओं तथा गाइडों की वार्षिक बैठक

अकादमिक वर्ष 1984-85 के लिए पी-एच० डी० अध्येताओं और गाइडों की वार्षिक बैठक 16 से 19 अप्रैल 1984 तक संस्थान में आयोजित की गई। विभिन्न विश्वविद्यालयों से 24 अनुसंधान अध्येताओं तथा दस पी-एच० डी० गाइडों ने कार्यशाला में भाग लिया।

निम्नलिखित विशेष व्याख्यान दिए गए : (1) "लघु जाँच के लिए नमूना डिजाइन", (2) "कृषि में अनुसंधान के लिए समस्या क्षेत्र", (3) "प्रतिक्रमण विश्लेषण", (4) "सर्वेक्षण आंकड़ों का संगणक संसाधन", (5) "एक विशिष्ट उद्योग के अध्ययन के लिए एक पद्धति"।

कार्यशाला/सम्मेलन

'स्त्री समस्या वर्ग में रुचि रखने वाले अर्थशास्त्रियों' की तीसरी अखिल भारतीय कार्यशाला 30 और 31 अक्तूबर को संस्थान के तत्वावधान में आयोजित की गई। जिस मुख्य विषय पर चर्चा की गई वह था : "स्त्री प्रौद्योगिकी तथा उत्पादन के स्वरूप"। कार्यशाला में 70 व्यक्तियों ने भाग लिया और 15 पत्र प्रस्तुत किए गए।

वित्तीय प्रबन्ध तथा अनुसंधान संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में 15 नवम्बर को आई०एफ०एम०आर० में "विश्व बैंक विकास रिपोर्ट 1984" पर एक सेमिनार आयोजित किया गया। "विश्व अर्थव्यवस्था में सुधार अथवा गिरावट" रिपोर्ट के भाग (I) के सम्बन्ध में पहला अधिवेशन, भारत में विश्व बैंक के प्रमुख श्री बेवन वईडे द्वारा और "जनसंख्या परिवर्तन और विकास" रिपोर्ट के भाग-(II) के सम्बन्ध में दूसरा अधिवेशन श्रीमती नैनसी बर्डसाल द्वारा शुरू किया गया।

राजाजी अन्तर्राष्ट्रीय सार्वजनिक कार्य तथा प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली तथा सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन संस्थान, बंगलौर के संयुक्त तत्वावधान में एम० आई० डी० एस० ने 29 नवम्बर 1984 से 1 दिसम्बर 1984 तक "विकेन्द्रीकृत आयोजना तथा कार्यान्वयन" पर एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया। इसमें देश के विभिन्न भागों से लगभग चालीस प्रशासकों, शिक्षाविदों तथा सार्वजनिक क्षेत्र के व्यक्तियों ने भाग लिया। डॉ० एम० एस० आदिशेषय्या, श्री एस० गुहान तथा सी० टी० कुरिअन ने सेमिनार के लिए पत्र प्रस्तुत किए।

अनुसंधान

श्री एस० गुहान तथा डॉ० वी० बी० अत्रेय द्वारा शुरू किया गया "स्लेटर गाँवों का पुनर्सर्वेक्षण' पूरा हो गया है जिसके फलस्वरूप तमिलनाडु के उन पाँच भिन्न-भिन्न भागों के गाँवों से सम्बन्धित पाँच अध्ययन किए गए जिनका सर्वेक्षण 1918 में गिल्बर्ट स्लेटर ने किया था।

डॉ० सी० टी० कुरिअन तथा डॉ० शराजीत मजुमदार ने "बाजार खोज के लक्षण तथा परिणामों" के सम्बन्ध में अपना अध्ययन पूरा कर लिया। डॉ० के० नागराज ने "शहरीकरण" पर एक पत्र पूरा कर लिया और "तमिलनाडु में शहरीकरण : 1901-1960" पर कार्य चल रहा है। भारत सरकार के श्रम मन्त्रालय द्वारा प्रायोजित सातूर, शिवकासी में माचिस उद्योग के सम्बन्ध में अध्ययन से सम्बन्धित क्षेत्रीय कार्य पूरा हो गया है।

"बिहार में कृषि प्रणाली, तनाव तथा कृषक संगठन" परियोजना से श्री निर्मल सेनगुप्त को सम्बद्ध किया गया, जिसका प्रायोजन योजना आयोग भा० सा० वि० अ० प०, भा०ई०अनु० प० तथा एन०एल०आई० ने किया था और जो अगस्त 1984 में पूरा हो गया। डॉ० यू० कल्पगम ने स्त्रियों की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं पर दो अध्ययन पूरे कर लिये पहला "स्त्रियाँ तथा औद्योगिक आरक्षित सेना : एक पुनः मूल्यांकन" पर और दूसरा "स्त्रियाँ तथा घरेलू काम: भारतीय आँकड़ा स्रोतों में क्या है" पर।

डॉ० पद्मिनि स्वामीनाथन ने "औद्योगिक संकेन्द्रण" पर दो अध्ययन पूरे कर लिए हैं। डॉ० पी० राधाकृष्णन ने, "तमिलनाडु में पिछड़े वर्गों का सामाजिक-ऐतिहासिक विश्लेषण और आरक्षण : 1900 से आज तक" अपने अध्ययन विषय पर अभिलेखीय कार्य पूरा कर लिया।

परामर्श/सलाहकार भूमिका

डॉ० ए० वैद्यनाथन इस समय वि० अ० आयोग के राष्ट्रीय लेक्चरर हैं। डॉ० वैद्यनाथन और डॉ० सी० टी० कुरिअन, योजना आयोग के अर्थशास्त्रियों के पैनल के सदस्य बने रहे। डॉ० सी० टी० कुरिअन, राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन की शासी निकाय के एक सदस्य हैं।

अल्पावधि वाले अध्येताओं द्वारा वर्ष के दौरान निम्नलिखित तीन अध्ययन पूरे किए गए :—

1. प्रेमा राजागोपालन, "नगर में धुलाई सेवाओं के सम्बन्ध में एक अध्ययन"।
2. रुक्मिणी, "मद्रास नगर की गन्दी बस्तियाँ"।
3. नलिनी, "तमिलनाडु के औद्योगिक उत्पादन में मजदूरी का अंश"।

सेमिनार

संस्थान ने निम्नलिखित मासिक सेमिनार आयोजित किए—

1. नासिर तैय्यबजी, 'तमिलनाडु में लघु, कुटीर तथा ग्रामोद्योग', अप्रैल 1984
2. के० रामकृष्णन, 'तमिलनाडु में शिक्षा', जून 1984
3. आर०एन० पोडुवल, 'खाद्यान्न अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक हस्तक्षेप : वर्तमान तमिलनाडु', अगस्त 1984
4. यू० कल्पगम, 'तमिलनाडु में रोजगार', जुलाई 1984
5. के० भारथन, 'तमिलनाडु में औद्योगिक विकास', अक्तूबर 1984
6. के० नागराज तथा रुक्मिणि रमानी, 'तमिलनाडु में आवास तथा गन्दी बस्तियाँ', नवम्बर 1984
7. क्रिस्टोफे गुइलमोटो, 'तमिलनाडु में हाल ही की जनांकिकी प्रवृत्तियाँ', दिसम्बर 1984
8. वी० रंगाराजन, 'बैंकिंग प्रणाली तथा निर्धन (तमिलनाडु के विशेष सन्दर्भ में)', जनवरी 1985
9. माल्कम एस०आदिशेषय्या, 'तमिलनाडु अर्थव्यवस्था 1983-84 के सम्बन्ध में कुछ टिप्पणियाँ', फरवरी 1985
10. यू० शंकर, 'तमिलनाडु में मूँगफली का उत्पादन', मार्च 1985

उपरोक्त के अतिरिक्त संस्थान ने निम्नलिखित विशेष सेमिनार आयोजित किए—

1. डॉ० लार्डीनोइस, फ्रेंच विद्वान, संस्थान से सम्बद्ध, '19वीं शताब्दी के दौरान दक्षिण भारत में अकाल, संक्रामक रोग तथा मृत्युदर",अप्रैल 1984
2. प्रोफेसर विपिन चन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, 'राष्ट्रवादी आन्दोलन के प्रति वैकल्पिक दृष्टिकोण', 12 जून 1984
3. श्री एस० गुहान, एम आई डी एस, 'साम्प्रदायिक भू-प्रणालियों की सामोन पद्धति तथा ग्राम सामाजिक सुरक्षा', 2 जुलाई 1984
4. डॉ० के० एन० राज, सदस्य, आर्थिक सलाहकार बोर्ड, 'विकेन्द्रीकरण', 20 जुलाई 1984
5. श्री बी० के० नेहरू, गुजरात के राज्यपाल, 'सार्वजनिक क्षेत्र'।

6. डॉ० बी० कनेसलिंगम, सह-निदेशक, मार्ग संस्थान, कोलम्बो, 'श्रीलंका में तमिल समस्या'।

7. श्री पाल सीब्राइट, आल सोल्स कालेज, आक्सफोर्ड, 'अनिश्चितता के अन्तर्गत निर्णय लेना'।

8. डॉ० अनिल बोर्डिया, सचिव, श्रम मन्त्रालय, भारत सरकार, 'सातवीं पंचवर्षीय योजना में परिकल्पित रोजगार नीतियाँ', 26 अक्तूबर 1984

9. श्री तुकासा मिजुशीमा, जापानी, अनुसंधान अध्येता, 'परिवर्तन, अवसर और विकल्प, भारतीय ग्रामवासियों के परिप्रेक्ष्य'।

10. कुमार जयवर्धन, श्रीलंका विश्वविद्यालय, 'श्रीलंका में जातीय संघर्ष : एक ऐतिहासिक अवलोकन'।

11. डॉ० ए० वैद्यनाथन, एम आई डी एस, 'चीनी अर्थव्यवस्था'।

12. श्री माइकल थारकन, विकास अध्ययन केन्द्र, 'त्रावणकोर के आधुनिकीकरण के तथ्य, 1891-1947'।

13. श्री जे० सेल्वारत्नम, 'कन्याकुमारी जिले में फसल पद्धति में परिवर्तनों के पहलू, 1957-58 और 1983-84'।

14. श्री एम० एन० शिवसुब्रमणयन, अनुसंधान अध्येता, एम०आई०डी०एस०, 'चार दक्षिणी राज्यों में औद्योगिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन'।

15. श्री बी० के० रामचन्द्रन, अनुसंधान अध्येता, एम० आई० डी० एस० 'हाल ही के समय में कुमबुम घाटी में श्रमिक शक्ति के विस्तार के सम्बन्ध में आंकड़ों से कुछ परिणाम'।

16. श्री माइरन वीनर, एम० आई० टी०, 'भारत के बच्चे : नीतियाँ, शिक्षण कार्य तथा काम'।

17. डॉ० जीन रेसीन, अनुसंधान फैलो, वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए सामग्री केन्द्र, फ्रांस, 'दक्षिण भारत में क्षेत्र, नागरिकता तथा विकास : दक्षिण आर्काट जिले का मामला : एक भौगोलिक परिप्रेक्ष्य'।

18. जीन फ्लोरिड, फैलो, नुटेल्ड कालेज, यू० के०, 'सामाजिक सिद्धान्त'।

19. श्रीमती रीटा गिल्बर्ट, ए० एन० यू०, 'विद्युतीकरण के विशेष सन्दर्भ में ग्रामीण विकास'।

20. श्री पाल सी० ब्राइट, 'विनिर्माण उद्योग तथा यू० के० अर्थव्यवस्था : थेचर प्रयोग'।

प्रकाशन

संस्थान के संकाय ने निम्नलिखित कार्य पत्र निकाले—

वी० वी० अत्रेय, 'वडामलाईपुरम: एक पुनः सर्वेक्षण'—डब्ल्यू० पी० 50

एम० एस० आदिशेषय्या, 'अर्थव्यवस्था 1984'—डब्ल्यू० पी० 51

एस० गुहन और के० भारथन, 'दुसी : एक पुनः सर्वेक्षण'—डब्ल्यू० पी० 52

एस० गुहन, 'अन्तरण सूत्र : लाम्बर्ग से नीति तक'—डबल्यू० पी० 53

के० नागराज, 'तमिलनाडु, कर्नाटक और आन्ध्रप्रदेश में नगर : जनसंख्या तथा स्थानिक जमाव का एक अध्ययन, 1961-81'
—डबल्यू० पी० 54।

अपनी 'चयनिक शृंखला' के अन्तर्गत संस्थान ने 'स्त्रियाँ, प्रौद्योगिकी तथा उत्पादन के स्वरूप' पर एक रिपोर्ट प्रकाशित की।

पी-एच० डी० कार्यक्रम

वर्ष 1984-85 के दौरान कुल मिलाकर 16 व्यक्तियों ने संस्थान के माध्यम से अपनी पी-एच० डी० डिग्री के लिए पंजीकरण कराया। कुमारी पी० उषा ने जो संस्थान में एक भा० सा० वि० अ० प० पी-एच० डी० अध्येता थी, अपना शोध निबन्ध प्रस्तुत कर दिया।

मद्रास विश्वविद्यालय के इकानामिट्रिक्स विभाग, वित्तीय प्रबन्ध तथा अनुसंधान संस्थान और एम० आई० डी० एस० के संयुक्त तत्वावधान में, नगर के पी-एच० डी० छात्रों के लिए 'सांख्यिकी तथा परिमाणात्मक तकनीकों' पर 27 अक्तूबर से संस्थान में एक छः महीने का पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया।

यह पाठ्क्रम दो भागों में विभाजित है। पहले भाग में बुनियादी सांख्यिकी पद्धतियाँ, इकानामिट्रिक तकनीक तथा भारतीय अर्थव्यवस्था के आंकड़ा आधार का सर्वेक्षण शामिल है। एच्छिक आधार पर दूसरे भाग में, नमूना तकनीक, सूचक अंक और समय शृंखला विश्लेषण, राष्ट्रीय आय तथा सामाजिक लेखा पद्धतियाँ उत्पादन और खपत अध्ययन, अनिश्चिता का अर्थशास्त्र, इष्टतम तकनीक, आयोजना तकनीक आदि जैसे विषय शामिल होंगे।

क्षेत्र अध्ययन ग्रन्थसूची

क्षेत्र अध्ययन ग्रन्थसूची का काम पूरा हो गया। इसका प्रायोजन भा० सा० वि० अ० प० द्वारा, तमिलनाडु से सम्बन्धित अंग्रेजी और तमिल में समाज विद्वानों में प्रकाशित व अप्रकाशित अनुसंधान सामग्री का पता लगाने और प्रत्येक के विषय में विस्तृत सूचना प्रदान करने की दृष्टि से, सन् 1979 में किया गया था।

राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा परियोजना

'तमिलनाडु में प्रौढ़ शिक्षा' पर आठवीं और नवीं रिपोर्ट-शृंखला में अन्तिम दो पूरी हो गई हैं और उन्हें शिक्षा मन्त्रालय, नई दिल्ली को भेज दिया गया। इसके साथ ही, प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन एकक ने अपने कार्यकलाप पूरे कर लिए और वित्त वर्ष के अन्त में एकक को बन्द कर दिया गया।

अतिथि

चीनी समाज सेवा अकादमी के अध्यक्ष श्री एम० ए० होंक के नेतृत्व में अकादमी के चौदह समाज विज्ञानियों के एक प्रतिनिधि मण्डल ने 6 जनवरी, 1985 को संस्थान का दौरा किया। प्रतिनिधि मण्डल में निम्नलिखित सदस्य शामिल थे—श्री आइअन जुनरुई, एक भूतपूर्व संस्कृति मन्त्री, श्री डिंग वईज्ही, अध्यक्ष, प्रकाशन, सी० ए० एस० एस० और मुख्य सम्पादक 'चीन में सामाजिक विज्ञान' तथा अन्य अनुंधानकर्ता।

स्टाफ

डॉ० ए० वैद्यनाथन ने सितम्बर 1984 में संस्थान में कार्यभार संभाल लिया।

निधियाँ

प्राप्तियाँ	(रुपये)	अदायगियाँ	(रुपये)
भा० सा० वि० अ० प०	5,50,000.00	वेतन तथा भत्ते	6,15,709.98
तमिलनाडु सरकार	5,50,000.00	पुस्तकालय	1,78,324.50
संस्थान के अपने संसाधन	13,798.45	अनुसंधान कार्य-कलाप तथा	
आय की तुलना में खर्च की अधिकता	220.64	प्रकाशन	48,032.49
		मुद्रण तथा लेखन सामग्री	47,384.43
		उपस्कर तथा फर्नीचर	1,780.06
		कैम्पस अनुरक्षण	23,402.85
		अन्य स्थापना मामले	1,63,420.78
जोड़	11,14,019.09		11,14,019.09

सरदार पटेल आर्थिक तथा सामाजिक अनुसंधान संस्थान
अहमदाबाद

अनुसन्धान

आलोच्य वर्ष के दौरान निम्नलिखित अनुसन्धान परियोजनाएँ पूरी की गई :

1. "गुजरात में कृषि अनुपात के कुछ पहलू"—राजस्व विभाग, गुजरात सरकार द्वारा प्रायोजित।
2. "गुजरात में रहन-सहन के स्तर तथा पद्धतियाँ"—अर्थशास्त्र तथा सांख्यिकी ब्यूरो, गुजरात सरकार द्वारा प्रायोजित।
3. "गुजरात में कृषि श्रमिकों की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति"—श्रमिक तथा रोजगार विभाग, गुजरात सरकार द्वारा प्रायोजित।
4. "गुजरात में चुने हुए ग्राम विकास कार्यक्रमों के सम्बन्ध में अध्ययनों का सर्वेक्षण"—भा० सा० वि० अ० प०, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित।
5. "राष्ट्रीय ग्राम रोजगार कार्यक्रम—एक मूल्यांकन"—कृषि तथा वन विभाग, गुजरात सरकार द्वारा प्रायोजित।
6. "खादी तथा ग्रामोद्योग कार्यक्रम तथा निर्धनता उन्मूलन"—गुजरात राज्य खादी ग्रामोद्योग बोर्ड, अहमदाबाद द्वारा प्रायोजित।

पहले प्रारम्भ की गई 9 अनुसन्धान परियोजनाएँ प्रगति पर थीं।

भा० सा० वि० अ० प० द्वारा प्रायोजित निम्नलिखित दो अनुसन्धान परियोजनाएँ वर्ष के दौरान शुरू की गई : (1) "अहमदाबाद में हस्त मुद्रण उद्योग", (2) "भारत में व्यापार का उदारीकरण : प्रभाव तथा परिणाम"।

अनुसन्धान कार्यक्रम

शिक्षा तथा संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार की सहायता से प्रौढ़ शिक्षा सेल ने प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के सम्बन्ध में मूल्यांकन अध्ययन जारी रखे।

1. वि० अ० आ० प्रायोजित "गुजरात में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम—एक मूल्यांकन"।
2. "गुजरात में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम—संगठन तथा प्रशासन"।

गुजरात सरकार का योजना विभाग, गुजरात अर्थ-व्यवस्था सम्बन्धी पीठ के लिए पिछले पाँच वर्षों से धन दे रहा है। इस कार्यक्रम के तत्वावधान में निम्नलिखित नए अध्ययन शुरू किए गए हैं :

1. "गुजरात में कृषि प्रणाली पर सिंचाई तथा यन्त्रीकरण के लिए एल० डी० बी० वित्त का प्रभाव"।
2. "गुजरात के पिछड़े जिले के ग्रामीण निर्धनों के घर"।
3. "गुजरात में पिछड़े क्षेत्र का सीमांकन"।
4. "गुजरात में फार्म स्तर पर फार्म प्रौद्योगिकी अपनाने को प्रभावित करने वाले कारणों का अध्ययन"।
5. "खाद्य प्राथमिकताएँ तथा निर्धनता" और
6. "पिछड़े वर्ग के स्तर और पद्धति"।

संस्थान ने, इसके संकाय द्वारा गुजरात की अर्थ-व्यवस्था के सम्बन्ध में किए गए महत्त्वपूर्ण अध्ययनों को "गुजरात अन्वेषण शृंखला" के अन्तर्गत, गुजराती में प्रकाशित करने का काम शुरू किया। वर्ष के दौरान इस शृंखला के अन्तर्गत दो पुस्तिकाएँ : (1) "निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रम तथा" (2) "गुजरात में सामाजिक वन", प्रकाशित की गईं।

प्रकाशन

वर्ष के दौरान संस्थान की अंग्रेजी अर्धवार्षिक पत्रिका "अन्वेषक" खण्ड तेरह, अंक 2 (दिसम्बर 1983) का प्रकाशन किया गया। गुजराती अर्धवार्षिक पत्रिका "मधुकरी" के खण्ड दस, अंक 1 (जून 1984) का भी प्रकाशन किया गया।

सहयोग तथा परामर्श सेवाएँ

गुजरात सरकार द्वारा प्रोफेसर एम० एस० त्रिवेदी को राज्य उद्योग सलाहकार परिषद् का एक सदस्य बनने के लिए आमन्त्रित किया गया। उन्हें, गुजरात औद्योगिक निवेश निगम के निदेशक बोर्ड का एक सदस्य बनने के लिए भी आमन्त्रित किया गया। उन्हें, भारतीय इकानामिट्रिक एसोसिएशन की कार्यकारी समिति का एक सदस्य चुना गया।

प्रोफेसर जी० वी० एस० एन० मूर्त्ति, संगणक प्रधान परिचालन अनुसन्धान में तथा आँकड़ा परिशोधन में सांख्यिकी पद्धतियों और भवन के कॉलेज में संगणक प्रबन्ध पाठ्यक्रम में सहयोग कर रहे थे।

डॉ० रोहित देसाई ने एन० सी० ए० ई० आर० के० "भारतीय उद्योगों में प्रौद्योगिकी प्रभाव तथा विकास सम्बन्धी अनुसन्धान कार्य के लिए वहाँ एक परामर्शदाता के रूप में कार्य किया।

डॉ० ऊषा शर्मा ने (अंशकालिक) उप निदेशक के रूप में सरदार पटेल लोक प्रशासन संस्थान की मदद करना जारी रखा।

श्री रोहित शुक्ला ने, पाठ्य पुस्तक अनुसन्धान केन्द्र के साथ संयुक्त रूप से उभरती हुई भारतीय सोसायटी में अध्यापकों की भूमिका के सम्बन्ध में दो पाठ्यक्रम आयोजित किए। उन्होंने एक अगणकारी संकाय सदस्य तथा एक संसाधन व्यक्ति के रूप में विकास संचार केन्द्र की मदद की। श्री शुक्ला ने, वि०अ०आ० कार्यक्रम के अन्तर्गत तीन विडियो फिल्म बनाने में भी भाग लिया।

प्रशिक्षण/शिक्षण कार्यक्रम

संस्थान ने 14 से 28 मई 1984 तक सामान्य प्रबन्ध में एक कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का प्रायोजन, गुजरात राज्य सिविल सप्लाई निगम लिमिटेड ने किया था। जी०एस०सी०एस०सी० के प्रबन्ध निदेशक श्री सी० आर० विश्वास, भा० प्र० से, ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और गुजरात के राज्य वित्तमन्त्री श्री हरीहर खमभोलजा ने समापन भाषण दिया। श्री जी० ओ० पारीख ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

संस्थान ने "गुजरात में सामाजिक वन कार्यक्रम का मूल्यांकन" पर एक कार्यशाला आयोजित की, जिसका प्रयोजन भारत सरकार तथा संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन ने 24 से 27 मई 1984 तक किया था। गुजरात के मुख्य मन्त्री श्री माधव सिंह सोलंकी ने इस कार्यशाला का उद्घाटन किया। गुजरात के सिचाई मन्त्री श्री अमरसिंह चौधरी इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। श्री रोहित शुक्ला इस परियोजना के अध्ययन निदेशक थे।

संस्थान ने 5 नवम्बर 1984 से 1 दिसम्बर 1984 तक अनुसन्धान रीति विज्ञान के सम्बन्ध में चार सप्ताह का एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया, जिसका प्रयोजन भा० सा० वि० अ० प० ने किया था। डॉ० पी० जी० पाठक पाठ्यक्रम के निदेशक थे।

आलोच्य वर्ष के दौरान चार अनुसन्धान अध्येताओं को पी-एच० डी० डिग्री प्रदान की गई : (1) श्री रमेश जी शाह, "परिसम्पत्तियों की वापसी तथा उद्योगों में लाभ (गाइड—प्रोफेसर आर० के० मोदी), (2) श्री ए० एम० कदक, "भारत में विकास तथा रोजगार : समस्याओं तथा नीति निहितार्थों का विश्लेषण (गाइड—प्रोफेसर आर० जे० मोदी)", (3) श्री एम० थामस पाल, "भारतीय

मुद्रा अनुभव के कुछ पहलू : 1947-74 (गाइड—प्रोफेसर आर० जे० मोदी)", (4) श्री बी० सी० ठाकर, "भारत के सार्वजनिक ऋण प्रबन्ध का मौद्रिक पहलू (गाइड—प्रोफेसर आर० जे० मोदी)"।

श्री रोहित शुक्ला, सुश्री चेतन त्रिवेदी तथा श्री सुरजीत सिंह सन्धू ने अपने-अपने शोध निबन्ध गुजरात विश्वविद्यालय को प्रस्तुत कर दिए। सुश्री स्वप्ना चट्टोपाध्याय और श्री जी० के० पिल्ले ने अपने शोध निबन्धों के सार प्रस्तुत कर दिए।

संस्थान ने, भा० सा० वि० अ० प० की विभिन्न योजनाओं, जैसे कि अध्ययन अनुदान, आँकड़ा परामर्श तथा डाक्टोरल फैलोशिपों का संचालन जारी रखा। वर्ष के दौरान तीन अनुसन्धान अध्येताओं ने अध्ययन अनुदान योजना के अन्तर्गत, और दो अध्येताओं ने आँकड़ा परामर्श योजना के अन्तर्गत संस्थान का दौरा किया।

भा० सा० वि० अ० प० द्वारा वित्त पोषित डाक्टोरल फैलोशिप योजना के अन्तर्गत, तीन अनुसन्धान छात्र श्री जयेश के० शास्त्री, सुश्री हिना के० ओझा, और सुश्री रामाराव संस्थान में शामिल हो गए।

परिसर विकास

स्टाफ क्वार्टरों की चार इकाइयों का निर्माण कार्य पूरा हो गया है और उन्हें स्टाफ को अलाट कर दिया गया है। पानी की टंकी का निर्माण कार्य चल रहा है और इसके शीघ्र ही पूरा हो जाने की सम्भावना है।

पुस्तकालय तथा सांख्यिकीय प्रयोगशाला

संस्थान के पुस्तकालय में पुस्तकों की कुल संख्या 27,800 थी जिसमें पत्रिकाओं के पिछले अंक भी शामिल हैं। संस्थान प्रत्येक वर्ष 250 पत्रिकाएँ भी मँगाता है।

संस्थान की माइक्रो-संगणक प्रणाली से लघु आँकड़ा परिशोधन तथा अन्य सांख्यिकीय कार्य में भी सुविधा मिलती है। संस्थान ने, विशाल तथा जटिल आँकड़ा परिशोधन कार्य के लिए भौतिक अनुसन्धान प्रयोगशाला के डी० ई० सी०—1091 संगणक के उपयोग के लिए उसके साथ की गई व्यवस्था को जारी रखा। आँकड़ा बैंक, संस्थान द्वारा शुरू की गई परियोजनाओं से प्राप्त आँकड़ों को अपने अभिलेखागार में सुरक्षित रखता है। आँकड़ा बैंक में, राष्ट्रीय लेखों, मशीन यन्त्र जनगणना, गुजरात में उपभोक्ता खर्च, सूरत, बड़ौदा जिले के जन-जातियों के कला रेशम उद्योग इत्यादि का भण्डारण किया जाता है।

प्रोफेसर के० के० सुब्रमण्यन ने, "अंकटाड" की एक परियोजना पर कार्य करने के लिए 7 नवम्बर 1983 से 3 जनवरी 1984 तक तथा 19 मार्च 1984 से 17 जून 1984 तक बिना वेतन के विशेष छुट्टी का लाभ उठाया। उन्हें, भारत से चीन का दौरा करने के लिए भा० सा० वि० अ० प० प्रतिनिधिमण्डल के एक सदस्य के रूप में जाने के लिए आमन्त्रित किया गया। उन्होंने 14 अक्टूबर 1984 से 18 नवम्बर 1984 तक यह दौरा किया। एक प्रोफेसर तथा चार सह-प्रोफेसरों ने संस्थान से त्यागपत्र दे दिया।

अतिथि

वर्ष के दौरान संस्थान के स्टाफ ने निम्नलिखित विद्वानों के साथ चर्चा/वार्ता का लाभ उठाया : डॉ० विट्टन, उप-निदेशक, अमरीकी केन्द्र; डॉ० बी० जी० पटेल, निदेशक, उद्यमशीलता विकास केन्द्र, अहमदाबाद; श्री ओस्वाल्ड विलियम्स, उपाध्यक्ष, ग्रम्मन इन्टरनेशनल : प्रोफेसर थिमैय्या उप-निदेशक, सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन संस्थान, बंगलौर; प्रोफेसर पी० आर० ब्रह्मानन्द, अर्थशास्त्र विभाग, बम्बई विश्वविद्यालय; श्रीमती उते वेस्तीपाल, सह-प्रोफेसर, कृषि अर्थ-शास्त्र, तकनीकी विश्वविद्यालय, बर्लिन; श्री हिरोशी इशीहरे, नगोयो विश्व-विद्यालय जापान; श्री टी० एस० उनेतोषी मिजोग्रेही, तोयाना विश्वविद्यालय, जापान; प्रोफेसर ओ०वी० मालयारोव, वरिष्ठ अनुसन्धान फैलो, प्राच्य अध्ययन संस्थान; सोवियत रूस विज्ञान अकादमी, और विश्व बैंक, फ्रांस तथा नीदरलैण्डस के दलों ने भी संस्थान का दौरा किया।

सेमिनार तथा सम्मेलन

प्रोफेसर आर० जे० मोदी ने अमरीकी केन्द्र, बम्बई द्वारा आयोजित "भारत-अमरीकी व्यापार" पर एक सेमिनार में भाग लिया। डॉ० पी० जी० पाठक ने, "सातवीं पंचवर्षीय आयोजना : पंचमहल जिला" पर एक कार्यशाला-सेमिनार में भाग लिया, प्रोफेसर जी० वी० एस० एन० मूर्ति तथा डॉ० बी० सी० ठक्कर ने, 2 से 5 जनवरी 1985 को हैदराबाद में आयोजित भारतीय इकानामिट्रिक सोसायटी के 23वें वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया। प्रोफेसर मूर्ति ने, इस सम्मेलन में "प्रयुक्त आर्थिक अध्ययनों" पर एक सेमिनार की अध्यक्षता की। श्री थामसमैथ्यु ने, गांधी नगर में "प्रौढ शिक्षा" पर एक सेमिनार में भाग लिया, डॉ० रोहित देसाई तथा डॉ० आर० एस० तिवारी ने 6 से 8 जनवरी 1985 को उज्जैन में आयोजित भारतीय श्रम अर्थशास्त्र सोसायटी के 26वें वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया, श्री रोहित शुक्ला ने, "सामाजिक वनों के सम्बन्ध में स्वैच्छिक एजेन्सियों की भूमिका" और "शहरी कृषि" पर सेमिनारों में भाग

लिया । इन दोनों सेमिनारों का आयोजन "विकसाट" अहमदाबाद द्वारा किया गया था । उन्हें, सामाजिक वनों के सम्बन्ध में बैंगकाक में हुए सम्मेलन में भाग लेने के लिए भी आमन्त्रित किया गया। प्रोफेसर एम० एस० त्रिवेदी, प्रोफेसर आर० जे० मोदी, श्री जी० ओ० पारीख, श्री के० एम० पारेख, डॉ० बी० सी० ठक्कर, श्री पी० एम० पटेल, श्रीमती स्वाति दवे और श्री मधुकान्त पटेल ने 3-4 फरवरी 1985 को वल्लभ विद्यानगर में आयोजित 16वें गुजरात आर्थिक सम्मेलन में भाग लिया ।

निधियाँ

प्राप्तियाँ	(लाख रुपये)	अदायगियाँ	(लाख रुपये)
भा० सा० वि० अ० प०		स्थापना	15.18
पूंजीगत अनुदान सहित	10.00	प्रकाशन	0.20
गुजरात सरकार	14.76	सेमिनार/फैलोशिप	
अन्य स्रोत	0.77	तथा संगणक	0.28
परियोजना निधियाँ	5.29	पुस्तकालय	1.40
आय की तुलना में		फर्नीचर तथा उपस्कर	0.26
खर्च का आधिक्य	3.00	लेखन सामग्री,	
		यात्रा तथा अन्य	
		फुटकर	1.79
		मरम्मत तथा अनुरक्षण	0.75
		परियोजनाएँ	9.08
		पूंजीगत खर्च	4.88
जोड़ :	33.82		33.82

खण्ड–2

लेखे

लेखापरीक्षा प्रमाण-पत्र

मैंने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद् के 31 मार्च 1985 को समाप्त होने वाले वर्ष के लेखाओं और तुलन-पत्र की जाँच कर ली है। मैंने सभी अपेक्षित सूचना और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिए हैं तथा संलग्न लेखा परीक्षा प्रतिवेदन में दी गई अभ्युक्तियों के अधीन रहते हुए अपनी लेखापरीक्षा के परिणामस्वरूप मैं प्रमाणित करता हूँ कि मेरी राय में और मेरी सर्वोत्तम जानकारी तथा मुझे दिए गए स्पष्टीकरण तथा परिषद् की बहियों में दर्शाए गए उल्लेखों के अनुसार ये लेखे और तुलन-पत्र उपयुक्त रूप से तैयार किये गए हैं तथा परिषद् के कार्यकलापों का सही और उचित रूप प्रस्तुत करते हैं।

ह०
दि. कु. चक्रवर्ती
निदेशक लेखापरीक्षा
केन्द्रीय राजस्व—1

नई दिल्ली
दिनांक 13-11-85

वर्ष 1984-85 के लिए भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के सम्बन्ध में लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

1. सामान्य

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद् का वित्तपोषण मुख्यत: भारत सरकार से प्राप्त अनुदानों द्वारा होता है। 1984-85 के दौरान इसने कुल 363.07 लाख रु० के अनुदान प्राप्त किए।

2. लेखों पर टिप्पणी

2.1 केन्द्रों का स्तर तथा अपूर्ण लेखे

परिषद् ने उन क्षेत्रीय केन्द्रों का स्तर निर्धारित नहीं किया जहाँ पर अभी तक अभिलेखों की लेखापरीक्षा नहीं हुई थी। वर्ष 1984-85 के दौरान इन केन्द्रों को भुगतान किए गए 30.19 लाख रु० राशि को अन्तिम शीर्ष "सहायक अनुदान" में डेबिट कर दिया गया था। न तो इस राशि के लेखे प्राप्त किए गए तथा लेखापरीक्षा को प्रस्तुत किए गए और न ही आय तथा व्यय के लेन-देन तथा इन केन्द्रों की परिसम्पत्तियों तथा देयताओं की स्थिति परिषद् के वार्षिक लेखे में समाविष्ट की गई थी। इसी प्रकार मार्च 1985 को समाप्त होने वाले पिछले छ: वर्षों के दौरान इन केन्द्रों को किए गए प्रेषणों की राशि 114.92 थी। परिषद् ने बताया कि इस प्रश्न तथा क्षेत्रीय केन्द्रों के स्तर पर विचार-विमर्श के लिए नियुक्त समिति की रिपोर्ट शीघ्र ही अपेक्षित थी।

2.2 परिसम्पत्तियों के अपूर्ण अभिलेखे

(i) भूमि तथा भवन (17.28 लाख रु०)

परिषद् ने भूमि तथा भवन के स्थापन तथा भूमि का क्षेत्र, मूल्य आदि के ब्यौरे दर्शाते हुए कोई अभिलेख नहीं रखे थे। भवनों के पट्टा विलेख/बिक्री विलेख, समापन प्रमाण-पत्र आदि से सम्बन्धित प्रलेख लेखापरीक्षा को प्रस्तुत नहीं किए गए थे। परिषद् ने सितम्बर 1985 में बताया कि यह राशि वर्ष 1976-77 तक पश्चिमी क्षेत्रीय केन्द्रों के भवनों की लागत को निरूपित करती है तथा जब क्षेत्रीय केन्द्रों के स्तर के बारे में निर्णय हो जाएगा तो मामले का समाधान कर दिया जाएगा।

(II) **फर्नीचर तथा उपस्कर** (32.04 लाख रु०)

अधिकांश मामलों में निष्क्रिय अनुपभोज्य स्टाक रजिस्टर में मूल्य (लागत) नहीं लिखा गया था जिसके परिणामस्वरूप तुलन-पत्र में फर्नीचर/उपस्कर के लिए दर्शाये गये 32.04 लाख रु० मूल्य का सत्यापन संदेहास्पद था। अत: रजिस्टरों के अनुसार परिसम्पत्तियों के मूल्य, वार्षिक लेखे में दर्शाए गए शेषों के साथ मिलाने योग्य नहीं था।

(iii) **पुस्तकालय पुस्तकें** (13.04 लाख रु०)

प्राप्ति रजिस्टर के अनुसार क्रय मदों का जोड़ तुलन-पत्र में दर्शाए गए आंकड़ों के साथ नहीं निकाला गया था। परिषद् के प्रारम्भ होने से ही अर्थात वर्ष 1969 से पुस्तकों का प्रत्यक्ष सत्यापन नहीं किया गया था।

परिषद् अन्य संगठनों तथा बाहरी देशों से बहुत बड़ी संख्या में मुफ्त उपहार के रूप में पुस्तकें तथा जर्नल भी प्राप्त कर रही थी लेकिन उनके मूल्य तुलन-पत्र में समाविष्ट नहीं किए गए थे।

(iv) **मूल्यांकित प्रकाशन** (22.50 लाख रु०)

वर्ष 1983-84 के लेखे लेखा परीक्षा प्रतिवेदन में इस ओर इंगित किया गया था कि मूल्यांकित प्रकाशन के मूल्य (तुलन-पत्र में दर्शाए गए) तथा परिषद् और इसके वितरक/प्रकाशकों के पास पड़े प्रकाशन स्टाक मूल्य के बीच 6.63 लाख रु० के अन्तर का समाधान किया जाना था। परिषद् ने बताया था (जनवरी 1985) कि वितरकों/प्रकाशकों के पास पड़े प्रकाशन स्टाक का सही मूल्य पता लगाने के लिए प्रयास किए जा रहे थे तथा 6.63 लाख रु० के अन्तर का पता लगाने के लिए उनसे अद्यतन स्थिति मंगवाई गई थी। तथापि, अन्तर को समाधान करने के बजाय वितरण विक्रय विवरण वर्ष 1984-85 को देय रायल्टी तथा 31 मार्च 1985 को हस्तगत स्टाक के मूल्य के विवरण वितरक/प्रकाशकों से परिषद् द्वारा अभी तक (जुलाई 1985) एकत्र नहीं किये गये थे।

2.3 शिक्षावृत्ति तथा आकस्मिक अनुदानों के सम्बन्ध में बकाया उपयोगिता प्रमाण-पत्र

परिषद्, सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान को प्रोत्साहित करने के लिए आचार्य विद तथा आचार्य विदेत्तर अध्ययन के लिए शिक्षावृत्ति आकस्मिक अनुदान देती है। परिषद् द्वारा बनाए गए 'शिक्षावृत्ति अनुदान नियम' के आधार पर 31 मार्च

1985 तक अभ्यर्थियों को 264.30 लाख रु० राशि के (2,136) पुरस्कार दिए गए थे। इन नियमों के लिए अभी तक सरकार का अनुमोदन प्राप्त नहीं किया गया था यद्यपि परिषद् के नियमों के नियम 23 (क) के अन्तर्गत यह आवश्यक था। 545 मामलों में से जिनमें अन्तिम रिपोर्टें आनी थीं, 359 मामलों की 134.37 लाख रु० के व्यय वाली रिपोर्टें अभी तक प्राप्त नहीं हुई थीं। परिषद् के पास वर्षवार ब्यौरा भी उपलब्ध नहीं था।

2.4 अनुसंधान परियोजनाओं के लिए अनुदानों का बकाया उपयोगिता प्रमाण-पत्र

परिषद् द्वारा दिए गए अनुदान 2 वर्षों में या परियोजना के समापन पर, जो भी पहले हो, उपयोग करने होते हैं। तथापि मार्च, 1983 तक 1,358 अनुसंधान परियोजनाओं के लिए दिए गए 184.29 लाख रु० के अनुदान में से 72.42 लाख रु० के उपयोगिता प्रमाण-पत्र प्रतीक्षित थे। बकाया राशि का वर्ष वार ब्यौरा निम्न प्रकार है—

वर्ष जिसमें दिया गया	बाकी उपयोगिता प्रमाण-पत्र राशि (लाख रु० में)
योजना आयोग से अन्तरित परियोजनाएँ	1.59
1969-70 से 1971-72	7.05
1972-73	5.96
1973-74	3.57
1974-75	2.46
1975-76	4.67
1976-77	5.54
1977-78	7.30
1978-79	8.37
1979-80	3.65
1980-81	9.59
1981-82	8.65
1982-83	4.02
जोड़	72.42

2.5 सामाजिक वैज्ञानिकों को अन्य पेशगियाँ

परिषद् सामाजिक वैज्ञानिकों आदि को अनुसंधान कार्य के लिए पेशगियाँ देती रही थी। वर्ष 1971-72 से दी गई 1.42 लाख रु० की समस्त पेशगियाँ

मार्च 1985 के अन्त तक असमायोजित/बकाया रहीं। वर्षवार ब्यौरा नीचे दिया गया है—

अवधि	राशि (लाख रु० में)
1971-72	0.09
1972-73	0.12
1973-74	0.09
1974-75	0.27
1975-76	0.13
1976-77	0.21
1977-78	0.45
1981-82	0.06
जोड़	1.42

3. **अन्य रुचिकर बातें**

3.1 7.47 **लाख रु० मूल्य की बेकार पड़ी आई. बी. एम. मशीनें**

मशीन की कूलेज अवस्था में सामाजिक विज्ञान के आँकड़ों को प्राप्त करने, संगठित करने व अलग-अलग करने के लिए परिषद् ने वर्ष 1974 में आई०बी० एम० यूनिट रिकार्ड मशीन खरीदी। वर्ष 1976 में परिषद् ने न लाभ न हानि के आधार पर संगणक (कम्प्यूटर) सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए "राष्ट्रीय सूचना केन्द्र" से करार किया तथा कार्ड तकनीक से कम्प्यूटर टेप्स पर आ गई इन व्यवस्थाओं के परिणामस्वरूप छः मशीनों में से 7.47 लाख रु० की चार मशीनें वर्ष 1978 से बेकार पड़ी थीं।

जुलाई 1981 में परिषद् ने इन चार बेकार मशीनों का निपटान करने का निश्चय किया लेकिन मशीनों का निपटान नहीं किया गया है (जुलाई 1985)। परिषद् ने बताया (सितम्बर 1985) कि उसने अनुसन्धान संस्थानों, सरकारी विभागों तथा शिक्षा संस्थानों को इन मशीनों का अन्तरण करने के लिए प्रस्ताव किया लेकिन कोई भी इन्हें लेने को सहमत नहीं हुआ तथा भारतीय संगणक अनुरक्षण निगम ने यह पाया है कि बाजार में इन मशीनों की कोई माँग नहीं है तथा स्क्रेप मूल्य ही वसूल किया जा सकेगा।

(ह०)
दि. कु. चक्रवर्ती
निदेशक लेखापरीक्षा
केन्द्रीय राजस्व-1

नई दिल्ली
13-11-85

परिषद् का उत्तर

1. सामान्य : कोई टिप्पणी नहीं

2. लेखों के सम्बन्ध में टिप्पणियाँ

2.1 केन्द्रों का स्तर और अधूरे लेखे

क्षेत्रीय केन्द्रों, बनाम मेज़बान सस्थाओं और परिषद् के कानूनी स्तर, काम-काज, प्रशासनिक संरचना तथा सम्बद्ध समस्याओं की समीक्षा करने के लिए परिषद् द्वारा गठित उप-समिति का यह मत था कि क्षेत्रीय केन्द्र, भा० सा० वि० अ० प० का एक भाग नहीं होना चाहिए और वर्तमान सहयोगात्मक व्यवस्था जारी रखनी चाहिए। परिषद् ने निर्णय किया कि इस सिफारिश को स्वीकार कर लिया जाए क्योंकि ऐसी व्यवस्था के अन्तर्गत ही वर्तमान की तरह इन संस्थाओं का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। क्षेत्रीय केन्द्रों के वर्ष 1983-84 तक के वार्षिक लेखे लेखा-परीक्षकों द्वारा यथाप्रमाणित परिषद् को प्राप्त हो गए हैं। परिषद् द्वारा अनुमोदित व्यवस्था के अनुसार वर्ष 1984-85 के वार्षिक परीक्षित लेखे क्षेत्रीय केन्द्रों से सितम्बर 1985 के अन्त तक प्राप्त होने थे। छ: क्षेत्रीय केन्द्रों में से दो केन्द्रों से वर्ष 1984-85 के परीक्षित लेखे प्राप्त हो गए हैं और शेष लेखे शीघ्र ही प्राप्त होने की आशा है। राज्य केन्द्र जैसे कोई केन्द्र नहीं हैं जैसा कि लेखा परीक्षा रिपोर्ट में कहा गया है।

2.2 सम्पत्तियों का अधूरा रिकार्ड

(i) भूमि तथा भवन (17.28 लाख रुपये)

यह राशि पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र के भवन से सम्बन्धित है। जिस भूमि पर इन भवनों का निर्माण किया गया है वह बम्बई विश्वविद्यालय की है और इसलिए संगत रिकार्ड केन्द्र द्वारा यथापूर्वक रखे जा रहे हैं। फिर भी, क्षेत्रीय केन्द्रों बनाम भा० सा० वि० अ० प० और मेज़बान संस्थाओं की भूमि तथा भवनों के स्वामित्व व कब्जे सम्बन्धी अधिकारों की दृष्टि से स्थिति और सम्बन्धों के बारे में कानूनी औपचारिकताओं को अन्तिम रूप दिया जा रहा है।

(ii) **फर्नीचर तथा उपस्कर** (32.04 **लाख रुपये**)

प्रत्येक मद का मूल्य (लागत) सम्बन्धित मद के 'डेड स्टाक रजिस्टर' में दर्ज किया गया था किन्तु इकट्ठे मूल्य का अन्दाजा लगाया जा रहा है और उसके बाद दिए गए सुझाव के अनुसार समायोजन कर दिया जायेगा।

तथापि, यह देखने में आया है कि तुलन-पत्र में दर्शाए गए आंकड़ें, शुरुआत से लेकर 1984-85 तक अलग-अलग वर्ष के प्राप्ति और अदायगी लेखों के अनुसार ऐसी सम्पत्तियों का संचयी मूल्य दर्शाते हैं।

(iii) **पुस्तकालय पुस्तकें** (13.03 **लाख रुपये**)

पुस्तकालय की पुस्तकों का 1970-71 से नमूने का वास्तविक जाँच कार्य किया गया है और उसे सम्बन्धित प्राप्ति रजिस्टर में दर्ज किया गया है। तथापि पूरी वास्तविक जाँच अगस्त 1985 के बाद से शुरू की गई है और इसके शीघ्र ही पूरा हो जाने की उम्मीद है। उसके बाद, सुझाया गया समायोजन कर लिया जाएगा।

प्राप्त हुई निःशुल्क उपहारस्वरूप वस्तुओं की कीमत तुलन-पत्र में दर्ज नहीं की जा सकी क्योंकि इनमें से अधिकांश या तो मूल्यरहित हैं अथवा दाताओं ने इन प्रकाशनों के मूल्य का उल्लेख नहीं किया है। इनमें प्रकाशक सूची-पत्र में भी दर्ज नहीं किया गया था। इसलिए उनकी कीमत तुलन-पत्र में नहीं दर्शाई जा सकी।

(iv) **समूल्य प्रकाशन** (22.50 **लाख रुपये**)

प्रकाशनों और वितरकों के पास पड़े प्रकाशनों के स्टाक का सही मूल्य पता लगाने के लिए प्रयास जारी हैं। इन प्रकाशकों/वितरकों से अद्यतन आंकड़े भेजने के लिए कहा गया है जो अभी प्राप्त होने हैं।

2.3 और 2.4 **अधिछात्रवृत्तियों और फुटकर अनुदानों व अनुसंधान परियोजनाओं के सम्बन्ध में बकाया उपयोगिता प्रमाण-पत्र**

अधिछात्रवृत्तियों के सम्बन्ध में केवल 240 मामलों में (83.72 लाख रु०) अन्तिम रिपोर्टों की प्रतीक्षा है, न कि 359 मामलों में (134.37 लाख रु०), जैसा कि लेखा परीक्षा रिपोर्ट में कहा गया है। ऐसा समझा जाता है कि अनुदान देने वाली अन्य संस्थाओं में भी ऐसी ही स्थिति है। तथापि, अधिछात्रवृत्तियों के लिए अनुदान जारी करने से सम्बन्धित मार्गदर्शी रूपरेखाओं को और कठोर बनाया जा रहा है ताकि अधिछात्रवृत्तियाँ पूरी होने की यथोचित अवधि के अन्दर अन्तिम रिपोर्टें प्राप्त की जा सकें।

परिषद्, अनुदानग्राहियों से प्राप्ति योग्य बकाया उपयोगिता प्रमाण-पत्रों की संख्या/राशि को कम से कम करने के लिए अपने प्रयास जारी रख रही है। तथापि, इस दिशा में परिषद् के प्रयासों में, अनुदानग्राहियों से परीक्षित लेखे विवरण प्राप्त न होने के कारण बाधा पहुँची; एक प्रमुख कारण यह है कि सांविधिक लेखा परीक्षक उनके लेखों की लेखा परीक्षा वार्षिक रूप से नहीं करते और उनके सम्बन्ध में लेखा-परीक्षा प्रमाण-पत्र जारी नहीं करते। इसलिए ऐसा प्रस्ताव है कि सम्बन्धित संस्था के वित्त अधिकारी अथवा वहाँ के अध्यक्ष से हस्ताक्षरित लेखा विवरण और उपयोगिता/प्रमाण-पत्र इस शर्त के साथ प्राप्त कर लिए जाएँ कि यदि बाद में हुई सांविधिक लेखा परीक्षा से अनुदानों की उपयोगिता के सम्बन्ध में कोई अनियमितता देखने में आती है तो आपत्तिधीन राशि को वापस लौटाने, समायोजित करने तथा नियमित करने के लिए कार्यवाही की जाएगी।

2.5 समाज विज्ञानियों आदि को अन्य अग्रिम (1.42 लाख रुपये)

1971-72 से 1981-82 की अवधि के दौरान दिए गए पुराने अग्रिमों के निपटाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

3. हित के अन्य मामले—7.47 लाख रुपये कीमत की आई० बी० एम० मशीनें जो अप्रयुक्त पड़ी हैं

रिपोर्ट में उल्लिखित चार यूनिट रिकार्ड मशीनें, सम्बन्धित अध्येताओं/संस्थाओं द्वारा गौण विश्लेषण के लिए उपयोगार्थ मशीन पाठ्य रूप में आंकड़ा सेटों के आयोजन व प्रबन्ध के वास्ते 1974 में खरीदी गई थीं। यह उद्देश्य, 1974-1978 तक इन मशीनों की मदद से पूरा कर लिया गया था।

सूचना प्रोद्योगिकी के अद्यतन बन जाने से, ये मशीनें अब पुरानी पड़ गई हैं। चूंकि भा० सा० वि० अ० प० द्वारा समर्थित अनुसंधान संस्थाओं, कुछ सरकारी विभागों तथा शिक्षा संस्थाओं ने, जिनसे सम्पर्क किया गया था, इन्हें लेने में कोई रुचि नहीं दिखाई, अब इनके सम्बन्ध में समाचार-पत्रों में विज्ञापन दिया गया है जिसमें 'जैसी है, जहाँ है' की शर्त पर पेशकश आमन्त्रित की गई है।

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद्

31 मार्च 1985 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए प्राप्ति और अदायगी लेखा

प्राप्तियाँ	रुपये	अदायगियाँ	रुपये
1. (क) मुख्य रोकड़ वही :		क. प्रशासन	
नकद	339.94	1. स्टाफ का वेतन तथा भत्ते (योजनेतर)	8,74,945.00
बैंक	4,42,311.74	2. स्टाफ का यात्रा भत्ता (योजनेतर)	14,082.65
2. भारत सरकार से अनुदान (शिक्षा मन्त्रालय)		3. कार्यालय भवन का किराया, पानी तथा	
(क) योजनेतर	1,70,57,000.00	बिजली खर्च (शुद्ध) (योजनेतर)	2,38,547.65
(ख) योजनागत	1,85,00,000.00	(योजनागत)	2,30,000.00
3. विदेश मन्त्रालय (योजनेतर)	7,50,000.00	4. अन्य खर्च (योजनेतर)	7,23,898.91
4. सावधिक जमा राशि पर ब्याज अर्जित	12,328.77	(योजनागत)	48,538.00
5. भा०सा०वि०अ०प० के समूल्य प्रकाशनों		5. आतिथ्य (योजनेतर)	15,769.85
की बिक्री से प्राप्त राशि	54,487.72	7. परिषद् तथा समिति सदस्यों का यात्रा	
6. प्रकाशकों से रायल्टी	1,38,510.57	भत्ता (योजनागत)	1,68,972.15
7. वाहन अग्रिम की वसूली	12,948.00	जोड़ (क)	23,14,754.21
8. त्यौहार अग्रिम की वसूली	14,160.00		
9. गृह निर्माण अग्रिम की वसूली	38,502.00	योजनेतर	18,67,244.06
10. अधिक दी गई राशि की पूर्ति	4,119.25	योजनागत	4,47,510.15

प्राप्तियाँ	रुपये	अदायगियाँ		रुपये
11. फोटो प्रतियों की बिक्री से प्राप्त राशि	15,781.05	ख. अनुसन्धान अनुदान :		
12. ग्रन्थ सूची के संकलन से प्राप्ति	1,812.70	1. स्टाफ का वेतन तथा भत्ते (योजनेतर)		14,67,140.13
13. आँकड़ा अभिलेखागार के सम्बन्ध से प्राप्तियाँ	19,481.70	2. स्टाफ का यात्रा भत्ता (योजनेतर)		31,129.00
14. पैंशन तथा रिटायरमैण्ट लाभ की प्राप्ति कर्मचारियों के लिये	4,633.00	3. सामाजिक विज्ञानियों का यात्रा भत्ता (योजनेतर)		14,396.31
15. विविध प्राप्तियाँ (पिछले वर्ष के दौरान अदा की गई, किन्तु खर्च न हुई राशि की वापसी)	97,283.12	4. परामर्शदाताओं का मानदेय (योजनागत)		1,46,520.00
16, विक्रम साराभाई स्मारक न्यास एवं प्राप्ति	4,141.00	5. प्रायोजित अनुसन्धान के लिए सहायक अनुदान (योजनागत)		31,79,605.94
17. छुट्टी तथा पैंशन अंशदान की प्राप्ति अन्य विभागों से	8,787.00	6. अनुसन्धान सर्वेक्षण (योजनागत)		49,359.00
		7. अन्य खर्च (योजनेतर)		57.35
जोड़	3,71,76,627.56	8. छुट्टी तथा पैंशन अंशदान (योजनेतर)	20,530.70	
		घटा—छुट्टी के वेतन की बाकी वसूली	2,558.75	17,971.95
		जोड़ (ख)		49,06,179.68
		योजनेतर		15,30,694.74
		योजनागत		33,75,484.94

प्राप्तियाँ	रुपये	अदायगियाँ	रुपये
पीछे से	3,71,76,627.56	**ग. अनुसन्धान अधिछात्रवृत्तियाँ**	
		1. राष्ट्रीय अधिछात्रवृत्तियाँ (योजनागत)	95,445.49
		2. भा०सा०वि०अ०प० वरिष्ठ छात्रवृत्तियाँ	
		(योजनेतर)	2,89,991.27
		(योजनागत)	5,45,878.36
		3. डाक्टोरल अधिछात्रवृत्तियाँ	
		(योजनेतर)	8,16,225.60
		(योजनागत)	15,11,227.94
		4. फुटकर अनुदान	
		(योजनेतर)	51,731.40
		(योजनागत)	1,48,644.70
		जोड़ (ग)	34,59,144.76
		योजनेतर	11,57,948.27
		योजनागत	23,01,196.49

प्राप्तियाँ	रुपये	अदायगियाँ	रुपये
पीछे से	3,71,76,627.56	**घ. प्रशिक्षण**	
		प्रशिक्षण कार्यक्रम	
		1. सहायक अनुदान (योजनागत)	97,700.00
		जोड़ (घ)	97,700.00
		ङ. अध्ययन अनुदान	
		1. पुस्तकालयों/प्रलेखन केन्द्रों का दौरा करने के लिए डाक्टोरल छात्रों/अध्येताओं को वित्तीय सहायता के रूप में खर्च	
		(क) प्रत्यक्ष खर्च (योजनागत)	39,147.30
		जोड़ (ङ)	39,147.30
		योजनागत	39,147.30
		च. क्षेत्रीय केन्द्र	
		1. क्षेत्रीय केन्द्र, बम्बई को सहायक अनुदान	
		(योजनेतर)	4,31,456.00
		(योजनागत)	1,00,000.00

प्राप्तियाँ	रुपये	अदायगियाँ	रुपये
पीछे से	3,71,76,627.56	2. क्षेत्रीय केन्द्र, कलकत्ता को सहायक अनुदान	
		(योजनेतर)	1,40,250.00
		(योजनागत)	1,00,000.00
		3. दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, हैदराबाद	
		(योजनेतर)	3,57,000.00
		(योजनागत)	1,00,000.00
		4. उत्तर पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, शिलांग को	
		सहायक अनुदान (योजनेतर)	1,31,086.10
		5. उत्तर पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, चण्डीगढ़ को	
		सहायक अनुदान (योजनेतर)	3,85,627.11
		(योजनागत)	7,39,685.00
		6. उत्तर क्षेत्रीय केन्द्र, नई दिल्ली को	
		सहायक अनुदान (योजनेतर)	1,34,000.00
		(योजनागत)	4,00,000.00
		जोड़ (च)	30,19,104.21
		योजनेतर	15,79,419.21
		योजनागत	14,39,685.00

प्राप्तियाँ	रुपये	अदायगियाँ	रुपये
पीछे से	3,71,76,627.56	छ. **प्रलेखन तथा ग्रन्थसूचीय सेवाएँ—राष्ट्रीय प्रलेखन केन्द्र तथा अनुसन्धान सूचना**	
		1. स्टाफ का वेतन तथा भत्ते (योजनेतर)	10,72,202.50
		2. स्टाफ का यात्रा भत्ता (योजनेतर)	7,422.30
		3. मानदेय (योजनागत)	3,000.00
		4. पत्रिकाओं आदि की खरीद (योजनेतर)	3,87,274.76
		5. अन्य खर्च (योजनागत)	1,70,162.65
		6. ग्रन्थसूचीय तथा प्रलेखन परियोजनाओं के लिए सहायक अनुदान आदि:	
		(क) प्रत्यक्ष खर्च (योजनागत)	50,639.25
		(ख) सहायक अनुदान	1,92,433.49
		जोड़ (छ)	18,83,134.95
		योजनेतर	14,66,899.56
		योजनागत	4,16,235.39

प्राप्तियाँ	रुपये	अदायगियाँ	रुपये
पीछे से	3,71,76,627.56	**ज. आँकड़ा अभिलेखागार**	
		1. स्टाफ का वेतन तथा भत्ते (योजनेतर)	2,96,121.84
		2. स्टाफ का यात्रा भत्ता (योजनेतर)	2,401.70
		3. अन्य खर्च (योजनेतर)	56,837.39
		4. मार्ग दर्शन तथा परामर्श सेवाएँ (योजनेतर)	8,919.70
		5. वित्तीय सहायता आँकड़ा अभिलेखागार संस्थानों का (योजनागत)	1,00,000.00
		6. अन्य कार्यक्रम (योजनेतर)	250.00
		जोड़ (ज)	4,64,530.63
		योजनेतर	3,64,530.63
		योजनागत	1,00,000.00

प्राप्तियाँ	रुपये	अदायगियाँ	रुपये
पीछे से	3,71,76,627.56	**भ. प्रकाशन**	
		परिषद् की प्रकाशन शाखा	
		1. स्टाफ का वेतन तथा भत्ते (योजनेतर)	2,48,054.98
		2. स्टाफ का यात्रा भत्ता (योजनेत्तर)	906.00
		3. मानदेय (पी-एच० डी० शोध निबन्ध सम्पादन तथा परीक्षा) (योजनागत)	53,817.15
		4. अन्य खर्च (योजनेतर)	18.90
		(योजनागत)	140.82
		5. कागज पर खर्च (योजनागत)	2,64,882.57
		6. समूल्य प्रकाशन :	
		(क) पत्रिकायें (योजनागत)	2,49,686.62
		(ख) अन्य समूल्य-प्रकाशन (योजनागत)	45,170.30
		7. मूल्य रहित प्रकाशन (योजनेतर)	36,398.98
		8. न्यूज़लेटर प्रकाशन (योजनेतर)	11,588.50
		9. लेखकों को रायल्टी (योजनागत)	4,039.73

प्राप्तियाँ	रुपये	अदायगियाँ	रुपये
पीछे से	3,71,76,627.56	10. भा० सा० वि० अ० प० द्वारा प्रायोजित अनुसंधान परियोजना/डॉक्टोरल शोध निबन्ध के प्रकाशन के लिए सहायक अनुदान (योजनागत)	55,300.00
		जोड़ (झ)	9,70,004.55
		योजनेतर	2,96,967.36
		योजनागत	6,73,037.19
		ट. अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग	
		अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग (योजनेतर)	7,50,493.15
		(योजनागत)	11,64,869.63
		ठ. अनुसन्धान संस्थाओं को अनुरक्षण तथा विकास अनुदान	
		1. विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम (योजनेतर)	8,75,000.00
		(योजनागत)	6,85,000.00

प्राप्तियाँ	रुपये	अदायगियाँ		रुपये
पीछे से	3,71,76,627.56	2. सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन संस्थान, बंगलौर	(योजनेतर)	10,44,000.00
			(योजनागत)	21,889.65
		3. समाज विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कलकत्ता	(योजनेतर)	9,50,000.00
		4. आर्थिक विकास संस्थान, दिल्ली	(योजनेतर)	10,44,000.00
			(योजनागत)	4,40,000.00
		5. विकासशील सोसायटी अध्ययन केन्द्र, दिल्ली	(योजनेतर)	8,89,000.00
			(योजनागत)	62,000.00
		6. अनुग्रह नारायण सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान, पटना	(योजनेतर)	6,00,000.00
			(योजनागत)	2,50,000.00
		7. गांधी अध्ययन संस्थान, वाराणसी	(योजनेतर)	6,23,000.00
			(योजनागत)	40,000.00

प्राप्तियाँ	रुपये	अदायगियाँ	रुपये
पीछे से	3,71,76,627.56	8. लोक उद्यम संस्थान, हैदराबाद (योजनेतर)	3,50,000.00
		(योजनागत)	6,50,000.00
		9. सामाजिक अध्ययन केन्द्र, सूरत (योजनेतर)	3,50,000.00
		(योजनागत)	1,58,000.00
		10. सरदार पटेल आर्थिक तथा सामाजिक अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद (योजनेतर)	6,80,000.00
		(योजनागत)	1,70,000.00
		11. मद्रास विकास अध्ययन संस्थान, मद्रास (योजनेतर)	4,50,000.00
		(योजनागत)	3,45,000.00
		12. गोविन्द बल्लभ पन्त सामाजिक विज्ञान अनुसंधान संस्थान, इलाहाबाद (योजनागत)	5,35,000.00
		13. गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ (योजनेतर)	5,00,000.00
		(योजनागत)	12,75,000.00
		14. भारतीय शिक्षा संस्थान, पुणे (योजनेतर)	2,70,000.00
		(योजनागत)	1,45,000.00

प्राप्तियाँ	रुपये	अदायगियाँ		रुपये
पीछे से	3,71,76,627.56	15. नीति अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली	(योजनेतर)	3,75,000.00
			(योजनागत)	2,95,000.00
		16. सामाजिक विकास परिषद्, नई दिल्ली	(योजनागत)	2,33,788.26
		17. विकास अध्ययन संस्थान, जयपुर	(योजनागत)	3,47,000.00
		18. सर्वेक्षण अनुसंधान तथा प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली	(योजनागत)	3,60,000.00
		19. क्षेत्रीय इकोलॉजीकल तथा विज्ञान अनुसंधान विकासशील अनक्ताओं का केन्द्र, कलकत्ता	(योजनागत)	2,00,000.00
		20. ग्रामीण तथा औद्योगिक विकास का अध्ययन केन्द्र, चंडीगढ़	(योजनागत)	9,00,000.00

प्राप्तियाँ	रुपये	अदायगियाँ	रुपये
पीछे से	3,71,76,627.56	21 महिला विकास अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली (योजनागत)	2,00,000.00
		जोड़ (ठ)	1,63,12,677.91
		योजनेतर	90,00,000.00
		योजनागत	73,12,677.91
		ड. अन्य कार्यक्रम	
		1. समाज विज्ञानियों के व्यावसायिक संगठनों को अनुरक्षण तथा विकास अनुदान (योजनागत)	52,391.44
		2. सेमिनार तथा सम्मेलन—योजनागत भा०सा०वि०अ०प० द्वारा आयोजित	
		क. सहायक अनुदान	6,04,616.00
		ख. प्रत्यक्ष खर्च	26,927.10
		जोड़	6,31,543.10

प्राप्तियाँ	रुपये	अदायगियाँ	रुपये
पीछे से	3,71,76,627.56	3. धर्मस्व निधियाँ कायम की (योजनागत)	50,000.00
		जोड़ (ङ)	7,33,934.54
		ढ. ऋण जमा तथा अग्रिम	
		1. स्टाफ को त्यौहार अग्रिम (योजनेतर)	13,000.00
		2. स्टाफ को गृह निर्माण अग्रिम (योजनागत)	3,14,650.00
		जोड़ (ढ)	3,27,650.00
		योजनेतर	13,000.00
		योजनागत	3,14,650.00
		ण. भविष्य निधि	
		1. परिपद् अंशदान अ०नि०नि० व्याज सहित (योजनेतर)	1,00,458.00
		त. पूँजीगत खर्च	
		1. फर्नीचर तथा उपस्कर (योजनागत)	84,171.46

प्राप्तियाँ	रुपये	अदायगियाँ	रुपये
पीछे से	3,71,76,627.56	2. पुस्तकालय पुस्तकें (योजनेतर)	1,13,652.83
		थ. पेंशन तथा रिटायरमेण्ट लाभ (योजनेतर)	6,311.00
		ध. अन्य एजेन्सियों की ओर से अदायगी	
		1. विक्रम साराभाई स्मारक न्यास (योजनेतर)	5,000.00
		कुल अदायगी (क) से (ध) तक	3,67,52,918.81
		अन्त में बकाया	4,23,708.78
		कुल जोड़	3,71,76,627.56
		योजनेतर—	1,82,52,618.81
		योजनागत—	1,85,00,300.00

ह०
(वि० रामामूर्ति)
वित्तीय सलाहकार तथा
मुख्य लेखा अधिकारी
भा० सा० वि० अ० प०
नई दिल्ली

ह०
(डी० डी० नरूला)
सदस्य-सचिव
भा० सा० वि० अ० प०
नई दिल्ली

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्
वर्ष 1984-85 का आय और व्यय विवरण

व्यय		राशि	
1	2	3	4
को	योजनेतर	योजनागत	जोड़
क. प्रशासन	18,67,244.06	4,47,510.15	22,47,915.65
घटा—आई० सी० एच० आर० से प्राप्त किराया	(—) 86,838.56		
ख. अनुसंधान अनुदान	15,30,694.74	33,75,484.94	48,88,207.73
छुट्टी तथा पेंशन अंशदान	(—) 17,971.95		
ग. अनुसंधान अधिछात्रवृत्तियाँ	11,57,948.27	23,01,196.49	34,59,144.76
घ. प्रशिक्षण	—	97,700.00	97,700.00
ङ. अध्ययन अनुदान	—	39,147.30	39,147.30
च. क्षेत्रीय केन्द्र	15,79,419.21	14,39,615.00	30,19,104.21
छ. प्रलेखन तथा ग्रन्थसूची सेवा	14,66,899.56	4,16,235.39	18,83,134.95
घटा—पत्रिकाओं के लिए अंशदान, परन्तु पत्रिकाएँ प्राप्त नहीं	(—) 1,83,626.09	—	(—) 1,83,626.09
ज. आंकड़ा अभिलेखागार	8,64,530.63	1,00,000.00	4,64,530.83

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् वर्ष 1984-85 का आय और व्यय विवरण

प्राप्तियाँ	राशि	
द्वारा		
क. भारत सरकार से प्राप्त अनुदान		
(1) शिक्षा मंत्रालय		
योजनेतर	1,70,57,000.00	
योजनागत	1,85,00,000.00	
(2) विदेश मंत्रालय		
योजनेतर	7,50, 000.00	
	जोड :	3,63,07,000.00
ख. समायोजन 1984-85 के दौरान		
पूंजीकृत राशि		
(1) फर्नीचर तथा उपस्कर	84,171.46	
(2) पुस्तकें तथा पी-एच० डी०		
शोध निबंध	1,13,652.83	
(3) समूल्य प्रकाशन	2,98,896.65	4,96,720.94
	शेष अनुदान राशि	2,58,10,279.06
ग. सावधिक राशि पर ब्याज		
अर्जित ब्याज		12,328.77
घ. फोटोकापी प्रभार		15,781.05
ङ. अधिक दी गई राशि की पूर्ति		4,119.25
च. ग्रन्थ-सूची संकलन प्रभार		1,812.70
छ. आंकडा अभिलेखागार प्रभार		19,481.70
ज. रिटायरमेंट लाभ		4,633.00

झ. प्रकाशन योजनागत 6,73,037.19 घटा पूँजीकृत राशि			
2,98,896.65	2,96,967.36	3,74,140.54	6,71,107.90
ट. अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग	7,50,493.15	11,64,869.62	19,15,362.78
ठ. अनुसंधान संस्थाओं को अनुरक्षण तथा विकास अनुदान	90,00,000.00	73,12,677.91	1,63,12,677.91
ड. अन्य कार्यक्रम	—	7,33,934.54	7,33,934.54
ढ. परिषद् अंशदान अ०नि०वि०भविष्य निधि में	1,00,458.00	—	1,00,458.00
त. पेंशन तथा रिटायरमेंट सुविधा	6,311.00	—	6,311.00
	1,78,52,529.38	1,78,02,581.89	3,56,55,111.27
व्यय की तुलना में आय में आधिक्य			5,12,392.67
		कुल जोड़ :	3,61,67,503.94

ह०
(वि० रामामूर्ति)
वित्तीय सलाहकार तथा
मुख्य लेखा अधिकारी
भा० सा० वि० अ० प०
नई दिल्ली

ह०
(डी० डी० नरूला)
सदस्य-सचिव
भा० सा० वि०अ० प०
नई दिल्ली

प्राप्तियाँ		राशि
ञ. विविध प्राप्तियाँ		97,283.12
ट. छुट्टी तथा पेंशन अंशदान		8,787.00
ठ. भा० सा० वि० अ० प० द्वारा समूल्य प्रकाशनों की बिक्री	54,487.72	
ड. प्रकाशकों से रायल्टी	1,38,510.57	3,57,224.88
	कुल जोड़	3,61,67,503.94

ह०
(वि० रामामूर्ति)
वित्तीय सलाहकार तथा
मुख्य लेखा अधिकारी
भा० सा० वि० अ० प०
नई दिल्ली

ह०
(डी० डी० नरूला)
सदस्य-सचिव
भा० सा० वि० अ० प०
नई दिल्ली

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्
वर्ष 1984-85 के लिए तुलन-पत्र

	देनदारियाँ	रुपये	रुपये
1.	भूमि तथा भवन	17,27,926.00	17,27,926.00
2.	आवर्ती अनुदान	46,16,736.69	46,16,736.69
3.	शुद्ध पूंजीगत समूल्य प्रकाशन लागत	22,50,108.09	22,50,108.09
4.	कागत का स्टाक	1,93,973.84	1,93,973.84
5.	छुट्टी तथा पेंशन अंशदान की बाकी अदायगी		
	(1) प्रारंभ में बकाया	25,279.55	
	(2) वर्ष के दौरान भुगतान किया	20,530.70	
	(3) अन्त में बकाया		4,748.85
6.	भारत-फ्रांस सहयोग की ओर से अग्रिम	23,889.89	23,889.89
7.	युनेस्को की ओर से अग्रिम	18,960.16	18,960.16
8.	प्रतिभूति जमा	850.00	850.00
9.	रायल्टी के खाते में	2,54,362.65	2,54,362.65
10.	राशियाँ		
	(क) सारा भाई स्मारक निधि	50,117.73	50,117.73
11.	भविष्य निधि	24,90,816.69	24,90,816.69
			1,16,32,490.59
12.	व्यय की तुलना में आय का		
	आधिक्य वर्ष 31-3-84	9,07,398.96	
	31-3-85	5,12,392.67	
			14,19,791.63
		कुल जोड़ :	1,30,52,282.22

ह०
(वि० रामामूर्ति)
वित्तीय सलाहकार तथा
मुख्य लेखा अधिकारी
भा० सा० वि० अ० प०
नई दिल्ली

ह०
(डी० डी० नरूला)
सदस्य-सचिव
भा० सा० वि० अ० प०
नई दिल्ली

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्
वर्ष 1984-85 के लिए तुलन-पत्र

परिसम्पत्तियाँ	रुपये	रुपये
1	2	3
1. भूमि तथा भवन	17,27,926.00	17,27,926.00
2. अनावर्ती अनुदान :		
(क) वाहन	1,09,072.84	1,09,072.84
(ख) फर्नीचर तथा उपस्कर प्रारम्भ में बकाया	31,19,838.98	
(ग) जमा वर्ष के दौरान	84,171.46	32,04,010.44
(घ) पुस्तकें तथा पी-एच० डी० शोध निबन्ध		
प्रारम्भ में बकाया	11,90,000.58	
जमा वर्ष के दौरान	1,13,652.83	13,03,653.41
		46,16,736.69
3. समूल्य प्रकाशन :		
प्रारम्भ में बकाया	23,59,339.79	
घटा—रायल्टी की प्राप्ति सम्भव परन्तु तुलन-पत्र में नहीं जोड़ी गई 1983-84 वर्ष तक	2,54,362.65	
	21,04,977.14	
जमा वर्ष के दौरान :		
(क) समूल्य पत्रिकाएँ	2,49,686.62	
(ख) अन्य समूल्य प्रकाशन	45,170.30	
(ग) लेखकों की रायल्टी के लिए अदायगी	4,039.73	

1	2	3
(घ) कुल कागज की लागत समूल्य प्रकाशनों पर	39,232.59	
	24,43,106.38	
घटा—भा० सा० वि० अ० प० से समूल्य प्रकाशनों की बिक्री से प्राप्त राशि तथा प्रकाशनों से रायल्टी प्राप्त हुई वर्ष के दौरान	1,92,998.29	
शेष समूल्य प्रकाशनों की राशि जो पूँजीगत की गई	22,50,108.09	22,50,108.09
4. पत्रिकाओं के लिए अंशदान किया गया परन्तु पत्रिकाएँ प्राप्त न हुई	1,83,626.09	1,83,626.09
5. मुद्रण कागज का स्टाक :		
(क) प्रारम्भ में बकाया	38,214.25	
(ख) वर्ष के दौरान खरीदा	2,64,882.57	
	3,03,096.82	
घटा—		
कागज समायोजित समूल्य प्रकाशनों के लिए	39,232.59	
मूल्य रहित प्रकाशनों के लिए	69,890.39	
	1,09,122.98	
शेष कागज का स्टाक वर्ष के अन्त में		1,93,973.84

1	2	3
6. स्टाफ के ऋण :		
(क) वाहन के लिए स्टाफ को ऋण		
1. प्रारम्भ में बकाया	42,549.00	
2. वर्ष के दौरान समायोजित	12,948.00	
वर्ष के अन्त में	29,601.00	29,601.00
(ख) त्यौहार अग्रिम :		
1. आरम्भ में बकाया	7,640.00	
2. जमा—वर्ष के दौरान अदा किया गया	13,000.00	
	20,640.00	
घटा—वर्ष के दौरान समायोजित	14,160.00	
वर्ष के अन्त में बकाया	6,480.00	6,480.00
(ग) गृह निर्माण अग्रिम :		
1. प्रारम्भ में बकाया	3,18,394.00	
2. जमा—वर्ष के दौरान अदा किया गया	3,14,650.00	
	6,33,044.00	
घटा—वर्ष के दौरान समायोजन	38,502.00	
वर्ष के अन्त में बकाया	5,94,542.00	5,94,542.00

1	2	3
7. अन्य विविध अग्रिम राशि :		
(क) सामाजिक विज्ञानियों को अग्रिम वर्ष के प्रारम्भ में बकाया	1,41,511.83	
वर्ष के दौरान समायोजित अन्त में बकाया		1,41,511.83
8. भविष्य निधि राशि :		
(क) सावधिक जमा राशि	19,45,000.00	
(ख) बैंक में नकद राशि	5,45,816.00	
कुल जोड़	24,90,816.00	24,90,816.00
9. प्रकाशकों द्वारा रायल्टी से प्राप्ति		2,54,362.65
10. केन्द्रीय तार विभाग के पास अग्रिम		1,500.00
11. विक्रम साराभाई स्मारक न्यास से प्राप्ति		3,000.00
12. विक्रम साराभाई स्मारक न्यास के बैंक में बकाया :		
(क) सावधिक जमाराशि	50,000.00	
(ख) बैंक में नकद	117.73	50,117.73
13. अन्य विभागों, राज्य सरकारों से प्राप्त होने वाला छुट्टी का वेतन :		
वर्ष के प्रारम्भ में	19,991.05	
घटा—समायोजित राशि	2,558.75	
शेष प्राप्त होने वाली राशि		17,432.30
14. आई० सी० एच० आर० द्वारा शेष किराये की प्राप्ति		66,838.56

1	2	3
15. नकद तथा बैंक में जमा :		
(क) नकद	1,087.37	
(ख) बैंक में जमा	4,22,621.38	4,23,708.75
जोड़		1,30,52,282.22

टिप्पणी तुलन-पत्र पर तथा आय और व्यय के खाते में संख्या 3 और 9, संख्या 8 और 9 (परिसम्पत्तियाँ) तथा संख्या 9 (देनदारियाँ)

1. दो प्रकाशकों द्वारा दी जाने वाली रायल्टी 31-3-84 तक, जो की पिछले वर्ष के तुलन-पत्र में दिखाई नहीं गई 31-3-84 तक के खाते में, वह इस तुलन-पत्र में 31-3-85 के अन्त तक दिखा दी गई है। इस खाते में से दो लाख रुपये 1985-86 के खाते में प्राप्ति हो गई है।
2. इन दो प्रकाशकों द्वारा 1984-85 के सन्दर्भ में प्राप्त होने वाली रायल्टी की राशि का लेखा-जोखा प्राप्त नहीं हुआ। इसलिए 1984-85 में प्राप्त होने वाली रायल्टी इस तुलन-पत्र में नहीं दिखाई गई।

ह०
(वि० रामामूर्ती)
वित्तीय सलाहकार तथा
मुख्य लेखा अधिकारी
भा० सा० वि० अ० प०
नई दिल्ली

ह०
(डी० डी० नरूला)
सदस्य सचिव
भा० सा० वि० अ० प०
नई दिल्ली

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद् वर्ष 1984-85 के लिए
साराभाई स्मारक न्यास का प्राफोर्मा लेखा

प्राप्तियाँ	रुपये	व्यय	रुपये
प्रारम्भ से बकाया	51,595.95	केम्बरिज प्रेस के सन्दर्भ में अदायगी	713.69
वर्ष के दौरान अर्जित ब्याज	4,622.52	इण्डिया इन्टरनेशनल केन्द्र को अदायगी	1,246.05
		भा० सा० वि० अ० प० को अदायगी	4,141.00
		जोड़	6,120.74
		अन्त में बकाया	50,117.73
जोड़	56,218.47	जोड़	56,218.47

ह०
(वि० रामामूर्ति)
वित्तीय सलाहकार तथा
मुख्य लेखा अधिकारी
भा० सा० वि० अ० प०
नई दिल्ली

ह०
(डी० डी० नरूला)
सदस्य सचिव
भा० सा० वि० अ० प०
नई दिल्ली

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद् वर्ष 1984-85 के लिए यूनेस्को का प्रोफोर्मा लेखा

प्राप्तियाँ	रुपये	व्यय	रुपये
आरम्भ में बकाया	18,960.16	वर्ष के दौरान व्यय	—
		अन्त में बकाया	18,960.16
जोड़	18,960.16	जोड़	18,960.16

ह०
(वि० रामामूर्ति)
वित्तीय सलाहकार तथा
मुख्य लेखा अधिकारी
भा० सा० वि० अ० प०
नई दिल्ली

ह०
(डी० डी० नरूला)
सदस्य-सचिव
भा० सा० वि० अ० प०
नई दिल्ली

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद् वर्ष 1984-85 के लिए भविष्य-निधि का प्रोफोर्मा लेखा

प्राप्तियाँ	रुपये	अदायगियाँ	रुपये
प्रारम्भ में बकाया सावधिक जमा राशि	17,25,000.00	वर्ष के दौरान अग्रिम/निकासियों के लिए अदायगी	5,59,263.65
बैंक में नकद	3,90,564.64	अन्त में बकाया	
अंशदान जिसमें कर्मचारियों द्वारा वापस की गई रकम भी शामिल है	6,38,318.00	(1) सावधिक जमा राशि	19,45,000.00
परिषद् का अंशदान ब्याज सहित	1,00,458.00	(2) बैंक में नकद	5,45,816.69
अर्जित ब्याज वर्ष के दौरान सावधिक जमा राशि पर	1,95,739.70		
जोड़	30,50,080.34	जोड़	30,50,080.34

ह०
(वि० रामामूर्ति)
वित्तीय सलाहकार तथा
मुख्य लेखा अधिकारी
भा० सा० वि० अ० प०
नई दिल्ली

ह०
(डी० डी० नरूला)
सदस्य-सचिव
भा० सा० वि० अ० प०
नई दिल्ली

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद् वर्ष 1984-85 के लिए फ़ोर्ड प्रतिष्ठान का प्रोफोर्मा लेखा

प्राप्तियाँ	रुपये	व्यय	रुपये
आरम्भ में बकाया	2,84,782.11	भा० सा० वि० अ० प० द्वारा अनुमोदित अपने अनुसन्धान कार्य के सम्बन्ध में सामग्री एकत्र करने के वास्ते भारतीय अध्येताओं द्वारा विदेशों का दौरा	2,84,782.11
		जोड़	2,84,782.11
जोड़	2,84,782.11	वर्ष के अन्त में शेष	—
		कुल जोड़	2,84,782.11

ह०
(वि० रामामूर्ति)
वित्तीय सलाहकार तथा
मुख्य लेखा अधिकारी
भा० सा० वि० अ० प०
नई दिल्ली

ह०
(डी० डी० नरूला)
सदस्य-सचिव
भा० सा० वि० अ० प०
नई दिल्ली